परिधावी संवत्सर

शास्त्रीयदृक्सिद्ध

श्रीभोजराजपञ्चाङ्ग

प्रधान सम्पादक

आचार्य प्रकाश पाण्डेय

प्राचार्य

सम्पादक

प्रो. हंसधर झा आचार्य एवं अध्यक्ष

डॉ. श्यामदेव मिश्र सहायक आचार्य

सह-सम्पादक

डॉ. अवधेश कुमार श्रोत्रिय अ. सहायक आचार्य
-पञ्चाङ्गपूर्वपीठिका लेखन

डॉ. आशीष कुमार चौधरी अ. सहायक आचार्य
-वार्षिक राशिफल एवं राहु साधन

डॉ. अनिल कुमार अ. सहायक आचार्य
-मुहूर्त्त निर्णय

डॉ. भूपेन्द्र कुमार पाण्डेय अ. सहायक आचार्य
-व्रतपर्व निर्णय व विषय समायोजन

डॉ. रविन्द्र प्रसाद उनियाल अ. सहायक आचार्य
-वास्तुशास्त्र विषय समायोजन

रोहित पचौरी (J.R.F.) पञ्चाङ्ग परियोजना
-अक्षर संयोजन एवं तकनीकी सहयोग

छात्र कल्याण परिषद्

(1) गणेश शिन्दे - प्राक् शास्त्री
(2) केशव शर्मा - शास्त्री
(3) शिल्पी उपाध्याय - आचार्य
(4) सोहन लाल आर्य - शिक्षाशास्त्री
(5) प्रतिभा - शिक्षाचार्य

पञ्चाग निर्माण में सहायक ज्योतिष विभागीय छात्र

सीताकान्त कर, शुभम महंत, अनुराग, सचिन मिश्रा, अनुराग शर्मा, सत्यम पाण्डेय, सौरभ शर्मा, पंकज पारीक, सत्यम मिश्रा, नीतू शर्मा, स्मिता पंडित, विमलेश विजयवर्गीय, चित्रांशी शर्मा, सौरभ, आकाश नंदनधरे, साहस पाण्डेय।

प्रकाशक विवरण

प्रकाशक

© **प्राचार्य,** राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, भोपाल परिसर, भोपाल (म.प्र.)

प्रकाशन वर्ष - 2019-20, अङ्क - नवम, ISSN 2277-2030

संख्या - 700 **मूल्य - 80/-**

प्राप्ति स्थान - विक्रयविभाग, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, भोपाल परिसर

संस्कृत मार्ग, बाग सेवनिया, भोपाल - 462043

दूरभाष - 0755-2418043

फैक्स - 0755-2418003

ई-मेल - bhojrajpanchang@gmail.com

बेवसाइट- www.rsksbhopal.ac.in

इस पञ्चाङ्ग का निर्माण भारत सरकार के मौसम विज्ञान विभाग के अन्तर्गत कार्यरत कोलकाता स्थित खगोल विज्ञान केन्द्र के गणकाङ्कों पर आधारित है। अत: उनके प्रति परिसर आभार व्यक्त करता है।

पञ्चाङ्ग का परिचय

अक्षांश 23°/16' पलभा 05/09/35 वर्षारम्भ में अयनांश 24°/7'/04"

यह पञ्चाङ्ग भोपाल शहर के कालमान (अक्षांश और रेखांश) के अनुसार निर्मित है। तिथि और नक्षत्र के आगे निर्दिष्ट घटीपल उसके सूर्योदय के बाद की स्थिति को बताता है, इसी तरह घटी-पल के आगे निर्दिष्ट घंटा मिनट उसके अन्त काल को दर्शाता है। पञ्चाङ्ग में दिए गए समस्त घंटा मिनट स्टैण्डर्ड मानक समय में ही दिये गये हैं। जनसामान्य इस पञ्चाङ्ग के समय को अपनी घड़ी के अनुरूप मिलाकर समय का उपयोग कर सकते हैं, अर्थात् घड़ी के समय के अनुरूप मानक समय में ही तिथ्यादि के जो समय दिये गये हैं, वे सभी रेडियो टाइम के अनुसार समझना चाहिए।

इस पञ्चाङ्ग के गणित और ग्रह गणना का आधार भारतीय मौसम विज्ञान विभाग कोलकाता स्थित खगोल विज्ञान केन्द्र के द्वारा निर्मित भारत मध्यस्थानीय गणांक है।

इस पञ्चाङ्ग में भारत के कुछ शहरों के अक्षांश-रेखांश तथा मध्यप्रदेश के कुछ शहरों के रेखांश, अक्षांश, देशान्तर, पलभा एवं लग्नप्रमाण दिये गये हैं, साथ ही किसी भी स्थान के लिए सूर्योदय और सूर्यास्त साधन हेतु चरसारणी आदि दिया गया है। इसके आधार पर उन प्रदेशों में तिथ्यादि मान जाना जा सकता है। इसमें राश्यादि स्पष्ट दैनिकग्रह, दैनिकलग्नान्तकाल, ग्रहों का राशि प्रवेश, उदयास्त, द्वितीया एवं चतुर्थी तिथि का चन्द्रोदय एवं चन्द्रदर्शन, विवाहादि शुभकर्म हेतु मूहूर्त्त दिये गये हैं, साथ ही मेलापक, षोडशोपचारपूजनविध, ग्रहशान्ति, तर्पण तथा अशौचादि आवश्यक विषयों का भी विवरण दिया गया है, जिसके आधार पर विज्ञजन निर्णय लेने में सक्षम होंगे।

विशेष - इस पञ्चाङ्ग में प्रतिदिन के मूहूर्त्त के साथ कुछ उपयोगी ज्योतिषीय विचार व निर्णय दिये गये हैं। जो पूर्णतया शास्त्रानुसार है यह पञ्चाङ्ग प्रत्येक व्यक्ति के लिए उपयोगी हो और सरल हो एतदर्थ सभी अपेक्षित प्रयास किये गये हैं फिर भी विद्वज्जनों और सुधी पाठकों से अपेक्षित सुझाव व परामर्श आमन्त्रित है।

सूचना - पञ्चाङ्ग से सम्बन्धित सभी न्यायिक मामले भोपाल न्यायपालिका कार्यक्षेत्र के ही अन्तर्गत होगा।

विषयसूची

क्र.	विषय	पृ.स.	क्र.	विषय	पृ.स.
01	पञ्चाङ्ग का परिचय	01	32	षोडषोपचार-देवपूजनविधि	48
02	सम्पादक मण्डल की ओर से ...	02	33	तर्पण प्रयोग विधि	50
03	पञ्चाङ्ग पूर्वपीठिका	03	34	नवग्रहस्तोत्र	52
04	द्वादशराशियों घात चक्र	06	35	श्रीकनकधारास्तोत्र	52
05	वार्षिक राशिफल	06	36	अक्षांश-रेखांश सारिणी	53
06	ग्रहणविवरण	08	37	परिसरीय गतिविधियाँ	56
07	मुहूर्त्तविचार	08	38	भवन निर्माण में सरल वास्तु के	
08	ग्रहों का उदयास्त वक्री, मार्गी	12	39	अनमोल स्वर्णिम सूत्र	57
09	अभीष्ट स्थान के सूर्योदय साधनविधि	13			
10	अक्षांश से सारिणी द्वारा पलभाज्ञान	13			
11	चरसारिणी	13			
12	क्रान्तिसारिणी	14			
13	वेलान्तरसारिणी	14			
14	भोपाललग्नसारिणी	15			
15	अक्षांश, रेखांश, देशान्तर...	15			
16	पञ्चाङ्ग तिथ्यादिविवरण 2017-18 स्पष्टग्रह, दैनिकमुहूर्त्त, सिद्धियोगादि	16-39			
17	विवाह मेलापक विचार	40			
18	विवाह मुहूर्त्त के 10 दोषों का विचार	40			
19	शतपदचक्र, ग्रह उच्च-नीच चक्र	42			
20	अष्टविध मेलापकचक्र	42			
21	वरवधूगुणबोधकचक्र	43			
22	ग्रहों की दशा अन्तर्दशा सारिणी	43			
23	चौघड़िया-नष्टवस्तु-अंगस्फुरण आदि	44			
24	नक्षत्र कष्टावली-यात्रानक्षत्रविचार	44			
25	स्वप्नविचार	45			
26	द्वादशभावस्थ ग्रहफलविचार	45			
27	वर्षकुण्डली में ग्रहफल	45			
28	ग्रहों के दानपदार्थ	46			
29	ग्रहों के शान्तिमन्त्र	46			
30	पञ्चसूक्त	46			
31	यज्ञोपवीत धारण विधि	48			

विनम्र निवेदन

संवत् 2076 का श्रीभोजराजपञ्चाङ्ग आपके कर कमलों में समर्पित करते हुए अपार हर्ष हो रहा है। इस वर्ष पञ्चाङ्ग को पारम्परिक स्वरूप देते हुए दैनिक मुहूर्त्त व योगादि में भी वृद्धि की गई है फिर भी मानवीय त्रुटि सम्भावित रहती है अत: सभी सुधीजन पाठकों से निवेदन है कि इस प्रयास को और बेहतर करने हेतु आपका अमूल्य सुझाव अपेक्षित है। आपके सुझाव निम्न संकेत पर आमन्त्रित हैं -

bhojrajpanchang@gmail.com

यथा शिखा मयूराणां
नागानां मणयो यथा।
तद्वद्वेदाङ्गशास्त्राणां
ज्योतिषं मूर्ध्नि संस्थितम्।।

सम्पादक मण्डल की ओर से .....
पञ्चाङ्ग प्रकाशन की अनिवार्यता

प्रो.हंसधर झा

डॉ. श्यामदेव मिश्र

संस्कृत को देववाणी कहते हैं और यह वाणी अमर मानी जाती है। इसको कल्पना या कोई पौराणिक आख्यान के रूप में न देखकर इसके वैज्ञानिक तथ्य को ढूंढने के लिये प्रयास करने की आवश्यकता है। इतिहास का अध्ययन करने पर यह तथ्य सामने आता है, कि विश्व की अनेक नागरिकताएं तथा भाषाएं उसकी गोद में समा गयीं। उनका कोई नमूना भी नहीं बचा है। किन्तु भारतीय सभ्यता अजर और अमर है। विज्ञान को दैनिक जीवन में समाविष्ट रखना ही उस अमरता का महत्त्वपूर्ण कारण है। इस अभियान में उसका पूरा साथ दिया है संस्कृत ने, जो एक भाषा ही नहीं एक विज्ञान भी है, और गम्भीर ज्ञान भी। अब जरूरत है आधुनिक उपलब्ध वैज्ञानिक साधनों से इस बात को सिद्ध करने की। इस महनीय कार्य का एक छोटा सा प्रयत्न आपके समक्ष यह पञ्चाङ्ग प्रस्तुत है।

भोजराज पञ्चाङ्ग का नवमाङ्क

वेदेषु विद्यासु च ये प्रदिष्टाः धर्मादयः कालविशेषतोऽर्थाः। ते सिद्धिमायान्त्यखिलाश्च येन तद्वेदनेत्रं जयतीह लोके।।(आर्ष्टिसेनिः) कालविशेष से वेदों में और विद्याओं में जो धर्मादि उपदिष्ट हैं, उनकी सिद्धि जिस वेदनेत्ररूपी ज्योतिष से होती है, वह लोक में उत्कृष्ट स्थान प्राप्त करता है।

लगभग १००० वर्ष पहले राजा भोज ने भोपाल शहर का निर्माण किया था। राजा भोज मध्यकालीन भारत के महान् विभूतियों में से एक हैं। संस्कृत के विद्वानों के भरण पोषण एवं प्रोत्साहन में सदैव तत्पर राजा भोज महान् वास्तुविद् और ज्योतिषशास्त्र के मर्मज्ञ भी थे। साहित्य, ज्योतिष, आयुर्वेद आदि अनेक शास्त्रों में इन्होनें ८४ से अधिक ग्रन्थ लिखे हैं, जो प्रायः सभी प्रसिद्ध हैं। उस महान् ज्योतिर्विद् के स्मरण में उसी की महानगरी से प्रकाशित होने वाले इस पञ्चाङ्ग का नाम भोजराज पञ्चाङ्ग किया गया है।

यह पञ्चाङ्ग भोपाल को मुख्य मानकर बनाया गया है। तिथ्यादि का मान मानक (स्टैण्डर्ड टाइम) समय के अनुसार लिखा गया है, तथा तिथि एवं नक्षत्र का घटयादि मान भी दिया गया है। विषयावबोध की दृष्टि से विद्वानों के द्वारा लिखे गये पञ्चाङ्ग से सम्बन्धित विभिन्न शोधलेख भी इस अङ्क में समाविष्ट किये गये हैं, जो निश्चय ही जिज्ञासुओं के लिए उपयोगी होगें। इस पञ्चाङ्ग के निर्माण का उद्देश्य आम जनता तक इसे पहुंचना है। अतः इसमें अत्यन्त सरल हिन्दी भाषा का प्रयोग किया गया है, और प्रायः सभी अंगों के नामों को पूरा लिखा गया है। इस पञ्चाङ्ग में अपेक्षित सुधार से सम्बन्धित सभी सुझाव सादर आमन्त्रित हैं।

राजा भोज संस्कृत के महान् विद्वान् और पोषक थे। उन्होंने सन् १०१० के आसपास अनेक प्रकार के सांस्कृतिक एवं शैक्षिक प्रतिष्ठानों की स्थापना की। इनके अनेक ग्रन्थ आज भी प्रचलन में हैं। उनके द्वारा निर्मित समरांगणसूत्रधार वास्तुशास्त्र का एक महान् ग्रन्थ है। राजा भोज के बारे में जितना भी लिखा जाय वह कम ही होगा। पञ्चाङ्ग के प्रथम अंक में राजा भोज का विस्तृत परिचय एवं संस्कृत एवं संस्कृति के क्षेत्र में उनके योगदान के सम्बन्ध में विस्तृत विचार प्रस्तुत किया गया है। यह उस पञ्चाङ्ग परम्परा का नवम वर्ष है।

पञ्चाङ्ग की प्रासंगिकता

भारतीय परम्परा में पञ्चाङ्ग का महत्त्वपूर्ण स्थान है। वर्तमान में भी प्रायः अधिकतम भारतवासी प्रतिदिन किसी न किसी कार्यवश पञ्चाङ्ग के सम्पर्क में आते हैं। पञ्चाङ्गस्थ जानकारी का अनुसरण जनता आँख मूँदकर करती है। ज्योतिषशास्त्र की उपादेयता पूर्णतः पञ्चाङ्ग में सन्निहित है।

उद्देश्य - अधिकतम भारतीयों के लिये पञ्चाङ्ग एक आवश्यक एवं अनिवार्य उपकरण है। आज भारत में विभिन्न भाषाओं में १०० से ज्यादा पञ्चाङ्ग मुद्रित हो रहे है, किन्तु मध्ययुग से आज तक पञ्चाङ्गों में अनेकों वैमत्य चले आ रहे है। वस्तुतः पञ्चाङ्ग निर्माण की साम्प्रतिक विधाओं ने आधुनिक विज्ञान के प्रादुर्भाव से पहले ही जन्म ले लिया था। इस पञ्चाङ्ग निर्माण के अन्तर्गत अनेक वैज्ञानिक विषयों का अध्ययन आज तक आधुनिक विज्ञान के आधार पर नही हो पाया है, जो कि आवश्यक है।

प्राचीन मौसम विज्ञान के आधार पर अनेक सूचनायें पञ्चाङ्ग में दी जाती हैं। वे सूचनायें कृषिक्षेत्र से लेकर अनेक प्रकार के कार्यों में उपयोगी हो सकती हैं। यात्रा सम्बन्धी सूचनायें अत्यन्त वैज्ञानिक हैं। विवाहादि के मुहूर्त और मेलापक आदि अनेक विषय वैज्ञानिक एवं मनोवैज्ञानिक दृष्ट्या महत्त्वपूर्ण हैं। इन सभी सूचनाओं का पालन व आचरण अनेक प्रकार की समस्याओं को दूर करने वाला होता है।

व्रत पर्व एकादशी आदि का निर्णय - इस पञ्चाङ्ग में व्रतादि का निर्णय पूर्णरूप से शास्त्र एवं परम्परा के अनुरूप दिया गया है। एकादशी, गणेशचतुर्थी, संकष्टहरचतुर्थी, बुधाष्टमी आदि पर्वों के पालन में शास्त्रमर्यादा के अनुरूप पालन हो, साथ ही परम्परा का भी विरोध न हो, इसका ध्यान रखते हुये धर्मशास्त्रसम्मत निर्णीत विषय को प्रस्तुत किया गया है।

पञ्चाङ्ग के सामान्य भाग

पञ्चाङ्ग में विविधविधियों का समाहार होता है। जिसमें राजादिवर्णन, व्यक्तिगत एवं समष्टिगतफल, मुहूर्तादिवर्णन, मुहूर्तनिर्णय स्नान-दान आदि धर्मशास्त्रोक्त विषयों का निर्देश, चैत्रादि १२ मासों के २४ पक्षों का तिथ्यादिमान, सूर्योदय–सूर्यास्त, दिनमान, सूर्यादि ग्रहों का दैनिकमान, लग्नान्तकाल, तिथिनिर्णय, व्यक्तिगत जीवन को प्रभावित करने वाले अनेक अंशो का विवरण एवं मार्गदर्शन प्रस्तुत किया जाता है, जो परम्परा में आस्था रखने वाले प्रत्येक व्यक्ति के दैनिक जीवन में मददगार साबित होता है। इसी प्रकार विवाहमेलापक कैसे करना है, मांगलिक दोष क्या होता है और उसका परिहार कैसे होगा, रत्न पहनें तो क्या पहनें, अशौच का निर्णय कैसे होगा, शिशुजन्म लिया है तो शान्ति करनी पड़ेगी क्या, जन्मलिये बच्चे का क्या नाम रखेंगे, यात्रा किस दिन करें आदि अनेक विषयों का उल्लेख किया जाता है।

वर्तमान में विभिन्न पञ्चाङ्ग - महामहोपाध्याय बापूदेवशास्त्री जी ज्योतिष, प्राचीन गणित एवं पाश्चात्य गणित के प्रकाण्ड विद्वान् थे। उनके द्वारा उन्नीसवीं सदी के मध्यकाल में एक नयी प्रथा प्रारम्भ की गयी। जन मानस में उनके द्वारा प्रवर्तित पञ्चाङ्ग बहुत प्रचलित हो गया। सम्भवतः तब से पञ्चाङ्ग रचना की दो मुख्य धारायें बहने लगीं। वस्तुतः विषय का अवलोकन गम्भीरता से करने पर इस अन्तर का ज्ञान निष्पन्न हो जाता है, साथ ही यह भी सिद्ध हो जाता है, कि वास्तव में ये दो धारा नही है, बल्कि शास्त्रीय पद्धति ही है।

बापूदेव शास्त्री जी के द्वारा सम्पादित दृक्सिद्ध पञ्चाङ्ग का प्रथम संस्करण विक्रम संवत् १९३३ में अर्थात् सन् १८७६ में प्रकाशित हुआ था। जिसका सम्पादन काशीराज ईश्वरीनारायण सिंहजी की अनुमति से हुआ। इस सन्दर्भ में १९३३ विक्रम संवत् के ज्येष्ठ शुक्ल नवमी के दिन काशी में एक सभा का आयोजन हुआ जिसमें श्री शास्त्री जी नें १५-१६ पृष्ठों का अपना उपपादन पढ़ के सुनाया। इस सन्दर्भ में श्री शास्त्रीजी ने प्रमाण के रूप में वसिष्ठ संहिता का निम्नोक्त वचन प्रस्तुत किया। **यस्मिन् पक्षे यत्र काले येन दृग्गणितैक्यकम् दृश्यते येन पक्षेण कुर्यात् तिथ्यादिनिर्णयम्।।** (वसिष्ठसंहिता) इसका अर्थ इस प्रकार है। जिस किसी के मत में, जिस काल में, जिस गणित से दृष्टि और गणित इनका ऐक्य दिखाई पड़े, उसी मत से तिथि आदि के काल का निर्णय करना चाहिए।

पञ्चाङ्ग सुधार समिति के प्रयास

इस समस्या का समाधान निकालने के लिये स्वतन्त्र भारत के प्रथम प्रधानमन्त्री पं.जवहरलाल नेहरु के द्वारा एक पञ्चाङ्ग सुधार समिति का गठन सन् १९५२ में किया गया। जिसकी अध्यक्षता तत्कालीन CSIR के अध्यक्ष आचार्य मेघनाथ सहाय ने की थी। इस समिति ने सन् १९९५ में अपने विचार प्रगट किये तथा एफेमेरीज और नाटीकल-अल्मनाक बनाने का सुझाव प्रस्तुत किया। फलस्वरूप भारत मौसम विज्ञान विभाग ने सन् १९५८ से राष्ट्रिय पञ्चाङ्ग का प्रकाशन प्रारम्भ किया। वर्तमान में इस कार्य को स्वतन्त्र प्रतिपत्ति से युक्त Positional Astronomy Centre करने लगा।

इस समिति ने अनेक प्रस्तावों को पारित किया एवं भारत सर्वकार से इस सम्बन्ध में स्पष्ट निर्देश पञ्चाङ्गकारों को देने के लिए कहा गया है। इन सुझावों को बहुत से लोगों ने स्वीकार किया तो बहुत से लोग इसका विरोध भी किये। उस समिति के पास कुल ६० पञ्चाङ्गकर्ता अपने पञ्चाङ्ग भेजें। बाद में समिति के द्वारा सुधार हेतु सुझाव मांगने पर केवल ४८ लोग अपने सुझाव भेजें। यह समिति मुख्यरूप से १३ सुझाव सर्वकार के समक्ष प्रस्तुत की थी। इस समिति में डा.के.एल दफ्तरि एवं डा.गोरखप्रसाद भी थे, जो स्वयं पञ्चाङ्गकर्ता भी थे, किन्तु इन तमाम प्रयासों के बावजूद भी यह समस्या किसी समाधान की ओर नहीं पहुँच पायी थी। ग्रहसाधन वेधप्रक्रिया की निरन्तरता को अनिवार्यतः अपेक्षा करता है, जो आज के समय में न के बराबर है। ग्रहों का साधन सिद्धान्तोक्त विधान से बनाने चाहिये और उनको दृक्तुल्य भी बनाना चाहिये। आज यह बात स्पष्ट है, कि प्राचीन सिद्धान्तों से बने ग्रह कुछ शिथिलता को प्राप्त कर रहे हैं। यही कारण है कि ग्रहलाघवकार को ग्रहलाघव ग्रन्थ बनाने की आवश्यकता पड़ी। कालक्रम में उत्पन्न होने वाली शिथिलता को दूर करने की बात प्रायः हरेक सिद्धान्तकार प्रस्तुत किये थे। अतः दृक्तुल्य ग्रहों का साधन करना ही इस समस्या का समाधान है। दूसरी विकट समस्या है, अयनांश की। इस समस्या का भी निदान वराहमिहिर आदि प्राचीन आचार्यों के द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्तों के आधार पर साधित अयनांश को अपना कर एक प्रयास किया जा सकता है।

आकाश का अवगमन एवं आकाशस्थ पिण्डों का वेध आदि प्रक्रिया प्रारम्भ कर तदनुसार स्वकीय ग्रहगणित को प्रामाणिक बनाना चाहिये, क्योंकि प्रत्यक्ष होने के कारण वाद-विवाद का अवसर ही नहीं मिलेगा। एक बार गवेषणा की प्रथा के अनुरूप सिद्ध करके तदनुरूप संस्कार परम्परागत विधिविधानों में करना ही एक मात्र विकल्प है। इस सन्दर्भ में प्रमाणों की कमी नही है। नलिकादियन्त्रों के आधार पर ग्रहों के वेध करके बीजसंस्कार करने का सुझाव प्रायः सभी आचार्यों ने प्रस्तुत किया है।

ज्योतिष में ग्रहवेध अभाव में ग्रहस्पष्टीकरण करना सम्भव नहीं है। इससे यह बात भी पुष्ट हो जाती है, कि आज के विसंगतियों का प्रधान कारण वेधपरम्परा का छूटना ही है। विभिन्न स्त्रोतों से ग्रह प्राप्त किये जाते है। साथ ही परम्परागत ग्रहों का भी साधन किया जाय और दोनों का वेध के द्वारा पुष्टि कर परम्परागत ग्रहों में अपेक्षित संस्कार किया जाय। उसी परम्परा को आगे ले जाने के उद्देश्य से श्रीभोजराजपञ्चाङ्ग का प्रारम्भ किया गया। इस महनीय पञ्चाङ्ग कार्य में **डॉ.पी.वी.बी.सुब्रमण्यम, प्रो.वासुदेवशर्मा, डॉ. अशोक थपलियाल, प्रो.भारतभूषण मिश्र** आदि आचार्यों का भी महत्त्वपूर्ण अवदान रहा है। एतदर्थ सम्पादकमण्डल इनके प्रति कृतज्ञता अभिव्यक्त करता है।

पञ्चाङ्गःपूर्वपीठिका

कलिगताब्द	: 5120	ख्रिस्त सन्	: 2019 - 2020
फसली	: 1426 - 27	शालिवाहन शक	: 1941
हिजरी	: 1440 - 41	विक्रम संवत्	: 2076
सप्तर्षिसंवत्	: 5095	श्री महावीरजैननिर्वाण संवत्	: 2544-2545
श्री बुद्धसंवत्	: 2642-43	भारतीय गणराज्यवर्ष	: 69- 70

वर्षादिकृत्य

वर्षारम्भ के दिन प्रातःकाल में दन्तधावनादि कार्योपरान्त मंगलस्नान करके सन्ध्यादि कृत्य पूरा करने के बाद नववस्त्र धारण करके ग्रहादि का पूजन करना चाहिए। साथ ही बन्धुजन, ब्राह्मण और पितरों को मिष्ठान्नादि से सन्तृप्त करना चाहिए।

प्राप्ते नूतनवत्सरे प्रतिगृहे कुर्याद्ध्वजारोपणम्। स्नानं मङ्गलमाचरेद् द्विजवरैः सार्धं सुपूजोत्सवम्।। देवानां गुरुयोषिताञ्च विभवाऽलङ्कारवस्त्रादिभिः। सम्पूज्यो गणकः फलञ्च श्रुणुयात्तस्माच्च लाभप्रदम्।। परिभद्रस्य पत्राणि कोमलानि विशेषतः। सुपुष्पाणि समानीय चूर्णं कृत्वा विधानतः।। मरीचिर्लवणं हिंगुजीरकेण च संयुतम्। अजमोदयुतं कृत्वा भक्षयेद् रोगशान्तये।। यद् वर्षादौ निम्बसुमं शर्करामलघृतैर्युतम्। भक्षितं पूर्वयामे स्यात् तद्वर्षं सौख्यदायकम्।।

संवत्सरादि फलश्रवण का माहात्म्य

राज्यं स्यादचलं नृपश्रवणतो मन्त्रीश्रवात् कौशलम्। धान्येशाद् कमला स्थिरा च सुरसा वाणी भवेन्मेघपात्।। धर्मे बुद्धिरधिष्ठिता रसपतेर्दीर्घायुषत्वं भवेत्। सस्येशाद् विमला मतिः शुभकरी वर्षावली श्रूयताम्।। अर्थात् वर्षारम्भ में संवत्सर के राजा का फल सुनने से राज्य स्थिर होता है। मन्त्री का फल सुनने से कुशलता बढती है। धान्येश का फलश्रवण से लक्ष्मी स्थिर होती है, मेघाधिपति के फल श्रवण से वाणी रम्य होती है। रसपति के फलश्रवण से धार्मिक बुद्धि होती है, एवं सस्येश के फलश्रवण से दीर्घायु मिलती है। अतः शुभ एवं कल्याणकारी वत्सरावली का श्रवण करना चाहिये।

संवत्सरादि फलश्रवणविधि

उदङ्मुखः प्राङ्मुखो वा दैवज्ञस्य तु सन्निधौ। विघ्नेशं भारतीं खेटान् दैवज्ञं ब्राह्मणान् गुरून्।। सम्पूज्य वत्सरफलं साङ्गोपाङ्गं यथाक्रमम्। विकासवदनो भूत्वा ब्रह्मणो जन्मतः फलम्।। अब्दाधीशचमूनाथसस्यपानां बलाबले। तत्कालग्रहचारांश्च सम्यक् ज्ञात्वा फलं लभेत्।। अर्थात् दैवज्ञ के समीप में पूर्वमुख वा उत्तरमुख होकर गणेश, सरस्वती, नवग्रह, गुरु, ब्राह्मण आदि का पूजन करके सांगोपांग वर्ष का फल सुनना चाहिए।

ब्रह्मायुर्निरूपणम् - श्रीमद्भगवतो विष्णोः नाभिकमलोद्भवस्य ब्रह्मणो ब्राह्ममानेन परमायुः १०० वर्षाणि। ३११०४०००००००००सौरवर्षाणि ब्रह्मणः परमायुः। ब्रह्मणः जन्मादि गतसौरवर्षाणि १५५५२१९७२९४९१२०, कल्पादितः गतसौरवर्षाणि १९७२९४९१२०, सृष्ट्यादितः गतवर्षाणि १९५५८८५१२०, अथ ब्रह्मणो द्वितीयपरार्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे सप्तविंशतिमहायुगानि व्यतीतानि। अष्टाविंशमहायुगस्य च कृतत्रेताद्वापराख्ययुगचरणत्रयं व्यतीतम्।

कृतयुगवर्णनम् - कार्तिकशुक्लनवम्यां प्रथमयामे श्रवणनक्षत्रे वृद्धियोगे कृतयुगोत्पत्तिः। सन्ध्यासन्ध्यांशसहितं तन्मानम् १७२८००० सौरवर्षाणि। अस्मिन् युगे श्रीविष्णोः मत्स्यकच्छपवाराहनृसिंहाः चत्वारोऽवताराः। तत्र पापम् ० पुण्यम् २०। **त्रेतायुगवर्णनम् -** वैशाखशुक्लतृतीयायां द्वितीययामे रोहिणीनक्षत्रे शोभनयोगे त्रेतायुगोत्पत्तिः। सन्ध्यासन्ध्यांशसहितं तन्मानम् १२,९६००० सौरवर्षाणि। अस्मिन्युगे श्रीविष्णोः वामनपरशुरामरामास्त्रयोऽवताराः। तत्र पापम् ५ पुण्यम् १५। **द्वापरयुगवर्णनम् -** माघकृष्णामावस्यायां तृतीययामे धनिष्ठानक्षत्रे वरीयानयोगे द्वापरयुगोत्पत्तिः। सन्ध्यासन्ध्यांशसहितं तन्मानम् ८६४००० सौरवर्षाणि। अस्मिन्युगे श्रीविष्णोः श्रीकृष्णबलरामावतारौ। तत्र पापम् १० पुण्यम् १०। **कलियुगवर्णनम् -** भाद्रपदकृष्णत्रयोदश्यां निशीथे कृत्तिकानक्षत्रे व्यतीपातयोगे कलियुगोत्पत्तिः। सन्ध्यासन्ध्यांशसहितं तन्मानम् ४,३२,००० सौरवर्षाणि। अस्मिन्युगे श्रीविष्णोः बुद्धाऽवतारोऽभवत्। कलियुगस्य ८२१ वर्षावशेषकाले कल्क्यवतारो भविष्यति। तत्र पापम् १५ पुण्यम् ५। सम्प्रति कलेः ५११९ सौरवर्षाणि गतानि। भोग्यवर्षाणि ४२६८८१ कलिसंवत् ५१२०। **बार्हस्पत्यवर्षफलम् -** तत्र बार्हस्पत्यमानेन प्रभवादिषष्ट्यब्दानां मध्ये **परिधावी** नाम संवत्सरः, एषः एव सङ्कल्पादौ वर्षान्तं यावत् प्रयोक्तव्यः। तत्र मेषार्कसमये गतमासादयः ०/२३/१९/४० भोग्यमासादयः ११/०६/४०/२०।।

परिधावी संवत्सर का फल - शुभफले परिधाविन्यतुलितबहुसस्यवृष्टिस्स्यात्। निखिलधरामयरहिता मध्यमदेशस्य नाशस्स्यात्।। अनर्घामय रोगेभ्यो भीतिरीतिर्निरन्तरम्। संवत्सरे परिधाविन्यर्घवृष्टिस्तु मध्यमा। परिधावी नामक संवत्सर में बहुत अनाज और पर्याप्त वृष्टि होती है तथा सम्पूर्ण पृथ्वी पर प्राणी नीरोगी रहते हैं, मध्यदेश का नाश होता है। मन्दी, बीमारी, रोगादि से भय और ईतियों से फसल को नुकसान होता है।

गुरूदयाब्दफलम् - गुरुणा सहोदयनक्षत्रवशाद्वर्षं ज्येष्ठाब्दः। तस्य फलम् - **ज्येष्ठाब्दे धर्ममार्गस्था पीडिताश्च नृपाः परैः। वृक्षगुल्मलतावृद्धिर्भवेत् सस्याविनाशनम्।।** ज्येष्ठा नक्षत्र में गुरु का उदय होने के कारण यह वर्ष ज्यैष्ठाब्द है। इस वर्ष में धर्म मार्ग पर चलने वाले लोग पीडित रहते हैं तथा राजाओं में भी वैमनस्य की भावना रहती है। वृक्ष, गुल्म, लता आदि में वृद्धि होती है तथा अनाज का विनाश होता है।

वर्षाधिपति व फल - इन्द्राग्निदैवं दशमं युगं यत्तत्राद्यमब्दं परिधाविसंज्ञम्। इन्द्राग्नि दैव दशम युग है जिसका प्रथम वर्ष परिधावी संज्ञक है। इसके देवता रुद्र हैं।

संवत्सरस्य नृपः - संवत्सर का राजा शनि है। इसका वाहन भैंसा है। वर्ष का स्वामी शनि जिसका का फल - **मध्यानि सस्यानि विचित्र वृष्टिः चोराहवप्रोद्धत राजकोपः। यदुत्तरं सस्यचयं कुधान्यं सम्पूर्णमस्मिन् रविजेऽब्दनाथे।।** राजा शनि के वर्षेश होने से मध्यम धान्योत्पादन और विचित्र वृष्टि होती है तथा चोरकार्य में वृद्धि, रोग का बाहुल्य तथा राजाओं में वैमनस्य रहता है। कुधान्य तथा काले अनाज का उत्पादन रहता है। कुधान्य तथा काले अनाज का उत्पादन अधिक मात्रा में होता है। **नागः - द्वादशनागानां मध्ये नरेन्द्र वज्रदंष्ट्रः।** द्वादश नागों में वज्रदंष्ट्र नामक नाग में पर्याप्त वृष्टि नहीं होती है, खेती सूखी रहती है। **रोहिणीवासः - समुद्रे, फलम् - अतिवृष्टि समयनिवासः - मालीगृहे।** समुद्र में रोहिणीवास होने पर अत्यधिक वृष्टि होती है तथा मालीगृह में रोहिणी का वास होता है। **वायु, तटित्, समुद्र, शेष - सप्तवायूनां मध्ये विहवः वायुः। फलम् - विहवो वृष्टिकृत सदा।** सप्तवायु के मध्य में विहवनामक वायु है जो सदा वृष्टि करने वाली है। **तटित्संज्ञकविद्युत् - निश्चला तु महार्घदा।** निश्चला नामक तटित्संज्ञक में महार्घ फल होता है। तत्र चतुर्विध समुद्राणां मध्ये - उदधिः, तस्य फलम् - सस्यवृद्धिकृत् अर्थात् चतुर्विध समुद्रों के मध्य में उदधि नामक समुद्र है, जिसमें सस्यवृद्धि होती है। गर्जितानां मध्ये - सौम्याख्याः, तस्य फलम् - सौम्याख्ये चातिवृष्टिः। सौम्याख्या नामक गर्जित में अतिवृष्टि होती है। अष्टभूवाहक शेषानां मध्ये - कुलिकाख्यः, तस्य फलम् - कुलिकाख्ये भूमिवहे सर्वसस्य विनाशनम्। अर्थात् कुलिकाख्य भूमिवह में सभी अनाज का नाश होता है।

पशुपालक और उसका फल - बलरामो बुधे शनौ। अर्थात् इस वर्ष का पशुपालक शनि है। इस कारण सभी देशों में सुवृष्टि होती है तथा सभी प्रकार का धान्योत्पादन होता है। तथा मध्यदेश में सुभिक्ष होता है। **सुवृष्टिस्सर्वदेशानां सर्वसस्यसमद्यः। मध्यदेशे सुभिक्षञ्च रामे तु पशुनायके।।**

राजा मन्त्री आदि की निर्णयविधि - चैत्रस्य शुक्लप्रतिपत्तिथौ यो वारः स उक्तो नृपतिस्तदब्दे। मेषप्रवेशः किल भास्करस्य यस्मिन्दिने स्यात् स तु राजमन्त्री।। कर्कसङ्क्रान्तेर्यो वारः स अग्रधान्येश्वरः। धनुसङ्क्रान्तेर्यो वारः स पश्चिमधान्येश्वरः।। कर्कप्रवेशे दिनपस्य वारः सस्यस्य नाथो मुनिभिः पुराणैः। आर्द्राप्रवेशे दिननाथ उक्तो मेघाधिपः प्राक्तनविप्रवर्यैः।। सिंहसङ्क्रान्तिवारेशो दुर्गेशः परिकीर्तितः। कन्यासङ्क्रान्तिदिनपो धनेशः परिकीर्तितः।। तुलाप्रवेशेऽहनि यस्य वारो रसाधिपोऽयं नियतः प्रदिष्टः। चापप्रवेशे दिवसाधिनाथे धान्याधिपो वै कथितो मुनीन्द्रैः।। नक्रसङ्क्रान्तिदिनपः फलेशः परिकीर्तितः।। **राजादिश्रवणमाहात्म्यम् -** यशःश्रृणोति मधुशुक्लपक्षके वर्षनाथसचिवादिकं फलम्। प्राप्नुयाद्दुरितमुक्तविग्रहः चायुरर्थमतुलं यशस्सुखम्।।

राजा शनि फलम् - मध्यानि सस्यानि विचित्रवृष्टिः चोराहव प्रोद्धतराजकोपः। यदुत्तरं सस्यचयं कुधान्यं सम्पूर्णमस्मिन् रविजेऽब्दनाथे। राजा शनि होने से मध्यम धान्योत्पादन होता है, विचित्र वृष्टि होती है। चोर, बीमारी तथा राजाओं में वैमनस्य होता है। कुधान्य अधिक मात्रा में उत्पन्न होती है।

मन्त्रि सूर्यफलम् - राज्ञामन्योन्यवैरित्वमनावृष्टिश्च संगरः। अधर्मनिरता मर्त्या भास्करेऽब्दे तु मन्त्रिणि।। मन्त्री सूर्य होने से राजाओं अथवा प्रशासकों में शत्रुता होती है अनावृष्टि की सम्भावना रहती है। सभी मनुष्य अधर्म में निरत रहते हैं।

अर्घेश शनिफलम् - वृष्टिस्तु मध्याऽर्घपतौ शनौ चेदातङ्कचोराग्नि युता मही स्यात्। भयं भवेन्न समृद्धिरल्पा कृष्णानि धान्यानि फलन्ति भूमौ। अर्घेश शनि होने से मध्यमवृष्टि होती है, पृथ्वी आतंकवादियों तथा चोरों से ग्रस्त रहती है तथा अग्निभय रहता है, पृथ्वी पर समृद्धि अधिक होती है तथा कृष्ण कुधान्य का उत्पादन अधिक होता है।

सस्येश मङ्गलफलम्- रक्तशालिमहाशालितुवरी चणकादयः। रक्तभूमिस्सुफलिता भौमेव सस्याधिपे सति।। मंगल सस्येश होने से रक्तादि दालों का उत्पादन एवं चनों आदि की फसल अच्छी होती है तथा लालभूमि में फल अधिक मात्रा में होते है। **सेनाधिप शनिफलम्-** अधर्मिणो नृपास्सेनाहीना पापकृतो नराः। परस्परं क्षोभकृतस्सेनाधीशे शनैश्चरे। अर्थात् शनि सेनाधिप होने पर राजा अधार्मिक तथा सेनाहीन होते हैं। मनुष्य पापकार्यों में निरत रहते है तथा लोगों में परस्पर क्षोभ होता है। **रसेश गुरुफलम्-** सुवृष्टिस्सर्वसस्यानां फलिता वृक्षजातयः। सदारोग्यं सुभिक्षं च जीवे यदि रसाधिपे।। गुरु रसेश होने से सुवृष्टि, अच्छा धान्योत्पादन तथा सभी फल अच्छे फलते हैं, सदा आरोग्य एवं सुभिक्ष होता है। **धान्येशचन्द्रफलम्-** बहुक्षीरप्रदा गावस्सर्वे व्याधि विवर्जिताः। सुभिक्षं च महद्वर्षं चन्द्रे धान्याधिपे सति।। चन्द्र धान्येश होने से सभी गायें खूब दूध देती हैं तथा व्याधिरहित होती है तथा पर्याप्त सुभिक्ष होता है। **नीरसेशमंगलफलम्-** नीरसपे क्षितितनये नीरसवृक्षाश्च पुष्पफलिताः स्युः। स्वर्णमणिरक्तचन्दन काष्ठादीनां महार्घता सन्।। नीरसेश मंगल होने से नीरसवृक्ष अधिक फलते हैं तथा स्वर्ण-मणि-रक्तचन्दन- लकड़ी आदि में महार्घता होती है।

मेघेशशनिफलम्- मध्यसस्यमनर्घश्च खण्डवृष्टेः प्रजायते। कृष्णधान्यसमद्धिश्च मेधाधीशे शनैश्चरे।। शनिमेघेश होने से मध्य धान्योत्पादन अनर्घता तथा खण्डवृष्टि होती है। काली धान्योत्पादन अधिक मात्रा में होता है।

राजा मन्त्री अर्घेश सस्येश सेनाधिप रसेश धान्येश नीरसेश मेघेश
शनि सूर्य शनि मंगल शनि गुरु चन्द्र मंगल शनि

अथ सूर्यस्यार्द्रानक्षत्रे प्रवेशकालविचारः- प्रवेशकाले यदि रौद्रभस्य वृष्टिर्भवेदीतिरनर्घता च। शेषेषु पादत्रितयेषु भीतिरत्यल्पवृष्टिर्महती गदा च।। आर्द्रा नक्षत्र में सूर्य के प्रवेश करते समय यदि वर्षा होती है तो अनर्घता अर्थात् मन्दी जानना चाहिए। आर्द्रा नक्षत्र के द्वितीय चरण में वृष्टि होने पर भय, तृतीयचरण में अत्यल्पवृष्टि तथा चतुर्थचरण में भयंकर रोग की

सम्भावना बनती है। आर्द्रा प्रवेशे वृष्टिरश्चेद्दिवा वा यदि वा निशि। स्तोकवृष्टिरनर्घत्वमवृष्टौ सस्यसम्पदः।। आर्द्रायाः प्रथमे पादे यदि वर्षति वासवः। तुषारमल्पवृष्टिः स्यादित्येव केचिदूचिरे।। सूर्ये मेषगते वृष्टिरार्द्रायाश्चाद्यपादके एकादशसु ऋक्षेषु त्रिपक्षे वृष्टिनाशनम्।।

आर्द्राप्रवेशकालफलविचारः

विक्रम संवत् २०७६ शाके १९४१ आषाढमासे कृष्णपक्षे पञ्चम्यां तिथौ धनिष्ठानक्षत्रे विष्कुम्भ योगे तैतिलकरणे शनिवासरे २२ जून २०१९ दिनाङ्के २९ घटी १० पल (११ घं. ४० मिनट) इष्टकाले वृश्चिकलग्ने कुम्भराशौ स्थिते चन्द्रे धनुनवांशे च सूर्यस्यार्द्रानक्षत्रे प्रवेशः। पञ्चम्यां शुभदो भवेत्। मन्दे मन्दफलप्रदः। वासवर्क्षे तु धरणी सम्पूर्णफलदायिनी। विष्कुम्भे जलसम्पूर्णा। तैतिले शुभकृत्। वृश्चिके समरं भवेत्। दिवार्द्रा सस्यनाशाया। षट्युगमे क्षेमसुभिक्षे। षष्ठे तु मण्डले तिष्ठन् सभिक्षारोग्यदायकः।

आर्द्राप्रवेश कालिक ग्रहस्थिति

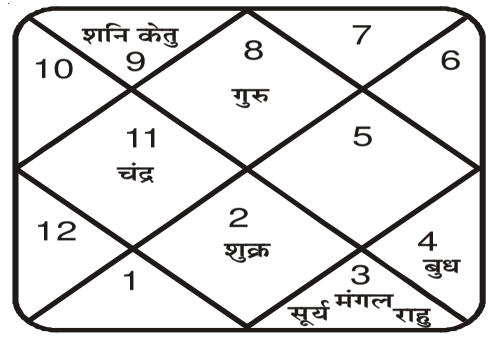

आर्द्रा प्रवेश कालिक वृश्चिक लग्न है, केन्द्र में गुरु वृश्चिक राशि में शुभग्रह शुक्र से दृष्ट है अतः उत्तम वर्षा का योग है। **आर्दाप्रवेशे यदि भास्करस्य चन्द्रे त्रिकोणे यदि केन्द्रगे वा। जलालयस्थे शुभवीक्षिते वा सम्पूर्णमेघा वसुधा भवेच्च।।** दिन में आर्द्रा प्रवेश हो से अनाज का नाश होता है। **दिवार्द्रा सस्यनाशाय** तथा **मन्दे मन्दफलप्रदः** शनिवार के दिन आर्द्रा प्रवेश धान्योत्पादन में न्यूनता रहती है किन्तु काली धान्योत्पादन में पर्याप्त वृद्धि होती है। सूर्य, राहु, मंगल का शनि के साथ समसप्तक योग एवं शनि की चन्द्र पर पूर्णदृष्टि होने के कारण कुछ प्रान्तों में पर्याप्त वृष्टि तथा कुछ प्रान्तों में वृष्टि की न्यूनता का सामना करना पड़ेगा। चन्द्र, गुरु व शुक्र का केन्द्र में स्थित होने के कारण वृष्टि की स्थिति अच्छी रहेगी।

मेघादि निर्णय और फल - अस्मिन्नब्दे आवर्तादिननमेघानां मध्ये कालद्रोणो नामको मेघः। तस्य फलम् - मध्यदेशे सुवृष्टिश्च सर्वसस्याभिवर्धनम्। शुभाभिवृद्धिर्लोकानां कालाभ्रे तु फलं स्मृतम्। **आढकादि निर्णय और फल**- एकमाढकम् तत्र **आढक प्रमाणम्** - नवभागास्समुद्रेषु पर्वतेषु च पञ्च च। धरण्यां सप्तभागास्स्युः एवं वर्षति च त्रिधा।।

सप्तफणिचक्रं सप्तनाडीचक्रं वा

नाडीनाम	स्वामी	सौम्ययाम्यादिसंज्ञा	नक्षत्राणि
चण्डा	शनि	याम्य	कृत्तिका, विशाखा, अनुराधा, भरणी
वाता	रवि	याम्य	रोहिणी, स्वाती, ज्येष्ठा, अश्विनी
दहना	मंगल	याम्य	मृगशिरा, चित्रा, मूल, रेवती
सौम्या/शुद्धा	गुरु	मध्यम	आर्द्रा, हस्त, पू.षा, उ.भा.
नीरा/धीरा	शुक्र	सौम्य	पुनर्वसु, उ.फा., उ.षा., पू.भा.
जला	बुध	सौम्य	पुष्य, पू.फा., अभिजित, शतभिषा
सुधा	चन्द्र	सौम्य	आश्लेषा, मघा, श्रवण, धनिष्ठा

आर्द्रा प्रवेशकालिकग्रहाणां नाडीसु संस्थितिवशाद् फलविचारः

ग्रहाः	नाडीनाम	संज्ञा	ना.स्वामी	फलम्
सूर्य	सौम्या	मध्यम	गुरु	मध्यमजलवर्षणम्
चन्द्र	सुधा	सौम्य	चन्द्र	मध्यमजलवर्षणम्
मङ्गल	नीरा	सौम्य	शुक्र	वृष्टिदः
बुध	नीरा	सौम्य	शुक्र	वृष्टिदः
गुरु	वाता	याम्य	रवि	वायुभयम्
शुक्र	वाता	याम्य	रवि	वायुभयम्
शनि	सौम्या	मध्यम	गुरु	मध्यमजलवर्षणम्

ग्रहोदयास्तादि में विशेष वृष्टिनिर्णय

प्रायो ग्रहाणामुदयास्तकाले समागमे मण्डलसंक्रमे च। पक्षद्वये तीक्ष्णकरायनान्ते वृष्टिर्गतेऽर्के नियमेन चार्द्रात्।। प्रायः भौमादि पञ्चताराग्रहों के सूर्य सान्निध्य के कालांश वश होने वाले उदय एवं अस्त काल में, चन्द्रमा के साथ ग्रहों के समागम में सङ्क्रान्ति काल में, दोनो पक्षों के आदि में, उत्तरायणारम्भ एवं दक्षिणायनारम्भ में आर्द्रा नक्षत्र में सूर्य के प्रवेश करने के दिन वर्षा होने की सम्भावना रहती है। **समागमे पतति जलं ज्ञशुक्रयोर्ज्ञजीवयोर्गुरुसितयोश्च संगमे। यमारयोः पवनहुताशजं भयं यदि द्वयोरसहितयोश्च सद्ग्रहैः।।** चन्द्र के साथ भौमादि ग्रहों के समागम में, बुध और शुक्र, बुध और गुरु तथा गुरु और शुक्र की युति होने पर भी वर्षा की सम्भावना बनती है। यदि मङ्गल व शनि की युति हो रही हो एवं अन्य कोई शुभग्रह उनके साथ न हो तो वायु एवं अग्नि से भय उत्पन्न होता है।

ग्रहकृत् वृष्टियोग - वर्षा ऋतु में शुक्र से सप्तम चन्द्र हो और शुभ ग्रहों की दृष्टि हो अथवा शनि से पाँचवें, सातवें घर या नवम में चन्द्र हो तो वर्षा होने का योग होता है। जब सब ग्रह सूर्य के पीछे होकर आगे हो जायें तो पृथ्वी पर जल की वर्षा हो। आगे की राशि पर मङ्गल हो और पिछली राशि पर सूर्य हो तो वर्षा नहीं होती। वर्षाकाल में ४, १०, १२ लग्न में शुक्र हो या शुक्लपक्ष में शुक्र केन्द्र में हो तथा शुक्र पर शुभ दृष्टि हो तो इच्छानुसार जल वर्षा। शुक्र पर पाप दृष्टि हो तो अल्प वर्षा हो। चन्द्रमा से यदि ५,७ स्थान में मङ्गल शनि हो तो प्रचण्ड वायु युक्त वर्षा भूमि पर होती है। जलराशि में स्थित चन्द्रमा हो सप्तम या नवम में शनि या मङ्गल हो तो अधिक वर्षा होती है। सूर्य के आगे स्थित ग्रहान्तरित शुक्र प्रचुर वृष्टि करता है। इसी प्रकार सूर्य के आगे या पीछे स्थित बुध एवं शुक्र अत्यन्त समीपस्थ हो तो प्रचुर वृष्टिकारक होते हैं। शुक्लपक्ष का चन्द्र जलराशि में हो या प्रश्नलग्न के केन्द्र में सूर्य से सप्तम शुक्र व शनि यथाक्रम से होवें या चौथे घर में और आठवें घर में होंवे या लग्न से इन्हीं घरों में होवें या लग्न से ३, १०, ११ घर में हो तो वर्षाकाल में वर्षा होती है। बुध शुक्र का या गुरु शुक्र का या बुध गुरु का समागम हो तो निःसन्देह वर्षा होगी। वर्षाकाल में चन्द्र यदि जलराशि कर्क, कुम्भ, मीन, कन्या और मकर के उत्तरार्ध में लग्न या केन्द्र में हो शुभग्रहों की दृष्टि हो तो बहुत वर्षा होती है। यदि चौमासे के दिन में चन्द्र को शुभग्रह देखें या शुक्र ९, ५, ७ राशि में आवे तो उस दिन वर्षा होगी।

शनिचारवश फल - इस वर्ष शनि वर्षारम्भ से ०४ जून २०१८ तक ज्येष्ठा नक्षत्र में संचरण करेगा। तथा ५ जून २०१८ से २६ नवम्बर २०१८ तक मूल नक्षत्र में संचरण करेगा। २७ नवम्बर २०१८ से वर्षान्त तक पूर्वाषाढा नक्षत्र में रहेगा। ज्येष्ठा,मूल और पूर्वाषाढा में संचरण होने से शासकवर्ग, पुरोहित व शिक्षक वर्ग, उत्तरपूर्वी भारत के लोगों एवं सैनिकों को कष्ट तथा फल औषधि इत्यादि की हानि होती है। अङ्ग, वङ्ग, कौसल,गिरिव्रज, मगध, पौण्ड्र, मिथिला के लोगों को कष्ट होता है। अपि च- **ज्येष्ठासु नृपपुरोहितनृपसत्कृतशूरगणकुलश्रेण्यः। मूले तु काशिकोसलपाञ्चालफलौषधीयोधाः।। अपि च - मन्दे स्थिते धन्विति वृष्टिहानिः स्याद्भूपतीनां कलहो न चार्धः। पाञ्चालकाशीद्रुरुकोसलाश्च नष्टाश्च काश्मीरकलिङ्गवङ्गाः।। अपि च - मूले तु काशिकोसलपाञ्चालफलौषधीयोधाः। आप्ध्येऽङ्गवङ्गाकोसलगिरिव्रजामगधपौण्ड्रमिथिलाश्च। उपतापं यान्ति जना वसन्ति ये ताम्रलिप्यां च।।**

अथ वर्षधान्यप्रमाणानि - वर्षम् - १७, **धान्यम्** - ७, **शीतम्** -०७, **तृणम्** - १३, **उष्णम्** - १७, **मारुतः** - १३, **प्रजावृद्धि** - १५, **प्रजाक्षय** - १५, **राजविडवरम्** - ११, **क्षुधा** ५, **तृषा** १३, **निद्रा** १३, **आलस्यं** ७, **उद्यमः** १३, **शान्तिः**१५, **क्रोधः** १३, **दम्भः** ५, **लोभः** ३, **मैथुनं** १५, **रसोत्पत्तिः** ९, **फलानि** १३, **उत्साहः**११, **उग्रः** ०७, **पापं** ७, **पुण्यं** १३, **व्याधयः** - १३, **व्याधिनाशः** - ११, **आचारः** - ११, **अनाचारः** - १७, **मरणानि** - १५, **जन्मानि** - ०७, **देशोपप्लवः** - १३, **देशस्वास्थ्यम्** - ०१, **चोरभयम्** - ७, **चोरनाशनम्** - १७, **अग्निभयम्** - १५, **नाशः** - १, **उद्भिजः** ९, **जरायुजः** ३, **अण्डजः** ११, **स्वेदजः** ५।

सौरार्घविचारः - सूर्यसङ्क्रान्तिवारर्क्षतिथियोगो नवैर्हृतः। एकादिशेषे त्वत्यर्घसमशून्यार्घकाः क्रमात्।। इत्यनुसारं मेषार्कमासे (सौर वैशाखे) अत्यर्घः, वृषार्कमासे (सौरज्येष्ठमासे) अत्यर्घः, मिथुनार्कमासे (सौराषाढमासे) शून्यार्घः, कर्कार्कमासे (सौरश्रावणमासे) शून्यार्घः, सिंहार्कमासे (सौरभाद्रपदमासे) अत्यर्घः, कन्यार्कमासे (सौर-आश्विनमासे) समर्घः, तुलार्कमासे (सौरकार्त्तिके) अत्यर्घः, वृश्चिकार्कमासे (सौरमार्गशीर्षमासे) शून्यर्घः, धन्वर्कमासे (सौरपौषमासे) शून्यार्घः, मकरार्कमासे (सौरमाघमासे) समर्घः, कुम्भार्कमासे (सौरफाल्गुनीमासे) शून्यार्घः, मीनार्कमासे (सौरचैत्रमासे) समर्घः इति विजानीयात्।

मकरसङ्क्रान्तिविचारः

मकरसङ्क्रान्तिमाहात्म्यम् - मकरस्थे तीक्ष्णभानौ धान्यदानं करोति यः। तेजस्वी रूपवान् मर्त्यस्सार्वभौमः प्रजायते। सङ्क्रान्तौ यानि दत्तानि हव्यकव्यानि भारत। तानि दत्तं ददात्यर्कः पुनर्जन्मनि जन्मनि।। सङ्क्रान्ति पुरुषोत्पत्तिकाले दानं स्वशक्तितः। फलं कांस्यादि धान्यादि दीयते दुष्टनाशभाक्। तिलस्नायी तिलोद्वर्ती तिलहोमी तिलोदकी। तिलभुक् तिलदाता च षट्तिलाः पापनाशकाः।। फलानि मूलान्यजिनं सुवर्णं ग्रामांशुकाज्यं सतिलेक्षुगावः। धान्यं खराशौ मकरप्रवेश एतानि दानानि विशेषकानि।।

मकरसङ्क्रान्तिकालविवरणम्- विक्रम संवत २०७६ शाके १९४१ उत्तरायणे शिशिरर्तौ माघकृष्णपक्षे पञ्चमीतिथौ पूर्वाफाल्गुनीनक्षत्रे शोभनयोगे भौमवासरे श्रीमार्तण्डलोदयादिष्टकालः ४७/३० तुला लग्नोदये निरयणमकरादौ भारतीयमनकसमयानुसारं सूर्यस्य प्रवेशः। खीष्टदिनाङ्कानुसारम् १४/०१/२०२० रात्रौ २६/०८ वादने मकर संक्रमणकालः। संक्रान्तिपुण्यकालः - १५/०१/२०२० दिनाङ्के सम्पूर्णदिनम्।

कृष्णपक्षे मकरसङ्क्रान्तिफलम् - दिनफलम् - पञ्चम्यां जयः। भौमवासरे जगतस्सुदुःखम्। मतान्तरेण रविमन्दारवारेषु यदा संक्रमते रविः। तस्मिन् मासि भयं विन्द्यात् दुर्भिक्षावृष्टिरस्करैः।। निशि- रात्रिचरान् हनेत्। **सङ्क्रान्तिनाम** - महोदरी। **स्नानम्** - कुङ्कुमन, **वस्त्रम्** - नीलाम्बरम्, **गन्धः**- कस्तूरी, **पुष्पम्**- चम्पकम्, **छत्रम्** - पीतम्, **वाहनम्** - वाराहः, **फलभक्षणम्** - आम्रफलम्, **पात्रम्** - ताम्रमयं, **आभरणम्**- वज्रम्, **आयुधम्**- असिं, **धारणम्** - छत्रम्, **यानम्** - तैतिले पश्चिमं मुखम्।

वर्षलग्नकुण्डली

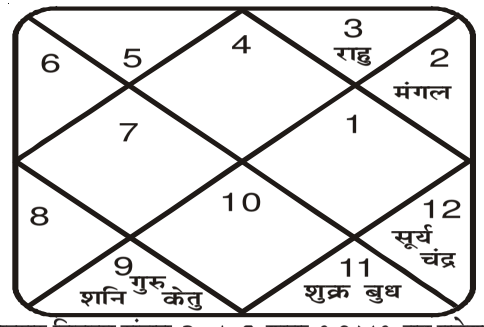

परिधावी नामक संवत्सर विक्रम संवत् २०७६ शक १९४१ का प्रवेश चैत्र शुक्ल प्रतिपदा में १४ घं. २१ मिनट में कर्कलग्न में उदय हो रहा है। लग्नेश चन्द्र का त्रिकोणस्थ मित्रराशि गुरु में सूर्य के साथ होने पर प्रशासक व देश की उन्नति में सहायक होगा तथा प्रशासक को निर्णय लेने में क्षमता प्रदान करेगा। देश का सर्वाङ्गीण विकास के बारे में चिन्तन होगा। बुद्धिजीवियों का समाज में सम्मान बढेगा। द्वितीयेश सूर्य का भी नवमभाव में त्रिकोण में होने से तथा केन्द्रेश के साथ संयोग होने के कारण प्रजा का आध्यात्मिक, नैतिक शैक्षिक क्षेत्र में विशेष विकास होगा तथा कृषिकार्य पर विशेष प्रोत्साहन दिया जायेगा। तृतीयेश व चतुर्थेश बुध व शुक्र का अष्टम भाव में होने से देशों के बीच वैमनस्य की भावना तथा रोगादि में वृद्धि होगी तथा पञ्चमेश मंगल का एकादश भाव में होने से लाभ स्थान में वृद्धि होगी। तकनीकी क्षेत्रों में विकास पर विशेष ध्यान होगा। चिकित्साक्षेत्र में विशेष उपलब्धि होगी तथा षष्ठ गुरु शनि का मंगल के साथ षडष्टक योग बन रहा है। अत: सत्ता संघर्ष की स्थिति भी बनेगी भाव में गुरु, शनि तथा केतु का योगे होने से आतंकवाद, समाज में अनैतिकता, स्त्रियों के सम्मान में हानि तथा विविध दुर्घटनाओं की सम्भावना है तथा मध्यम वर्षा होगी। वर्षेश शनि व मंत्री सूर्य होने से यदा-कदा देशों में उत्पन्न होगी।

जगल्लग्नकुण्डली

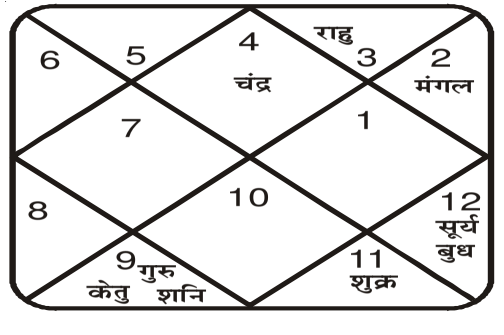

जगल्लग्नकुण्डली के अनुसार लग्न में कर्क राशि है। लग्नेश चन्द्र का लग्न में होन के कारण शासक देश की उन्नति के साथ-साथ प्रजा से सामञ्जस्य बनाये रखेगा। द्वितीयेश सूर्य तथा तृतीयेश बुध का त्रिकोणस्थ नवमभाव में होने के कारण भारत का उत्तरोत्तर विकास होगा तथा बुद्धिजीवियो का सम्मान बढ़ेगा तथा मध्यप्रदेश भी सदृढ़ स्थिति को प्राप्त करेगा। पञ्चमेश तथा दशमेश मंगल का एकादश भाव में होने से चहुँमुखविकास की ओर अग्रसर करेगा परन्तु मंगल के साथ गुरु, शनि व केतु का षडष्टक योग होने से राजनीति क्षेत्र में उथल-पुथल होगी, सत्ता दल तथा विपक्ष में वैमनस्य की भावना को उत्पन्न करेंगे तथा विविध प्रकार के अनिष्ट व दुर्घटनायें भी सम्भावित होगी। राहु का द्वादश भाव में होने से विदेश में भारत का सम्मान बढ़ेगा तथा राहु का गुरु, शनि व केतु के साथ समसप्तक योग भी राजनैतिक क्षेत्र में संघर्ष की स्थिति देशों में वैचारिक मतभेद को बढावेगा तथा अकस्मात् निर्णय की स्थिति भी उत्पन्न होगी। राजा शनि के होने के कारण नौकरी वाले लोगों को विशेष लाभ मिलेंगे तथा मन्त्री सूर्य के होने के कारण आध्यात्मिक क्षेत्र व शिक्षा क्षेत्र में विकास होगा। अष्टम में शुक्र के मित्रग्रह के होने के कारण स्त्रीशक्ति का राष्ट्र में सम्मान बढ़ेगा। शिक्षा क्षेत्र पर सरकार विशेष ध्यान देगी।

कूर्मचक्रविचार -

सौरि: स्वदेशगो यत्र तत्र यत्नेन रक्षयेत्। परदेशस्थिते कुर्याद्विग्रहं पृथिवीपति:।। यत्रस्थ: पीडयेत्तत्र वेधस्थाने तथैव च । देशनामर्क्षग: सौरिर्भगदाता न संशय:।।(नरपतिजयचर्या)

वर्षारम्भ से २२/१२/२०१९ तक पूर्वाषाढा नक्षत्र में रहेगा। कूर्मचक्रानुसार पश्चिम दिशा में मणिवान् पर्वत, मेघवान्, वनौघ, क्षुरार्पण, अस्तगिरि, अपरान्तक, शान्तिक, हैहय, प्रशस्ताद्रि, वोक्कण, पञ्चनव, रमरु, पारत, तारक्षिति, जुङ्गा, वैश्य, कनक, राक आदि देशों में प्राकृतिक प्रकोप सूखा युद्धादि की सम्भावना रहती है। यथा - **अपरस्यां मणिवान् मेघवान् वनौघ: क्षुरार्पणोऽस्तगिरि:। अपरान्तकशान्तिक-हैह्यप्रशस्ताद्रिवोक्काणा:।। पञ्चनदरमठपाराततारक्षितिजृङ्गवैश्यकनकशका: । निर्मर्यादा म्लेच्छा ये पश्चिम दिक् स्थितास्ते च ।**(बृ.सं.नक्षत्रकूर्म.अ.श्लो. २०, २१)

शनि दिनांक २३/१२/२०१९ से वर्षान्त तक उत्तराषाढा नक्षत्र में रहेगा। **दिशि पश्चिमोत्तरस्यां माण्डव्यतुषारतालहलमद्रा: । अश्वमककुलूतहलडा: स्त्रीराज्यनृसिंहवनखस्था:। वेणुमती फल्गुलुका गुलुहा मरुकुच्च चर्मरङ्गाख्या:।** अर्थात् माण्डव्य, तुषार, ताल, हल, मद्र, अश्वमक, उलूत, हलड, स्त्रीराज्य, नृसंहिवन, खस्थ, वेगुमती, फल्गुलुका, गुलुहा, मरुकच्च, चर्मरङ्ग आदि देशों में सूखा व प्रकोप रहता है।

जन्मराशि के आधार पर विभिन्न फल विचार - इस वर्ष में विभिन्न राशियों के लिए आय एवं व्यय का मान यहाँ प्रस्तुत है - **आय और व्यय चक्र**

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
आय	१४	०८	११	०५	०८	११	०८	१४	०२	०५	०५	०२
व्यय	१४	०८	०५	०५	१४	०५	०८	१४	०८	०२	०२	०८

आयैक्यम् - ९३ व्ययैक्यम् - ९३

आयव्ययाभ्यां शुभाशुभफलज्ञानस्य विधि: - आयं व्ययं समीकृत्य एक हीनं तु कारयेत्। अष्टभिश्च हरेद् भागं शेषाङ्के फलमादिशेत्।। लाभ:सौख्यं तथा क्लेशो रोगो लोकापवादनम्। सम्मानं विजयो हानि: कथितं पूर्वसूरिभि:।। अर्थात् अपनी राशि के अनुसार आय एवं व्यय अङ्को को जोड़कर १ घटा दें। शेष को ८ से भाग दें, यदि शेष १, २, ६, ७ रहे तो वर्ष में अच्छा लाभ है। ३, ४, ५ या ८ शेष रहे तो लाभ से अधिक व्यय होने से परेशानियाँ बढेंगी अर्थात् शेष १ रहे तो लाभ, २ में सौख्य, ३ में क्लेश, ४ में रोग, ५ में मिथ्या अपवाद, ६ में सम्मान, ७ में विजय, ८ में अथवा ० में हानि समझनी चाहिए।

राजपूज्य एवं अवमान -

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
राजपू.	०३	०६	०२	०५	०१	०४	००	०३	०६	०२	०५	०१
अवमा	००	०६	०२	०२	०५	०५	०१	०१	०१	०४	०४	००

यथा - सिंहस्य मेषादिराशिसंख्या ५ राज्ञ:, भौमस्य ध्रुव: ०८ तयोर्योग: १३ त्रिगुण: ३९ पञ्चयुत: ४४ मुनिभिर्भक्तो लब्धं ०६ शेषं ०२ इदमेव राजपूज्यम्। लब्धं ०६ त्रिगुणं १८ शरयुतं २३ सप्तभिर्भक्तशेषं ०२ इदमवमानम्।

शनि का साढेसाती इत्यादि का फल - शनि अपने प्रवेश राशि एवं आगे व पीछे रहने वाली दोनों राशियों को अपने शुभाशुभप्रभाव से विशेषरूप से प्रभावित करता है। कहा जा सकता है कि जन्म राशि से शनि बारहवें और दूसरे स्थान पर रहेगा तो साढेसाती होती है। जो दु:ख कारक है। शनि एक राशि में प्राय: (२.५) ढाई वर्ष रहता है। इस प्रकार एक राशि पर शनि का कुलप्रभाव (७.५) साढे सातवर्ष तक रहता है इसे ही शनि की साढे साती कहते हैं। शनि जिस राशि में स्थित है उस राशि से छठवीं एवं दशवीं राशि को भी प्रभावित करता है। अत: इन राशियों पर शनि का प्रभाव (२.५) वर्ष तक रहता है। इसे ही ढैया या अढैया के नाम से जाना जाता है। **पादविचार -जन्माङ्गरुद्रेषु सुवर्णपादं द्विपञ्चनन्दै: रजतस्य पादम्। त्रिसप्तदिक्ताम्रपदं वदन्ति वेदाष्टचार्केष्विह लौहपादम्।।** अर्थात्-यदि जन्मराशि से गोचरीय शनि के राशिपरिवर्तन के दिन की चन्द्रराशि पहले, छठे और ग्यारहवें में हो तो सुवर्ण पाद। दूसरे, पाँचवें और नवें में हो तो रजतपाद। तीसरे, सातवें और दशवें में हो तो ताम्रपाद। चौथे, आठवें और बारहवें में हो तो लौहपाद होता है। **शनि पादफल -लौहे वित्तविनाश: स्यात्सर्वसौख्यञ्च काञ्चने। ताम्रे च समता ज्ञेया सौभाग्यं रजते भवेत्।। अनिष्टफलदायकशनेर्जप: कार्य:, लौहञ्च धार्यम्। शनावश्वत्थमूले जलादिभि: पूजनं शनिस्तवश्च पठितव्य:।।** यदि जन्मराशि से सूर्य, राहु, शनि और मंगल ये ग्रह दूसरे, पहले, पाँचवें, सातवें, चौथे, आठवें, नवें और बारहवें स्थान में हो तो धन धान्य हिरण्य का नाश करने वाले होते हैं। **शनिचारवश फल -** शनि वर्षारम्भ से २३ जनवरी २०२० ई. तक धनु राशि में संचरण करेगा। धनु: राशिस्थ शनि की साढ़े साती एवं ढैया का विचार-

क्र.	राशि	साढ़ेसाती/ढैया	चरण	पाया	फल
१.	वृश्चिक	साढ़ेसाती	पैर	रजत	सुख और सौभाग्य
२.	धनु	साढ़ेसाती	हृदय	सुवर्ण	सर्वसुख
३.	मकर	साढ़ेसाती	शिर	लौह	धननाश
१.	कन्या	ढैया		लौह	धननाश
२.	वृष	ढैया		लौह	धननाश

मकरराशिस्थ शनि की साढेसाती एवं ढैया का फल -

२४ जनवरी २०२० से वर्षान्त तक मकर में रहेगा।

क्र.	राशि	साढ़ेसाती/ढैया	चरण	पाया	फल
१.	धनु	साढ़ेसाती	पाद	रजत	सुख और सौभाग्य
२.	मकर	साढ़ेसाती	हृदय	सुवर्ण	सर्वसुख
३.	कुम्भ	साढ़ेसाती	मस्तक	लौह	धननाश
४.	मिथुन	ढैया		लौह	धननाश
४.	तुला	ढैया		लौह	धननाश

विशेष - जन्मकुण्डली में शनि की शुभस्थिति इत्यादि के अनुसार शनि की ढैया और साढेसाती का अशुभफल कम हो जाता है। कुछ विद्वानों का मत है कि मेषराशि वाले जातकों के लिए साढेसाती के मध्य के ढ़ाई वर्ष, मिथुन राशि वाले जातकों के लिए अन्तिम ढ़ाई, कर्क राशि वालों को प्रथम मध्य के ढ़ाई वर्ष, सिंह राशि वालों के प्रथम ५ वर्ष (उसमें भी मध्य के ढ़ाई वर्ष के विशेष रूप से), तुला राशि वालों को अन्तिम ढ़ाई वर्ष, वृश्चिक राशि वाले जातकों को अन्तिम ५ वर्ष, कुम्भ राशि वाले जातकों को आर्द्रा एवं अन्त कुल मिलाकर ५ वर्ष तथा मीन राशि वाले जातकों को पूरे साढेसात वर्ष अशुभफल देने वाले होते हैं।

शनिशान्ति उपाय- शनि मन्त्रजाप, शनि स्त्रोत्रपाठ, पीपलवृक्ष में तिल एवं उडद मिश्रित जलदान एवं सायंकाल वृक्ष के नीचे तिलतेल का दीप जलाना, महामृत्युञ्जय का जाप, शिवपूजा, पक्षियों को अनाज डालना, लौह पात्र में सदक्षिणा तेल रखकर उसमें अपनी मुखच्छाया देखकर दान करना, दरिद्र नारायण कोढियों को गुड चना देना, काली वस्तुओं का दान एवं तुलादान, वृद्धजनों की सेवा करना श्रेयस्कर रहेगा। भौतिक उपचारों में शनि या अमावस्या के दिन लोहे की अंगूठी पूजादि करके पहनना शुभ रहेगा।

ग्रहों का गोचरीय वेधविचार

सूर्य छठे-बारहवें, दशवें-चौथे, तीसरे-नवें, ग्यारहवें-पाँचवें स्थान में क्रम से शुभ और बिद्ध होता है, अर्थात् मनुष्य की जन्मराशि से छठवीं राशि में सूर्य हो तो शुभफल देनेवाला होता है। यदि १२वीं राशि में शनि को छडकर कोई अन्यग्रह स्थित हो तो सूर्य विद्ध हो जाता है, अर्थात् छठवें स्थान का सूर्य उस मनुष्य को शुभफल न देकर अशुभ फल देने वाला हो जाता है। ऐसे ही १०वीं राशि पर सूर्य शुभ, यदि चौथी राशि पर शनि के अतिरिक्त कोई ग्रह हो तो विद्ध हो जाता है । एवं तीसरे शुभ-नवमस्थ ग्रह से विद्ध, ११वें शुभ-पंचमस्थ ग्रह से विद्ध हो जाता है। मंगल, शनि और राहु ये ३ ग्रह छठी राशि पर शुभ होते हैं, यदि नवीं राशि पर कोई ग्रह हो तो विद्ध हो जाते हैं। यहाँ शनि-सूर्य का वेध नहीं होता है। एवं ११वें शुभपंचमस्थ ग्रह से विद्ध, तीसरे शुभ बारहवीं राशि पर स्थित ग्रह से विद्ध हो जाते हैं ।

चन्द्रमा जन्मराशि से १०वें शुभ-चतुर्थस्थ ग्रह से विद्ध, तीसरे शुभ नवमस्थ ग्रह से विद्ध, ११वें शुभ आठवें स्थित ग्रह से विद्ध, जन्मराशि का शुभ पाँचवे स्थित से विद्ध, ६वें शुभ द्वादशस्थ ग्रह से विद्ध, ७वें शुभ द्वितीयस्थ ग्रह से विद्ध हो जाता है (याहाँ चन्द्र-बुध का वेध नहीं होता है)। बुध दूसरे शुभ ५वें से विद्ध, चौथे शुभ ३ रे से विद्ध, ६ ठे शुभ ९मस्थग्रह से विद्ध, ८ वें शुभ जन्मराशि पर कोई ग्रह हो तो विद्ध, १० वें शुभ आठवें से विद्ध, ११ वें शुभ बारहवें स्थित ग्रह से विद्ध हो जाता है । बृहस्पति ५-४, २-१२, ९-१०, ५-३, ११-३ स्थानों में क्रमश: शुभ और विद्ध होता है। शुक्र १-८, २-७, ३-९, ४-१०, ५-९, ८-५, ९-११, १२-६, ११-३ स्थानों में क्रम से शुभ और विद्ध होता है । यथा ग्रहों का वेधसारणी -

सूर्य					चन्द्र						शुक्ले विशेष:		
शुभ	६	१०	३	११	१०	३	११	१	६	७	२	९	५
वेध	१२	४	९	५	४	९	८	५	१२	२	६	८	४

बुध							गुरु					भौ.शा.रा.के.		
शुभ	२	४	६	८	१०	११	५	२	९	२	११	६	११	३
वेध	५	३	९	१	८	१२	४	१२	१०	३	३	९	५	१२

शुक्र									
शुभ	१	२	३	४	५	८	९	१२	११
वेध	८	७	१	१०	९	५	११	६	३

द्वादश राशियों का घातचक्र

राशय:	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
घातमास	कार्तिक	मार्गशीर्ष	पौष	माघ	फाल्गुन	चैत्र	वैशाख	ज्येष्ठ	आषाढ	श्रावण	भाद्रपद	आश्विन
घातितिथि	१,६,११	५,१०,१५	२,७,१२	२,७,१२	३,८,१३	५,१०,१५	४,९,१४	१,६,११	३,८,१३	४,९,१४	३,८,१३	५,१०,१५
घातवार	रवि	शनि	चन्द्र	बुध	शनि	शनि	गुरु	शुक्र	शुक्र	मंगल	गुरु	शुक्र
घातनक्षत्र	मघा	हस्त	स्वाति	अनुराधा	मूल	श्रवण	शतभिषा	रेवती	भरणी	रोहिणी	आर्द्रा	आश्लेषा
घातयोग	विष्कुम्भ	सुकर्मा	परिघ	धृति	प्रीति	सुकर्मा	अतिगंड	ब्रह्म	वैधृति	गंड	व्याघात	वज्र
घातकरण	बव	शकुनि	कौलव	नाग	बालव	कौलव	तैतिल	गर	तैतिल	शकुनि	किंस्तुघ्न	चतुष्पद
घातलग्न	१	२	४	७	१०	१२	६	८	९	११	३	५
घातप्रहर	प्रथम	चतुर्थ	तृतीय	प्रथम	प्रथम	प्रथम	चतुर्थ	प्रथम	प्रथम	चतुर्थ	तृतीय	चतुर्थ
पु.घा.चं.	मेष	कन्या	कुम्भ	सिंह	मकर	मिथुन	धनु	वृष	मीन	सिंह	धनु	कुम्भ
स्त्री.घा.चं.	मेष	धनु	धनु	मिथुन	वृश्चिक	वृश्चिक	मीन	धनु	कन्या	वृश्चिक	मिथुन	मेष
सूर्य घात	कर्क	वृश्चिक	मीन	तुला	धनु	मेष	कन्या	मकर	तुला	कुम्भ	वृष	मिथुन
शनि घात	मिथुन	तुला	कुम्भ	कर्क	वृश्चिक	मीन	सिंह	धनु	कन्या	मकर	मेष	वृष
राहु घात	वृश्चिक	तुला	कन्या	कर्क	सिंह	मकर	मीन	मेष	वृष	धनु	कुम्भ	मिथुन

वार्षिकराशिफल
संवत् 2076 शक 1941 सन् 2019-20

मेष राशि- (चू,चे,चो,ला,ली,लू,ले,लो,अ)

मेष राशि के जातकों के लिए यह वर्ष मध्यम फलदायक सिद्ध होगा। धार्मिक कार्यों के प्रति रुचि बढ़ेगी। निवेश आदि का ध्यानपूर्वक विचार कर लेना ही हितकर होगा। व्यापार क्षेत्र में आर्थिक उन्नति होगी एवं व्यापार के नये आयाम मिलेंगे। खर्च में वृद्धि की सम्भावना है। क्रोध पर नियन्त्रण रखना एवं कटु शब्दों का प्रयोग न करें अन्यथा अत्यन्त हानि हो सकती है। वर्ष के मध्य में अपने गुणों का विकास करने का उत्तम समय है। जीवन साथी के साथ सम्बन्ध मधुर होंगे। विद्यार्थियों के थोड़ा मध्यम रहेगा लेकिन सफलता प्राप्त होगी। संयम रखना और चुनौतियों को सहर्ष स्वीकार करना ही श्रेयस्कर होगा। श्रावण में धार्मिक कार्यों में प्रवृत होने से रुके हुए कार्यों को गति मिलेगी। सन्तान पक्ष से आर्थिक हानि हो सकती है। अस्थि पीड़ा की सम्भावना है। अपने सहयोगियों से लाभ होगा। विदेश यात्रा में आर्थिक उन्नति होगी। मातृपक्ष एवं पितृपक्ष पर विशेष ध्यान दें अन्यथा हानि हो सकती है। हनुमान जी की उपासना करें। कालीवस्तु, काला-वस्त्रादि का दान करें। मंगल (ॐ अं अंगारकाय नम:) के मन्त्रों का जाप करें। सुन्दरकाण्ड का पाठ कर सकते हैं। पीपल के पेड़ की पूजा करें।

वृष राशि - (ई,उ,ए,ओ,बा,बी,बू,वे वो)

वृष राशि वालों के लिए यह वर्ष आर्थिक रूप में उन्नति की सम्भावना है। परिवार में लोगों से सम्बन्ध अच्छे होने का योग होगा। भोजन पक्ष पर विशेष सजग रहने की आवश्यकता है। वर्ष के तीसरे माह में आर्थिक पक्ष में उतार-चढ़ाव होने की सम्भावना है। परिवार में मतभेद से बचे कार्य में उन्नति का योग है। व्यवसाय में रूका हुआ पैसा इस वर्ष प्राप्त हो सकता है। सन्तानपक्ष से चिन्तित हो सकते है। इस वर्ष चिकित्सा में आपका खर्च कम होगा। पूर्व में लिए हुए कर्ज का भुगतान करने के योग हैं। पति-पत्नि के सम्बन्धों में सुधार होने की सम्भावना है। शुक्र (ॐ शुं शुक्राय नम:) के मन्त्रों का जाप करें। गुरु स्त्रोत्र का पाठ करना लाभप्रद रहेगा। गुरु का मन्त्र जप, दान आदि करना भी हितप्रद रहेगा। काले वस्त्रों, तिलादि का दान करना भी अच्छा होगा।

मिथुन राशि - (का,की,कु,घ,ङ,छ,के,को,हा)

मिथुन राशि वालों के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। आर्थिक लाभ होगा एवं आय के नए-नए स्रोत बनने की संभावना अत्यधिक है। जीवनसाथी का सहयोग समय-समय पर मिलता रेहगा। सरकारी सेवा के जातकों को विवादों से बचना ही हितकर होगा। वर्ष के मध्य में पैसे की कमी के कारण कठिनाई का सामना करना पड़ सकता है। पारिवारिक मामलों में विवादों से बचें। अन्यथा परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। उदर सम्बन्धि कष्ट होने के सम्भावना है। परिवार के लोगों के स्वास्थ पर ध्यान दें अन्यथा उलझन में पड़ सकते हैं। बड़े बुजुर्ग पर विशेष रूप से ध्यान देने की आवश्यकता है। वर्ष के अन्त में उन्नति का योग है। विदेश यात्रा के योग है। सफलता पाने का उत्तम योग है। बुध (ॐ बुं बुधाय नम:) के मन्त्रों का जाप अत्यन्त लाभप्रद होगा। राहु-केतु का दान आदि करें। विष्णुसहस्त्रनामस्तोत्र का पाठ करें। विष्णुमन्दिर में प्रतिदिन भगवान् विष्णु का दर्शन करना लाभप्रद होगा।

कर्क राशि - (ही,हू,हे,हो,डा,डी,डू,डे,डो)

इस वर्ष आपके परिश्रम के अनुकूल लाभ मिलेगा। विदेशयात्रा पर गमन के योग हैं। आर्थिक स्थिति को अच्छा बनाने के लिए निरन्तर प्रयासरत रहेंगे। वर्ष के मध्य में उन्नति, लाभ एवं आगे बढ़ने के लिए अच्छा समय है। इसलिये अच्छे समय का सदुपयोग कर आगे बढ़ना श्रेयस्कर रहेगा। खर्च की वृद्धि होने की सम्भावना अत्यधिक है। परिवार में प्रसन्नता का महौल रहेगा। अच्छे कार्यों से समाज में प्रतिष्ठा बढ़ेगी। वर्ष प्रारम्भ में निर्णय लेने में सावधानी बरते अन्यथा हानि हो सकती है। परामर्श लेकर कोई बड़ा निर्णय लें। बृहस्पति के राशि परिवर्तन करने से आपको लाभ भी प्राप्त होगा। कार्यों की अधिकता से मानसिक अशान्ति हो सकती है शनि के मार्गी होने पर उन्नति मिलेगी। वर्ष के मध्य में स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान दें। गुरु (ॐ वृं वृहस्पतये नम:) के मन्त्रों का जाप करें। पीली वस्तुओं का दान करें। गणेश अथर्वशीर्ष का पाठ करना भी लाभप्रद होगा। मन्दिर में भगवान् गणेश का पूजन विधिवत् करवाएँ।

सिंह राशि - (मा,मी,मू,मे,मो,टा,टी,टू,टे)

वर्ष के प्रारम्भ में अपनी मेहनत के अनुसार ही जातक को फल प्राप्त होगा। स्वास्थ्य में कमी आने की सम्भावना है। यह वर्ष सामान्य लाभ करने वाला होगा। छोटी-छोटी परेशानियों पर विजय प्राप्त कर आगे बढ़ा जा सकता है। भौतिक सुखों में उन्नति प्राप्त होगी। वर्ष के प्रारम्भिक तीन माह में जीवन साथी से आर्थिक लाभ प्राप्त होगा। अत्यन्त मेहनत करने वाले छात्र उन्नति प्राप्त करेंगे। वाहन चलाने में सावधानी बरतें अन्यथा हानि हो सकती है। मातृपक्ष पर विशेष ध्यान दें। शेयर आदि में धन व्यय करने से हानि हो सकती है। पुत्र प्राप्ति होने के योग है। धार्मिक कार्यों के करने से रुके हुए कार्य होंगे। वर्ष के अन्त में धार्मिक कार्यों की अधिकता से सभी कार्य निर्विघ्नता से समाप्त होगा। मानसिक रूप से आप किसी बात को लेकर चिन्तित हो सकते हैं। लेकिन विद्या अध्ययन करने वालों को विशेष रूप से वर्ष का प्रारम्भ तनाव का समय हो सकता है। शनि वर्ष के प्रारम्भ में आपके लिए आलस्य का कारक हो सकता है। बृहस्पति के मार्गी होने पर आपको राहत मिल सकती है। कनकधारास्तोत्र का पाठ करें। जिससे आर्थिक स्थिति ठीक होगी। सूर्य (ऊँ घृणि: सूर्याय नम:) के मन्त्रों का जाप करें। निर्धन लोगों की सहायता करें।

कन्या राशि - (टो,पा,पी,पू,ष,ण,ठ,पे,पो)

वर्ष के प्रारम्भ में कन्या राशि के जातक को अपने स्वास्थ पर विशेष रूप से ध्यान देने कि आवश्यकता है। खान-पान-विश्राम-व्यायाम पर ध्यान दें। अन्यथा स्वास्थ पक्ष से कठिनाई का सामना करना पड़ सकता है। शत्रुओं से विवाद से भी स्वास्थ प्रभावित हो सकता है। क्रोध करने से हानि होगी। राहू के परिवर्तन से स्वास्थ पर असर पड़ सकता है। धन खर्च होने के योग हैं। अपने विरोधियों, अपने शत्रुओं पर आप विजय प्राप्त करेंगे। नौकरी आदि का परिणाम आपके पक्ष में होगा। व्यवसाय करने वाले जातकों के लिए परिश्रम भरा हो सकता है। भौतिक सुखों में कमी हो सकती है। भूमि, मकान आदि के योग विद्यमान है। मातापक्ष से निराशा मिल सकती है। राहू के परिवर्तन के कारण खर्च होने के योग बन रहें हैं। बृहस्पति के मार्गी होने पर धनलाभ का योग है। वेतन में वृद्धि का योग प्राप्त हो रहा है। नये वाहन खरीदने में सफलता मिल रही है। वर्ष के अन्त परिश्रम भरा हो सकता है अथवा नई चुनौति भी आ सकती है। दाम्पत्य जीवन में मध्य फल प्राप्त होगा। प्रतिष्ठा प्राप्त करेंगे। गणेश अथर्वशीर्ष का प्रतिदिन पाठ करें। जिससे कार्य में विघ्न-बाधाएँ दूर होंगी। गणेश जी (ऊँ गं गणपतये नम:) के मन्त्र का जाप करें। तुलसी के पौधे लगवाएँ एवं तुलसी पौधे में जल अर्पित करें।

तुला राशि - (रा,री,रू,रे,रो,ता,ती,तू,ते)

तुला राशि के जातकों के लिए यह वर्ष अच्छा होगा। वर्ष के प्रारम्भ में व्यवसाय करने वालों के लिए अच्छा रहेगा। कार्यस्थल पर आपकी प्रतिष्ठा बढ़ेगी। शीघ्रता से निर्णय न लें। वर्ष के अन्त में पदोन्नति के योग हैं। भूमि सम्बन्धी पुराने विवादों से धनलाभ हो सकता है। धन की मात्रा बढ़ने से खर्च भी बढ़ेगा। भाई-बहनों से हानि हो सकती है। नए घर एवं गाड़ी लेने के लिए अच्छा समय है। शनि के वक्री होने स धन हानि के योग बनेंगे। वर्षान्त आपके लिए सौभाग्यशाली हो सकता है। मंगल के अष्टम भाव पर दृष्टि होने से उदर सम्बन्धी रोगों से कष्ट मिलेगा। गुरु के वक्री होने से कष्ट मिलेगा। गुरु के वक्री होन से स्वास्थ सम्बन्धी परेशानी हो सकती है। बृहस्पति के मार्गी होने पर आपको कुछ राहत मिलेगी। जीवनसाथी एवं अपने बच्चों पर धन व्यय होने का योग है। वर्ष के अन्त में अपना पूरा ध्यान अपने परिवार पर दें। अपने परिवार के तीर्थभ्रमण के योग हैं। परिवार के लोगों के साथ सम्बन्ध मधुर होंगे। परिवार की जिम्मेदारियाँ बढ़ेगी। माता-पिता के स्वास्थ में ध्यान दें। आर्थिक उन्नति होगी। छात्रों को प्रतियोगी परीक्षा में सफलता के योग हैं। वर्ष का मध्यम भाग संघर्ष रहेगा। शुक्र (ऊँ शुं शुक्राय नम:) अथवा (ऊँ महालक्ष्मयै: नम:) के मन्त्रों का जाप करें। कनकधारास्त्रोत्र का भी पाठ करना भी श्रेयस्कर रहेगा। चाँदी दान करें। नारियल दान करें।

वृश्चिक राशि - (तो,ना,नी,नू,ने,नो,या,यी,यू)

वृश्चिक राशि के जातकों का जीवन इस वर्ष प्रात: काल के सूर्य के समान होगा। अत्यन्त उन्नति वाला होगा। पारिवारिक रिश्ते मधुर होंगे। कार्यक्षेत्र में अधिकारियों से सम्बन्ध मधुर होंगे। परिवार के साथ धर्म-कर्म में रत रहेंगे। राहु के राशि परिवर्तन से माता के स्वास्थ पक्ष से चिन्तित रह सकते हैं। रक्त सम्बन्धी रोगों से सचेत रहें। चिकित्सकीय परामर्श अवश्य लें। क्रोध मानसिक स्वास्थ के लिए अच्छा नहीं होगा। पैतृक सम्पत्ति से इस वर्ष आपको लाभ दिलाने वाला होगा। अपनी वाणी कुशलता, अपनी बुद्धिमत्ता से समाज में श्रेष्ठ स्थान प्राप्त करेंगे एवं प्रतिष्ठा प्राप्त करेंगे। धन व्यय का भी योग है। इसलिये चिन्तन करके ही खर्च करें। अपेक्षित स्त्रोतों से भी धन लाभ होगा। पत्नी से मधुर सम्बन्ध होंगे। धर्म कर्म में रुची बढ़ेगी जिससे विघ्न-बाधाएं दूर हो जायेंगी। विदेश यात्रा का भी योग है। छात्रों के पढ़ाई में अच्छे परिणाम आएंगे। वर्ष के अन्त में आपके लिए शुभप्रद रहेगा। आप अपने जीवन के प्रति सन्तुष्ट रहेंगे। मंगल (ऊँ अंगारकाय नम:) मन्त्र का प्रतिदिन जाप करने से लाभप्रद रहेगा। लक्ष्मीस्तोत्र का पाठ करें। लालवस्त्रधारण करें।

धनु राशि - (ये,यो,भा,भी,भू,ध,फ,ढ,भे)

धनु राशि वालों के लिए यह वर्ष मिला जुला रहेगा। अपनी कमचोरी को जानकर दूर करना होगा। शनि की साढ़ेसाती के कारण परेशानी का सामना करना पड़ेगा धार्मिक कार्यों के करने से कुछ कष्ट कम होगा। निर्णय सोच समझकर ही करें। वर्ष के प्रारम्भ में अपने कार्यों में सामनञ्जस्य बिठाकर चले। खानपान पर विशेष ध्यान दें। सन्तान एवं जीवनसाथी की जरुरतों को पूरा करें। मधुर वचन बोलने से लाभ मिलेगा। दादा-दादी एवं बुजर्गों की सेवा से उन्नति का मार्ग प्रशस्त होगा। कार्यक्षेत्र मे उतार-चढ़ाव आएगें। जीवन साथी के साथ मधुर सम्बन्ध बनाकर रखें। आर्थिक रूप से अच्छे रहेंगे। वक्री गुरु के राशि परिवर्तन धनलाभ के संकेत देगा। शनि के वक्री होने पर धन के विषय में चिन्ता होगी। सुनिश्चित योजना पूर्ण कर कार्यों से सफलता मिलेगी। स्वास्थ के प्रति सचेत रहना जरुरी है। परिजनों से सहयोग मिलेगा। घर का वातावरण शांतिमय रहेगा। शत्रुओं का प्रभाव रहेगा। वक्री शनि आपको कानूनी परेशानी दे सकता है। राशि में बृहस्पति के आने से जीवन सामान्य होगा। चन्द्र (ऊँ सों सोमाय नम:) के मन्त्रों का जाप करना अच्छा रहेगा। विष्णुसहस्त्रनामस्तोत्र का पाठ करें। प्रतिदिन शिवालय में अभिषेक करें। पीपल के पेड़ की विधिवत् पूजन करें।

मकर राशि - (भो,जा,जी,खी,खू,खे,खो,गा,गी)

आपकी राशि का स्वामी शनि है जो कार्यक्षेत्र में मेहनत के अनुरूप फल देने वाला होगा। विदेश में शिक्षा पाने का अवसर प्राप्त होगा। आर्थिकरूप से उतार-चढ़ाव भरा रहेगा। छात्रों को चुनौति का सामना करना पड़ सकता है। वर्ष के प्रारम्भ में जीवनसाथी से मधुर सम्बन्ध बनाए रखें। आध्यात्म की ओर अग्रसर हो सकते हैं। जमापूँजी में वृद्धि हो सकती है। भाग्य आपका पूरा साथ देगा। ग्रहों की स्थिति के अनुसार उदर रोगा, नेत्र रोग, मोटापा होने के संकेत दे रहा है। राहू आपके स्वास्थ की दृष्टि से अच्छा नहीं है इसलिए लापरवाही तबयित खराब कर सकती है। मानसिक तौर पर परेशान रह सकते हैं। वर्ष का अन्तिम भाग स्वास्थ की दृष्टि से राहत भरा हो सकता है। व्यवसाय करने वालों के लिए धन प्राप्ति के योग है। ध्यानपूर्वक किसी योजना में निवेश करें। बृहस्पति आपको धन देने का योग बनायेगा। नौकरी करने वालों के लिए सामान्य वृद्धि होगी। नौकरी करने वाले जातक यदि व्यवसाय करना चाहते हैं तो उनके लिए अच्छा समय है। कठिन मेहनत से उन्नति पा सकते हैं। शनि (ऊँ शं शनैश्चराय नम:) के मन्त्रों का जप करें। बरजंरगबाण का पाठ करना लाभप्रद रहेगा। शनि भगवान् की उपासना करें। मीठी वस्तु वितरण करें।

कुम्भ राशि - (गू,गे,गो,सा,सी,सू,से,सो,दा)

यह वर्ष कुम्भ राशि वाले जातकों के लिए नौकरी एव व्यवसायिजनों के अच्छा परिणाम देगा। लाभ का योग भी प्राप्त हो रहा है। स्वास्थ्य की दृष्टि से भी अच्छा रहेगा। परिवार के साथ यात्रा का योग है। समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त जनों से मित्रता होने से सफलता मिलेगी। कार्यक्षेत्र में उन्नति होगी। जिससे पारिवारिक जीवन में उन्नति मिलेगी। विद्यार्थी के लिए अच्छा समय है पढ़ाई में अच्छा फल प्राप्त करेंगे। भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में सफलता मिलेगी। वर्ष के मध्य में आर्थिक क्षेत्र में स्थिरता देखने को मिलेगी। शत्रु से सावधान रहने की आवश्यकता है। नौकरी परिवर्तन करने से अच्छा अवसर मिल सकता है। किसी कार्य में एकाग्रता से काम पर ध्यान लगाएँ अन्य कार्य बिगड़ सकता है। अलग-अलग क्षेत्रों में आय के साधन बनेंगे। यह वर्ष आर्थिक दृष्टि से उन्नति प्रद होगा। बेवजह यात्रा आपके स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकती है। रोग पर धन व्यय हो सकता है। स्वास्थ्य पर ध्यान देना ही हितकर रहेगा। शनि (ऊँ शं शनैश्चराय नम:) के मन्त्रों का जप करें। शनिस्तोत्र का पाठ करें। गौमाता की सेवा करें। गौ दुग्ध से भगवान् शिव का शिवालय में अभिषेक करें।

मीन राशि -(दी,दू,थ,झ,ञ,दे,दो चा,ची)

यह वर्ष आपके जीवन के धनागम का अत्यन्त श्रेष्ठ वर्ष माना जा सकता है। आर्थिक पक्ष मजबूत होने से उन्नति होगी। घर में धार्मिक कार्य सम्पन्न होगा। जिससे विघ्न-बाधाएँ दूर होंगी। परिवार पर ध्यान देना श्रेयस्कर होगा। कार्य का समापन में शीघ्रता की कमी आएगी। पारिवारिक पुराने मतभेद दूर होंगे जिससे खुशी का माहौल रहेगा। स्वास्थ्य सम्बन्धी चिन्ता रह सकती है। मंगल इस वर्ष आँख कान दाँत आदि में कष्ट दे सकता है इस हेतु विशेष ध्यान दें। माता का स्वास्थ्य चिन्ताजनक रह सकता है। बृहस्पति के मार्गी होने से स्वास्थ सम्बन्धी चिन्ता दूर होगी। भविष्य में विकट परिस्थितियों में धन का संरक्षण करना जरुरी है। व्यर्थ धनव्यय न करें। व्यवसायी लोगों के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। अपना कार्य अथवा प्राइवेट कार्य करने वाले के लिए उन्नति का योग है। गुरु के मार्गी होने पर उन्नति के योग बनेंगे। शत्रु पर विजय प्राप्त होगा। समाज में मान-सम्मान की वृद्धि होगी। पारिवारिक जनों में सुख प्राप्त होगा। वृहस्पति (ऊँ वृं वृहस्पतये नम:) के मन्त्रों का जाप करें। कठिन परिस्थिति में विष्णुसहस्त्रनामस्तोत्र का पाठ करें। धार्मिक कार्यों में संलग्न हों।

ग्रहण विवरण (2019-20)

इस वर्ष समस्त भूमण्डल पर दो सूर्यग्रहण एवं एक चन्द्रग्रहण दिखाई देंगे इनमें से एक चन्द्रग्रहण एवं एक सूर्यग्रहण भारत में दृश्य होगा। इनका विवरण निम्न प्रकार से है -

भारत में अदृश्य (दिखाई न देने वाले) ग्रहणों का संक्षिप्त परिचय

१) **सूर्यग्रहण** - यह ग्रहण ०२/०३ जुलाई २०१९ को भा.स्टै.टा. के अनुसार २२ घ.२५ मि. से २७ घ.२१ मि. तक साउथ अमेरिका, साउथ सेन्ट्रल अमेरिका, ओशियन पेसेफिक में दिखाई देगा। भारत में अदृश्य है।

ग्रहण स्पर्शकाल - १० घं. २५ मि. रात्रि
सम्मीलनकाल - ११ घं. ३२ मि. रात्रि
ग्रहण मध्यकाल - १२ घं. ५३ मि. रात्रि
उन्मीलनकाल - ०२ घं. १४ मि. रात्रि
ग्रहण मोक्षकाल - ०३ घं. २१ मि. रात्रि

भारत में दृश्य खण्डग्रासचन्द्र ग्रहण विवरण

यह खण्डग्रास चन्द्रग्रहण १६/१७ जुलाई २०१९ ई. बुधवार को सम्पूर्ण भारत में दृश्य होगा। भारतीय मानक समय के अनुसार ग्रहण का विवरण निम्न प्रकार से है -

ग्रहण प्रारम्भ (स्पर्श काल)- ०१ घं. ३१ मि. रात्रि।
ग्रहण मध्यकाल - ०३ घं. ०१ मि. रात्रि।
ग्रहण मोक्षकाल - ०४ घं. ३० मि.रात्रि।

ग्रहण सूतक के समय बच्चों, गर्भवती स्त्रियों, वृद्धों एवं अशक्त जनों को छोड़कर अन्य लोगों को भोजनादि ग्रहण नहीं करना चाहिए। ग्रहण समय में स्नान, जप, दान इत्यादि का अत्यधिक महत्त्व शास्त्रों में बताया गया है, जैसे कि भास्कराचार्य जी कहते हैं -

बहुफलं जपदानहुतादिके, स्मृतिपुराणविदः प्रवदन्तिहि। सदुपयोगि जने सचमत्कृति, ग्रहणमिन्द्विनयोः कथयाम्यतः।। (सि.शि.चन्द्र.श्लो.१)

ग्रहण का राशिफल - इस ग्रहण का स्पर्श धनुराशिगत उ.षा. नक्षत्र से प्रारम्भ होकर मकरराशिगत उ.षा. नक्षत्र तक के स्थितिकाल में पूर्ण होगा। धनु राशिगत उ.षा. नक्षत्र को स्पर्श करके मकरराशिगत उ.षा. नक्षत्र में मोक्ष को प्राप्त होता है। अतः इस नक्षत्र एवं राशि वाले जातकों के लिए यह ग्रहण विशेष रूप से कष्टदायी रहेगा। **धनुराशिगत चन्द्रग्रहण फल** - मेष - माननाश। वृष - मृत्यु समान कष्ट मिथुन - स्त्रीकष्ट। कर्क - सुख। सिंह -चिन्ता। कन्या - कष्ट। तुला - लाभा। वृश्चिक - हानि। धनु - घात। मकर -हानि। कुम्भ - लाभ। मीन -सुख। **मकरराशिगत चन्द्रग्रहण फल** - मेष - सुख, वृष - अपमान, मिथुन- कष्ट, कर्क- स्त्री एवं पति कष्ट, सिंह- सुख, कन्या- चिन्ता, तुला कष्ट, वृश्चिक- लाभ, धनु- हानि, मकर- घात, कुम्भ- हानि, मीन- लाभ।

बृहत्संहिता के अनुसार ग्रहण का फल इस प्रकारसे है -

धन्विन्यमात्यवरवाजिविदेहमल्लान्
पाञ्चालवैद्यवणिजो विषमायुधज्ञान् ।।

आचार्य वरामिहिर के अनुसार सूर्य अथवा चन्द्रग्रहण यदि धनुराशि में हों तो प्रदेश का मन्त्री, प्रधान मनुष्य, अश्व, विदेह देश में वास करने वाले लोग, बाहुबल से युद्ध करने वाले लोग, पंजाब प्रदेश में वास करने वाले लोग, व्यापारी, वैद्य, अस्त्रों के चलाने वालों का नाश करता है।

हन्यान्मृगे तु झषमन्त्रिकुलानि नीचान्।
मन्त्रौषधीषु कुशलान् स्थविरायुधीयान्।। (बृ.सं.रा.चार.श्लो.४१)

अर्थात् मकरराशिगत सूर्य या चन्द्र ग्रहण होने पर मत्स्य, मन्त्रियों के कुल के लोगो, नीचकर्म करने वालों, मन्त्र व औषधि का ज्ञान रखने वालों, वृद्धों एवं शस्त्र धारण करने वालों के लिए कष्टकारक होता है।

भारत में दृश्य वलय खण्डग्रास सूर्यग्रहण का विवरण -

यह खण्डग्रास सूर्यग्रहण २६ दिसम्बर २०१९ को सम्पूर्ण भारत में दृश्य होगा। भारतीय मानक समय के अनुसार ग्रहण का विवरण निम्न प्रकार से है -

ग्रहण स्पर्शकाल - ०८ घं. ०० मि.
सम्मीलनकाल - ०९ घं. ०६ मि.
ग्रहण मध्यकाल - १० घं. ४८ मि.
उन्मीलनकाल - १२ घं. २९ मि.
ग्रहण मोक्षकाल - १३ घं. ३६ मि.

ग्रहण का राशि फल -इस ग्रहण का स्पर्श एवं मोक्ष मूलनक्षत्र एवं धनुराशि में हो रहा है। अतः इस नक्षत्र एवं राशि वाले जातकों के लिए यह ग्रहण विशेष रूप से कष्टदायी रहेगा। मेषादि द्वादश राशियों में उत्पन्न जातकों के लिए ग्रहण फल निम्न प्रकार से रहेगा- मेष- माननाश, वृष- मृत्यु समान कष्ट, मिथुन, स्त्री कष्ट, कर्क- सुख, सिंह- चिन्ता, कन्या- कष्ट, तुला-धनलाभ, वृश्चिक- हानि, धनु-घात, मकर- हानि, कुम्भ- लाभ, मीन-सुख।

मुहूर्त्तविचार

पञ्चाङ्ग में यथासम्भव अधिकाधिक विशुद्ध मुहूर्त्तों को देने का प्रयास किया गया है। तथापि विद्वज्जनों के सुविधा हेतु कुछ मुख्य मुहूर्तों के लिये अपेक्षित काल शुद्धि का विवरण बिन्दुवार प्रस्तुत किया जा रहा है जिसकी सहायता से वे स्वयं भी मुहूर्त्त निर्णय कर सकते हैं।

गर्भाधान मुहूर्त्त

◆ **समयशुद्धि -** रात्रौ, रजोदर्शनानन्तरं चतुर्थरात्रितः १२ रात्रिं यावत्। ◆ **तिथि -** १, २, ३, ५, ७, १०, ११, १२, १३ । क्षीणचन्द्र वर्जित। ◆ **वार -** सोम, बुध, गुरु, शुक्र । ◆ **नक्षत्र -** रोहिणी, मृगशि, उत्तराषाढ़ा,उत्तराफाल्गुनी,उत्तराभाद्रपद, हस्त, स्वाती, अनुराधा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, चित्रा, पुनर्वसु, पुष्य, अश्विनी । ◆ **लग्नशुद्धि -** शुभैः केन्द्रत्रिकोणगैः, पापैस्त्र्यायारिगैः, पुंग्रहदृष्टलग्ने, चन्द्रे विषमांशगे युग्मराशौ शुभम्।

सीमन्तपुंसवन मुहूर्त्त

◆ **समयशुद्धि -** पुंसवन गर्भ से तृतीय मास में करना चाहिए। सीमन्तोन्नयन षष्ठ वा अष्टम मास में मासाधिपति बलयुक्त होने पर करना चाहिए।◆ **तिथि -** १, २, ३, ५, ७, १०, ११, १३ शुक्लपक्ष में। कृष्णपक्ष में पञ्चमी तक। ◆ **वार -** सोम, मङ्गल, गुरु वार में शुभ। मतान्तर से शुक्र, सोम वार को पूर्वाह्न में। ◆ **नक्षत्र -** मृगशिरा, पुष्य, श्रवण, पुनर्वसु, हस्त, रोहिणी, रेवती, उत्तरा ३ (जन्मनक्षत्र त्याज्य है)। ◆ **लग्नशुद्धि** - १,४,५,७,९,१० भावों में शुभग्रह, २, ३, ४, ५, ९, १०, ११ स्थानों में चन्द्र तथा ४, ८, १० में पापग्रह वर्जित।

जातकर्म मुहूर्त्त

◆ **समयशुद्धि -** जातक का ग्रहदोष निवारण के लिए तथा आयुः श्रीवृद्धि हेतु जन्मकाल में वा एकादश या द्वादश दिन में पिता को जातकर्म करना चाहिए। ◆ **नक्षत्र -** चित्रा, अनुराधा, रेवती, उत्तरा ३, रोहिणी, अश्विनी, पुनर्वसु, पुष्य, स्वाती, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा नक्षत्रों में,तिथि पूर्णिमा छोड़कर अन्य शुभ तिथियों में। ◆ **लग्नशुद्धि** - शुभ लग्नों में शुद्धि।

नामकरण मुहूर्त्त

◆ **समयशुद्धि -** ब्राह्मणों का ११, १२ दिन में। क्षत्रियों का१३ दिन में। वैश्यों का १६ दिन में। शूद्रों ३१ दिन में नामकरण शुभ है। ◆ **तिथि -** १, २, ३, ५, ७, १०, ११, १२, १३। ◆ **वार -** सोम, बुध, गुरु, शुक्र वार में शुभ। पूर्वाह्न में शुभ। मध्याह्न में मध्यम। ◆ **नक्षत्र -** स्वाती, पुनर्वसु, श्रवण, धनिष्ठा, हस्त, अश्वि, पुष्य, अभिजित्, उत्तरा ३, रोहिणी, मृगशिरा, रेवती, चित्रा, अनुराधा। ◆ **लग्नशुद्धि** - १,४,५,७,९,१० भावों में शुभग्रह, २, ३, ५, ९, १०, ११ स्थानों में चन्द्र, ३, ६, ११स्थानों में पापग्रह तथा, १० में पापग्रह वर्जित, शुभग्रह दृष्ट लग्न में, शुभ नवांश में उत्तरायण में शुद्धसमय में नामकरण करना चाहिए।

अन्नप्राशन मुहूर्त्त

◆ **तिथि -** २, ३, ५, ७, १०, १३ एवं पूर्णिमा। क्षीणचन्द्र वर्जित। ◆ **वार -** सोम, बुध, गुरु, शुक्र । ◆ **नक्षत्र -** जन्म नक्षत्र एवं अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, उ.फा., हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, उ.षा., श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, उ.भा. एवं रेवती।◆ **लग्नशुद्धि -** जन्मलग्न व जन्म राशि से अष्टमलग्न व नवांश वर्जित। मेष, वृश्चिक व मीन राशि के लग्न छोडकर अन्य शुभ लग्न। दशम भाव में चन्द्र के अतिरिक्त अन्य ग्रह वर्जित। प्रथम, षष्ठ व अष्टमभाव में चन्द्रवर्जित है।◆ **विशेष -** गुरु शुक्रास्तादिदोष विचारणीय नहीं। बालकों का अन्नप्राशन - ६, ८, १०, १२ मासों में। बालिकाओं का अन्नप्राशन - ५, ७, ९, ११ मासों में।भद्रारहित पूर्वाह्ण काल शुभ।

कर्णवेध मुहूर्त्त

◆ **समयशुद्धि -** १२, ६ मास में व विषमवर्ष में, रिक्ता एवं समवर्ष त्याज्य है।

◆ **कालशुद्धि -** सौर चैत्र व पौषमास, क्षयदिन, हरिशयन (आषाढ शुक्ल एकादशी से कार्तिक शुक्ल दशमी तक) एवं जन्ममास त्याज्य है। गुरु-शुक्रास्तादि विचार आवश्यक। भद्रारहित पूर्वाह्ण एवं मध्याह्न में ही कर्णवेध उत्तम रहता है। ◆ **तिथि -** सामान्यतः रिक्ता व अमावस्या तिथि वर्जित। शेष तिथियां शुभ। ◆ **वार -** चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र ◆ **नक्षत्र -** अश्विनी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा, अनुराधा, श्रवण, धनिष्ठा, रेवती। ◆ **लग्नशुद्धि -** वृष, मिथुन, कर्क, कन्या, तुला, धनु व मीन लग्न प्रशस्त। लग्न से अष्टम भाव शुद्धि।

चूडाकरण मुहूर्त्त

◆ **कालशुद्धि -** चैत्र रहित उत्तरायण। गुरुशुक्रास्तादि शुद्धि आवश्यक। भद्रा रहित पूर्वाह्ण व मध्याह्न शुभ। ◆ **तिथि -** २, ३, ५, ७, १०, ११ एवं १३। ◆ **वार -** बुध, चन्द्र, शुक्र, गुरु। ◆ **नक्षत्र -** अश्विनी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाती, ज्येष्ठा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, एवं रेवती। ◆ **लग्नशुद्धि -** वृष, तुला, मिथुन, कन्या, कर्क, धनु व मीन लग्न एवं इनके नवांश प्रशस्त। जन्मलग्न व जन्मराशि से अष्टम लग्न वर्जित । अष्टम स्थान शुद्ध। केन्द्र (१, ४, ७, १०) में क्षीणचन्द्र, मंगल, शनि व सूर्य अशुभ।

अक्षरारम्भ मुहूर्त्त

◆ **कालशुद्धि -** उत्तरायण, गुरु व शुक्र के अस्तादि शुद्धि का विचार करना चाहिए। भद्रा एवं अशुभयोगवर्जित।◆ **तिथि -** २, ३, ५, ६, १०, ११, १२ ।◆ **वार -** सोम, बुध, गुरु,

शुक्र। ◆ **नक्षत्र** - अश्विनी, आर्द्रा, पुन, पुष्य, हस्त, चि., स्वा., अनु., श्र. व रेवती। ◆ **लग्नशुद्धि** - वृष, मिथुन, कन्या, धनु, व मीन लग्न शुभ। सिंह, वृश्चिक, व कुम्भ मध्यम।

उपनयन मुहूर्त्त

◆ **कालशुद्धि** - उत्तरायण, माघ, फाल्गुन, चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ व आषाढ मास ग्राह्य। देवशयन, गुरु-शुक्र अस्तादि वर्जित। भद्ररहित पूर्वाह्न व मध्याह्न तक ही उपनयन शुभ। अपराह्न निषिद्ध। ◆ **तिथि** - शुक्लपक्ष में २,३,५,१०,११,१२ । कृष्णपक्ष में २, ३, ५ शुभ। ◆ **वार** - सूर्य, सोम, बुध, गुरु व शुक्रवार शुभ। ◆ **नक्षत्र** - अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा, पू.फा., हस्त, चित्रा, स्वाती, अनु, मूल, पू.षा., श्रवण, धनि., शत., पू.भा., तीनों उत्तरा एवं रेवती। ◆ **लग्नशुद्धि** - षष्ठ व अष्टम भाव में शुक्र, गुरु, चन्द्र व लग्नेश वर्जित । द्वादश भाव में चन्द्र व शुक्र वर्जित। लग्न पञ्चम व अष्टम में पापग्रह वर्जित । वृष व कर्क राशि का चन्द्र लग्न में शुभ, अन्यथा नहीं। ◆ **विशेष** - गोचर में जन्मराशि से २, ५, ७, ९, ११ वां गुरु श्रेष्ठ।१, ३, ६, १० वां गुरु मध्यम। ४, ८, १२ वां गुरु निन्दित होता है। **विशेष** - निन्दित गुरु भी कर्क, मेष व वृश्चिक राशियों में हो अथवा जिस किसी भी राशि में होकर धनु व मीन के नवांशों में, वर्गोत्तम नवांश या कर्क, मेष व वृश्चिक के नवांश में भी हो तो शुभ होता है। इसी प्रकार गुरु मकर, मिथुन, कन्या, तुला व वृष राशियों का हो तो गोचर में शुभ हो तो हुए भी अशुभफलप्रद है। (मु.चि. ५/४७) ◆ **त्याज्य** - आषाढ शुक्ल दशमी, ज्येष्ठ शुक्ल द्वितीया, पौष शुक्ल एकादशी, मघा शुक्ल द्वादशी तथा संक्रान्ति दिन।

विद्यारम्भ मुहूर्त्त

◆ **कालशुद्धि** - उत्तरायण, गुरु-शुक्र अस्तादि शुद्धि विचारणीय। भद्रा व अशुभयोग वर्जित। ◆ **तिथि** - २, ३, ५, ६, १०, ११ व १२। ◆ **वार** - सूर्य, बुध, गुरु वा शुक्रवार। ◆ **नक्षत्र** - अश्विनी, मृगशिरा, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा, पू.फा., हस्त, चित्रा, स्वाती, मूल, पू.षा., श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, एवं पू.भा.।

◆ मतान्तर से रोहिणी, उ.फा., अनुराधा, उ.षा., उ.भा., व रेवती भी ग्राह्य हैं। (मु.चि.पी.टीका) ◆ **लग्न** - स्थिर व द्विस्वभाव लग्न।

विवाह मुहूर्त्त

◆ **कालशुद्धि** - गुरु-शुक्र अस्तादि शुद्धि, देवशयनादि विचार आवश्यक। भद्रादिदोष वर्जित। ◆ **मास** - मीन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला व धनु के सूर्य में वर्जित। सौरमासों में वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ, मार्गशीर्ष, माघ व फाल्गुन ग्राह्य। ◆ **दोनों पक्षों की तिथि** - २, ३, ५, ६, ७, ८, १०, ११, १२, १३ व शुक्लपक्ष की १५। ◆ **वार** - सोम, बुध, गुरु, शुक्र श्रेष्ठ। रवि, शनि - मध्यम। मङ्गल - त्याज्य (मु.चि. ६/५५ पी.घा. टीका)।

◆ **नक्षत्र** - रो., मृग., तीनों उत्तरा. हस्त, स्वाती, अनुराधा, मूल व रेवती। कात्यायन मतानुसार - अश्विनी, चित्रा, श्रवण, व धनिष्ठा भी ग्राह्य है। ◆ **लग्नशुद्धि** - लग्न में चन्द्र व पापग्रह, तृतीय शुक्र, छठवां चन्द्र, शुक्र व लग्नेश, सप्तम में सभी ग्रह, अष्टम में चन्द्र, लग्नेश, मंगल व शुभग्रह, दशम मंगल व द्वादश शनि वर्जित

◆ **विशेष** - **चारानुसार रवि चन्द्र गुरु शुद्धि**

वरस्य रविबलं, कन्याया: गुरुबलं तथोभयोश्च चन्द्रबलं विचार्यते -

बलम्	सूर्य	चन्द्र	गुरु
श्रेष्ठ	३,६,१०,११	३,६,७१०,११	२,५,७,९,११
मध्यम	१, २, ५, ७, ९	१, २, ५, ९	१,३,६,१०
निन्द्य	४, ८, १२	४, ८, १२	४, ८, १२

ताराचक्र

तारा	जन्म	सम्पत्	विपत्	क्षेम	प्रत्यरि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
नक्षत्र	1/10/19	2/11/20	3/12/21	4/13/22	5/14/23	6/15/24	7/16/25	8/17/26	9/18/27
फल	मध्यम	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	शुभ
दान	शाक	X	गुड	X	लवण	X	तिल	X	X

वधूप्रवेश मुहूर्त्त

◆ **कालशुद्धि** - शेष विवाह मुहूर्त के समान और वधूप्रवेशो न दिवा प्रशस्त:-इस उक्ति के अनुसार वधू का प्रवेश रात्रि में ही शुभ होता है। ◆ **तिथि** - रिक्ता व अमा.छोडकर अन्य तिथियाँ। ◆ **वार** - सोम, बुध, गुरु, शुक्र व शनिवार। ◆ **नक्षत्र** - अश्विनी, रो., मृग., पुष्य, मघा, हस्त, चित्रा, स्वा., अनु. तीनों उत्तरा, मूल, श्रवण, धनि., व रेवती। ◆ **लग्नशुद्धि** - वृष, सिंह, वृश्चिक, कुम्भ राशि के लग्न शुभ। चतुर्थाष्टम शुद्धि चाहिए। ◆ **त्याज्य** - भद्रा, व्यति., क्षयतिथि, रिक्ता, अमा., ग्रहण, वैधृति व संक्रान्ति दिन।

द्विरागमन मुहूर्त्त

◆ **कालशुद्धि** - कुम्भ, वृश्चिक व मेष राशि में सूर्य के रहने पर ही द्विरागमन विहित है। वर की राशि से रवि और गुरु की शुद्धि आवश्यक है। ◆ **वार** - सोम, बुध, गुरु, शुक्रवार।

◆ **तिथि** - रिक्ता व अमावस्या छोडकर शेष शुभ। ◆ **नक्षत्र** - अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनु. मूल, श्रवण, धनि. शत. व रेवती।

गृहारम्भ मुहूर्त्त

◆ **कालशुद्धि** - गुरु-शुक्र अस्तादि विचार आवश्यक है। देवशयन विचार नहीं।

◆ **मासशुद्धि** - निम्न मास ही शास्त्रानुसार ग्राह्य हैं -

सौरमास (सूर्यराशिप्रवेश)	चान्द्रमास
कुम्भ	माघ, फाल्गुन
कर्क व सिंह	आषाढ, श्रावण, भाद्रपद
मकर	पौष, माघ
मेष व वृष	चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ
तुला व वृश्चिक	आश्विन, मार्गशीर्ष, कार्तिक

◆ **तिथि** - २, ३, ५, ६, ७, १०, ११, १२, १३, १५ कृष्णपक्ष ५ तक। ◆ **वार** - सोम, बुध, गुरु, शुक्र व शनिवार । ◆ **नक्षत्र** - रोहिणी, मृगशिरा, पुष्य, उ.फा., हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, उ.षा., धनिष्ठा, शतभिषा, उ.भा., व रेवती (मु.चि.१२/१५) ◆ **पराशरमतानुसार** - अश्विनी, पुनर्वसु, मूल व श्रवण भी ग्राह्य (वृ.वा.मा.पृ.७३, श्लोक ७१-७३)। वास्तु राजवल्लभ के अनुसार ज्येष्ठा भी ग्राह्य। ◆ **योग व करण** - वैधृति, शूल, गण्ड, परिघ, व्याघात, वज्र, विष्कुम्भ एवं व्यतीपात योग तथा भद्रा वर्जित (वृ.वा.मा.गृहारम्भ. ७५-७६ श्लोक)

◆ **लग्नशुद्धि** - वृष, मिथुन, कन्या, धनु, कुम्भ, मीन, सिंह व वृश्चिक लग्न प्रशस्त। अष्टम व द्वादश शुद्धि। ◆ **विशेष** - वृषवास्तु चक्र शुद्धि।

सूर्यनक्षत्र से गृहारम्भ में वृषवास्तुचक्र

नक्षत्र	1-3	4-7	8-11	12-14	15-18	19-22	23-25	26-28
स्थान	शिर	अग्रपाद	पृष्ठपाद	पृष्ठ	दक्षिणकुक्षि	वामकुक्षि	पुच्छ	मुख
फल	अग्निदाह	चिन्ता	स्थिरता	धनागम	लाभ	दरिद्रता	स्वामीनाश	पीडा

नवीन (अपूर्व) गृहप्रवेश मुहूर्त्त

◆ **कालशुद्धि** - उत्तरायण विशेष शुभ। गुरु-शुक्र अस्तादिविचार आवश्यक। भद्रादोष वर्ज्य। दिन व रात दोनों ही में प्रवेश शुभ। ◆ **मासशुद्धि** - माघ, फाल्गुन, वैशाख व ज्येष्ठ - श्रेष्ठ। मार्गशीर्ष, कार्तिक - मध्यम। ◆ **तिथि** - दोनों पक्षों की तिथि-१, २, ३, ५, ६, ७, ८, १० एवं शु.प. ११, १२, १३, १५ ◆ **वार** - चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र, शनि। ◆ **नक्षत्र** - रोहिणी, मृगशिरा, उ.फा., चित्रा, अनुराधा, उ.षा., धनिष्ठा, शतभिषा, उ.भा. व रेवती। मतान्तर से अश्विनी, पुष्य, स्वाती, मूल व श्रवण भी ग्राह्य। ◆ **योगशुद्धि** - वैधृति, शूल, गण्ड, अतिगण्ड, विष्कुम्भ, व्यतीपात, वज्र, परिघ व व्याघात योग वर्जनीय। ◆ **लग्नशुद्धि** - वृष, सिंह, वृश्चिक, मिथुन, कन्या, धनु, मीन। मतान्तर से कुम्भ भी ग्राह्य। लग्न से चतुर्थाष्टम शुद्धि आवश्यक।

सूर्यनक्षत्र से (गृहप्रवेश में विचारणीय) कुम्भचक्र

नक्षत्र	1	2-5	6-9	10-13	14-17	18-21	22-24	25-27
स्थान	मुख	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर	गर्भ	गुदा	कण्ठ
फल	अग्निदाह	चिन्ता	धनलाभ	धनप्राप्ति	कलह	विनाश	स्थिरता	स्थिरता
नक्षत्रफल	५अशुभ		८ शुभ		८ अशुभ		६ शुभ	

जीर्ण गृह प्रवेश मुहूर्त्त

मुहूर्त शोधन नवीन (अपूर्व) गृह प्रवेश मुहूर्त के समान। ◆ **विशेष** - १. श्रावण, मार्गशीर्ष एवं कार्तिक मास भी ग्राह्य। २. नवीन (अपूर्व) गृह प्रवेश मुहूर्त में भी प्रवेश। ३. गुरु शुक्र अस्तादि विचार की आवश्यकता नहीं।

वापी कूप तडागादि खनन मुहूर्त

◆ **कालशुद्धि** - चैत्रमास में उत्तरायण, शुक्लपक्ष के शुभतिथियों में, शुद्धसमय में। पृथ्वी शयन नक्षत्रों को छोडकर शुभ नक्षत्रों में।सूर्य के नक्षत्र से ५,७, ९, १२, १९ एवं २६ वें चन्द्रनक्षत्रों में पृथ्वी शयन करती है। मतान्तर से सूर्यक्रान्ति से ५, ७, ९, ११, १५, २०, २२, २३ एवं २८ वें दिन भूमि शयन करती है। ◆ **लग्न** - ४, १०, ११, १२ राशिके लग्न, शुक्र दशमभाव में, गुरु बुध अन्यतरस्थ लग्ने, पापग्रह बलहीन, शुभग्रह बलयुक्त शुद्ध। ◆ **नक्षत्र** - रोहिणी, उ.षा., उ.फा., उ.भा., मृगशिरा, अनुराधा, हस्त, पुष्य, पू.षा., धनिष्ठा, रेवती, शतभिषा।

देवता जलाशय वाटिकादि प्रतिष्ठा मुहूर्त

◆ **कालशुद्धि** - चैत्रमास में उत्तरायण, शुभतिथियों में, शुद्धसमय में। ◆ **वार** - सू., सो, बु., गु., शु.। ◆ **तिथि** - २, ३, ५, ६, ७, ८, १०, ११, १२, १३, १५ शु.प.। ◆ **नक्षत्र** - मृग., रेवती, चित्रा, अनु., ह, अश्वि, तीनों उत्तरा, पुष्य, स्वा., पुन., श्र., धन., शत., रो.।

देवालय-गृहारम्भ-जलाशय-आरम्भ में खात दिग्ज्ञान

खातदिक्	नैऋत्यां	आग्नेयां	ऐशान्यां	वायव्यां
देवालय	धनु,मकर,कुम्भ	मीन,मेष,वृष	मिथुन,कर्क,सिंह	कन्या,तुला,वृश्चिक
जलाशय	तुला,वृश्चिक,धनु	मकर,कुम्भ,मीन	मेष,वृष,मिथुन	कर्क,सिंह,कन्या
गृहारम्भ	वृष,मिथुन,कर्क	सिंह,कन्या,तुला	वृश्चिक,धनु,मकर	कुम्भ,मीन,मेष

सर्वदेव प्रतिष्ठा मुहूर्त

◆ **कालशुद्धि** - उत्तरायण, गुरु-शुक्र अस्तादि का विचार आवश्यक। मकर, कुम्भ, मीन, मेष, वृष एवं मिथुन में सूर्य के रहने पर। नारदानुसार चैत्रमास रहित मीन राशि का सूर्य प्रशस्त है। (

पी.धा.टी. मु.चि. २/६१-६२) ◆ **तिथि -** शु.प. - २, ३, ५, ६, ७, ८, १०, ११, १२, १३ व १५।◆ **वार -** सू., सो., बुध, गुरु, शुक्र एवं शनि.।◆ **नक्षत्र -** मृग., रेवती, चित्रा, अनु., हस्त, अश्विनी, पुष्य, स्वा., पुन., श्रवण, धनि., शत., रो., तीनों उत्तरा।◆ **लग्नशुद्धि -** सिंहे सूर्यं, कुम्भे ब्रह्माणं, मिथुने शंकरं स्थापयेत्। द्विस्वभावे देव्या:, चरलग्ने च योगिन्य: स्थापनीया:। देवा:स्थिरलग्नेषु स्थाप्या:। ग्रहान् पुष्ये, बुद्धं श्रवणे, गणेशादीन् रेवत्यां स्थापयेत्। भगवत: विष्णो: देवोत्थानैकादश्यां रामनवम्यां, कृष्णाष्टम्याम्, देव्या: नवरात्रौ दीपमालिकायां, शङ्करस्य शिवरात्रौ (माघफाल्गुनकृष्णचतुर्दश्यां) वा शुभं प्रतिष्ठापनम्। अर्थात् चन्द्र व पापग्रह - ३, ६, ११ स्थानों में शुभ। शुभ ग्रह ८ व १२ स्थानों को छोडकर अन्यत्र शुभ। प्रतिष्ठा पूर्वाह्न में श्रेष्ठ।

◆ **देवविशेष हेतु लग्न -**

देव	सूर्य	ब्रह्मा	विष्णु	शिव	देवी	क्षुद्रदेवी
लग्न	सिंह	कुम्भ	कन्या	मिथुन	द्विस्वभाव	चरराशि

अन्य देवताओं प्रतिष्ठा नक्षत्र- नवग्रहों का पुष्य में, गणेश यक्ष सर्प भूतादि का रेवती में, जैन देवताओं का श्रवण में प्रतिष्ठा करने का शास्त्रादेश प्राप्त होता है।

यात्रा मुहूर्त

◆ **यात्राकाल -** विशेष यात्रा के लिए - मेष, सिंह व धनु में सूर्य के रहने पर - प्रशस्त वृष, मिथुन, तुला, मकर, कुम्भ व मीन - मध्यम, कर्क, वृश्चिक व मीन - अधम

◆ **तिथि -** शुक्लपक्ष - २, ३, ५, ७, १०, ११ व १३, कृष्णपक्ष - १, २, ३, ५, ७, १०, ११ व १३, ◆ **नक्षत्र -** अश्विनी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, अनुराधा, श्रवण, धनिष्ठा व रेवती। ◆ **वार -** सोम, बुध, गुरु व शुक्र - श्रेष्ठ, रवि, मङ्गल, व शनि - मध्यम। **वार व नक्षत्र शूल (दिशाशूल) -**

दिशा	नक्षत्र	वार
पूर्व	ज्येष्ठा	शनि, सोम
दक्षिण	पूर्वाभाद्रपद	गुरु
पश्चिम	रोहिणी	शुक्र, रवि
उत्तर	उत्तराफाल्गुनी	मङ्गल, बुध

दिक्शूलपरिहार - न वारदोषा: प्रभवन्ति रात्रौ देवेज्यदैत्येज्यदिवाकराणाम् । दिवा शशांकार्कजभूसुतानां सर्वत्र निन्द्यो बुधवारदोष: ।। सूर्यवारे घृतं प्राश्यं चन्द्रवारे पयस्तथा। गुडमंगारके वारे बुधवारे तिलानपि । गुरुवारे दधि प्राश्यं शुक्रवारे यवानपि। माषान्भुक्त्वा शनेवरि गच्छञ्छूले न दोषभाक् ।।२।। अर्थात् सूर्य, गुरु व शुक्रवार को रात्रि में यात्रा करने पर वारदोष नहीं होता है। इसी प्रकार चन्द्र, शनि व मङ्गलवार को दिन में यात्रा करने पर वारदोष नहीं होता है। केवल बुधवार को दिन या रात दोनों ही समय यात्रा करने पर वारदोष होता है। अत्यावश्यक यात्रा होने पर दिक् शूल परिहार हेतु यात्रा पूर्व रविवार को घी, सोमवार को दूध, मंगलवार को गुड, बुधवार को तिल, गुरुवार को दही, शुक्रवार को जौ तथा शनिवार को उडद का सेवन करना चाहिए।

योगिनीवास चक्रम्

दिशा	पूर्व	आग्नेय	दक्षिण	नैऋत्य	पश्चिम	वायव्य	उत्तर	ईशान
तिथि	१।६	३।११	५।१३	४।१२	६।१४	७।१५	२।१०	८।३०

समयशूल - उषाकाल में पूर्व को गोधूलि में पश्चिम को, अर्द्धरात्रि में उत्तर को और मध्याह्नकाल में दक्षिण को नहीं जाना चाहिए। गर्गमत से ५ या ४ घडी रात रहे तो गमन,बृहस्पतिमत से शुभ शकुन पर यात्रा करें। अङ्गिरा मत से जब मन प्रफुल्लित हो तब ही चला जाए। अन्यमत से ब्राह्मण की आज्ञा लेकर यात्रा करने से शुभ होता है।

चन्द्रवास -पूर्व मेष, सिंह, धनु। **दक्षिण** वृष, कन्या, मकर। **पश्चिम** मिथुन, तुल, कुम्भ। **उत्तर** कर्क, वृश्चिक, मीन।यात्रा में चन्द्रमा दक्षिण व सम्मुख शुभ होता है।

यात्रा में लग्न विशेष - लग्न व राशि से अष्टमलग्न तथा कुम्भ या कुम्भ के नवांश में यात्रा कदापि न करें। शुभलग्न से १।४।५।७।९।१० स्थानों में शुभ ग्रह हों और ३।६।१०।११ वें स्थानों में पापग्रह हों, १।६।८।१२ वें स्थानों में चन्द्र न हो, १० वें शनि न हो, ६ वें शुक्र न हो, १२।६।८ वें स्थानों में लग्नेश नहीं होना चाहिए। अन्यच्च - **यात्रायामष्टमं शुद्धं विवाहे सप्तमं तथा। दशमं तु गृहारम्भे चतुर्थं तु प्रवेशने ।।** जन्मलग्नेश, दशमेश अस्त हों व मारकदशा हो तो सुमुहूर्त में भी दूर की यात्रा न करें, प्रथम तीर्थयात्रा व देवदर्शन गुरु शुक्र अस्त में वर्जित है।

द्विर्द्वार लग्न

दिशा	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर
शुभ -	१।५।९	२।६।१०	३।७।११	४।८।१२
मध्यम -	२।६।१०	३।७।११	४।८।१२	१।५।९
भय -	४।८।१२	१।५।९	२।६।१०	३।७।११
महद्भय -	३।७।११	४।८।१२	१।५।९	२।६।१०

सिद्धादियोग चक्र

(दिवस तिथि नक्षत्रादि से)

योगनामानि -	सिद्धियोग	अमृतयोग	मृत्युयोग	सर्वार्थसिद्धियोग
रविवार	३-८-१३	५-१०-१५	१-६-११	अश्वि, हस्त, पुष्य, मूल उत्त.३
चन्द्रवार	१-६-११	५-१०-१५	२-७-१२	रोहि, मृग, पुष्य, अनु, श्रवण
मङ्गलवार	३-८-१३	२-७-१२	१-६-११	अश्विनी, कृत्तिका,आश्ले.उ.भा.
बुधवार	२-७-१२	१-६-११	३-८-१३	कृत्ति.रोहि, मृग, हस्त, अनु.
गुरुवार	५-१०-१५	३-८-१३	४-९-१४	अश्वि, पुन, अनु, पुष्य, रेवती
शुक्रवार	१-६-११	४-९-१४	२-७-१२	अश्वि, पुन, अनु, श्रवण, रेवती
शनिवार	४-९-१४	१-६-११	५-१०-१५	रोहिणी, स्वाती, श्रवण

रामदैवज्ञ मत में यात्रामुहूर्त्त

पौष	माघ	फा.	चैत्र	वैशा.	ज्येष्ठ	आष.	श्राव.	भाद्र.	आश्वि.	कार्ति.	मार्ग.	पूर्व	दक्षिण	पश्चि.	उत्त.
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	सौख्य	क्लेश	भीति	लाभ
२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	शून्य	दारि.	दारि.	मिश्र
३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	हानि	दु:ख	लाभ	लाभ
४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	लाभ	सौख्य	शुभ	लाभ
५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	लाभ	लाभ	लाभ	सुख
६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	भय	लाभ	मृत्यु	लाभ
७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	लाभ	कष्ट	लाभ	सुख
८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	कष्ट	सौख्य	क्लेश	सुख
९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	सौख्य	लाभ	सिद्धि	कष्ट
१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	क्लेश	सिद्धि	लाभ	धन
११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	मृत्यु	लाभ	लाभ	शुभ
१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	शुभ	सौख्य	मृत्यु	कष्ट

तृतीया - त्रयोदशी, चतुर्थी - चतुर्दशी, पञ्चमी - पूर्णमा का फल समान जानना चाहिए। अमावस्या में यात्रा वर्जित है, पक्ष का विचार नहीं है।

सर्वदिग्गमननक्षत्राणि - अश्विनीमृगशिरापुष्यश्रवणनक्षत्राणि सर्वदिग्गमने शुभानि।

विदिक्शूलविचार:

शनौ पूर्वे, चन्द्रे अग्निकोणे, गुरौ याम्यां, बुधे नैर्ऋत्यां, सूर्ये प्रतीच्यां, शुक्रे वायुकोणे, उत्तरस्यां मङ्गले बुधे, ऐशान्यां बुधमन्दयोर्न गन्तव्यम्।

लग्नचन्द्रयोर्वास:

मेषसिंहधनुराशिषु पूर्वस्यां, वृषकन्यामकरराशिषु दक्षिणस्यां, मिथुनतुलाकुम्भराशिषु पश्चिमायां, कर्कवृश्चिकमीनराशिषु चोत्तरस्यां लग्नचन्द्रयोर्वास:। सम्मुखदक्षिणलग्नचन्द्रयो: यात्रा शुभा। परं सर्वदिग्गमननक्षत्रेषु वामपृष्ठचन्द्रेऽपि यात्रा शुभा।

चन्द्रविचार:

जन्मनामग्रामादिराशितोऽभीष्टदिनस्य चन्द्रं यावद्गणनीयम्। तत्र १, २, ३, ५, ६, ७, ९, १०, ११ संख्याकश्चन्द्र: शुभप्रद:। ८ चन्द्र: मृत्युप्रद:। ४ कलहद:। १२ हानिकारक:। तत्र दुष्टे चन्द्रे तद्दोषशान्त्यर्थमामतण्डुलशंखदधिश्वेतवस्त्रादिदानं कार्यम्।

द्वादशचन्द्रस्य विशेष:

आधाने सम्प्रदाने च विवादे राजविग्रहे। पाणिग्रहे प्रयाणे च चन्द्रो द्वादशग: शुभ:। अभिषेके निषेके च गृहे पुंसवनादिषु। यात्रायुद्धे विवादे च चन्द्रो द्वादशग: शुभ:।

जन्मराशि-नामराशिवशेन विचारणीयविषया:

विवाहे सर्वमांगल्ये यात्रायां ग्रहगोचरे। जन्मराशिप्रधानत्वं नामराशिं न चिन्तयेत्। देशे ग्रामे गृहे युद्धे सेवायां व्यवहारके। नामराशिप्रधानत्वं जन्मराशिं न चिन्त्येत्। काकिण्यां वर्गशुद्धौ च वादे द्यूते स्वरोदये। मन्त्रे पुनर्भूवरणे नामराशे: प्रधानता।।

जन्मनक्षत्रे त्याज्या: - जन्मनक्षत्रगश्चन्द्र: प्रशस्त: सर्वकर्मसु। क्षौरभैषज्यवादाध्वकर्त्तनेषु विवर्जयेत्।

जन्ममासे त्याज्या: - क्षौरकर्म दीर्घयात्रा कर्णवेधश्च।

पञ्चक विचार

धनिष्ठा-शतभिषा-पूर्वभाद्र-उत्तरभाद्र-रेवतीनक्षत्राणि पञ्चकसंज्ञकानि। तत्र दक्षिणदिग्गमन-गृहाच्छादन-प्रेतदाह-तृणकाष्ठादिसंग्रहशय्याविताननिर्माणादिकं च त्येजत्। तत्रापवाद: - वस्वादौ शतभिग्मध्ये पूर्वादौ चोत्तरान्तके। पञ्च पञ्च घटी त्याज्या रेवतीं सकलां त्यजेत्।

दग्धतिथिमासान्तादिविचार:

मीने धनुषि स्थिते सूर्ये द्वितीया तिथि:, वृषे कुम्भे स्थिते सूर्ये चतुर्थी, मेषे कर्के स्थिते सूर्ये षष्ठी, मिथुने कन्यायां स्थिते सूर्येष्टमी, सिंहे वृश्चिके स्थिते सूर्ये दशमी, तुले मकरे च स्थिते सूर्ये द्वादशी तिथिर्दग्धा भवति। तत्र शुभकार्यं निषिद्धम्। एवमेव संक्रान्तिदिनं तत्पूर्वापरदिनञ्च (मासान्तमासादिसञ्चकम्) यात्रादिसकलशुभकार्येषु त्याज्यम्।

मन्त्रग्रहण मुहूर्त

◆ **कालशुद्धि -** सौरक्रम से बैशाख, श्रावण, आश्विन, कार्तिक, मार्गशीर्ष माघ, फाल्गुन मासों में। संक्रान्तौ, पूर्णिमायां, नवरात्रमध्ये, ग्रहणे, सिद्धिक्षेत्रे, मन्वादियुगादिषु च मुहूर्त विनाऽपि मन्त्रग्रहणं शुभम्।◆ **वार -** रवि, चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र। शुद्धसमय प्रातः वा मध्याह्न में ।

◆ **तिथि -** २, ३, ५, ६, ७, १०, ११, १२, १३, १५शुक्लपक्ष। कृष्ण पञ्चमी तक।

◆ **नक्षत्र -** अश्विनी, रोहिणी, पुनर्वसु, पुष्य, उत्तरा ३, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, मूल, अभिजित्, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवती।◆ **लग्नशुद्धि -** २, ३, ५, ७, ९, १२ लग्नों मे, शुभग्रह १, ४, ५, ७, ९, १० भावों में, पापग्रह ३, ६, ११ में, शुभ है।

राहु (काल) वासः

सौरक्रमेण मार्गपौषमाघमासेषु पूर्वस्याम्। फाल्गुनचैत्रवैशाखेषु दक्षिणस्याम्। ज्येष्ठाषाढश्रावणेषुपश्चिमायाम्। भाद्राश्विनकार्तिकेषूत्तरस्यां कालवासः।

पुराणादि श्रवण मुहूर्त

◆ **कालशुद्धि -** उत्तरायण में श्रावण, आश्विन, कार्तिक, मार्गशीर्ष मासों में शुभ। तीर्थक्षेत्र में देवालय में सिद्धिक्षेत्र मे पर्वविशेष नवरात्रादि में मुहूर्त के विना भी शुभ होता है। ◆ **वार -** रवि, चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र। ◆ **तिथि -** २, ३, ५, ७, ८, १०, ११, १२, १३, १५शुक्लपक्ष। कृष्ण पञ्चमी तक। ◆ **नक्षत्र -** अश्विनी, रोहिणी, मृगशीर्ष, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, श्रवण, । ◆ **लग्नशुद्धि -** लग्नों मे शुभग्रह दृष्ट या युत हो, शुभग्रह १, ४, ५, ७, ९, १० भावों में, पापग्रह ३, ६, ११ में शुभ है।

इन्धन स्थापन मुहूर्त

◆ **कालशुद्धि -** सूर्यसंक्रान्ति के नक्षत्रों से ६ नक्षत्रों में शुभ होता है। तदन्तर ६ नक्षत्रों में अशुभ, उसके ४ नक्षत्रों में शुभ, अग्रिम ८ नक्षत्रों में अशुभ, तत्पश्चात् ४ नक्षत्रों में शुभ होता है।

नवान्न भक्षण मुहूर्त

◆ **कालशुद्धि -** नवान्न भक्षण में जन्मतारा, विशाखानक्षत्र में सूर्य, कृष्णपक्ष का अष्टम चन्द्र, सौरक्रम में कार्तिक, पौष, चैत्र, हरिशयन निषिद्ध होता है। ◆ **वार -** रवि, चन्द्र, बुध, गुरु।

◆ **तिथि -** २, ३, ५, ७, ८, १०, १२, १५शुक्लपक्ष। अभाव से कृष्ण पञ्चमी तक।

◆ **नक्षत्र -** अश्विनी, रोहिणी, मृगशीर्ष, पुनर्वसु, पुष्य, उत्तरा ३, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, मूल, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवती शुभ। मूल नक्षत्र में मध्यम। ◆ **लग्नशुद्धि -** वृश्चिक में ३ अंश २०कला के बाद १३ अंश तक। आवश्यक होने पर २३ अंश तक भी। मकर के ७ अंश के बाद तथा कुम्भ में सूर्य हो तो। २, ३, ४, ६, ७, ९, १२ लग्नों में शुभग्रह दृष्ट युत वा स्वस्वामी युत हो तो शुभ।

बीज बोने का मुहूर्त

◆ **वार -** चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र। ◆ **तिथि -** २, ३, ५, ८, १०, ११, १२, १३, १५शुक्लपक्ष। ◆ **नक्षत्र -** अश्विनी, रोहिणी, मृगशीर्ष, पुनर्वसु, पुष्य, उत्तरा ३, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, श्रवण, धनिष्ठा, रेवती शुभ। ◆ **लग्नशुद्धि -** २, ३, ५, ७, ९, १२ लग्नों मे, शुभग्रह १, ४, ५, ७, ९, १० भावों में, पापग्रह ३, ६, ११ में, शुभ है। लग्नों में शुभग्रह दृष्ट युत वा स्वस्वामी युत हो तो शुभ।

राहुनक्षत्र से बीज बोने में फणिचक्र

नक्षत्र	1-8	9-11	12	13-15	16	17-19	20	21-23	24-27
स्थान	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ

हल चलाने का मुहूर्त

◆ **वार -** चन्द्र, मङ्गल, बुध, गुरु, शुक्र। ◆ **तिथि -** २, ३, ५, ८, १०, ११, १२, १३, १५शुक्लपक्ष। कृष्णपक्ष पञ्चमी तक। ◆ **नक्षत्र -** अश्विनी, रोहिणी, मृगशीर्ष, पुनर्वसु, मघा, उत्तरा ३, हस्त, चित्रा, स्वाती, विशाखा, अनुराधा, मूल, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवती शुभ। ◆ **लग्नशुद्धि -** शुभलग्न में, पापग्रह निर्बल होने पर, शुभग्रह बलयुक्त होने पर, चन्द्र जलचर राशि के नवांश में स्थित होने पर, गुरु शुक्र बुध के लग्न में होने पर शुभ होता है।

सूर्य भुक्त नक्षत्र से हलचक्र

नक्षत्र	1-3	4-11	12-20	21-28
फल	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ

धान रोपने का मुहूर्त

◆ **वार -** सूर्य, चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र। ◆ **नक्षत्र -** रोहिणी, उ.फा., विशाखा, मूल, शतभिषा, पू.भा. में शुभ। ◆ **लग्नशुद्धि -** शुभ तिथि एवं शुभलग्न में शुभ होता है।

ऋण देने का मुहूर्त

◆ **वार -** चन्द्र, गुरु, शुक्र, शनि। ◆ **नक्षत्र -** स्वाती, पुनर्वसु, चित्रा, विशाखा, अनुराधा, मूल, पुष्य, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, शुभ। ◆ **लग्नशुद्धि -** १, ४, ७, १० लग्न में, शुभतिथि में होने पर शुभ होता है।**ऋणदान में निषिद्ध समय -** बुधवार, भरणी, कृतिका, आर्द्रा, आश्लेषा, मघा, पूर्वा ३, चित्रा, ज्येष्ठा नक्षत्रों में, भद्रा एवं पात योगों में निषिद्ध होता है। **ऋणग्रहण में निषिद्ध समय -** रवि मङ्गल वार में, संक्रान्ति में, वृद्धि योग एवं हस्त नक्षत्र में, इन कालों में ऋणग्रहण नहीं करना चाहिये।

दुकान खोलने का मुहूर्त

◆ **वार -** सूर्य, चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र, शनि। ◆ **तिथि -** कृष्णपक्ष की दशमी तक। अष्टमी को छोडकर शुक्लपक्ष की सभी तिथियों में।◆ **नक्षत्र -** अश्विनी, रेवती, पुष्य, हस्त, उत्तरा, अनुराधा, अभिजित् शुभ। ◆ **लग्नशुद्धि -** कुम्भ लग्न को छोडकर सभी लग्न में, चन्द्र शुक्र लग्न में। ८, २ पापग्रह रहित, २, १०, ११ शुभग्रह।

मिल/कारागाना प्रारम्भ करने का मुहूर्त

◆ **वार -** सूर्य, चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र। ◆ **तिथि -** २, ३, ५, ७, १०, ११, १३, १५शुक्लपक्ष। ◆ **नक्षत्र -** भरणी, कृतिका, आश्लेषा, विशाखा, पूर्वा ३ शुभ। ◆ **लग्नशुद्धि -** कुम्भ के विना लग्नों मे शुभग्रह दृष्ट या युत हो, शुभग्रह १, २, ४, ५, ७, १० भावों में रहने पर, पापग्रह ३, ६, ११ में, शुभ है।

वस्तु खरीदने का मुहूर्त

◆ **नक्षत्र -** अश्विनी, चित्रा, स्वाती, श्रवण, शतभिषा, रेवती में शुभ।बुध एवं रविवार श्रेष्ठ। ◆ **लग्नशुद्धि -** शुभतिथि, शुभलग्न, शुभदिनों में वस्तु खरीदना शुभ होता है।

वस्तु बेचने का मुहूर्त

◆ **नक्षत्र -** पू.फा.,पू.षा.,विशाखा,कृत्तिका, आश्लेषा एवं भरणी नक्षत्र।◆ **वार -** गुरुवार व सोमवार श्रेष्ठ।

औषधि खाने का मुहूर्त

◆ **वार -** सूर्य, चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र। ◆ **नक्षत्र -** अश्विनी, मृगशीर्ष, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, मूल, अभिजित्, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, रोहिणी में शुभ।◆ **लग्नशुद्धि -** ३, ६, ९, १२ लग्नों में, शुभग्रह ३, ६, ९, १२ राशिमें स्थित हो, तथा लग्न से ७, ८, १२ स्थान ग्रहरहित हों तो औषधि खाना शुभ होता है।

आपरेशन का मुहूर्त

◆ **वार -** सूर्य, मङ्गल, गुरु। ◆ **नक्षत्र -** अश्विनी, रोहिणी, मृगशीर्ष, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, ज्येष्ठा, अभिजित्, श्रवण, शतभिषा में शुभ। ◆ **लग्नशुद्धि -** शुभतिथि शुभलग्नों में शुभ होता है।

चिकित्सा का मुहूर्त

◆ **वार -** सूर्य, चन्द्र, मङ्गल, गुरु, शुक्र।◆ **नक्षत्र -** अश्वि, रो., मृग., पुष्य, ह., चित्रा, स्वाती, अनु, ज्ये. अभि., श्रवण, शत. में शुभ।◆ **लग्नशुद्धि -** शुभतिथि एवं लग्नों में शुभ होता है।

उग्रकर्म/अभिचार करने का मुहूर्त

◆ **वार -** मङ्गल, शनि।◆ **नक्षत्र -** पूर्वा ३, भरणी, मघा, मूल, ज्येष्ठा, आश्लेषा, आर्द्रा में शुभ।◆ **तिथि -** १, ३, ४, ५, ९, १०, ११, १४ तिथियों में शुभ।◆ **लग्नशुद्धि -** १, ८, १०, ११ लग्नों में शुभ होता है।

वाहनादि चलाने का मुहूर्त

◆ **वार -** चन्द्र, मङ्गल, गुरु, शुक्र, शनि।◆ **नक्षत्र -** अश्विनी, मृगशीर्ष, पुनर्वसु, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, ज्येष्ठा, रेवती में शुभ।◆ **तिथि -** १, २, ३, ५, ६, ७, ८, १०, ११, १३, १५ तिथियों में शुभ।◆ **लग्नशुद्धि -** चतुर्थेश बलयुक्त होकर १, ४, ५, ७, ९, १० में स्थित होने पर, लग्नेश दशमेश नवमेश भी १, ४, ५, ७, ९, १० में बली हों, पापग्रह ३, ६, ११ में स्थित हों यानादि चलाना शुभ होता है।

त्रिपुष्करयोग/द्विपुष्करयोग

भद्रासंज्ञक (२/७/१२) तिथि, **शनि-भौम-रविवार** में और **विशाखा, उत्तराफाल्गुनी, पूर्वाभाद्रपद, पुनर्वसु, कृत्तिका एवं उत्तराषाढा** ये तीन पाद वाले ६ नक्षत्र अर्थात् जिस दिन उक्त तिथि-वार-नक्षत्रों का योग हो, उसे त्रिपुष्करयोग कहते हैं। यह त्रिपुष्करयोग मृत्यु, विनाश तथा वृद्धि में त्रिगुणित फल देता है अर्थात् किसी की मृत्यु हो जाय तो उस कुटुम्ब में ३ व्यक्ति की मृत्यु होती है। यदि कोई वस्तु खो जाय नष्ट हो जाय तो ३ वस्तु खो जायेंगी या नष्ट हो जायेंगी एवं किसी वस्तु का लाभ हो तो ३ वस्तुएँ मिलेंगी, ऐसा जानना चाहिए। इसी प्रकार **धनिष्ठा, चित्रा, मृगशिरा** (२ चरण वाले नक्षत्र) यदि भद्रातिथि (२/७/१२), **शनि-भौम-रविवार** को पड जाय तो द्विपुष्कर योग होता है। यह द्विगुणित फल देता है। इन त्रिपुष्कर या द्विपुष्कर योगों में यदि कोई दुर्घटना या अप्रिय कार्य हो जाय तो पञ्चकशान्ति की भाँति त्रिपुष्कर, द्विपुष्कर शान्ति करनी चाहिए अथवा श्रीनारद जी के वचनानुसार ३ गोदान, २ गोदान करना चाहिए। यथा - **दद्यात्तद्दोषनाशाय गोत्रयं मूल्यमेव वा । द्विपुष्करे द्वयं दद्यान्न दोषस्त्वृक्षमात्रतः।।**

रवियोग

सूर्य स्थित नक्षत्र से वर्तमान चन्द्र स्थित नक्षत्र संख्या तक गणना करना चाहिए। यदि चन्द्र नक्षत्र संख्या ४, ६, ९, १०, १३, २० हो तो रवियोग होता है।

गृहारम्भ के ध्यातव्य विषय

वास्तुशास्त्र में गृहनिर्माण सम्बन्धी विधियों व नियमों का निर्देश किया गया है। बृहद्वास्तुमाला में भी कहा गया है - **द्वारशुद्धि निरीक्ष्यादौ भशुद्धि वृषचक्रतः। निष्पञ्चके स्थिरे लग्ने द्वयङ्गे वालय मारभेत्।। त्यक्त्वा कुजार्कयोश्चांश पृष्ठे चाग्रे स्थितं विधुम्। बुधेज्य राशिगं चार्कं कुर्याद् गेहं शुभाप्तये।।** सर्वप्रथम द्वारशुद्धि का विचार कर वृषचक्र के अनुसार नक्षत्र देखें, पञ्चक नक्षत्रों (धनिष्ठा, शतभिषा, पूर्वाभाद्रपद, उत्तराभाद्रपद, रेवती) को छोड़कर स्थिर अथवा द्विस्वभाव लग्न में गृहारम्भ करें, मंगल और सूर्य का अंश, आगे व पीछे (राशि) का चन्द्रमा, एवं मिथुन, कन्या, धनु व मीन राशि के सूर्य को छोड़कर गृहारम्भ करना चाहिए।

गृहारम्भ में राहु मुख विचार - गृहनिर्माण के समय राहुमुख विचार विशेषतया किया जाता है। कौन-कौन से समय में राहुमुख किस दिशा में हो यह ज्ञात करना अत्यावश्यक होता है।

गृहनिर्माण के समय सूर्य यदि सिंह, कन्या व तुला इन तीन राशियों में हो तो राहुमुख ईशानकोण में स्थापित करना चाहिए। वृश्चिक-धनु व मकर में सूर्य हो तो राहुमुख वायव्यकोण में, कुम्भ-मीन-मेष राशि में सूर्य हो तो राहुमुख नैऋत्यकोण में, वृष-मिथुन-कर्क राशि में हो तो राहुमुख अग्निकोण में होता है।

ग्रहों का उदयास्त, राशिप्रवेश, वक्रत्व, मार्गत्व

मंगलग्रह का उदयास्त

दिशा	दिनांक	भा.स्टा.स.	दिशा	दिनांक	भा.स्टा.स.
अस्त पश्चिम	11.07.2019	12:01	उदय पूर्व	13.10.2019	28:19

बुधग्रह का उदयास्त

दिशा	दिनांक	भा.स्टा.स.	दिशा	दिनांक	भा.स्टा.स.
अस्त पूर्व	06.05.2019	26:47	उदय पश्चिम	20.05.2019	28:28
अस्त पश्चिम	11.07.2019	12:37	उदय पूर्व	29.07.2019	10:29
अस्त पूर्व	25.08.2019	09:21	उदय पश्चिम	22.09.2019	18:15
अस्त पश्चिम	04.11.2019	21:08	उदय पूर्व	16.11.2019	10:24
अस्त पूर्व	22.12.2019	12:30	उदय पश्चिम	25.01.2020	29:32
अस्त पश्चिम	20.02.2020	26:37	उदय पूर्व	02.03.2020	17:17
अस्त पूर्व	18.04.2020	11:19			

गुरुग्रह का उदयास्त

दिशा	दिनांक	भा.स्टा.स.	दिशा	दिनांक	भा.स्टा.स.
अस्त पश्चिम	15.12.2019	29:57	उदय पूर्व	08.01.2020	30:33

शुक्रग्रह का उदयास्त

दिशा	दिनांक	भा.स्टा.स.	दिशा	दिनांक	भा.स्टा.स.
अस्त पूर्व	23.07.2019	14:53	उदय पश्चिम	09.09.2019	28:39

शनिग्रह का उदयास्त

दिशा	दिनांक	भा.स्टा.स.	दिशा	दिनांक	भा.स्टा.स.
अस्त पश्चिम	30.12.2019	24:16	उदय पूर्व	29.01.2020	29:51

सूर्य नक्षत्र प्रवेश

नक्षत्र	दिनांक	भा.स्टा.स.	नक्षत्र	दिनांक	भा.स्टा.स.
अश्विनी	14.04.2019	14:09	भरणी	28.04.2019	06:03
कृत्तिका	11.05.2019	24:08	रोहिणी	25.05.2019	20:26
मृगशिरा	08.06.2019	18:13	आर्द्रा	22.06.2019	17:19
पुनर्वसु	06.07.2019	16:50	पुष्य	20.06.2019	16:26
आश्लेषा	03.08.2019	15:18	मघा	17.08.2019	13:02
पू.फा.	31.08.2019	09:00	उ.फा.	13.09.2019	26:54
हस्त	27.09.2019	18:27	चित्रा	11.10.2019	07:26
स्वाती	24.10.2019	19:00	विशाखा	06.11.2019	26:04
अनुराधा	20.11.2019	08:12	ज्येष्ठा	03.12.2019	12:24
मूल	16.12.2019	15:28	पूर्वाषाढा	20.12.2019	17:36
उत्तराषाढा	11.01.2020	19:36	श्रवण	24.01.2020	21:51
धनिष्ठा	06.02.2020	24:57	शतभिषा	19.02.2020	29:30
पू.भा.	04.03.2020	11:43	उ.भा.	17.03.2020	20:14
रेवती	31.03.2020	06:58	अश्विनी	13.04.2020	20:23

निरयण सूर्य राशि प्रवेश

राशि	दिनांक	भा.स्टा.स.	राशि	दिनांक	भा.स्टा.स.
मेष	14.04.2019	14:09	वृष	15.05.2019	11:01
मिथुन	15.06.2019	17:38	कर्क	16.07.2019	28:34
सिंह	17.08.2019	13:02	कन्या	17.09.2019	13:03
तुला	17.10.2019	25:03	वृश्चिक	16.11.2019	24:51
धनु	16.12.2019	15:28	मकर	14.01.2020	26:08
कुम्भ	13.02.2020	11:54	मीन	13.04.2020	20:23

मंगल राशि प्रवेश

राशि	दिनांक	भा.स्टा.स.	राशि	दिनांक	भा.स्टा.स.
मिथुन	07.05.2019	06:53	कर्क	22.06.2019	23:23
सिंह	08.08.2019	28:47	कन्या	25.09.2019	06:33
तुला	10.11.2019	14:24	वृश्चिक	25.12.2019	21:29
धनु	07.02.2020	27:52	मकर	22.03.2020	14:40

बुध राशि प्रवेश

राशि	दिनांक	भा.स्टा.स.	राशि	दिनांक	भा.स्टा.स.
मीन	11.04.2019	28:24	मेष	03.05.2019	17:03
वृष	18.05.2019	23:35	मिथुन	01.06.2019	24:17
कर्क	20.06.2019	26:27	मिथुन (व.)	30.07.2019	11:51
कर्क	03.08.2019	05:59	सिंह	26.08.2019	14:07
कन्या	10.09.2019	28:59	तुला	29.09.2019	12:55
वृश्चिक	23.10.2019	23:12	तुला (व.)	07.11.2019	15:55
वृश्चिक	05.12.2019	10:34	धनु	25.12.2019	15:46
मकर	13.01.2020	11:35	कुम्भ	30.01.2019	26:53
मीन	07.04.2020	14:24			

गुरु राशि प्रवेश

राशि	दिनांक	भा.स्टा.स.	राशि	दिनांक	भा.स्टा.स.
धनु	29.03.2019	20:05	वृश्चिक (व)	22.04.2019	25:14
धनु	04.11.2019	29:17	मकर	29.04.2020	27:54

शुक्र राशि प्रवेश

राशि	दिनांक	भा.स्टा.स.	राशि	दिनांक	भा.स्टा.स.
मीन	15.04.2019	25:04	मेष	10.05.2019	19:06
वृष	04.06.2019	11:20	मिथुन	28.06.2019	25:34
कर्क	23.07.2019	12:49	सिंह	16.08.2019	20:39
कन्या	09.09.2019	25:41	तुला	03.10.2019	29:14
वृश्चिक	28.10.2019	08:32	धनु	21.11.2019	12:23
मकर	15.12.2019	17:59	कुम्भ	08.01.2020	28:23
मीन	02.02.2020	26:18	मेष	29.02.2020	25:33
वृष	28:03.2020	15:38			

शनि राशि प्रवेश

राशि	दिनांक	भा.स्टा.स.
मकर	24.01.2020	09:56

मंगल ग्रह का वक्रत्व मार्गत्व

इस वर्ष वक्री नहीं है।

बुध ग्रह का वक्रत्व मार्गत्व

गति	दिनांक	भा.स्टा.स.	गति	दिनांक	भा.स्टा.स.
मार्गी	28.03.2019	19:33	वक्री	07.07.2019	28:44
मार्गी	01.08.2019	09:20	वक्री	31.10.2019	21:01
मार्गी	20.11.2019	24:54	वक्री	16.02.2019	30:24
मार्गी	10.03.2019	09:28			

गुरु ग्रह का वक्रत्व मार्गत्व

गति	दिनांक	भा.स्टा.स.	गति	दिनांक	भा.स्टा.स.
वक्री	10.04.2019	22:31	मार्गी	11.08.2019	19:07

शुक्र ग्रह का वक्रत्व मार्गत्व

इस वर्ष वक्री नहीं है।

शनि ग्रह का वक्रत्व मार्गत्व

गति	दिनांक	भा.स्टा.स.	गति	दिनांक	भा.स्टा.स.
वक्री	30.04.2019	06:26	मार्गी	18.09.2019	14:16

वर्षा ज्ञान के लिए सप्तनाडी चक्र

स्वामी	शनि	रवि	भौम	गुरु	शुक्र	बुध	चन्द्र
संज्ञा	चंडा	वात	वह्नि	सौम्या	नीरा	जला	अमृत
नक्षत्र	कृ.	रोहि.	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	श्लेषा
नक्षत्र	विशा.	स्वाती	चित्रा	हस्त	उ.फा.	पू.फा.	मघा
नक्षत्र	अनु.	ज्ये.	मूल	पू.षा.	उ.षा.	अभि.	श्रव.
नक्षत्र	भर.	अश्वि	रेव.	उ.भा.	पू.भा.	शत.	धनि.

आर्द्रा आदि नक्षत्रों में वर्षा प्रमाण

आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	श्लेषा	मघा
३	२	२	२	२
पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाती
१।।	१।।	१	१।।	१

आषाढ ३, श्रावण ४, भाद्रपद ४, आश्विन१, कार्तिक में १, मार्गशीर्ष एवं पौष में भी साधरण।

सूर्य के नक्षत्र प्रवेशकाल द्वारा वृष्टि विचार

सूर्य के नक्षत्र प्रवेशकाल में सूर्य एवं चन्द्रमा दोनों यदि सूर्य के नक्षत्र में हो तो वायुचलन, चन्द्रनक्षत्र में होतो अनावृष्टि एवं एक सूर्य तथा दूसरा चन्द्र के नक्षत्र में स्थित हो तो सुवृष्टि होती है। **अन्यप्रकार** - जिस समय बुध, शुक्र, मंगल एवं गुरु एक नाडी के नक्षत्रों में स्थित होते हैं, उस समय अवश्य ही वृष्टि होती है।

उत्पात फल ज्ञान के लिए चतुर्विध मण्डल

अग्निमण्डल	कृत्ति.	भरणी	पुष्य	मघा	पू.भा.	विशाखा	पू.फा.	**अशुभ**
वरुणमण्डल	मूल	अश्ले.	शत.	आर्द्रा	रेवती	उ.भा.	पू.षा.	**शुभ**
वायुमण्डल	पुन.	उ.फा.	अश्वि.	हस्त	चित्रा	स्वाती	मृग.	**अशुभ**
चन्द्रमण्डल	अभि.	उ.षा.	अनु.	श्रव.	धनि.	ज्येष्ठा	रोहिणी	**शुभ**

उपरोक्त जिस मण्डल के नक्षत्रों में भूकम्प, उत्पात आदि होते हैं, उस मण्डल जनित प्रभावों के द्वारा द्रव्य, जन्तु एवं देशों को पीड़ा देते हैं। इसमें भी वायु एवं अग्निमण्डल विशेष अनिष्टकारक होते हैं।

गण्डान्त जनन दोष

गण्डान्त जनन दोष तीन प्रकार का होता है - तिथिगण्डान्त, नक्षत्रगण्डान्त और लग्नगण्डान्त। इनका विचार जन्म, यात्रा और विवाहादि कार्यों में करना चाहिए जैसा कि बृहत्पाराशर होराशास्त्र में प्राप्त होता है - **तिथिनक्षत्र लग्नानां गण्डान्तं त्रिविधं स्मृतम्। जन्म यात्रा विवाहादौ भवेत्तन्निधनप्रदम्।।**

तिथिगण्डान्त - पूर्णा तिथि की अन्तिम २ घटी तथा नन्दा तिथि की आरम्भिक २ घटी मिलाकर ४ घटी का तिथिगण्डान्त होता है। अर्थात् पूर्णिमा की अन्तिम २ घटी और प्रतिपदा की आरम्भिक २ घटी, पञ्चमी की अन्तिम २ घटी तथा षष्ठी की आरम्भिक २ घटी एवं दशमी की अन्तिम २ घटी तथा एकादशी की प्रारम्भिक २ घटी में तिथिगण्डान्त होता है। जैसा कि पराशर ने कहा है - **पूर्णानन्दाख्ययोस्तिथयो: सन्धौ नाडीचतुष्टयम्। अध ऊर्ध्वं च मैत्रेय तिथिगण्डान्तमुच्यते।।**

नक्षत्र गण्डान्त - रेवत्यन्त अश्विनी का आदि, श्लेषान्त मघा का आदि और ज्येष्ठान्त मूलादि की २-२ घटी अर्थात् ४ घटी नक्षत्र गण्डान्त होता है। **लग्न गण्डान्त -** मीन-मेष की, कर्क-सिंह की, वृश्चिक-धनु लग्न की सीमा में आधी घटी मिलाकर कुल १ घटी लग्नगण्डान्त कहा जाता है। **अभुक्तमूल जनन दोष -** पूर्वोक्त गण्डान्तों में ज्येष्ठा के अन्त की ५ घटी एवं मूल के आरम्भ की ८ घटी अभुक्त मूल कहा गया है। यह विघ्नकारक एवं अशुभफलदायक माना जाता है।

अभीष्ट स्थान के सूर्योदय साधन की विधि

उदाहरण - ०४ अप्रैल २०११ को भोपाल का सूर्योदय का साधन करना है। भोपाल अक्षांश है २३°।१६'उ। उस दिन उत्तरा क्रान्ति ०५°।२८'। २३ अक्षांश की पंक्ति में ०५ अंश की क्रान्ति का चर मिनट ०८ मि ३२ सेकण्ड है तथा ०६ अंश क्रान्ति का १० मि १४ सेकंड है। इन दोनों का अन्तर ०१।४२ आया अनुपात से २८ कला का मान ०।४७।३६ प्राप्त हुआ। इसे ०५ अंश के चर मिनट में जोडने पर ०९।२० प्राप्त हुआ। इसी प्रकार २४ अंश के अक्षांश पर ०५ अंश क्रान्ति का चर मिनट ०९।४६ मिला। इन दोनों के अनुपात से २३।१६ का चर मिनट ०९।२६ का चर मिनट ०९।२६ मिला। यही अभीष्ट स्थान का अभीष्ट दिन का चरमिनट हुआ।

अभीष्ट स्थान के स्पष्ट सूर्योदय साधन के लिये कोष्ठक			
उत्तरा क्रान्ति		दक्षिणा क्रान्ति	
उत्तर अक्षांश उदय के लिये	दक्षिण अक्षांश उदय के लिये	उत्तर अक्षांश उदय के लिये	दक्षिण अक्षांश उदय के लिये
चर.मि.-ऋण अस्त के लिये चर.मि.+धन	चर.मि. + धन अस्त के लिये चर.मि. -ऋण	चर.मि.+धन अस्त के लिये चर.मि.-ऋण	चर.मि. - ऋण अस्त के लिये चर.मि. + धन

६ घंटे में उपरोक्त चर संस्कार करके बेलान्तर संस्कार धन या ऋण हो तो उसमे धन या ऋण करने से स्थानिक स्पष्ट सूर्योदयास्त होगा। उपर्युक्त उदाहरण में भोपाल का चर मिनट ०९ मि २६ सेकण्ड प्राप्त हुये। उस दिन की क्रान्ति उत्तर थी और भोपाल का उत्तरी अक्षांश है। अत: सारिणी के अनुसार चर मिनट ऋण होंगे। इन्हे ६।०० में से घटाने पर ०५।५१ प्राप्त हुआ।

वेलान्तर - वेलान्तर सारिणी द्वारा मध्यम सूर्योदय से स्पष्ट सूर्योदय बनाया जाता है। इष्ट दिन के दिनाङ्क तथा मास के सम्मुख कोष्ठक द्वारा इष्टदिन का वेलान्तर सिद्ध होगा। ०४ अप्रैल का वेलान्तर सारिणी में + ०३।२१ दिया गया है। इसे पूर्वोक्त उदाहरण के ०५।५१ मान में जोडने पर ०५।५४ मिला।

देशान्तर - उसमे रेखान्तर मिनिट धन हो तो ऋण और ऋण हो तो धन करने से स्पष्ट सूर्योदयास्त का मानक समय (स्टा.टाईम) होगा। भोपाल का भारतीय मानक रेखांश के आधार पर देशान्तर - १९मि.३६से. है। इन्हे उपर्युक्त नियम के अनुसार उदाहरण में प्राप्त मान में जोडने पर ०६ मि.१३ से. ३६प्र.से. मिला जिसे हम लगभग ०६।१४ ले सकते है। इसी तरह दूसरे स्थानों का भी सूर्योदय साधन करके तिथ्यादि का व्यवहार कर सकते हैं।

अक्षांश से सारिणी द्वारा पलभाज्ञान की विधि -

पलांशतश्चेदधिकं कलाद्यं व्यतीतभोग्याक्षप्रमान्तरघ्नम्।
षष्ठ्या हृतं तत्फलयुग्गता याऽक्षभा भवेत्साऽभिमता सुखार्थम्।।
(जन्मपत्रदीपक, श्लो - ११)

गत अंश और ऐष्य अंश सम्बन्धि पलभाओं के अन्तर को शेष कला से गुणा कर के ६० का भाग देने पर जो लब्धि आवे उसको गत अक्षांश सम्बन्धी पलभा में यथास्थान जोड देने से अभीष्ट पलभा हो जाती है।।

भोपाल के अक्षांश $23^0/16$ पर से पलभाज्ञान करना है तो आगे दी हुई पलभा सारिणी में 23 अक्षांश का फल 5/5/38 एवं 24 अक्षांश सम्बन्धी फल 5/20/31 इन दोनों फलों के अन्तर 5/20/31 - 5/5/38 = 0/14/53 को 16 से गुणा करके गुणनफल को ६० का भाग दिया तो लब्धि।

$$\frac{16 \times 0:14:53}{60} = 0:3:58$$

इस 0/3/58 को गतांश सम्बन्धी पलभा 5/5/38 + 12/24 = 6/3/31 में जोड दिया। तो स्वल्पान्तर से 5/9/36 भोपाल की अङ्गुलात्मिका पलभा हुई। इसी को अक्षभा या विषुवती भी कहते हैं।

पलभासारिणी

अंश	पलभा	अंश	पलभा	अंश	पलभा	अंश	पलभा
1	0/12/34	15	3/12/54	29	6/39/04	43	11/11/24
2	0/25/09	16	3/26/24	30	6/55/41	44	11/35/24
3	0/37/44	17	3/40/05	31	7/12/36	45	12/00/00
4	0/50/21	18	3/53/06	32	7/29/53	46	12/25/37
5	1/03/00	19	4/07/55	33	7/47/31	47	12/52/04
6	1/15/14	20	4/22/01	34	8/05/38	48	13/19/34
7	1/28/23	21	4/36/22	35	8/24/07	49	13/48/18
8	1/41/10	22	4/50/53	36	8/43/05	50	14/18/03
9	1/54/00	23	5/05/38	37	9/02/25	51	14/18/03
10	2/06/54	24	5/20/31	38	9/22/30	52	15/21/32
11	2/19/55	25	5/32/42	39	9/43/01	53	15/55/30
12	2/33/00	26	5/51/07	40	10/3/36	54	16/31/01
13	2/46/41	27	6/06/50	41	10/28/48	55	17/08/34
14	2/59/28	28	6/22/48	42	10/48/18		

।। चरसारिणी ।।

(सारिणी के ऊपर की प्रथम पंक्ति में क्रान्त्यंश है तथा सारणी के वामपार्श्व में प्रथम पंक्ति में अक्षांश है।)

क्रान्ति	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24
11	00 47	01 34	02 20	03 07	03 53	04 40	05 28	06 16	07 03	07 51	08 40	09 29	10 17	11 07	11 56	12 47	13 38	14 29	15 21	16 14	17 07	18 01	18 56	19 52
12	00 51	01 42	02 33	03 24	04 16	05 09	05 59	06 50	07 43	08 36	09 28	10 21	11 15	12 09	13 03	13 59	14 54	15 50	16 47	17 45	18 43	19 42	20 42	21 43
13	00 55	01 51	02 46	03 42	04 38	05 34	06 30	07 26	08 23	09 20	10 17	11 15	12 13	13 12	14 11	15 11	16 11	17 12	18 16	19 17	20 20	21 25	22 30	23 36
14	01 00	02 00	03 00	04 00	05 00	06 00	07 01	08 02	09 03	10 05	11 07	12 09	13 12	14 15	15 19	16 24	17 29	18 35	19 47	20 50	21 58	23 08	24 19	25 30
15	01 04	02 09	03 13	04 18	05 21	06 27	07 31	08 38	09 44	10 50	11 57	13 04	14 10	15 29	16 27	17 38	18 48	19 59	21 10	22 23	23 35	24 52	26 07	27 24
16	01 09	02 18	03 27	04 36	05 44	06 54	08 04	09 14	10 25	11 36	12 47	13 59	15 10	16 24	17 36	18 52	20 07	21 23	22 40	23 57	25 17	26 37	27 58	29 20
17	01 13	02 27	03 40	04 54	06 08	07 22	08 36	09 51	11 06	12 22	13 38	14 54	16 11	17 29	18 48	20 07	21 27	22 48	24 10	25 33	26 58	28 23	29 50	31 18
18	01 18	02 36	03 53	05 12	06 31	07 50	09 09	10 28	11 48	13 08	14 29	15 50	17 12	18 34	19 59	21 23	22 48	24 14	25 43	27 10	28 40	30 10	31 43	33 16
19	01 23	02 45	04 08	05 31	06 54	08 18	09 42	11 06	12 30	13 55	15 21	16 47	18 14	19 42	21 11	22 40	24 10	25 42	27 14	28 48	30 23	31 59	33 37	35 16
20	01 27	02 55	04 22	05 50	07 16	08 46	10 15	11 44	13 13	14 43	16 14	17 45	19 17	20 50	22 23	23 57	25 33	27 10	28 47	30 27	32 08	33 49	35 33	37 18
21	01 32	03 04	04 36	06 09	07 42	09 15	10 48	12 22	13 57	15 31	17 07	18 43	20 20	21 58	23 37	25 17	26 58	28 40	30 23	32 08	33 54	35 41	37 31	39 22
22	01 37	03 14	04 51	06 29	08 06	09 44	11 22	13 01	14 40	16 20	18 01	19 42	21 25	23 08	24 52	26 37	28 23	30 11	31 59	33 49	35 42	37 35	39 30	41 27
23	01 42	03 24	05 06	06 48	08 32	10 14	11 57	13 41	15 25	17 10	18 56	20 42	22 30	24 18	26 06	27 56	29 50	31 43	33 37	35 33	37 31	39 30	41 32	43 34
24	01 47	03 34	05 21	07 08	08 56	10 44	12 32	14 21	16 11	18 01	19 52	21 43	23 36	25 30	27 24	29 20	31 18	33 16	35 16	37 18	39 22	41 27	43 34	45 44
25	01 52	03 44	05 36	07 28	09 21	11 14	13 08	15 02	16 57	18 52	20 48	22 45	24 43	26 42	28 43	30 44	32 47	34 52	36 57	39 05	41 15	43 26	45 40	47 56
26	01 57	03 54	05 52	07 49	09 47	11 45	13 44	15 43	17 42	19 44	21 46	23 48	25 52	27 56	30 02	32 09	34 18	36 28	38 40	40 54	43 13	45 28	47 48	50 10
27	02 02	04 05	06 07	08 10	10 13	12 17	14 21	16 26	18 31	20 37	22 44	24 52	27 02	29 12	31 23	33 36	35 51	38 06	40 25	42 45	45 07	47 32	49 58	52 27
28	02 08	04 15	06 23	08 31	10 40	12 49	14 58	17 08	19 19	21 31	23 44	25 57	28 12	30 28	32 46	35 05	37 25	39 48	42 12	44 38	47 06	49 38	52 11	54 47
29	02 13	04 26	06 40	08 53	11 07	13 22	15 37	17 52	20 09	22 26	24 44	27 04	29 25	31 48	34 10	36 35	39 02	41 30	44 01	46 33	49 08	51 46	54 27	57 09

क्रान्ति	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24
30	02 19	04 37	06 56	09 15	11 35	13 55	16 16	18 37	21 00	23 22	25 46	28 12	30 39	33 06	35 36	38 07	40 40	43 15	45 52	48 31	51 13	53 57	56 45	59 35
31	02 24	04 49	07 13	09 37	12 02	14 29	16 55	29 23	21 50	24 21	26 50	29 21	31 54	34 28	37 04	39 41	42 21	45 02	47 46	50 32	53 20	56 12	59 06	62 04
32	02 30	05 00	07 30	10 01	12 32	15 04	17 36	20 09	22 43	25 18	27 54	30 32	33 11	35 52	38 33	41 16	44 03	46 52	49 42	52 35	55 31	58 30	61 33	64 37
33	02 36	05 12	07 48	10 25	13 02	15 39	18 16	20 57	23 37	26 18	28 59	31 44	34 29	37 16	44 05	42 56	45 48	48 44	51 40	54 41	57 44	60 51	63 54	67 03
34	02 42	05 24	08 05	10 49	13 32	16 12	19 01	21 45	24 32	27 19	30 08	32 58	35 49	38 44	41 39	44 36	47 36	50 38	53 44	56 51	60 01	63 15	66 33	69 54
35	02 48	05 36	08 25	11 14	14 03	16 53	19 44	22 37	25 24	28 22	31 17	34 14	37 13	40 13	43 15	46 19	49 27	52 36	55 44	59 04	62 22	65 44	69 10	72 40
36	02 54	05 49	08 44	11 39	14 35	17 31	20 28	23 27	26 26	29 27	32 29	35 32	38 37	41 45	44 54	48 06	51 20	54 37	57 57	61 20	64 47	68 17	71 51	75 30
37	03 01	06 02	09 03	12 05	15 06	18 10	21 14	24 19	27 25	30 33	33 46	36 52	40 05	43 19	46 36	49 55	53 17	56 41	60 07	63 40	67 15	70 54	74 38	78 25
38	03 08	06 15	09 23	12 32	15 41	18 50	22 01	25 13	28 26	31 41	34 56	38 14	41 34	44 54	48 20	51 47	55 17	58 49	62 25	66 05	69 48	73 36	77 28	81 25
39	03 14	06 29	09 44	13 00	16 15	19 32	22 50	26 08	29 29	32 50	36 14	39 39	42 05	46 36	50 08	53 42	57 20	60 58	64 46	68 34	72 36	76 23	80 25	84 32
40	03 21	06 43	10 05	13 27	16 47	20 14	23 38	27 05	30 33	34 02	37 33	41 06	44 48	48 18	51 58	55 41	59 28	63 17	67 10	71 08	75 00	79 16	83 21	87 45
41	03 29	06 59	10 25	13 56	17 27	20 56	24 30	28 04	31 39	35 16	38 55	42 35	46 19	49 58	53 53	57 44	61 39	65 38	69 40	73 47	77 78	82 15	86 37	91 05
42	03 36	07 12	10 49	14 26	18 00	21 43	25 23	29 05	32 48	36 31	40 19	44 06	47 59	51 54	55 51	59 51	63 55	68 04	72 15	76 31	80 53	85 20	89 53	94 32
43	03 44	07 28	11 12	14 57	18 43	22 27	26 18	30 07	33 58	37 51	41 56	45 44	49 44	53 47	57 53	62 02	66 16	70 33	74 55	79 22	83 54	88 32	93 16	98 07
44	03 52	07 44	11 34	15 29	19 23	23 18	27 14	31 10	35 12	39 10	43 17	47 23	51 32	55 40	59 57	64 18	68 41	73 09	77 41	82 19	87 02	91 52	96 48	101 51
45	04 00	08 00	12 01	16 02	20 05	24 04	28 10	32 19	36 27	40 37	44 47	49 05	53 24	57 45	62 10	66 40	71 13	75 51	80 34	85 23	90 18	95 19	100 28	105 44
46	04 09	08 17	12 27	16 37	20 48	25 00	29 13	33 28	37 46	42 05	46 27	50 52	55 21	59 50	64 26	69 06	73 50	79 39	83 33	88 34	93 41	98 56	104 18	09 49
47	04 18	08 35	12 53	17 12	21 32	25 51	30 16	34 40	39 07	43 36	48 08	52 42	57 17	62 02	66 48	71 38	76 33	81 34	86 41	91 50	97 14	102 42	108 19	114 04
48	04 27	08 54	13 21	17 49	22 18	26 39	31 21	35 55	40 30	45 10	49 52	54 37	59 26	64 18	69 15	74 17	79 24	84 36	89 56	95 22	100 56	106 43	112 30	118 32

चरमिनट-चरसारिणी से चरमिनट का साधन करके उसमे निम्नोक्त कोष्ठक के अनुसार संस्कार करने पर सूर्योदय वा सूर्यास्त समय प्राप्त होंगे। उसमे कालान्तर एवं देशान्तर संस्कार करने पर स्वदेश (अपने स्थान) का मानक सूर्योदय होगा। **चरमिनट साधन** -चरसारिणी में क्रान्त्यंश और अक्षांश के आधार पर चर मिनट दिया गया है। उनके आधार पर अपने स्थान के अक्षांश का उस दिन की क्रान्ति से अनुपात से चरमिनट का साधन करना है।

।। क्रान्तिसारिणी ।।

दिनांक	जनवरी	फरवरी	मार्च	अप्रैल	मई	जून	जुलाई	अगस्त	सितम्बर	अक्टूबर	नवम्बर	दिसम्बर
1	-23°04'	-17°20'	-7°49'	+4°18'	+14°54'	+21°58'	+23°09'	+18°10'	+8°30'	-2°57'	-14°14'	-21°43'
2	-22°59'	-17°03'	-7°26'	+4°42'	+15°12'	+22°06'	+23°05'	+17°55'	+8°09'	-3°20'	-14°34'	-21°52'
3	-22°54'	-16°46'	-7°03'	+5°05'	+15°30'	+22°14'	+23°01'	+17°40'	+7°47'	-3°44'	-14°53'	-22°01'
4	-22°48'	-16°28'	-6°40'	+5°28'	+15°47'	+22°22'	+22°56'	+17°24'	+7°25'	-4°07'	-15°11'	-22°10'
5	-22°42'	-16°10'	-6°17'	+5°51'	+16°05'	+22°29'	+22°51'	+17°08'	+7°03'	-4°30'	-15°30'	-22°18'
6	-22°36'	-15°52'	-5°54'	+6°13'	+16°22'	+22°35'	+22°45'	+16°52'	+6°40'	-4°53'	-15°48'	-22°25'
7	-22°28'	-15°34'	-5°30'	+6°36'	+16°39'	+22°42'	+22°39'	+16°36'	+6°18'	-5°16'	-16°06'	-22°32'
8	-22°21'	-15°15'	-5°07'	+6°59'	+16°55'	+22°47'	+22°33'	+16°19'	+5°56'	-5°39'	-16°24'	-22°39'
9	-22°13'	-14°56'	-4°44'	+7°21'	+17°12'	+22°53'	+22°26'	+16°02'	+5°33'	-6°02'	-16°41'	-22°46'
10	-22°05'	-14°37'	-4°20'	+7°43'	+17°27'	+22°58'	+22°19'	+15°45'	+5°10'	-6°25'	-16°58'	-22°52'
11	-21°56'	-14°18'	-3°57'	+8°07'	+17°43'	+23°02'	+22°11'	+15°27'	+4°48'	-6°48'	-17°15'	-22°57'
12	-21°47'	-13°58'	-3°33'	+8°28'	+17°59'	+23°07'	+22°04'	+15°10'	+4°25'	-7°10'	-17°32'	-23°02'
13	-21°37'	-13°38'	-3°10'	+8°50'	+18°14'	+23°11'	+21°55'	+14°52'	+4°02'	-7°32'	-17°48'	-23°07'
14	-21°27'	-13°18'	-2°46'	+9°11'	+18°29'	+23°14'	+21°46'	+14°33'	+3°39'	-7°55'	-18°04'	-23°11'
15	-21°16'	-12°58'	-2°22'	+9°33'	+18°43'	+23°17'	+21°37'	+14°15'	+3°16'	-8°18'	-18°20'	-23°14'
16	-21°06'	-12°37'	-1°59'	+9°54'	+18°58'	+23°20'	+21°28'	+13°56'	+2°53'	-8°40'	-18°35'	-23°17'
17	-20°54'	-12°16'	-1°35'	+10°16'	+19°11'	+23°22'	+21°18'	+13°37'	+2°30'	-9°02'	-18°50'	-23°20'
18	-20°42'	-11°55'	-1°11'	+10°37'	+19°25'	+23°24'	+21°08'	+13°18'	+2°06'	-9°24'	-19°05'	-23°22'
19	-20°30'	-11°34'	-0°48'	+10°58'	+19°38'	+23°25'	+20°58'	+12°59'	+1°43'	-9°45'	-19°19'	-23°24'
20	-20°18'	-11°13'	-0°24'	+11°19'	+19°51'	**+23°26'**	+20°47'	+12°39'	+1°20'	-10°07'	-19°33'	-23°25'
21	-20°05'	-10°52'	**0°00'**	+11°39'	+20°04'	**+23°26'**	+20°36'	+12°19'	+0°57'	-10°29'	-19°47'	**-23°26'**
22	-19°52'	-10°30'	+0°24'	+12°00'	+20°16'	**+23°26'**	+20°24'	+11°59'	+0°33'	-10°50'	-20°00'	**-23°26'**
23	-19°38'	-10°08'	+0°47'	+12°20'	+20°28'	**+23°26'**	+20°12'	+11°39'	**+0°10'**	-11°12'	-20°13'	**-23°26'**
24	-19°24'	-9°46'	+1°11'	+12°40'	+20°39'	+23°25'	+20°00'	+11°19'	-0°14'	-11°33'	-20°26'	**-23°26'**
25	-19°10'	-9°24'	+1°35'	+13°00'	+20°50'	+23°24'	+19°47'	+10°58'	-0°37'	-11°54'	-20°38'	-23°25'
26	-18°55'	-9°02'	+1°58'	+13°19'	+21°01'	+23°23'	+19°34'	+10°38'	-1°00'	-12°14'	-20°50'	-23°23'
27	-18°40'	-8°39'	+2°22'	+13°38'	+21°12'	+23°21'	+19°21'	+10°17'	-1°24'	-12°35'	-21°01'	-23°21'
28	-18°25'	-8°17'	+2°45'	+13°58'	+21°22'	+23°19'	+19°08'	+9°56'	-1°47'	-12°55'	-21°12'	-23°19'
29	-18°09'	-8°03'	+3°09'	+14°16'	+21°31'	+23°16'	+18°54'	+9°35'	-2°10'	-13°15'	-21°23'	-23°16'
30	-17°53'		+3°32'	+14°35'	+21°41'	+23°13'	+18°40'	+9°13'	-2°34'	-13°35'	-21°33'	-23°12'
31	-17°37'		+3°55'		+21°50'		+18°25'	+8°52'		-13°55'		-23°08'

२१ मार्च से २३ सितम्बर को विषुवत्दिन होता है, अतः तब तक उत्तरा क्रान्ति और २३ सितम्बर से २० मार्च तक दक्षिणा क्रान्ति रहेगी। यह सायन संक्रान्ति का दिन है । सायनसंक्रान्ति का उपयोग सर्वत्र नहीं होता है यथा - नन्वेवमयनसंक्रमस्य मुख्यत्वे तेन मानेन पञ्चाङ्गगणना स्यात्। चन्द्रादीनामप्ययनचलनदर्शनात्। न च सायनांशाभ्यां निरयणांशाभ्यां वा सूर्यचन्द्राभ्यां तिथेस्तुल्यत्वादस्तु पञ्चाङ्गगणनेति वाच्यम्। अश्विन्यादिभानां विष्कम्भादियोगानां च विसंवादात्। किञ्च सायनसंक्रमरहितस्य चान्द्रमासस्याधिमासत्वव्यवहारप्रसङ्गः। तथा तादृक्संक्रान्तिद्वययुतस्य क्षयमासत्वव्यवहारप्रसङ्गः, विवाहादौ च सौरमासगणनाप्यनेनापि मानेन स्यात्। पञ्चाङ्गगणना न्यूनाधिमाससौरमासादिकमप्यनेन मानेन भवति । अयनसंक्रान्ति में भी दान देना, जपकरना, हवन करना, श्राद्ध करना आदि सत्कर्म बहुत पुण्यदायक होते हैं।

।। वेलान्तर सारिणी ।।

दिनाँक	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31
जनवरी	+03 07	03 35	04 04	04 33	04 59	05 25	05 53	06 19	06 45	07 11	07 35	07 59	08 23	08 45	09 07	09 20	09 50	10 11	10 29	10 48	11 06	11 36	11 49	11 55	12 11	12 24	12 37	12 48	13 01	13 12	+13 22
फरवरी	+ 13 31	13 41	13 47	13 53	14 00	14 06	14 10	14 13	14 17	14 18	14 21	14 20	14 19	14 19	14 17	14 13	14` 11	14 08	14 02	13 56	13 51	13 43	13 37	13 29	13 20	13 10	13 00	+12 49	12 41		
मार्च	+12 38	12 27	12 14	12 03	11 51	11 37	11 23	11 09	10 55	10 40	10 24	10 07	09 52	09 37	09 20	09 05	08 49	08 27	08 11	07 53	07 35	07 17	06 58	06 41	06 24	06 04	05 45	05 28	05 08	04 52	+04 33
अप्रैल	+04 15	03 57	03 38	03 21	03 04	02 44	02 21	02 12	01 55	01 40	01 22	01 08	00 51	00 33	00 22	+0 05	-0 10	00 24	00 37	00 51	01 04	01 18	01 21	01 41	01 50	02 04	02 14	02 23	02 32	-2 41	
मई	- 02 49	02 56	03 09	03 10	03 17	03 21	03 24	03 31	03 34	03 38	03 40	03 42	03 43	03 45	03 44	03 45	03 44	03 42	03 40	03 38	03 34	03 33	03 28	03 23	03 18	03 12	03 05	03 01	02 53	02 45	-02 37
जून	+02 29	02 20	02 12	02 01	01 52	01 40	01 29	01 17	01 08	00 55	00 43	00 31	00 20	-0 07	+0 06	00 18	00 30	00 45	00 57	01 10	01 22	01 37	01 50	02 01	02 13	02 27	02 40	02 51	03 06	+3 17	
जुलाई	+03 29	03 41	03 52	04 05	04 15	04 26	04 36	04 46	04 55	05 03	05 13	05 22	05 39	05 37	05 43	05 50	05 56	06 02	06 06	06 09	06 14	06 17	06 19	06 20	06 23	06 24	06 25	06 24	06 23	06 22	+06 20
अगस्त	+06 18	06 14	06 11	06 05	06 09	05 56	05 50	05 42	05 35	05 28	05 18	05 09	04 59	04 49	04 37	04 26	04 15	04 02	03 49	03 35	03 20	03 06	02 51	02 36	02 21	02 03	01 48	01 31	01 12	00 56	+0 37
सितम्बर	+0 09	+0 00	-0 19	00 38	00 56	01 17	01 38	01 58	02 18	02 39	03 01	03 21	03 41	04 03	04 24	04 44	05 07	05 28	05 51	06 11	06 30	06 54	07 16	07 36	07 56	08 17	08 38	08 58	09 18	-9 38	
अक्टूबर	-09 58	10 17	10 36	10 54	11 13	11 32	11 49	12 06	12 22	12 40	12 56	13 13	13 27	13 43	13 56	14 10	14 22	14 35	14 47	14 59	15 08	15 19	15 28	15 38	15 45	15 52	15 59	16 05	16 08	16 14	-16 17
नवम्बर	-16 20	16 22	16 23	16 23	16 22	16 22	16 19	16 15	16 13	16 08	16 02	15 56	15 49	15 42	15 32	15 33	15 13	15 01	14 58	14 36	14 22	14 07	13 52	13 35	13 17	13 01	12 42	12 22	12 02	-11 41	
दिसम्बर	-11 19	10 57	10 33	10 12	09 47	09 22	08 56	08 33	08 06	07 49	07 12	06 45	06 17	05 49	05 20	04 52	04 22	03 54	03 24	02 55	02 24	01 55	01 25	00 35	-0 25	+0 05	00 35	01 05	01 34	02 04	+2 33

जैसे क्रान्तिसारणी से स्थान विशेष का सूर्योदय दिनमानादि ज्ञान के लिए चरान्तर का ज्ञान होता है, वैसे भी वेलान्तर संस्कार से सूर्योदय द्वारा स्टेण्डर्ड स्पष्टसूर्योदय का ज्ञान होता है । इस सारणी में दिनाङ्क मास के द्वारा वेलान्तर का ज्ञान होता है।

भोपाल लग्नसारिणी (अक्षांश 23°16 पलभा 5/9/35, स्वोदयपल 227,258, 306, 339, 340, 331)

इष्टार्कराश्यंशतले घटीपलं स्वाभीष्टनाडीपलसंयुतं च। यद्राशिभागस्य तले स्थितं भवेत्तदेव लग्नं हि कलानुपातात्।।

बाये से दायें क्रम में अंश तथा ऊपर से नीचे क्रम में राशियाँ प्रदत्त है। राशि एवं अंश के सम्मुख जो अंक (घटी,पल,विपल) हो उसमें इष्टकाल जोड़ने पर जो फल (घटी,पल,विपल) प्राप्त हो वह अंक जिस राशि एवं अंश के सामने विद्यमान हो वही राशि एवं अंश लग्न की राशि एवं अंश होते है। कला एवं विकला का ज्ञान अनुपात से किया जा सकता है।

राशि अंश	00	01	02	03	04	05	06	07	08	09	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29
मेष	3	3	3	3	3	3	3	3	4	4	4	4	4	4	4	5	5	5	5	5	5	5	6	6	6	6	6	6	6	7
	1	9	16	24	31	39	47	55	4	12	21	30	38	47	55	4	13	21	30	38	47	56	4	13	21	30	39	47	56	4
०	36	10	44	18	52	26	0	36	12	48	24	0	36	12	48	24	0	36	12	48	24	0	36	12	48	24	0	36	12	48
वृष	7	7	7	7	7	8	8	8	8	8	8	8	9	9	9	9	9	9	10	10	10	10	10	10	11	11	11	11	11	11
	13	22	30	39	47	56	5	15	25	35	45	55	6	16	26	36	46	56	7	17	27	37	47	57	8	18	28	38	48	58
१	24	0	36	12	48	24	0	10	20	30	40	50	0	0	20	30	40	50	0	10	20	30	40	50	0	10	20	30	40	50
मिथुन	12	12	12	12	12	13	13	13	13	13	13	14	14	14	14	14	15	15	15	15	15	15	16	16	16	16	16	17	17	17
	9	19	29	39	49	59	10	21	32	43	55	6	17	29	40	51	3	14	25	36	48	59	10	22	33	44	56	7	18	29
२	0	10	20	30	40	50	0	18	36	54	12	30	48	6	24	42	0	18	36	54	12	30	48	6	24	42	0	18	36	54
कर्क	17	17	18	18	18	18	18	19	19	19	19	19	19	20	20	20	20	20	21	21	21	21	21	22	22	22	22	22	22	23
	41	52	3	15	26	37	49	0	11	23	34	45	57	8	19	31	42	53	5	16	27	39	50	1	13	24	35	47	58	9
३	12	30	48	6	24	42	0	20	40	0	20	40	0	20	40	0	20	40	0	20	40	0	20	40	0	20	40	0	20	40
सिंह	23	23	23	23	24	24	24	24	24	25	25	25	25	25	25	26	26	26	26	26	27	27	27	27	27	28	28	28	28	28
	21	32	43	55	6	17	29	40	51	2	13	24	35	46	57	8	19	30	41	52	3	14	25	36	47	58	9	20	31	42
४	0	20	40	0	20	40	0	2	4	6	8	10	12	14	16	18	20	22	24	26	28	30	32	34	36	38	40	42	44	46
कन्या	28	29	29	29	29	29	30	30	30	30	30	30	31	31	31	31	31	32	32	32	32	32	32	33	33	33	33	33	34	34
	53	4	15	26	37	48	0	11	22	33	44	55	6	17	28	39	50	1	12	23	34	45	56	7	18	29	40	51	2	13
५	48	50	52	54	56	58	0	2	4	6	8	10	12	14	16	18	20	22	24	26	28	30	32	34	36	38	40	42	44	46
तुला	34	34	34	34	35	35	35	35	35	36	36	36	36	36	37	37	37	37	37	37	38	38	38	38	38	39	39	39	39	39
	24	35	46	57	8	19	31	42	53	5	16	27	39	50	1	13	24	35	47	58	9	21	32	43	55	6	17	29	40	51
६	48	50	52	54	56	58	0	20	40	0	20	40	0	20	40	0	20	40	0	20	40	0	20	40	0	20	40	0	20	40
वृश्चिक	40	40	40	40	40	40	41	41	41	41	41	42	42	42	42	42	43	43	43	43	43	44	44	44	44	44	44	45	45	45
	3	14	25	37	48	59	11	22	33	44	56	7	18	30	41	52	4	15	26	37	49	0	11	23	34	45	57	8	19	30
७	0	20	40	0	20	40	0	18	36	54	12	30	48	6	24	42	0	18	36	54	12	30	48	6	24	42	0	18	36	54
धनु	45	45	46	46	46	46	46	47	47	47	47	47	47	48	48	48	48	48	48	49	49	49	49	49	49	50	50	50	50	50
	42	53	4	16	27	38	50	0	10	20	30	40	51	1	11	21	31	41	52	2	12	22	32	42	53	3	13	23	33	43
८	12	30	48	6	24	42	0	10	20	30	40	50	0	10	20	30	40	50	0	10	20	30	40	50	0	10	20	30	40	50
मकर	50	51	51	51	51	51	51	52	52	52	52	52	52	52	53	53	53	53	53	53	53	54	54	54	54	54	54	54	55	55
	54	4	14	24	34	44	55	3	12	20	29	38	46	55	3	12	21	29	38	46	55	4	12	21	29	38	47	55	4	12
९	0	10	20	30	40	50	0	36	12	48	24	0	36	12	48	24	0	36	12	48	24	0	36	12	48	24	0	36	12	48
कुम्भ	55	55	55	55	55	56	56	56	56	56	56	56	56	57	57	57	57	57	57	57	57	58	58	58	58	58	58	58	58	59
	21	30	38	47	55	4	13	20	28	35	43	50	58	5	13	21	28	36	43	51	58	6	14	21	29	36	44	51	59	7
१०	24	0	36	12	48	24	0	34	8	42	16	50	24	58	32	6	40	14	48	22	56	30	4	38	12	46	20	54	28	2
मीन	59	59	59	59	59	59	0	0	0	0	0	0	0	0	1	1	1	1	1	1	1	1	2	2	2	2	2	2	2	2
	14	22	29	37	44	52	0	7	15	22	30	37	45	52	0	8	15	23	30	38	45	53	1	8	16	23	31	38	46	54
११	36	10	44	18	52	26	0	34	8	42	16	50	24	58	32	6	40	14	48	22	56	30	4	34	12	46	20	54	28	2

मध्यप्रदेश के विभिन्न स्थानों का अक्षांश, पलभा, रेखांश, देशान्तर मिनट और मेषादि लग्न प्रमाण

स्थान	अक्षांश	पलभा	रेखांश	देशान्तर	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
भोपाल	23 उ 16	05/09	77 पू 36	-19/36	227	258	305	339	340	331	331	340	339	305	258	227
इन्दौर	22 उ 44	05/02	75 पू 50	-26/40	228	257	305	340	339	328	328	339	340	305	257	228
धार	22 उ 35	04/59	75 पू 20	-28/40	228	260	307	337	338	328	328	338	337	307	260	228
रतलाम	23 उ 31	05/13	75 पू 07	-29/32	226	257	306	340	341	330	330	341	340	306	257	226
दतिया	25 उ 39	05/46	78 पू 27	-16/12	220	253	304	342	345	336	336	345	342	304	253	220
भिन्ड	26 उ 36	06/01	78 पू 46	-14/56	218	251	303	343	347	338	338	347	343	303	251	218
ग्वालियर	26 उ 15	05/55	78 पू 10	-17/20	219	252	303	343	346	337	337	346	343	303	252	219
ललितपुर	24 उ 22	05/26	78 पू 28	-16/08	224	256	305	341	342	332	332	342	341	305	356	224
बैतूल	21 उ 51	04/49	77 पू 58	-18/08	230	261	307	337	337	274	274	337	337	307	261	230
छिन्दवाडा	22 उ 03	04/52	78 पू 59	-14/04	229	260	307	339	338	327	327	338	339	307	260	229
बिलासपुर	22 उ 05	05/53	82 पू 13	-01/08	229	260	307	339	338	327	327	338	339	307	260	299
अम्बिकापुर	23 उ 10	05/08	83 पू 15	+03/00	226	258	306	340	340	327	327	340	340	306	258	227
रायपुर	21 उ 15	04/39	81 पू 41	-03/16	231	262	307	337	336	325	325	336	337	307	262	231
दुर्ग	21 उ 12	04/39	81 पू 18	-04/48	231	262	307	337	336	325	325	336	337	307	262	231
रायसेन	23 उ 15	05/09	77 पू 50	-18/40	226	258	306	340	340	330	330	340	340	306	258	226
नरसिंहपुर	22 उ 56	06/05	79 पू 12	-13/12	217	250	303	343	348	339	339	348	343	303	250	217
विदिशा	23 उ 32	05/13	77 पू 51	-18/36	226	257	306	340	341	330	330	341	340	306	257	226
पन्ना	24 उ 49	05/32	80 पू 14	-09/04	223	255	305	341	343	333	333	343	341	305	255	223
रीवा	24 उ 31	05/28	81 पू 19	-04/44	223	255	305	341	343	333	333	343	341	305	255	223
उज्जैन	23 उ 09	05/08	75 पू 43	-27/08	227	258	306	340	340	329	329	340	340	306	258	227
इटारसी	22 उ 30	05/02	77 पू 55	-18/20	228	259	307	339	339	328	328	339	339	307	259	228
कटनी	23 उ 48	05/17	80 पू 12	-09/12	225	257	306	340	341	331	331	341	340	306	257	225
सागर	23 उ 50	05/18	78 पू 50	-14/40	225	257	306	340	341	331	331	341	340	306	257	225
होशंगाबाद	22 उ 46	05/02	77 पू 45	-19/00	228	259	307	339	339	328	328	339	339	307	259	228
जबलपुर	23 उ 10	05/18	79 पू 59	-10-04	225	257	306	340	341	331	331	341	340	306	257	225
राजगढ़	24 उ 00	05/20	76 पू 45	-23/00	225	256	306	340	342	331	331	342	340	306	256	225
पचमढ़ी	22 उ 29	04/58	78 पू 22	-16/32	228	259	307	339	339	328	328	339	339	307	259	228
नीमच	24 उ 27	05/26	74 पू 52	-30/32	224	256	305	341	342	332	332	342	341	305	256	224
सिहोर	23 उ 13	05/09	77 पू 00	-22/00	227	258	306	340	340	329	329	340	340	306	258	227

चैत्र शुक्लपक्ष परिधावी संवत्सर, वि. संवत् 2076, शक 1941

उत्तरायण, दक्षिणगोल, वसन्तऋतु (06 अप्रैल से 19 अप्रैल 2019 ई. तक) — गुरु पश्चिम, शुक्र पूर्व में

तिथि	वार	घ.प.	घ.मि.	नक्षत्र	घ.प.	घ.मि.	योग	घ.प.	घ.मि.	करण	घ.मि.	करण	घ.मि.	सू.उ. घ.मि.	सू.अ. घ.मि.	दि.मा. घ.प.	च.रा.प्र. घ.मि.	दिनांक	व्रतपर्व विवरण (भारतीय मानक समय में) / दैनिकमुहूर्त्तादि विवरण (भद्रा, पञ्चक एवं त्रिपुष्कर, सर्वार्थसिद्धि योगादि)
01	शनि	22/57	15:23	रेवती	02/55	07:22	वैधृति	39/20	21:46	बव	15:23	बालव	27:43	06:12	18:34	30/55	मेष 07:23	06	पंचक समाप्ति 07:22 पर, नववर्षारम्भ, वि.सं.2076, परिधावी संवत्सरारम्भ, कल्पादि, स्वायम्भुवमन्वादि, गुड़ी पडवा, वर्षफलश्रवण-ध्वजारोहण निम्बपत्रप्राशन, वसन्तनवरात्रारम्भ, घटस्थापन, दुर्गापाठारम्भ, शैलपुत्री पूजन। मुहूर्ताभाव रेवती में सूर्ययुति अश्वि. में✵
02	रवि	24/38	16:02	अश्विनी	06/22	08:44	विष्कु	37/20	21:07	कौलव	16:02	तैतिल	28:09	06:11	18:34	30/58		07	हिजरी सन् 1440, अश्वि. में. गायन-वादन-शिक्षण-प्रशिक्षण-अग्नि-उग्र-शस्त्र-वस्त्राभूषणादि कार्य का मुहूर्त्त है। ✵वैधृति दोष, अभिजितमुहूर्त्त - अमृ.यो.15:23से सूर्यो.तक। सर्वार्थसि. सूर्यो. से 08:44 तक।
03	सोम	25/15	16:16	भरणी	08/52	09:43	प्रीति	35/00	20:10	गर	16:16	वणिज	28:11	06:10	18:34	31/00	वृष 15:54	08	भद्रा आरम्भ 28:11 से, मत्स्यजयन्ती, सौभाग्यगौरीव्रत, मन्वादि 3, सरहुल (बिहार)। भरणी में वस्तुविक्रय, कृषि, कृत्तिका में रिक्ता पूर्व अग्नि-उग्रकार्य करें।
04	मङ्गल	24/55	16:07	कृतिका	10/25	10:19	आयु	31/55	18:55	विष्टि	16:07	बव	27:51	06:09	18:35	31/05		09	भद्रासमाप्ति 16:07 तक, दमनक/विनायकचतुर्थी, दमनोत्सव,भौम चतुर्थी। कृत्तिका में रोगमुक्त, रिक्तादोष, रोहिणी में भौमयुति मुहूर्त्ताभाव। सर्वार्थसि. सूर्यो. से 10:19 तक।
05	बुध	23/37	15:36	रोहिणी	11/03	10:33	सौभा	28/07	17:23	बालव	15:36	कौलव	27:09	06:08	18:35	31/07	मि. 22:32	10	नाग/कल्पादि/श्री पञ्चमीश्वेतवाराहकल्पादि, रामराज्य-महोत्सव, लक्ष्मी, स्कन्धमाता, विशालाक्षीदर्श। रोहिणी में भौमयुति, मृगशिरा में केतुवेध मुहूर्त्ताभाव। सर्वार्थसि. सूर्यो. से 10:33 तक।
06	गुरु	21/27	14:42	मृगशिरा	10/45	10:25	शोभ	23/33	15:32	तैतिल	14:42	गर	26:03	06:07	18:36	31/13		11	सूर्यषष्ठीव्रत (बिहार),स्कन्द/अशोक/यमुना षष्ठी, स्कन्ददमनकोत्सव, कात्यायनी ललिता गौरीव्रत। मृगशिरा में केतुवेध, आर्द्रा में शनिवेध मुहूर्त्ताभाव।
07	शुक्र	18/15	13:24	आर्द्रा	09/30	09:54	अति	18/10	13:22	वणिज	13:24	विष्टि	24:33	06:06	18:36	31/15	कर्क 27:14	12	भद्रा आरम्भ 13:24 से 24:33 तक, अन्नपूर्णापरिक्रमा प्रारम्भ, महानिशापूजा, बलिदान, अन्नपूर्णा परिक्रमा, भवानी गौरी दर्शन। आर्द्रा में शनिवेध, पुनर्वसु में राहुयुति। सर्वार्थसि. 09:54 से सूर्योदय तक।
08	शनि	14/02	11:42	पुनर्वसु	07/12	08:58	सुक	18/13	10:53	बव	11:42	बालव	22:39	06:05	18:36	31/18		13	महाष्टमीव्रत, भवानीयात्रा, अन्नपूर्णापूजा, अशोकाष्टमी, भवानी उत्पत्ति (नवमीयुता ग्रह्या), रामनवमी व्रत, मध्याह्न कर्क लग्न में राम जन्म, नवमी हवनारम्भ, पुन. में राहुयुति✸ नवरात्र पारणा, धर्मराजदशमी, देवीविसर्जन। अश्विनी मेष में सूर्य प्रवेश 14:09 से,
09	रवि	08/50	09:36	पुष्य आश्ले.	04/00 59/48	07:40 29:59	धृति शूल	05/03 57/18	08:05 28:59	कौलव	09:36	तैतिल	20:22	06:04	18:37	31/22		14	खरमास समाप्ति। **सूर्यप्रवेश मेष में 14:19 पर, पुण्यकाल प्रात:07:45** के बाद से, पुष्य में रिक्ता दोष, श्लेषा में उग्रकर्मादि कार्य। ✸पुष्य में उग्रकर्म, सामान्य कार्य, पशुपक्षी मत्स्य पालनादि व्यापार मुहूर्त्त। सर्वार्थसि. सूर्यो. से 07:40 तक।
10 11	सोम	02/43 55/50	07:08 28:23	मघा	54/55	28:01	गण्ड	48/57	25:38	गर	07:08	वणिज विष्टि	17:45 28:23	06:03	18:37	31/25	सिंह 05:59	15	भद्रारम्भ 17:45 से 28:23 तक, कामदा एकादशी स्मार्त., विष्णुदोलोत्सव, सायं लक्ष्मीपूजा।
12	मङ्गल	48/27	25:26	पू.फा.	49/27	25:50	वृद्धि	40/07	22:07	बव	14:54	बालव	25:26	06:03	18:37	31/25		16	कामदा एकादशी वैष्णव.,वामनद्वादशी, विष्णुदमनोत्सव, मदन द्वादशी। पू.फा. सूर्यवेध मुहूर्त्ताभाव। ◆नृत्य-गायन कलादि शिक्षण, लेखन प्रकाशनादि।
13	बुध	40/55	22:24	उ.फा.	43/58	23:36	ध्रुव	31/13	18:31	कौलव	11:55	तैतिल	22:24	06:02	18:38	31/30	कन्या 07:17	17	अनङ्गत्रयोदशी, प्रदोषव्रत अनन्तपूजा, श्रीमहावीरजयन्ती (जैन)। उ.फा. में गर्भाधान, पुंसवन,जाकर्म,नाम.,अन्नप्रा.,वस्तुभूमिभवनवाहन क्रय-विक्रय, व्यापाराम्भ, प्रशिक्षणकार्य, नृत्य-गायन कलादि शिक्षण, लेखन प्रकाशनादि। सर्वार्थसि. 23:37 से सूर्यो. तक।
14	गुरु	33/33	19:26	हस्त	38/30	21:25	व्याघा.	22/20	14:57	गर	08:55	वणिज	19:26	06:01	18:38	31/33		18	भद्रा आरम्भ 19:26 से, श्रीहनुमान जयन्ती, काशी में संकटमोचन हनुमत् पूजन, शैवचतुर्दशी, शिवपूजन, नृसिंहदोलोत्सव, हाटकेश्वर चतुर्दशी। हस्त में रिक्ता दोष, आवश्यकता में सामान्यकार्य।
15	शुक्र	26/45	16:42	चित्रा	33/43	19:29	हर्ष.	13/50	11:32	विष्टि	06:04	बव बालव	16:42 27:31	06:00	18:39	31/37	तुला 08:25	19	भद्रा समाप्त 06:04 पर, चैत्री पूर्णिमा, सत्यनारायणव्रत, स्नानदानादिव्रतपूर्णिमा, मन्वादि 15, वैशाख व्रत-स्नान आरम्भ। भद्रा के बाद चित्रा-स्वाती में गर्भाधान, पुंसवन,जाकर्म,नामकरण,अन्नप्राशन,वस्तु-भूमि-भवन-वाहन क्रयविक्रय, व्यापाराम्भ, प्रशिक्षणकार्य ◆

आपत्ति- निवारक श्री राम मन्त्र- ॐ आपदामपहर्तारं दातारं सर्वसम्पदाम्। लोकाभिरामं श्रीरामं भूयो भूयो नमाम्यहम्। मन्त्र का प्रतिदिन ११०० बार तुलसीमाला से जप करने से मनुष्य की सभी आपत्ति का निवारण होता है। नवरात्रि में इस मन्त्र का जप करने से वर्ष पर्य्यन्त लाभ होता है।। रामरक्षा का पाठ, सुन्दरकाण्ड, वाल्मीकी रामायण का पाठ करना भी आपत्ति में रक्षाप्रद होता है।

सूर्यादि स्पष्ट ग्रह भा.स्टै.टा.प्रात: 5 बजकर 29 मिनट का राशि, अंश, कला, विकला में

दि.	स्पष्ट सूर्य				स्पष्ट चन्द्र				स्पष्ट मङ्गल				स्पष्ट बुध				स्पष्ट गुरु				स्पष्ट शुक्र				स्पष्ट शनि				स्पष्ट राहु			
06	11	21	47	12	11	28	45	20	1	9	40	26	10	24	59	21	8	0	11	39	10	18	8	27	8	25	55	40	2	28	25	11
07	11	22	46	16	0	11	21	3	1	10	20	2	10	25	41	28	8	0	12	26	10	19	20	52	8	25	57	56	2	28	22	0
08	11	23	45	19	0	24	8	0	1	10	59	37	10	26	27	12	8	0	13	2	10	20	33	18	8	26	0	7	2	28	18	50
09	11	24	44	19	1	7	6	9	1	11	39	10	10	27	16	22	8	0	13	27	10	21	45	45	8	26	2	12	2	28	15	39
10	11	25	43	17	1	20	15	48	1	12	18	42	10	28	8	46	8	0	13	41	10	22	58	13	8	26	4	12	2	28	12	28
11	11	26	42	12	2	3	37	36	1	12	58	13	10	29	4	16	8	0	13	43	10	24	10	42	8	26	6	6	2	28	9	17
12	11	27	41	6	2	17	12	39	1	13	37	42	11	0	2	42	8	0	13	34	10	25	23	12	8	26	7	54	2	28	6	7
13	11	28	39	57	3	1	2	3	1	14	17	10	11	1	3	55	8	0	13	13	10	26	35	43	8	26	9	36	2	28	2	56
14	11	29	38	46	3	15	6	30	1	14	56	37	11	2	7	49	8	0	12	42	10	27	48	14	8	26	11	13	2	27	59	45
15	0	0	37	32	3	29	25	39	1	15	36	2	11	3	14	16	8	0	11	59	10	29	0	46	8	26	12	44	2	27	56	34
16	0	1	36	16	4	13	57	25	1	16	15	25	11	4	23	10	8	0	11	5	11	0	13	20	8	26	14	9	2	27	53	24
17	0	2	34	58	4	28	37	38	1	16	54	48	11	5	34	25	8	0	9	59	11	1	25	54	8	26	15	28	2	27	50	13
18	0	3	33	38	5	13	20	7	1	17	34	8	11	6	47	58	8	0	8	43	11	2	38	28	8	26	16	42	2	27	47	2
19	0	4	32	16	5	27	57	18	1	18	13	28	11	8	3	42	8	0	7	16	11	3	51	4	8	26	17	49	2	27	43	51

रामनवमी में पूजन -अशोककुसुमैर्युक्तमर्घ्यं दद्याद्विचक्षण:। दशाननवधार्थाय धर्मसंस्थापनाय च।। राक्षसानां विनाशाय दैत्यानां निधनाय च। परित्राणाय साधूनां जातो राम: स्वयं हरि:।। गृहाणार्घ्यं मया दत्तं भ्रातृभि: सहितोनघ।। मध्याह्न काल में भगवान का जन्मोत्सव मनाते हुए रामचरित मानस, रामरक्षा स्तोत्रादि का भक्तिपूर्वक पाठ करना चाहिए, **दमनोत्सव में विशेष** - (दमन को लेकर पंचगव्य से सीचें, जल से धोकर अशोकवृक्ष की जड़ में रखकर निम्न मन्त्र पढ़कर पूजन करना चाहिए) -अशोकाय नमस्तुभ्यं कामस्त्रीशोकनाशन। शोकार्ती हर मे नित्यमानन्दं जनयस्व मे।।त्रुट्यादिकालपर्यन्त: काल रूपो महाबल। कलते चैव य: सर्वं तस्मै कालात्मने नम:।।कल्पादि निणर्य- ब्रह्मणो या दिनस्यादि: कल्पादि: सा प्रकीर्तिता। वैशाखस्य तृतीया या कृष्णा या फाल्गुनस्य च। पंचमी चैत्रमासस्य तथैवान्त्या तथा परा। शुक्ला त्रयोदशी माघे कार्तिकस्य तु सप्तमी। नवमी मार्गशीर्षस्य सप्तैता: संस्मराम्यहम्।। सिताष्टम्यां यो नरो नियतेन्द्रिय:। स्नायाल्लौहित्यतोयेषु स याति ब्रह्मण: पदम्।। (संकल्पं कृत्वा स्नानेन महत्पुण्यं प्राप्यते।)

चैत्रनवरात्रारम्भनिर्णय: - अमायुक्ता न कर्तव्या प्रतिपच्चण्डिकार्चने। मुहूर्तमात्रा कर्तव्या द्वितीयायां गुणान्विता।। (दुर्गापूजाविधिस्तु शारदीयनवरात्रवत् कर्तव्य:) अष्टमीकर्तव्यम् - चैत्रे मासे

13 अप्रैल 2019, अष्टमी, शनिवार
सूर्योदयकालीन

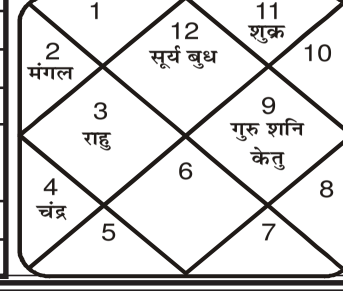

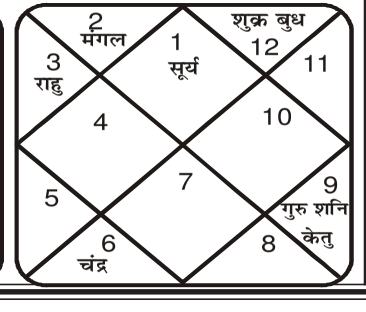

19 अप्रैल 2019, पूर्णिमा, शुक्रवार
सूर्योदयकालीन

लग्नान्तकाल (भारतीय मानक समय में)

दि.	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ
06	06:35:28	08:16:24	10:13:20	12:29:12	14:44:08	16:56:04	19:09:00	21:24:00	23:37:04	01:45:04	03:29:08	05:03:08
07	06:31:32	08:12:28	10:09:24	12:25:16	14:40:12	16:52:08	19:05:04	21:20:04	23:33:08	01:41:08	03:25:12	04:59:12
08	06:27:36	08:08:32	10:05:28	12:21:20	14:36:16	16:48:12	19:01:08	21:16:08	23:29:12	01:37:12	03:21:16	04:55:16
09	06:23:40	08:04:36	10:01:32	12:17:24	14:32:20	16:44:16	18:57:12	21:12:12	23:25:16	01:33:16	03:17:20	04:51:20
10	06:19:44	08:00:40	09:57:36	12:13:28	14:28:24	16:40:20	18:53:16	21:08:16	23:21:20	01:29:20	03:13:24	04:47:24
11	06:15:48	07:56:44	09:53:40	12:09:32	14:24:28	16:36:24	18:49:20	21:04:20	23:17:24	01:25:24	03:09:28	04:43:28
12	06:11:52	07:52:48	09:49:44	12:05:36	14:20:32	16:32:28	18:45:24	21:00:24	23:13:28	01:21:28	03:05:32	04:39:32
13	06:07:56	07:48:52	09:45:48	12:01:40	14:16:36	16:28:32	18:41:28	20:56:28	23:09:32	01:17:32	03:01:36	04:35:36
	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
14	07:44:56	09:41:52	11:57:44	14:12:40	16:24:36	18:37:32	20:52:32	23:05:36	01:13:36	02:57:40	04:31:40	06:04:00
15	07:41:00	09:37:56	11:53:48	14:08:44	16:20:40	18:33:36	20:48:36	23:01:40	01:09:40	02:53:44	04:27:44	06:00:04
16	07:37:04	09:34:00	11:49:52	14:04:48	16:16:44	18:29:40	20:44:40	22:57:44	01:05:44	02:49:48	04:23:48	05:56:08
17	07:33:08	09:30:04	11:45:56	14:00:52	16:12:48	18:25:44	20:40:44	22:53:48	01:01:48	02:45:52	04:19:52	05:52:12
18	07:29:12	09:26:08	11:42:00	13:56:56	16:08:52	18:21:48	20:36:48	22:49:52	00:57:52	02:41:56	04:15:56	05:48:16
19	07:25:16	09:22:12	11:38:04	13:53:00	16:04:56	18:17:52	20:32:52	22:45:56	00:53:56	02:38:00	04:12:00	05:44:20

ग्रहचार

मंगल- 6अप्रैल को 17:20 से रोहिणी में, बुध- 15 अप्रैल को 07:31 से उ.भा. में, गुरु 10 अप्रैल को 22:31 से मूल में वक्री होगा। शुक्र- शत. में, 7 अप्रैल को 18:27 से पू.भा. में व 18 को 19:12 से उ.भा में, शनि- पू.षा. में 30 अप्रैल को 6:24 पर वक्री, राहु- पुनर्वसु में, केतु -उ.षा. में,

वैशाख कृष्णपक्ष परिधावी संवत्सर, वि. संवत् 2076, शक 1941

तिथि	वार	घ.प.	घ.मि.	नक्षत्र	घ.प.	घ.मि.	योग	घ.प.	घ.मि.	करण	घ.मि.	करण	घ.मि.	सू.उ. घ.मि.	सू.अ. घ.मि.	दि.मा. घ.प.	च.रा.प्र. घ.मि.
01	शनि	20/55	14:21	स्वाती	29/57	17:58	वज्र सिद्धि	06/05 59/18	08:25 29:42	कौलव	14:21	तैतिल	25:27	05:59	18:39	31/40	
02	रवि	16/28	12:33	विशाखा	27/37	17:01	व्यति.	53/52	27:31	गर	12:33	वणिज	23:59	05:58	18:40	31/45	वृश्चि. 11:11
03	सोम	13/38	11:25	अनुराधा	26/57	16:45	वरी.	49/53	25:55	विष्टि	11:25	बव	23:15	05:58	18:40	31/45	
04	मङ्गल	12/47	11:04	ज्येष्ठा	28/17	17:16	परिघ	47/32	24:58	बालव	11:04	कौलव	23:18	05:57	18:40	31/48	धनु 17:16
05	बुध	14/00	11:32	मूल	31/37	18:35	शिव	46/48	24:39	तैतिल	11:32	गर	24:10	05:56	18:41	31/52	
06	गुरु	17/10	12:47	पू.षा.	36/45	20:37	सिद्ध	47/25	24:53	वणिज	12:47	विष्टि	25:44	05:55	18:41	31/55	मकर 5:27
07	शुक्र	21/55	14:40	उ.षा.	43/20	23:14	साध्य	49/10	25:34	बव	14:40	बालव	27:51	05:54	18:42	32/00	
08	शनि	27/47	17:01	श्रवण	50/45	26:12	शुभ	51/30	26:30	कौलव	17:01	तैतिल	--	05:54	18:42	32/00	
09	रवि	34/12	19:34	धनिष्ठा	58/30	29:17	शुक्ल	54/05	27:31	तैतिल	06:17	गर	19:34	05:53	18:43	32/05	कुम्भ 15:45
10	सोम	40/30	22:04	शत.	--	--	ब्रह्म	56/30	28:28	वणिज	08:49	विष्टि	22:04	05:52	18:43	32/07	
11	मङ्गल	46/05	24:18	शत.	05/58	08:15	ऐन्द्र	58/12	29:09	बव	11:11	बालव	24:18	05:52	18:43	32/07	मीन 11:28
12	बुध	50/35	26:05	पू.भा.	12/33	10:52	वैधृति	58/17	29:10	कौलव	13:12	तैतिल	26:05	05:51	18:44	32/13	
13	गुरु	53/48	27:21	उ.भा.	18/00	13:02	विष्कु	59/00	29:26	गर	14:43	वणिज	27:21	05:50	18:44	32/15	
14	शुक्र	55/35	28:04	रेवती	22/05	14:40	प्रीति	57/48	28:57	विष्टि	15:43	शकुनि	28:04	05:50	18:45	32/18	मेष 14:40
30	शनि	56/05	28:15	अश्विनी	24/55	15:47	आयु	55/35	28:03	चतुष्पद	16:10	नाग	28:15	05:49	18:45	32/20	

उत्तरायण, उत्तरागोल, वसन्तऋतु (20 अप्रैल से 04 मई 2019 ई. तक) — गुरु पश्चिम, शुक्र पूर्व

दिनांक	व्रतपर्व विवरण (भारतीय मानक समय में) / दैनिकमुहूर्त्तादि विवरण (भद्रा, पञ्चक एवं त्रिपुष्कर, सर्वार्थसिद्धि योगादि)
20	प्रपा (पौसर) कार्य, घटदान, पीपल में जलदान, सायन सूर्य वृष में, कच्छपावतार, तुलसी से विष्णु पूजा। स्वाती में वस्तु-भूमि-भवन-वाहनादि कार्य, व्यापाराम्भ, आदि। सि.यो./सर्वार्थसि.सूर्यो. से 17:58 तक, त्रिपुष्कर 17:58 से सूर्यो.तक
21	भद्रा आरम्भ 23:59 से, व्यतिपातदोष मुहूर्त्ताभाव।
22	भद्रा समाप्ति 11:25 पर, संकटचतुर्थीव्रत, चन्द्रोदय 21:43, अनुराधा में भद्रादोष तदुपरान्त रिक्तादोष ज्येष्ठा में रिक्तदोष। सर्वार्थसि. सूर्यो. से 16:45 तक।
23	ज्येष्ठा में रिक्तोपरान्त शस्त्रनिर्माण, अग्निकार्य का मुहूर्त्त है, मूल में राहुवेध मुहूर्त्ताभाव।
24	मूल में राहुवेध व पू.षा. में शनियुति मुहूर्त्ताभाव।
25	भद्रा 12:47 से 25:44 तक, पू.षा. में शनियुति, उ.षा. में भौमवेध मुहूर्त्ताभाव।
26	उ.षा. में भौमवेध मुहूर्त्ताभाव। सर्वार्थसि. 23:14 से सूर्योदय तक।
27	पञ्चक आरम्भ 26:12 से, शीतलाष्टमी (आज बासी भोजन प्रशस्त), श्रवण में स्थिरकार्य-पैट्रोल व्यवसाय-मिलकारखाना-पशुपक्षी-मस्त्यकार्य का मुहूर्त्त है।
28	भरणी में सूर्य 06.03 से, रिक्तदोष मुहूर्त्ताभाव।
29	भद्रा 08:49 से 22:04 तक, भद्रापूर्व शतभिषा में अन्नप्राशन-जातकर्म-नामकरण-शिल्प-वस्तु-भूमि-भवन-वाहन कार्य व्यापाराम्भ मुहूर्त्त है।
30	वरुथिनी एकादशी व्रत (सर्वेषाम्), वल्लभाचार्य जयन्ती, शतभिषा/पू.भा. में कृषि कार्य-उग्र-अग्नि-ऑपरेशन का मुहूर्त्त है। त्रिपुष्कर 08:15 से सूर्यो.तक
01	पू.भा./उ.भा. में वैधृति दोष।
02	भद्रा आरम्भ 27:21 से, प्रदोषव्रत, मासान्तदोष मुहूर्त्ताभाव। सर्वार्थसि. 13:02 से सूर्योदय तक।
03	भद्रा 15:43 तक, पञ्चक समाप्ति 14:40 पर, मासान्तदोष मुहूर्त्ताभाव। अमृतसिद्धि सूर्यो.से 14:40 तक,
04	शनैश्चरी अमावस्या स्नानादि, सतुआ अमावस्या, मासान्तदोष मुहूर्त्ताभाव।

शुक्र का विशेष विचार - अस्तंगते भृगोः पुत्रे तथा सम्मुखमागते। नष्टे जीवे निरंशे वा नैव संचालयेद्वधूम्।। गर्भिण्या बालकेनापि नववध्वा द्विरागमे। पदमेकं न गन्तव्य शुक्रे सम्मुखदक्षिणे।। अर्थात् शुक्र के अस्त अथवा सम्मुख या दक्षिण रहने पर द्विरागमन या गर्भिणी की यात्रा वर्जित है। परिहार - काश्यपेषु वशिष्ठेषु चात्रिभृग्वाङ्गिरस्सु च। भारद्वाजेषु वात्सेषु प्रतिशुक्रो न दुष्यति।। दोहा - भृगु कश्यप अरु अंगिरा अत्रि वशिष्ठ सुजान, वत्स भरद्वाजहिं पुनः शुक्र दोष न मान। शुक्रान्ध विचार - रेवत्यादि मृगान्तञ्च यावत्तिष्ठति चन्द्रमा, तावच्छुक्रो भवेदन्धः सम्मुखे दक्षिणे शुभः।। अर्थात् रेवती से मृगशिरा तक चन्द्रमा के रहने पर शुक्र अन्धा रहता है उस समय शुक्र का सम्मुख दक्षिण दोष नहीं रहता है।

वैशाख में कर्त्तव्य विचार -तीर्थे चानुदिनं स्नानं तिलैश्च पितृतर्पणम् । दानं धर्मघटादीनां मधुसूदनपूजनम्।। माधवे मासि कुर्वीतमधु–सूदन-तुष्टिदम्। महानद्यां नदीतीर्थे नदे सरसि निर्झरे। यदा न ज्ञायते नाम तस्य तीर्थस्य भो द्विज। तत्रेत्युच्चारणं कार्यं विष्णुतीर्थमिदं त्विति। तीर्थस्य देवता विष्णुः सर्वत्रापि न संशयः।।

सूर्यादि स्पष्ट ग्रह भा.स्टै.टा.प्रातः 5 बजकर 29 मिनट का राशि, अंश, कला, विकला में

दि.	स्पष्ट सूर्य				स्पष्ट चन्द्र				स्पष्ट मङ्गल				स्पष्ट बुध				स्पष्ट गुरु				स्पष्ट शुक्र				स्पष्ट शनि				स्पष्ट राहु			
20	0	5	30	52	6	12	21	31	1	18	52	46	11	9	21	34	8	0	5	37	11	5	3	41	8	26	18	51	2	27	40	41
21	0	6	29	26	6	26	26	15	1	19	32	2	11	10	41	30	8	0	3	48	11	6	16	18	8	26	19	47	2	27	37	30
22	0	7	27	58	7	10	7	7	1	20	11	17	11	12	3	28	8	0	1	47	11	7	28	57	8	26	20	38	2	27	34	19
23	0	8	26	28	7	23	22	24	1	20	50	31	11	13	27	24	7	29	59	36	11	8	41	36	8	26	21	22	2	27	31	9
24	0	9	24	57	8	6	12	52	1	21	29	44	11	14	53	17	7	29	57	14	11	9	54	17	8	26	22	0	2	27	27	58
25	0	10	23	24	8	18	41	20	1	22	8	55	11	16	21	5	7	29	54	40	11	11	6	58	8	26	22	33	2	27	24	47
26	0	11	21	50	9	1	8	0	1	22	48	5	11	17	50	45	7	29	51	57	11	12	19	40	8	26	22	60	2	27	21	36
27	0	12	20	13	9	13	5	59	1	23	27	14	11	19	22	17	7	29	49	2	11	13	32	23	8	26	23	21	2	27	18	26
28	0	13	18	36	9	24	56	44	1	24	6	22	11	20	55	40	7	29	45	57	11	14	45	7	8	26	23	36	2	27	15	15
29	0	14	16	56	10	6	45	37	1	24	45	29	11	22	30	53	7	29	42	41	11	15	57	52	8	26	23	45	2	27	12	4
30	0	15	15	16	10	18	37	39	1	25	24	34	11	24	7	55	7	29	39	15	11	17	10	37	8	26	23	48	2	27	8	53
01	0	16	13	33	11	0	37	9	1	26	3	39	11	25	46	47	7	29	35	38	11	18	23	23	8	26	23	45	2	27	5	43
02	0	17	11	49	11	12	47	37	1	26	42	42	11	27	27	27	7	29	31	51	11	19	36	10	8	26	23	36	2	27	2	32
03	0	18	10	4	11	25	11	27	1	27	21	45	11	29	9	58	7	29	27	54	11	20	48	57	8	26	23	22	2	26	59	21
04	0	19	8	16	0	7	49	56	1	28	0	46	0	0	54	17	7	29	23	47	11	22	1	45	8	26	23	1	2	26	56	10

मेषसंक्रान्ति में दान - ददाति यो हि मेषादौ सक्तूनम्बुघटान्वितान्। पितृनुद्दिश्य विप्रेभ्यः सर्वपापैः प्रमुच्यते।। **वैशाख में जलदान** - वसन्तग्रीष्मयोर्मध्ये यः पानीयम् प्रयच्छति पले पले सुवर्णस्य फलमाप्नोति मानवः। वैशाखे यो घटं पूर्णं संभोज्य वै द्विजन्मने ददाति सुरराजेन्द्र स याति परमाङ्गतिम्। **वैशाख में त्याज्य** - वैशाख के व्रत में दूसरे का अन्न, मांस, मसूर, चना, शाक, शहद आदि का सेवन नहीं करना चाहिए।

27 अप्रैल 2019, अष्टमी, शनिवार
सूर्योदयकालीन

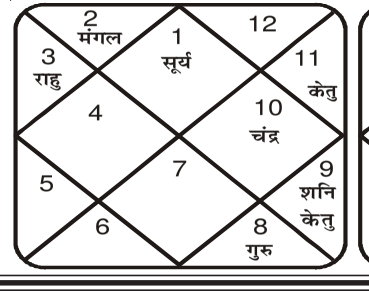

04 मई 2019, अमावस्या, शनिवार
सूर्योदयकालीन

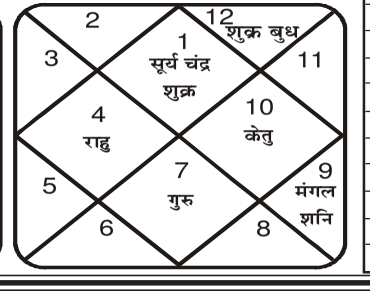

लग्नान्तकाल (भारतीय मानक समय में)

दि.	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
20	07:21:20	09:18:16	11:34:08	13:49:04	16:01:00	18:13:56	20:28:56	22:42:00	00:50:00	02:34:04	04:08:04	05:40:24
21	07:17:24	09:14:20	11:30:12	13:45:08	15:57:04	18:10:00	20:25:00	22:38:04	00:46:04	02:30:08	04:04:08	05:36:28
22	07:13:28	09:10:24	11:26:16	13:41:12	15:53:08	18:06:04	20:21:04	22:34:08	00:42:08	02:26:12	04:00:12	05:32:32
23	07:09:32	09:06:28	11:22:20	13:37:16	15:49:12	18:02:08	20:17:08	22:30:12	00:38:12	02:22:16	03:56:16	05:28:36
24	07:05:36	09:02:32	11:18:24	13:33:20	15:45:16	17:58:12	20:13:12	22:26:16	00:34:16	02:18:20	03:52:20	05:24:40
25	07:01:40	08:58:36	11:14:28	13:29:24	15:41:20	17:54:16	20:09:16	22:22:20	00:30:20	02:14:24	03:48:24	05:20:44
26	06:57:44	08:54:40	11:10:32	13:25:28	15:37:24	17:50:20	20:05:20	22:18:24	00:26:24	02:10:28	03:44:28	05:16:48
27	06:53:48	08:50:44	11:06:36	13:21:32	15:33:28	17:46:24	20:01:24	22:14:28	00:22:28	02:06:32	03:40:32	05:12:52
28	06:49:52	08:46:48	11:02:40	13:17:36	15:29:32	17:42:28	19:57:28	22:10:32	00:18:32	02:02:36	03:36:36	05:08:56
29	06:45:56	08:42:52	10:58:44	13:13:40	15:25:36	17:38:32	19:53:32	22:06:36	00:14:36	01:58:40	03:32:40	05:05:00
30	06:42:00	08:38:56	10:54:48	13:09:44	15:21:40	17:34:36	19:49:36	22:02:40	00:10:40	01:54:44	03:28:44	05:01:04
01	06:38:04	08:35:00	10:50:52	13:05:48	15:17:44	17:30:40	19:45:40	21:58:44	00:06:44	01:50:48	03:24:48	04:57:08
02	06:34:08	08:31:04	10:46:56	13:01:52	15:13:48	17:26:44	19:41:44	21:54:48	00:02:48	01:46:52	03:20:52	04:53:12
03	06:30:12	08:27:08	10:43:00	12:57:56	15:09:52	17:22:48	19:37:48	21:50:52	23:58:52	01:42:56	03:16:56	04:49:16
04	06:26:16	08:23:12	10:39:04	12:54:00	15:05:56	17:18:52	19:33:52	21:46:56	23:54:56	01:39:00	03:13:00	04:45:20

ग्रहचार

मंगल- रो.में व 26 अप्रै. को 25:03 से मृग.में, बुध- 25 अप्रैल को 10:35 से रेवती में व 03 मई को 17:3 से अश्विनी में, वक्री गुरु 22 अप्रैल को 25:14 से ज्येष्ठा में, शुक्र-उ.भा. में 29 को 19:22 से रेवती में, वक्रीशनि- पू.षा. में राहु- पुनर्वसु में, केतु -उ.षा. में,

वैशाख शुक्लपक्ष — परिधावी संवत्सर, वि. संवत् 2076, शक 1941

उत्तरायण, उत्तरगोल, वसन्त ऋतु (05 मई से 18 मई 2019 ई. तक) — गुरु पश्चिम, शुक्र पूर्व

तिथि	वार	घ.प.	घ.मि.	नक्षत्र	घ.प.	घ.मि.	योग	घ.प.	घ.मि.	करण	घ.मि.	करण	घ.मि.	सू.उ. घ.मि.	सू.अ. घ.मि.	दि.मा. घ.प.	च.रा.प्र. घ.मि.	दिनांक	व्रतपर्व विवरण (भारतीय मानक समय में) / दैनिकमुहूर्त्तादि विवरण (भद्रा, पञ्चक एवं त्रिपुष्कर, सर्वार्थसिद्धि योगादि)
01	रवि	55/28	27:59	भरणी	26/30	16:24	सौभा	52/30	26:48	किंस्तु.	16:07	बव	27:59	05:48	18:46	32/25	वृष 22:30	05	धर्मघटादिदान, शिवाजी जयन्ती, भरणी में सूर्ययुति मुहूर्त्ताभाव, कृत्तिका में व्यापाराम्भ-अग्नि-कृषि कार्य मुहूर्त है। त्रिपुष्कर 16:24 से सूर्यो.तक
02	सोम	53/45	27:18	कृतिका	26/57	16:36	शोभ	48/32	25:13	बालव	15:39	कौलव	27:18	05:48	18:46	32/25		06	चन्द्रदर्शन, कृत्तिका में पशुपक्षी-मत्स्यादि-जलीय कार्य, रोहिणी में गर्भाधान-वस्त्राभूषण-शिक्षण-प्रशिक्षण-वस्तु-भूमि-भवन-वाहन का मुहूर्त्त है। सर्वार्थसि. 16:36 से सूर्योदय तक।
03	मङ्गल	51/15	26:17	रोहिणी	26/40	16:27	अति	43/58	23:22	तैतिल	14:48	गर	26:17	05:47	18:47	32/30	मि. 28:15	07	अक्षयतृतीया, गौरीलक्ष्मीनारायणपूजा, कल्पादि 3, परशुरामजयन्ती, बलरामजयन्ती, समुद्रस्नान, सत्तूभोजन, श्रीबद्रीकेदार यात्रा त्रेतायुगादि, काशी त्रिलोचन यात्रा। रोहिणी में कृषि-वृक्षादि कार्य, पुंसमन-सीमन्त-ऑपरेशन एवं मृगशिरा में भौमवेध मुहूर्त्ताभाव।
04	बुध	48/00	24:59	मृगशिरा	25/33	16:00	सुक	38/45	21:17	वणिज	13:38	विष्टि	24:59	05:47	18:47	32/30		08	भद्रा 13:38 से 24:59 तक, नाग चतुर्थी, गणेश चतुर्थी, गणपति पूजनार्चन प्रयोगादि शुभ, चन्द्रोदय 08:33, मृगशिरा में भौमवेध, आर्द्रा में शनिवेध मुहूर्त्ताभाव। सर्वार्थसि. सूर्यो. से 16:00 तक।
05	गुरु	44/12	23:27	आर्द्रा	23/48	15:17	धृति	33/05	19:00	बव	12:13	बालव	23:27	05:46	18:48	32/35		09	आद्यगुरुशङ्कराचार्य जयन्ती (1231), सूरदास/रामानुजाचार्य जयन्ती, आर्द्रा में शनिवेध, पुनर्वसु में राहुयुति मुहूर्त्ताभाव। सि.यो.15:17 से सूर्यो. तक, सर्वार्थसि. सूर्यो. 15:17 से सूर्योदय तक।
06	शुक्र	39/52	21:42	पुनर्वसु	21/30	14:21	शूल	26/58	16:32	कौलव	10:35	तैतिल	21:42	05:45	18:48	32/38	कर्क 8:36	10	चन्दनषष्ठी, श्रीरामानुजाचार्य जयन्ती(उ.भा.), पुनर्वसु में राहुयुति, पुष्य में पशुपक्षी-मत्स्यादि-शिक्षण-प्रशिक्षण-वस्तु-भूमि-भवन-वाहन-व्यापाराम्भ मुहूर्त है।
07	शनि	35/00	19:45	पुष्य	18/40	13:13	गण्ड	20/25	13:55	गर	08:44	वणिज	19:45	05:45	18:49	32/40		11	भद्रा 19:45 से , श्रीगंगा जयन्ती, गङ्गोत्पत्ति, भानुसप्तमी, निम्ब/शर्करा/कमल सप्तमी। पुष्य में स्थिरकार्य, पशुपक्षी-मत्स्यादि-शिक्षण-प्रशिक्षण-व्यापाराम्भ मुहूर्त है। श्लेषा में भद्रापूर्व शनि-मूल-रोग शान्ति कार्य।
08	रवि	29/43	17:37	आश्ले.	15/27	11:55	वृद्धि	13/33	11:09	विष्टि	06:41	बव बालव	17:37 28:29	05:44	18:49	32/43	सिंह 4:55	12	भद्रा 06:41 तक, अपराजिता देवी पूजा, दुर्गाष्टमी, श्रीबगलामुखी जयन्ती, श्लेषा में शस्त्रनिर्माण-कृषि-उग्र-अग्नि कर्म का मुहूर्त है।
09	सोम	24/02	15:21	मघा	11/47	10:27	ध्रुव व्याघा.	06/20 58/53	08:16 29:17	कौलव	15:21	तैतिल	26:10	05:44	18:49	32/43		13	जानकी नवमी, मघा में रिक्तादोष, पू.फा. में जल-अग्नि-शस्त्र कर्म मुहूर्त है।
10	मङ्गल	18/10	12:59	पू.फा.	07/55	08:53	हर्ष.	51/22	26:16	गर	12:59	वणिज	23:48	05:43	18:50	32/47	कन्या 14:29	14	भद्रा 23:48 से, पू.फा. में अग्नि-शस्त्र कर्म, उ.फा. में पुंसवन-सीमन्त-रत्नाभूषण-वस्त्रादिव्यापार मुहूर्त है।
11	बुध	12/12	10:36	उ.फा. हस्त	03/53 59/58	07:16 29:42	वज्र	43/50	23:15	विष्टि	10:36	बव	21:26	05:43	18:50	32/47		15	भद्रा 10:36 तक, मोहिनी एकादशी व्रत सर्वेषाम्, **सूर्यप्रवेश वृष में 11:01 पर पुण्यकाल 17:25 तक,** परशुराम द्वादशी (पूर्वविद्धा) हस्त में भद्रोपरान्त जातकर्म, नाम., वाटिका-कृषि-पशुवाहनादिक्रयविक्रयादि*
12	गुरु	06/20	08:15	चित्रा	56/25	28:16	सिद्धि	36/35	20:20	बालव	08:15	कौलव	19:10	05:43	18:51	32/50	तुला 16:57	16	मधुसूदन पूजा, प्रदोष व्रत, चित्रा में अन्नप्राशन, नामकरण, वाटिका लगाना, कृषिकर्म, पशुवाहनादिक्रयविक्रयादि कर्म का मुहूर्त है। सर्वार्थसि. सूर्योदय तक। *कर्म मुहूर्त है। सर्वा.सि.29:42 से
13 14	शुक्र	00/57 56/12	06:05 28:11	स्वाती	53/32	27:07	व्यति.	29/48	17:37	तैतिल	06:05	गर वणिज	17:08 28:11	05:42	18:51	32/53		17	भद्रा 28:11 से, श्रीनृसिंहजयन्ती, सायं नरसिंहावतार (मध्याह्न प्रदोष-उभयव्यापिनी), सायं काल नृसिंह मंदिर में दीपदान, नृसिंह प्रतिमा का अभिषेक, पूजन, जप होमादि कार्य विशेष फलदायी होता है। स्वाति में व्यतिपातदोष।
15	शनि	52/28	26:41	विशाखा	51/05	26:08	वरी.	23/40	15:10	विष्टि	15:26	बव	26:41	05:42	18:52	32/55	वृश्चि 20:30	18	भद्रा 15:26 तक, कूर्मजयन्ती (कूर्मावतार सायं), छिन्नमस्ता जयन्ती, ओंकारेश्वर यात्रा (मध्याह्न), व्रतपूर्णिमा, श्रीसत्यनारायणव्रत, विशाखा में भद्रोपरान्त शनिशान्ति-उग्रकर्म-पशुपक्षीपालन मुहूर्त है।

श्री बगलाजयन्ती विशेष- कलियुग में मनुष्य की सभी आपत्तियों को दूर करने वाली माता बगलामुखी की साधना सभी के हित के लिए होती है। यह साधना केवल अपने विकार रूपी शत्रुओं को दूर करने के लिए करनी चाहिए। इससे हमारे अंदर के सभी काम,क्रोधादि दोष दूर हो जाते हैं। मुकदमें आदि में विजयार्थ भी माता की साधन सिद्धिप्रद है। इनकी साधना बिना दीक्षा के करना हानिप्रद होती है। अत: गुरु की आज्ञा व निर्देश में इनकी साधना सम्पन्न करें। **त्र्यक्षरी मंत्र-** ॐ आं ह्रीं क्रों ।।

सूर्यादि स्पष्ट ग्रह भा.स्टै.टा.प्रात: 5 बजकर 29 मिनट का राशि, अंश, कला, विकला में

दि.	स्पष्ट सूर्य				स्पष्ट चन्द्र				स्पष्ट मङ्गल				स्पष्ट बुध				स्पष्ट गुरु				स्पष्ट शुक्र				स्पष्ट शनि				स्पष्ट राहु			
05	0	20	6	27	0	20	43	14	1	28	39	46	0	2	40	27	7	29	19	31	11	23	14	33	8	26	22	35	2	26	52	59
06	0	21	4	37	1	3	50	34	1	29	18	45	0	4	28	26	7	29	15	4	11	24	27	22	8	26	22	3	2	26	49	49
07	0	22	2	44	1	17	10	34	1	29	57	43	0	6	18	16	7	29	10	29	11	25	40	11	8	26	21	25	2	26	46	38
08	0	23	0	50	2	0	41	38	2	0	36	40	0	8	9	57	7	29	5	44	11	26	53	0	8	26	20	41	2	26	43	27
09	0	23	58	54	2	14	22	19	2	1	15	35	0	10	3	27	7	29	0	49	11	28	5	50	8	26	19	52	2	26	40	16
10	0	24	56	56	2	28	11	31	2	1	54	30	0	11	58	47	7	28	55	46	11	29	18	40	8	26	18	56	2	26	37	6
11	0	25	54	57	3	12	8	30	2	2	33	23	0	13	55	56	7	28	50	34	0	0	31	31	8	26	17	56	2	26	33	55
12	0	26	52	55	3	26	12	40	2	3	12	15	0	15	54	52	7	28	45	14	0	1	44	22	8	26	16	49	2	26	30	44
13	0	27	50	51	4	10	23	12	2	3	51	5	0	17	55	33	7	28	39	45	0	2	57	13	8	26	15	37	2	26	27	33
14	0	28	48	46	4	24	38	33	2	4	29	55	0	19	57	55	7	28	34	8	0	4	10	4	8	26	14	19	2	26	24	23
15	0	29	46	39	5	8	56	11	2	5	8	43	0	22	1	54	7	28	28	24	0	5	22	56	8	26	12	56	2	26	21	12
16	1	0	44	30	5	23	12	23	2	5	47	30	0	24	7	25	7	28	22	31	0	6	35	48	8	26	11	27	2	26	18	1
17	1	1	42	19	6	7	22	37	2	6	26	16	0	26	14	22	7	28	16	31	0	7	48	40	8	26	9	53	2	26	14	50
18	1	2	40	7	6	21	22	1	2	7	5	0	0	28	22	34	7	28	10	24	0	9	1	33	8	26	8	13	2	26	11	39

गङ्गोत्पत्ति - वैशाखे शुक्ल सप्तम्यां जह्नुना जाह्नवी पुरा। क्रोधात्पीता पुनस्त्यक्ता कर्णरन्ध्रात्तु दक्षिणात्। तां तत्र पूजयेद्देवीं गङ्गां गगनमेखलाम्। नृसिंह जयन्ती - वैशाखस्य चतुर्दश्यां सोमवारेऽनिलर्क्षके, अवतारो नृसिंहस्य प्रदोषस्य समये द्विजा:।। स्वातीनक्षत्रयोगे च शनिवारे तु मद्व्रतम्। सिद्धियोगस्य संयोगे वणिजे करणे तथा। पुंसां सौभाग्ययोगेन लभ्यते देवयोगत:। सर्वैरतैस्तु संयुक्तं हत्याकोटिविनाशनम्।। **वैशाख पूर्णिमा में दान विशेष का माहात्म्य -** शृतान्नमुदकुम्भं च वैशाख्यां च विशेषत:। निर्दिश्य धर्मराजाय गोदानफलमाप्नुयात्।। सुवर्णतिलयुक्तैस्तु ब्राह्मणान् सप्त पञ्च च।। तर्पयेदुदपात्रैस्तु ब्रह्महत्यां व्यपोहति।।

12 मई 2019, अष्टमी, रविवार
सूर्योदयकालीन

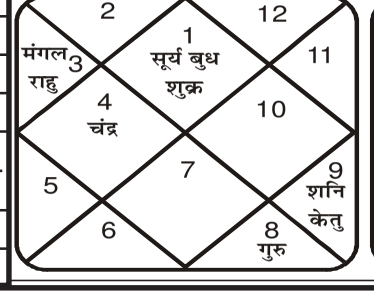

18 मई 2019, पूर्णिमा, शनिवार
सूर्योदयकालीन

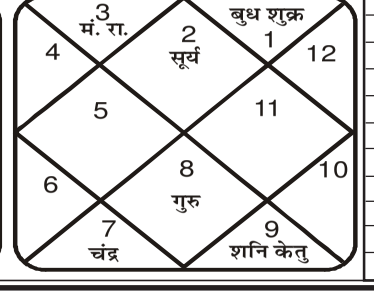

रोगविचार में अनिष्ट काल - आर्द्रा, अश्लेषा, ज्येष्ठा, शतभिषा, मघा, पू.फा., पू.षा, पू.भा., विशाखा, धनिष्ठा, कृतिका इन नक्षत्रों में, सूर्य, मंगल, शनि वारों में ४-९-१२-६-१४ आदि तिथियों में रोग होने पर मृत्यु होने की पूर्ण सम्भावना होती है। विषैले जानवरों (सर्पादि) का दंशफल - मघा, विशा., कृत्ति. शिव अहि भरणी मूल। श्वान सर्प जम्बुक डसे जिमि यम हन्यो त्रिशूल।। दीर्घकालीन रोग विचार- षष्ठान्त्याष्टमदांबुलग्नमापत्येषु ये दुर्बला:। पापा: षष्ठमृतिव्ययेष्वपि शुभा दुस्था भवन्ति ग्रहा:। लग्नेशाध्यरयोतिरोगमृतिदा दुस्थेषु सुस्थाश्च ते-नुक्तस्थानगता: शशांकसहिता: स्वं फलं कुर्वते।। १,४,५,६,७, ८,९१२ भावों दुर्बल पापग्रह तथा ६,८,१२ में शुभ ग्रह दुस्थ संज्ञा वाले होते हैं। लग्नेश के अधिशत्रु और दुष्ट ग्रह दीर्घकालीन रोगकारक होते हैं।

लग्नान्तकाल (भारतीय मानक समय में)

दि.	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
05	06:22:20	08:19:16	10:35:08	12:50:04	15:02:00	17:14:56	19:29:56	21:43:00	23:51:00	01:35:04	03:09:04	04:41:24
06	06:18:24	08:15:20	10:31:12	12:46:08	14:58:04	17:11:00	19:26:00	21:39:04	23:47:04	01:31:08	03:05:08	04:37:28
07	06:14:28	08:11:24	10:27:16	12:42:12	14:54:08	17:07:04	19:22:04	21:35:08	23:43:08	01:27:12	03:01:12	04:33:32
08	06:10:32	08:07:28	10:23:20	12:38:16	14:50:12	17:03:08	19:18:08	21:31:12	23:39:12	01:23:16	02:57:16	04:29:36
09	06:06:36	08:03:32	10:19:24	12:34:20	14:46:16	16:59:12	19:14:12	21:27:16	23:35:16	01:19:20	02:53:20	04:25:40
10	06:02:40	07:59:36	10:15:28	12:30:24	14:42:20	16:55:16	19:10:16	21:23:20	23:31:20	01:15:24	02:49:24	04:21:44
11	05:58:44	07:55:40	10:11:32	12:26:28	14:38:24	16:51:20	19:06:20	21:19:24	23:27:24	01:11:28	02:45:28	04:17:48
12	05:54:48	07:51:44	10:07:36	12:22:32	14:34:28	16:47:24	19:02:24	21:15:28	23:23:28	01:07:32	02:41:32	04:13:52
13	05:50:52	07:47:48	10:03:40	12:18:36	14:30:32	16:43:28	18:58:28	21:11:32	23:19:32	01:03:36	02:37:36	04:09:56
14	05:46:56	07:43:52	09:59:44	12:14:40	14:26:36	16:39:32	18:54:32	21:07:36	23:15:36	00:59:40	02:33:40	04:06:00
	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष
15	07:39:56	09:55:48	12:10:44	14:22:40	16:35:36	18:50:36	21:03:40	23:11:40	00:55:44	02:29:44	04:02:04	05:43:00
16	07:36:00	09:51:52	12:06:48	14:18:44	16:31:40	18:46:40	20:59:44	23:07:44	00:51:48	02:25:48	03:58:08	05:39:04
17	07:32:04	09:47:56	12:02:52	14:14:48	16:27:44	18:42:44	20:55:48	23:03:48	00:47:52	02:21:52	03:54:12	05:35:08
18	07:28:08	09:44:00	11:58:56	14:10:52	16:23:48	18:38:48	20:51:52	22:59:52	00:43:56	02:17:56	03:50:16	05:31:12

ग्रहचार

मंगल-17 मई को 13:59 से आर्द्रा में, बुध-10 मई को 22:09 से भरणी में, व 17 मई को 10:18 से कृत्तिका में, वक्री गुरु- ज्येष्ठा में, शुक्र-रेवती में 10 मई को 19:5 से अश्विनी में, शनि-पू.षा. में वक्री राहु-पुन. में, केतु- 9 मई को 7:40 से पू.षा. में

ज्येष्ठ कृष्णपक्ष

परिधावी संवत्सर, वि. संवत् 2076, शक 1941 — उत्तरायण, उत्तरगोल, ग्रीष्म ऋतु (19 मई से 03 जून 2019 ई. तक) — गुरु पश्चिम, शुक्र पूर्व

तिथि	वार	घ.प.	घ.मि.	नक्षत्र	घ.प.	घ.मि.	योग	घ.प.	घ.मि.	करण	घ.मि.	करण	घ.मि.	सू.उ. घ.मि.	सू.अ. घ.मि.	दि.मा. घ.प.	च.रा.प्र. घ.मि.	दिनांक	व्रतपर्व विवरण (भारतीय मानक समय में)
01	रवि	50/05	25:43	अनुराधा	51/05	26:07	परिघ	18/32	13:06	बालव	14:12	कौलव	25:43	05:41	18:52	32/57		19	ब्रह्ममूर्ति पूजन। अनुराधा में पशुपक्षी-मत्स्यादि-शिक्षण-प्रशिक्षण-वस्तु-भूमि-भवन-वाहन-व्यापाराम्भ मुहूर्त्त है।
02	सोम	49/13	25:22	ज्येष्ठा	52/00	26:29	शिव	14/30	11:29	तैतिल	13:33	गर	25:22	05:41	18:53	33/00	धनु 26:29	20	नारद जयन्ती। ज्येष्ठा में पशुपक्षी मत्स्य पालन, कृषि-विद्युत उपकरण कार्य का मुहूर्त्त है।
03	मङ्गल	50/03	25:41	मूल	54/37	27:31	सिद्ध	12/10	10:32	वणिज	13:32	विष्टि	25:41	05:40	18:53	33/02		21	भद्रा 13:32 से 25:41 तक, सायनसूर्य मिथुन में, मूल में राहुवेध मुहूर्त्ताभाव है।
04	बुध	52/33	26:41	पू.षा.	58/52	29:13	साध्य	10/25	09:50	बव	14:11	बालव	26:41	05:40	18:54	33/05		22	संकटचतुर्थीव्रत, चन्द्रोदय 22:15 पू.षा. में शनियुति भौमवेध मुहूर्त्ताभाव है।
05	गुरु	56/38	28:19	उ.षा.	--	--	शुभ	10/20	09:48	कौलव	15:30	तैतिल	28:19	05:40	18:54	33/05	मकर 11:44	23	उ.षा. में गर्भाधान-अन्नप्राशन-जातकर्म-नामकरण-वस्तु-भूमि-भवन-वाहन-क्रय-विक्रय-व्यापार का मुहूर्त्त है।
06	शुक्र	--	--	उ.षा.	04/35	07:30	शुक्ल	11/25	10:14	गर	14:10	वणिज	--	05:40	18:55	33/08		24	श्रवण में सूर्यवेध मुहूर्त्ताभाव है। सवार्थसि. 70:30 से सूर्योदय तक।
06	शनि	01/52	06:25	श्रवण	11/27	10:15	ब्रह्म	13/20	11:00	वणिज	06:25	विष्टि	19:38	05:40	18:55	33/08	कुम्भ 23:43	25	भद्रा 06:25 से 19:38 तक, पञ्चक आरम्भ 10:15, रोहिणी में सूर्य प्रवेश 20:26 पर। श्रवण में सूर्यवेध, धनिष्ठा में पशु-पक्षी-मत्स्यपालन-व्यापाराम्भ का मुहूर्त्त है। द्विपुष्कर 10:15 से सूर्योदय तक।
07	रवि	07/58	08:50	धनिष्ठा	18/57	13:14	ऐन्द्र	15/48	11:58	बव	08:50	बालव	22:03	05:39	18:56	33/12		26	सूर्यसप्तमी। धनिष्ठा शिक्षण-प्रशिक्षण-मुद्रण-प्रकाशन-वस्तु-भूमि-भवन-वाहन-क्रय-विक्रय-व्यापार-जातकर्म मुहूर्त्त है।
08	सोम	14/03	11:16	शत.	26/25	16:13	वैधृति	18/12	12:56	कौलव	11:16	तैतिल	24:24	05:39	18:56	33/12		27	शीतलाष्टमीव्रत, त्रिलोचनाष्टमी (बंगाल), शतभिषा में वैधृतिदोष, रिक्तदोष मुहूर्त्ताभाव है।
09	मङ्गल	19/40	13:31	पू.भा.	33/17	18:58	विष्कु	20/15	13:45	गर	13:31	वणिज	26:26	05:39	18:57	33/15	मीन 12:19	28	भद्रा 26:26 से, रिक्तादोष उपरान्त पू.भा. में रोगमुक्तस्नान-उग्रकार्य-शस्त्रनिर्माण मुहूर्त्त है। सि.यो./सर्वार्थसि. 18:58 से
10	बुध	24/15	15:21	उ.भा.	39/08	21:18	प्रीति	21/30	14:15	विष्टि	15:21	बव	27:59	05:39	18:57	33/15		29	भद्रा 15:21 तक, उ.भा. में भद्रोपरान्त कृषिकार्य-शिक्षण-प्रशिक्षण-मुद्रण-प्रकाशन-वस्तु-भूमि-भवन-वाहन-क्रय-विक्रय-व्यापार-जातकर्म मुहूर्त्त है। सि.यो./सर्वा.सि. सूर्यो. तक
11	गुरु	27/30	16:38	रेवती	43/32	23:03	आयु	21/42	14:19	बालव	16:38	कौलव	28:58	05:38	18:57	33/17	मेष 23:03	30	पञ्चक 23:03 तक, अचला/अपरा एकादशी व्रतम् सर्वेषाम्, भद्रकाली एकादशी, रेवती में नामकरण, वाटिकारोपण, नवीन वस्त्र धारण, ईंट निर्माण, वस्तु-भूमि-भवन-वाहन-क्रय-विक्रय-व्यापार का मुहूर्त्त है। सर्वार्थसि. 28:03 से
12	शुक्र	29/07	17:17	अश्विनी	46/40	24:12	सौभा	20/40	13:54	तैतिल	17:17	गर	29:17	05:38	18:58	33/20		31	प्रदोषव्रत, अश्विनी में जातकर्म, नामकरण, शिल्पकर्म, वस्तु-भूमि-भवन-वाहन-क्रय-विक्रय-व्यापार का मुहूर्त्त है। सर्वार्थसि. सूर्यो.तक।
13	शनि	29/07	17:17	भरणी	47/40	24:42	शोभ	18/22	12:59	वणिज	17:17	विष्टि	28:59	05:38	18:58	33/20		01	भद्रा 17:17 से 28:59 तक, वटसावित्रीव्रतारम्भ (अमावस्या पक्ष) मासान्तदोष मुहूर्त्ताभाव।
14	रवि	27/35	16:40	कृत्तिका	47/33	24:39	अति	14/50	11:34	शकुनि	16:40	चतुष्प.	28:06	05:38	18:59	33/22	वृष 06:44	02	शिवपूजन, वटसावित्री द्वितीय दिन, मासान्तदोष मुहूर्त्ताभाव।
30	सोम	24/45	15:32	रोहिणी	46/08	24:05	सुक	10/13	09:43	नाग	15:32	किंस्तु.	26:45	05:38	18:59	33/22		03	भावुका/वटसावित्री/सोमवती अमा. स्नानदानादि, शनैश्चर जयन्ती, मासान्तदोष, शनि जयन्ती के कारण शनि का सायं कालीन दर्शन, जप होमादि कार्य, छाया दान, निर्धनों को अन्नदान, पशुदान व संरक्षण विशेष शुभ है। अमृतसिद्धि 24:05से सूर्यो.तक,

दैनिकमुहूर्त्तादि विवरण (भद्रा, पञ्चक एवं त्रिपुष्कर, सर्वार्थसिद्धि योगादि)

प्रश्न से विवाहयोग - गुरुरविसौम्यैर्दृष्टस्त्रिसुतमदायारिगः शशी लग्नात्। भवति च विवाहकर्ता त्रिकोणकेन्द्रेषु वा सौम्याः।। विवाह प्रश्न में यदि प्रश्न लग्न से चन्द्रमा ३, ५, ६, ७ तथा ११ भावों में से किसी में बैठा हो तथा बुध, गुरु, सूर्य से दृष्ट हो तब वह विवाह कराने वाला होता है। अथवा यदि विवाह प्रश्न कुण्डली में शुभ ग्रह केन्द्र तथा त्रिकोण में स्थित हों (इन स्थानों में कोई पापग्रह न हों) तब भी विवाह होगा ऐसा कहना चाहिए। शुक्राच्चन्द्रात्सप्तमे यद्गृहं तत्संख्यातुल्ये वत्सरेऽर्केयुतेवा।। स्यादुद्वाहोवत्सरे तादृशान्ते वंशोरूपं तत्पतेश्चिन्तनीयम्। अपि च - केन्द्रोपगैर्नवमगैः सुतगैश्च सौम्यैः, लग्नाच्छशित्रिसुतमार्ग रसायगो वा। उष्णांशुजीवबुधदृष्टयुतो विवाहकर्ता वरस्तु लभते प्रमदां मनोज्ञाम्। **वर लाभ योग-** विषमभांशगतौ शशिभार्गवौ तनुगृहं बलिनौ यदि पश्यतः। रचयतो वरलाभमिमौ यदा युगलभांशगतौ युवतिप्रदौ।। प्रश्नकाल में विषम राशि व नवांश में बलवान् चंद्र, शुक्र हों और लग्न को देखते हों तो वर लाभ शीघ्र होता है, यदि सम राशि नवांश में हों तो कन्या लाभ होता है। **कन्या विवाह मन्त्र -** ऊँ कात्यायनि महामाये महायोगिन्यधीश्वरी, नन्दगोपसुतं देवि पतिं मे कुरुते नमः।। अथवा- हे गौरि शङ्करार्धाङ्गि यथा त्वं शङ्करप्रिया, तथा मां कुरु कल्याणि कान्तकान्तां सुदुर्लभाम्।। अथवा- ऊँ देवेन्द्राणि नमस्तुभ्यं देवेन्द्रप्रियभामिनी, विवाहं भाग्यमारोग्यं शीघ्रलाभं च देहि मे।। इन मन्त्रों में से किसी भी मन्त्र का योग्य आचार्य से शुद्ध वाचन करवाकर देवी के सम्मुख जप करना चाहिए। पत्नी लाभ मन्त्र- पत्नीं मनोरमां देहि मनोवृत्तानुसारिणीम्। तारिणीं दुर्गसंसारसागरस्य कुलोद्भवाम् अथवा- सर्वाबाधा विनिर्मुक्तो मन्त्र का सम्पुटित पाठ या जप भी विवाह के लिए उत्तम होता है। पाठ के समय स्त्रियों के प्रति सम्मान का भाव रखें।

सूर्यादि स्पष्ट ग्रह भा.स्टै.टा.प्रात: 5 बजकर 29 मिनट का राशि, अंश, कला, विकला में

दि.	स्पष्ट सूर्य				स्पष्ट चन्द्र				स्पष्ट मङ्गल				स्पष्ट बुध				स्पष्ट गुरु				स्पष्ट शुक्र				स्पष्ट शनि				स्पष्ट राहु			
19	1	3	37	53	7	5	6	8	2	7	43	44	1	0	31	53	7	28	4	10	0	10	14	27	8	26	6	28	2	26	8	29
20	1	4	35	38	7	18	31	39	2	8	22	26	1	2	42	8	7	27	57	50	0	11	27	21	8	26	4	38	2	26	5	18
21	1	5	33	22	8	1	36	52	2	9	1	7	1	4	53	5	7	27	51	22	0	12	40	16	8	26	2	43	2	26	2	7
22	1	6	31	4	8	14	21	49	2	9	39	47	1	7	4	30	7	27	44	48	0	13	53	11	8	26	0	42	2	25	58	56
23	1	7	28	46	8	26	48	9	2	10	18	27	1	9	16	7	7	27	38	9	0	15	6	7	8	25	58	36	2	25	55	46
24	1	8	26	26	9	8	58	56	2	10	57	5	1	11	27	41	7	27	31	23	0	16	19	4	8	25	56	25	2	25	52	35
25	1	9	24	5	9	20	58	12	2	11	35	42	1	13	38	54	7	27	24	32	0	17	32	1	8	25	54	9	2	25	49	24
26	1	10	21	43	10	2	50	41	2	12	14	18	1	15	49	31	7	27	17	35	0	18	44	59	8	25	51	48	2	25	46	13
27	1	11	19	20	10	14	41	25	2	12	52	54	1	17	59	14	7	27	10	34	0	19	57	58	8	25	49	22	2	25	43	2
28	1	12	16	56	10	26	35	27	2	13	31	29	1	20	7	49	7	27	3	28	0	21	10	57	8	25	46	51	2	25	39	52
29	1	13	14	31	11	8	37	38	2	14	10	2	1	22	15	00	7	26	56	17	0	22	23	57	8	25	44	16	2	25	36	41
30	1	14	12	6	11	20	52	10	2	14	48	35	1	24	20	34	7	26	49	2	0	23	36	58	8	25	41	35	2	25	33	30
31	1	15	9	39	0	3	22	29	2	15	27	8	1	26	24	19	7	26	41	43	0	24	49	59	8	25	38	50	2	25	30	19
01	1	16	7	12	0	16	10	50	2	16	5	39	1	28	26	6	7	26	34	21	0	26	3	1	8	25	36	1	2	25	27	8
02	1	17	4	43	0	29	18	7	2	16	44	10	2	0	25	44	7	26	26	56	0	27	16	3	8	25	33	6	2	25	23	58
03	1	18	2	14	1	12	43	49	2	17	22	39	2	2	23	7	7	26	19	27	0	28	29	6	8	25	30	8	2	25	20	47

अमायां वटसावित्रीव्रतम् -अमायां च तथा ज्येष्ठे वटमूले महासती, त्रिरात्रोपोषिता नारी विधानेन प्रपूजयेत्। **भद्रकाली प्रार्थना-**जयन्ती मङ्गला काली भद्रकाली कपालिनी, दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोस्तुते।।

जन्ममास में विचारणीय -यो जन्मासे क्षुरकर्म यात्रां कर्णस्य वेधं कुरुते हि मोहात्। मूढः स रोगी धनपुत्रनाशं प्राप्नोति गूढं निधनं तदाशु।। मूढः स रोगी धनपुत्रनाशं प्राप्नोति गूढं निधनं तदाशु।। **ज्येष्ठ में दान-** ज्येष्ठे मासि तिलान् दद्यात् पौर्णमास्यां विशेषतः। अश्वमेधस्य यत् पुण्यं तत् प्राप्नोति न संशयः।। इति विष्णु

27 मई 2019, अष्टमी, सोमवार
सूर्योदयकालीन

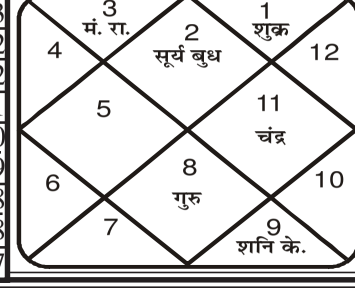

03 जून 2019, अमावस्या, सोमवार
सूर्योदयकालीन

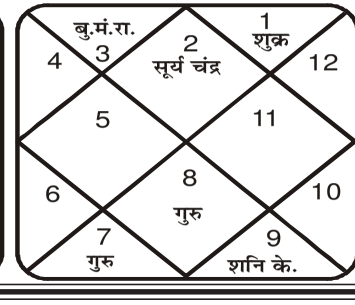

लग्नान्तकाल (भारतीय मानक समय में)

दि.	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष
19	07:24:12	09:40:04	11:55:00	14:06:56	16:19:52	18:34:52	20:47:56	22:55:56	00:40:00	02:14:00	03:46:20	05:27:16
20	07:20:16	09:36:08	11:51:04	14:03:00	16:15:56	18:30:56	20:44:00	22:52:00	00:36:04	02:10:04	03:42:24	05:23:20
21	07:16:20	09:32:12	11:47:08	13:59:04	16:12:00	18:27:00	20:40:04	22:48:04	00:32:08	02:06:08	03:38:28	05:19:24
22	07:12:24	09:28:16	11:43:12	13:55:08	16:08:04	18:23:04	20:36:08	22:44:08	00:28:12	02:02:12	03:34:32	05:15:28
23	07:08:28	09:24:20	11:39:16	13:51:12	16:04:08	18:19:08	20:32:12	22:40:12	00:24:16	01:58:16	03:30:36	05:11:32
24	07:04:32	09:20:24	11:35:20	13:47:16	16:00:12	18:15:12	20:28:16	22:36:16	00:20:20	01:54:20	03:26:40	05:07:36
25	07:00:36	09:16:28	11:31:24	13:43:20	15:56:16	18:11:16	20:24:20	22:32:20	00:16:24	01:50:24	03:22:44	05:03:40
26	06:56:40	09:12:32	11:27:28	13:39:24	15:52:20	18:07:20	20:20:24	22:28:24	00:12:28	01:46:28	03:18:48	04:59:44
27	06:52:44	09:08:36	11:23:32	13:35:28	15:48:24	18:03:24	20:16:28	22:24:28	00:08:32	01:42:32	03:14:52	04:55:48
28	06:48:48	09:04:40	11:19:36	13:31:32	15:44:28	17:59:28	20:12:32	22:20:32	00:04:36	01:38:36	03:10:56	04:51:52
29	06:44:52	09:00:44	11:15:40	13:27:36	15:40:32	17:55:32	20:08:36	22:16:36	00:00:40	01:34:40	03:07:00	04:47:56
30	06:40:56	08:56:48	11:11:44	13:23:40	15:36:36	17:51:36	20:04:40	22:12:40	23:56:44	01:30:44	03:03:04	04:44:00
31	06:37:00	08:52:52	11:07:48	13:19:44	15:32:40	17:47:40	20:00:44	22:08:44	23:52:48	01:26:48	02:59:08	04:40:04
01	06:33:04	08:48:56	11:03:52	13:15:48	15:28:44	17:43:44	19:56:48	22:04:48	23:48:52	01:22:52	02:55:12	04:36:08
02	06:29:08	08:45:00	10:59:56	13:11:52	15:24:48	17:39:48	19:52:52	22:00:52	23:44:56	01:18:56	02:51:16	04:32:12
03	06:25:12	08:41:04	10:56:00	13:07:56	15:20:52	17:35:52	19:48:56	21:56:56	23:41:00	01:15:00	02:47:20	04:28:16

ग्रहचार

मंगल-मृग. में, 17 मई को 14:00 से आर्द्रा में, बुध 23 मई को 13:29 से रोहिणी में व 29 मई को 17:52 से मृग.में, वक्री गुरु ज्येष्ठा में, शुक्र- अश्विनी में 21 मई को 18:33 से भरणी में व 1 जून को 17:37 से कृत्तिका में, शनि- वक्री पू.षा. में, राहु- पुन. में, केतु- पू.षा. में

ज्येष्ठ शुक्लपक्ष — परिधावी संवत्सर, वि. संवत् 2076, शक 1941

उत्तरायण, उत्तरगोल, ग्रीष्मऋतु (04 जून से 17 जून 2019 ई. तक) — गुरु पश्चिम, शुक्र पूर्व

तिथि	वार	घ.प.	घ.मि.	नक्षत्र	घ.प.	घ.मि.	योग	घ.प.	घ.मि.	करण	घ.मि.	करण	घ.मि.	सू.उ. घ.मि.	सू.अ. घ.मि.	दि.मा. घ.प.	च.रा.प्र. घ.मि.	दिनांक	व्रतपर्व विवरण (भारतीय मानक समय में) / दैनिकमुहूर्त्तादि विवरण (भद्रा, पञ्चक एवं त्रिपुष्कर, सर्वार्थसिद्धि योगादि)
01	मङ्गल	20/50	13:58	मृगशिरा	43/45	23:08	धृति शूल	04/38 58/20	07:29 28:58	बव	13:58	बालव	25:01	05:38	19:00	33/25	मिथु. 11:39	04	चन्द्रदर्शन, सोपपदा द्वितीया, करवीरव्रत, मृग. में उग्र-अग्नि-धातु कार्य आदि। द्विपुष्कर सूर्योदय से 23:08 तक।
02	बुध	16/03	12:03	आर्द्रा	40/40	21:54	गण्ड	51/30	26:14	कौलव	12:03	तैतिल	22:59	05:38	19:00	33/25		05	रम्भा तृतीया (पूर्वविद्धा), आर्द्रा में भौमयुति, शनिकेतु वेध।
03	गुरु	10/42	09:55	पुनर्वसु	37/05	20:28	वृद्धि	44/20	23:22	गर	09:55	वणिज	20:47	05:38	19:00	33/25	कर्क 14:51	06	भद्रा आरम्भ 20:47 से, गणेशचतुर्थी,महाराणा प्रताप जयन्ती 419वीं, पुनर्वसु में राहुयुति गुरुपुष्ययोग 20:28 से, सि.यो./सर्वार्थसि. सूर्यो. से 20:28 तक तदुप.सूर्यो.तक,
04 05	शुक्र	05/00 59/08	07:38 29:17	पुष्य	33/15	18:56	ध्रुव	36/55	20:24	विष्टि	07:38	बव बालव	18:27 29:17	05:38	19:01	33/27		07	भद्रा 07:38 तक, गुरु अर्जुनदेव बलिदान दिवास, उमावतार, उमाचतुर्थी, रिक्तोपरान्त पुष्य में पुंसवन, सीमन्त, अन्नप्राशन, वस्तु-भूमि-भवन-वाहन-व्यापार-वाटिका-शिक्षण-प्रशिक्षण का मुहूर्त्त है।
06	शनि	53/13	26:55	आश्ले.	29/20	17:22	व्याघा.	29/28	17:25	कौलव	16:06	तैतिल	26:55	05:38	19:01	33/27	सिंह 17:22	08	स्कन्द/जमाई/अरण्य/शीतला/कुमार षष्ठी, विन्ध्यवासिनी पूजा, रानी लक्ष्मीबाई पुण्यतिथि, मृग. में सूर्य प्रवेश 18:13 से, श्लेषा में पशु-पक्षी-मत्स्यादि पालन, उग्रकार्य का मुहूर्त्त है।
07	रवि	47/28	24:37	मघा	25/28	15:49	हर्ष.	22/02	14:27	गर	13:46	वणिज	24:37	05:38	19:02	33/30		09	भद्रा आरम्भ 24:37 से, सूर्यसप्तमी मघा में सूर्यपूजा, उग्र-अग्नि कार्य मुहूर्त्त है।
08	सोम	41/55	22:24	पू.फा.	21/48	14:21	वज्र	14/48	11:33	विष्टि	11:31	बव	22:24	05:38	19:02	33/30	कन्या 20:00	10	भद्रा समाप्ति 11:31 पर, शुक्लादेवीपूजा ब्रह्माणीदेवीपूजा, धूमावती जयन्ती, मेला क्षीरभवानी (कश्मीर)। पू.फा. में वस्तुविक्रय, उ.फा. में गर्भाधान, शिल्प, वस्तु-भूमि-भवन-वाहन-व्यापार का मुहूर्त्त है।
09	मङ्गल	36/45	20:20	उ.फा.	18/28	13:01	सिद्धि	07/50	08:46	बालव	09:22	कौलव	20:20	05:38	19:02	33/30		11	महेश नवमी, उ.फा./हस्त में रिक्तादोष मुहूर्त्ताभाव।
10	बुध	32/02	18:27	हस्त	15/32	11:51	व्यति. वरी.	01/10 54/58	06:06 27:37	तैतिल	07:24	गर वणिज	18:27 29:38	05:38	19:03	33/33	तुला 23:21	12	भद्रा 29:38 से, गंगादशहरा, गंगा जयन्ती, काशी में दशाश्वमेघ स्नान, सेतुबन्ध रामेश्वर, रामेश्वरप्रतिष्ठा, हस्त में 06:06 के बाद अन्नप्राशन-वस्तु-भूमि-भवन-वाहन-व्यापार का मुहूर्त्त है। सर्वार्थसि. सूर्यो. से 11:51 तक।
11	गुरु	28/00	16:50	चित्रा	13/13	10:55	परिघ	49/20	25:22	विष्टि	16:50	बव	28:10	05:38	19:03	33/33		13	भद्रा 16:50 तक, निर्जला एकादशी व्रत(सर्वेषाम्), भीमसैनी एकादशी, भद्रोपरान्त स्वाती में वस्तु-भूमि-भवन-वाहन-व्यापार-कृषि-औषधि गर्भाधान का मुहूर्त्त है।
12	शुक्र	24/40	15:30	स्वाती	11/35	10:16	शिव	44/20	23:22	बालव	15:30	कौलव	27:02	05:38	19:03	33/33	वृश्चि. 28:01	14	त्रिविक्रम द्वादशी, प्रदोष, कूर्म/चम्पकद्वादशी, वटसावित्री प्रथम दिन, स्वाती में वस्तु-भूमि-भवन-वाहन-व्यापार-जातकर्म, नामकरण, शिल्पकार्य का मुहूर्त्त है।
13	शनि	22/18	14:33	विशाखा	10/52	09:59	सिद्ध	40/10	21:42	तैतिल	14:33	गर	26:18	05:38	19:03	33/33		15	दक्षिणवटसावित्रीव्रत द्वितीय दिन, **सूर्यप्रवेश मिथुन में 17:38,पु.का. 11:10 के बाद**, विशा. में पशुपक्षीकर्म, वृक्षवाटिकाकर्म, अनु. में व्यापारम्भ, कृषिकार्य शुभ है
14	रवि	21/00	14:02	अनुराधा	11/13	10:07	साध्य	36/55	20:24	वणिज	14:02	विष्टि	26:02	05:38	19:04	33/35		16	भद्रा 14:02 से 26:02 तक, वटसावित्री, पूर्णिमाव्रत, सत्यनारायणव्रत, अनुराधा में रोगमुक्त स्नान, ज्येष्ठा में पशु-पक्षी-मत्स्यादि कार्य, कृषिकार्य का मुहूर्त्त है।
15	सोम	20/58	14:01	ज्येष्ठा	12/43	10:43	शुभ	34/38	19:29	बव	14:01	बालव	26:16	05:38	19:04	33/35	धनु 10:43	17	वैव.मन्वादि, स्ना.दा. पूर्णि., ज्येष्ठी पूर्णि., कबीरदासजय., मन्वादि 15। ज्येष्ठा में पशु-पक्षी-मत्स्यादि कार्य, कृषिकार्य का मुहूर्त्त है। मूल में भौमवेध।

श्रीहनुमन्मन्त्रप्रयोग: - "ॐ नमो भगवते आंजनेयाय महाबलाय स्वाहा।।"इत्यष्टादशाक्षरो मन्त्र:। अस्य मन्त्रस्य ईश्वरऋषि:, अनुष्टुप्छन्द:, हनुमान् देवता, हूँ बीजं स्वाहा शक्ति:, ममाभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोग:। ॐ ईश्वरऋषये नम: शिरसि।। ॐ अनुष्टुप्छन्दसे नम: मुखे।। ॐ हनुमद्देवतायै नम: हृदये।। ॐ हूँ बीजाय नम: गुह्ये।। ॐ स्वाहाशक्तये नम: पादयो:।। ॐ आंजनेयाय अंगुष्ठाभ्यां नम:।। ॐ रुद्रमूर्त्तये तर्जनीभ्यां नम:।। ॐ वायुपुत्राय मध्यमाभ्यां नम:।। ॐ अग्निगर्भाय अनामिकाभ्यां नम:।। ॐ रामदूताय कनिष्ठिकाभ्यां नम:।। हनुमान जी का ध्यान करके सभी बाधाओं को दूर करने के लिए प्रतिदिन सहस्त्र जप करें। दस सहस्त्र जप उसका दशांश हवनादि कर्म और जप के समय ब्रह्मचर्य बिना नमक का भोजन करके प्रयोग पूर्ण

वर्षा ज्ञानाय पुंस्त्रीनपुंसकनक्षत्राणि - आर्द्रादि दशकं स्त्रीणां विशाखादित्रिनपुंसकम्। मूलाच्चतुर्दशं पुंसां नक्षत्राणि क्रमाद् बुधै:।। वायुर्नपुंसके भे च स्त्रीणां भे चाभ्रदर्शनम्। स्त्रीणां पुरुषसंयोगे वृष्टिर्भवति निश्चितम्।। अश्विनीमृगपुष्येषु पूषाविष्णुमघासु च स्वात्यां प्रविशते भानु: वर्षते नात्र संशय:।। सूर्य एवं चन्द्र नक्षत्र - अश्विन्यादित्रयं चैव आर्द्रादि: पञ्चकं तथा। पूर्वाषाढादि चत्वारि चोत्तरारेवतीद्वयम्।। उक्तानि शशिभान्यन्यत् प्रोच्यते सूर्यभान्तथा। रोहिणी च मृगश्चैव पूर्वाफाल्गुनिकाद्वयम्।। नक्षत्राणि करात् सप्त वारुणाद्वितये तथा। सूर्ये सूर्ये भवेद्वायु चन्द्रे चन्द्रे न वर्षति।। चान्द्रार्कयोर्भवेद्योगस्तदा वर्षति मेघराट्।। इनके अनुसार दैवज्ञ को वर्षानुकूल समय जानकर वर्षा का विचार करना चाहिए।

सूर्यादि स्पष्ट ग्रह भा.स्टै.टा.प्रात: 5 बजकर 29 मिनट का राशि, अंश, कला, विकला में

दि.	स्पष्ट सूर्य				स्पष्ट चन्द्र				स्पष्ट मङ्गल				स्पष्ट बुध				स्पष्ट गुरु				स्पष्ट शुक्र				स्पष्ट शनि				स्पष्ट राहु			
04	1	18	59	44	1	26	26	4	2	18	1	8	2	4	18	9	7	26	11	57	0	29	42	10	8	25	27	5	2	25	17	36
05	1	19	57	12	2	10	21	58	2	18	39	37	2	6	10	44	7	26	4	23	1	0	55	14	8	25	23	58	2	25	14	25
06	1	20	54	40	2	24	28	0	2	19	18	4	2	8	0	49	7	25	56	48	1	2	8	19	8	25	20	46	2	25	11	14
07	1	21	52	6	3	8	40	33	2	19	56	31	2	9	48	20	7	25	49	12	1	3	21	24	8	25	17	31	2	25	8	4
08	1	22	49	32	3	22	56	12	2	20	34	56	2	11	33	15	7	25	41	34	1	4	34	29	8	25	14	12	2	25	4	53
09	1	23	46	56	4	7	12	3	2	21	13	21	2	13	15	33	7	25	33	55	1	5	47	35	8	25	10	49	2	25	1	42
10	1	24	44	19	4	21	25	38	2	21	51	45	2	14	55	11	7	25	26	16	1	7	0	41	8	25	7	22	2	24	58	31
11	1	25	41	41	5	5	34	49	2	22	30	8	2	16	32	8	7	25	18	37	1	8	13	48	8	25	3	51	2	24	55	20
12	1	26	39	2	5	19	37	42	2	23	8	30	2	18	6	23	7	25	10	57	1	9	26	55	8	25	0	17	2	24	52	10
13	1	27	36	22	6	3	32	19	2	23	46	52	2	19	37	55	7	25	3	18	1	10	40	3	8	24	56	40	2	24	48	59
14	1	28	33	41	6	17	16	45	2	24	25	12	2	21	6	42	7	24	55	40	1	11	53	12	8	24	52	59	2	24	45	48
15	1	29	30	59	7	0	49	4	2	25	3	32	2	22	32	42	7	24	48	3	1	13	6	21	8	24	49	15	2	24	42	37
16	2	0	28	16	7	14	7	36	2	25	41	51	2	23	55	55	7	24	40	27	1	14	19	31	8	24	45	28	2	24	39	26
17	2	1	25	32	7	27	11	8	2	26	20	9	2	25	16	17	7	24	32	53	1	15	32	41	8	24	41	38	2	24	36	15

यात्रा में प्रस्थान - अपेक्ष्यकार्यं स्वयमप्रमाणे महीभ्रताम निर्गममाहुरार्या:। छत्रायुधाद्यं मनसस्त्वभीष्टंल प्रचालयेद्वै नृपतिर्जयार्थी।। **प्रस्थान में दिन विचार -** सप्ताहानेव पूर्वस्यां प्रस्थानं पंच दक्षिणे। पश्चिमे त्रीणि शस्तानि सौम्यायां तु दिनद्वयम्।। **प्रस्थान की दूरी-** गेहाद्गेहान्तरमपि गमस्तर्हि यात्रेति गर्ग:। सीम्न: सीमान्तरमपि भृगुर्वाणविक्षेपमात्रम्। प्रस्थानं स्यादिति कथयेत्तथा भरद्वाज एवं यात्रा कार्या बहिरिह पुरात्स्याद्वसिष्ठो ब्रवीति।। (बृ.दै.र.)

नष्टवस्तु विचार - जोड़ प्रहर तिथि वार को देय नक्षत्र मिलाय, संख्या दिक् से गुणित कर सात का भाग लगाय। एक बचे से भूमि में, दो बर्तन के माहि, तीन बचे जल मध्य में, चौथ गगन में जाहि। पांच बचे भूसी गिनो षड् गोमय के बीच, सप्त भस्म के मध्य में प्रश्न ऊँच या नीच।। तिथि प्रहर, वार और नक्षत्र को जोड़कर १० का गुणा करके ७ का भाग दे। फल पद्यानुसार समझे।

10 जून 2019, अष्टमी, सोमवार
सूर्योदयकालीन

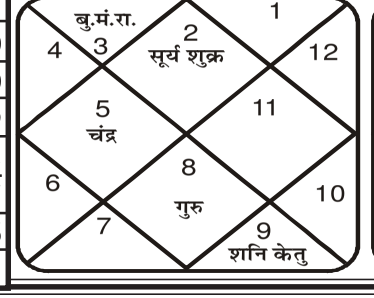

17 जून 2019, पूर्णिमा, सोमवार
सूर्योदयकालीन

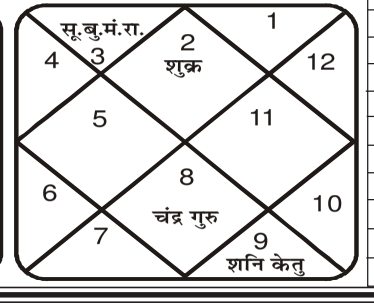

लग्नान्तकाल (भारतीय मानक समय में)

दि.	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष
04	06:21:16	08:37:08	10:52:04	13:04:00	15:16:56	17:31:56	19:45:00	21:53:00	23:37:04	01:11:04	02:43:24	04:24:20
05	06:17:20	08:33:12	10:48:08	13:00:04	15:13:00	17:28:00	19:41:04	21:49:04	23:33:08	01:07:08	02:39:28	04:20:24
06	06:13:24	08:29:16	10:44:12	12:56:08	15:09:04	17:24:04	19:37:08	21:45:08	23:29:12	01:03:12	02:35:32	04:16:28
07	06:09:28	08:25:20	10:40:16	12:52:12	15:05:08	17:20:08	19:33:12	21:41:12	23:25:16	00:59:16	02:31:36	04:12:32
08	06:05:32	08:21:24	10:36:20	12:48:16	15:01:12	17:16:12	19:29:16	21:37:16	23:21:20	00:55:20	02:27:40	04:08:36
09	06:01:36	08:17:28	10:32:24	12:44:20	14:57:16	17:12:16	19:25:20	21:33:20	23:17:24	00:51:24	02:23:44	04:04:40
10	05:57:40	08:13:32	10:28:28	12:40:24	14:53:20	17:08:20	19:21:24	21:29:24	23:13:28	00:47:28	02:19:48	04:00:44
11	05:53:44	08:09:36	10:24:32	12:36:28	14:49:24	17:04:24	19:17:28	21:25:28	23:09:32	00:43:32	02:15:52	03:56:48
12	05:49:48	08:05:40	10:20:36	12:32:32	14:45:28	17:00:28	19:13:32	21:21:32	23:05:36	00:39:36	02:11:56	03:52:52
13	05:45:52	08:01:44	10:16:40	12:28:36	14:41:32	16:56:32	19:09:36	21:17:36	23:01:40	00:35:40	02:08:00	03:48:56
14	05:41:56	07:57:48	10:12:44	12:24:40	14:37:36	16:52:36	19:05:40	21:13:40	22:57:44	00:31:44	02:04:04	03:45:00
	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष
15	07:53:52	10:08:48	12:20:44	14:33:40	16:48:40	19:01:44	21:09:44	22:53:48	00:27:48	02:00:08	03:41:04	05:38:00
16	07:49:56	10:04:52	12:16:48	14:29:44	16:44:44	18:57:48	21:05:48	22:49:52	00:23:52	01:56:12	03:37:08	05:34:04
17	07:46:00	10:00:56	12:12:52	14:25:48	16:40:48	18:53:52	21:01:52	22:45:56	00:19:56	01:52:16	03:33:12	05:30:08

ग्रहचार

मंगल-अर्द्रा में 7 जून को 7:40 से पुन. में, बुध 05 जून को 11:49 से आर्द्रा में व 13 जून को 11:23से पुन. में,वक्री गुरु ज्येष्ठा में, शुक्र-कृत्तिका में 12 को 16:20 से रोहिणी में, शनि- वक्री पू.षा. में, राहु- पुन. में, केतु- पू.षा. म

आषाढ कृष्णपक्ष **परिधावी संवत्सर, वि. संवत् 2076, शक 1941** सू.उ. सू.अ. दि.मा. च.रा.प्र.

तिथि	वार	घ.प.	घ.मि.	नक्षत्र	घ.प.	घ.मि.	योग	घ.प.	घ.मि.	करण	घ.मि.	करण	घ.मि.	घ.मि.	घ.मि.	घ.प.	घ.मि.
01	मङ्गल	22/13	14:31	मूल	15/30	11:50	शुक्ल	33/25	19:00	कौलव	14:31	तैतिल	27:03	05:38	19:04	33/35	
02	बुध	24/48	15:34	पू.षा.	19/35	13:29	ब्रह्म	33/12	18:56	गर	15:34	वणिज	28:21	05:39	19:05	33/35	मकर 19:59
03	गुरु	28/42	17:08	उ.षा.	25/00	15:39	ऐन्द्र	34/05	19:17	विष्टि	17:08	बव	--	05:39	19:05	33/35	
04	शुक्र	33/45	19:09	श्रवण	31/28	18:14	वैधृति	35/45	19:57	बव	06:08	बालव	19:09	05:39	19:05	33/35	
05	शनि	39/30	21:27	धनिष्ठा	38/40	21:07	विष्कु	37/57	20:50	कौलव	08:18	तैतिल	21:27	05:39	19:05	33/35	कुम्भ 7:39
06	रवि	45/35	23:53	शत.	46/10	24:07	प्रीति	40/28	21:50	गर	10:40	वणिज	23:53	05:39	19:05	33/35	
07	सोम	51/22	26:13	पू.भा	53/25	27:02	आयु	42/42	22:45	विष्टि	13:03	बव	28:14	05:40	19:06	33/35	मीन 20:19
08	मङ्गल	56/25	28:14	उ.भा.	59/52	29:37	सौभा	44/30	23:28	बालव	15:13	कौलव	28:14	05:40	19:06	33/35	
09	बुध	--	--	रेवती	--	--	शोभ	45/17	23:49	तैतिल	14:03	गर	--	05:40	19:06	33/35	
09	गुरु	00/10	05:44	रेवती	05/07	07:43	अति	45/03	23:41	गर	05:44	वणिज	18:10	05:40	19:06	33/10	मेष 07:43
10	शुक्र	02/18	06:36	अश्विनी	08/45	09:11	सुक	43/18	23:00	विष्टि	06:36	बव	18:41	05:41	19:06	33/33	
11	शनि	02/43	06:46	भरणी	10/40	09:57	धृति	40/07	21:44	बालव	06:46	कौलव	18:29	05:41	19:06	33/33	वृष 16:02
12 13	रवि	01/18 58/10	06:12 28:57	कृतिका	10/50	10:01	शूल	35/35	19:55	तैतिल	06:12	गर वणिज	17:34 28:57	05:41	19:06	33/33	
14	सोम	53/33	27:06	रोहिणी	09/20	09:25	गण्ड	29/45	17:35	विष्टि	16:02	शकुनि	27:06	05:42	19:06	33/30	मिथु. 20:53
30	मङ्गल	47/40	24:46	मृगशिरा	06/20	08:14	वृद्धि	22/47	14:49	चतुष्प.	13:56	नाग	24:46	05:42	19:06	33/30	

नोंध उत्तरायण, उत्तरगोल, ग्रीष्मऋतु (18 जून से 02 जुलाई 2019 ई. तक) गुरु पश्चिम, शुक्र पूर्व

व्रतपर्व विवरण (भारतीय मानक समय में) दैनिकमुहूर्त्तादि विवरण (भद्रा, पञ्चक एवं त्रिपुष्कर, सर्वार्थसिद्धि योगादि)

18 गुरु हरगोविन्द सिंह जयन्ती, मूल में भौमवेध, पू.षा. शनियुति मुहूर्त्ताभाव है।
19 भद्रा आरम्भ 28:21 से, पू. षा. में शनि युति, उ.षा. में सूर्यवेध मुहूर्त्ताभाव है।
20 भद्रा 17:08 तक, संकटचतुर्थीव्रत, चंद्रोदय 21:42, उ.षा. में सूर्यवेध व श्रवण में रिक्तादोष मुहूर्त्ताभाव है।
21 पंचकारंभ 18:14 से, सायनसूर्य कर्क में, श्रवण में रिक्ता दोष व धनिष्ठा में वैधृति दोष मुहूर्त्ताभाव है। सर्वार्थसि. सूर्यो. से 18:14 तक।
22 आर्द्रा में सूर्य प्रवेश 17:18 से, धनिष्ठा में पशु-पक्षी-मत्स्यादि कार्य, वाहनक्रय, कृषिकार्य का मुहूर्त्त है।
23 भद्रा आरम्भ 23:53 से, भद्रापूर्व शतभिषा में कृषिकार्य, पशुपक्षीवस्त्रादिक्रयविक्रय, धान्यच्छेदन कार्य शुभ हैं। त्रिपुष्कर 24:07 से सूर्यो.तक
24 भद्रा समाप्ति 13:04 पर, पू.भा. में भद्रोपरान्त शिल्पविद्या, कृषिकार्य, वस्तुविक्रय का मुहूर्त्त है।
25 कालाष्टमी, शीतलाष्टमीव्रत, त्रिलोचन पूजन, उ.भा. में उग्र-अग्नि-आभूषणनिर्माण का मुहूर्त्त है। सि.यो. सूर्यो. से, एवं सर्वार्थसि. सूर्यो. से 29:37 तक।
26 रेवती में रिक्तादोष मुहुर्त्ताभाव। सि.यो. सूर्यो. तक
27 पञ्चक समाप्त 07:43, भद्रा 18:10 से, अश्विनी में भद्रापूर्व जातकर्म, नामकरण, अन्नप्रशन, धान्यारोपण, व्यापारम्भ,भूमिभवनवाहनादि क्रय,वाटिका/वृक्षरोपण,शान्तिकर्म का मुहूर्त्त है। सर्वार्थसि. सूर्यो. से 07:43 तक।
28 भद्रा 06:36 तक, भरणी में कृषिकार्य-विक्रय मुहूर्त्त है।
29 योगिनी एकादशीव्रत (सर्वेषाम्),कृत्तिका में वस्तुविक्रय, शस्त्रनिर्माण का मुहूर्त्त है। त्रिपुष्कर 09:57 से सूर्यो.तक
30 भद्रा 28:57 से, भौमप्रदोषव्रत, मासान्तदोष।
01 भद्रा 16:02 तक, मासान्तदोष। सर्वार्थसि. सूर्योदय से 9:25 तक तदुपरान्त अमृतसिद्धि सूर्यो.तक,
02 भौमवती अमावस्या, स्नान-दान-श्राद्ध अमावस्या, मासान्तदोष।

कुम्भविवाह - बालवैधव्ययोगे तु कुम्भेषु प्रतिमादिभिः। कृत्वा लग्नं ततः पश्चात् कन्योद्वाहोति चापरे।। कन्या की कुण्डली में विधवा योग हो तो घट या प्रतिमा के साथ विवाह निश्चित हो जाने पर करना चाहिए। प्रतिमा या कुम्भ विवाह करने पर पुनर्भूदोष नहीं होता। कहा गया है - स्वर्णाम्बुपिप्पलानां च प्रतिमा विष्णुरूपिणी। तया सह विवाहे तु पुनर्भूत्वं न जायते। विधि - विवाहपूर्वकाले च चन्द्रताराबलान्विते। विवाह्येत्तेन मन्थन्या कुम्भेन सह चोद्वहेत्।। सूत्रेण वेष्टयेत्पञ्चाद्दशतन्तुविधानतः। कुंकुमालंकृतं देहं तयोरेकान्तमन्दिरे।। ततः कुम्भं च निःसार्य प्रभज्य सलिलाशये। ततोभिषेचनं कुर्यात्पञ्चपल्लववारिभिः।।(बृ.दै.र.)

द्वादशस्थ चन्द्रमा - आदाने सम्प्रदाने विवादे राजविग्रहे पाणिग्रहे प्रयाणे च चन्द्रो द्वादशगः शुभः:, अभिषेके निषेके च गृहे पुंसवनादिषु यात्रायुद्धे विवाहे च चन्द्रो द्वादशगः शुभः। उदितः स्वगृहस्थश्च मित्रगेहस्थितोऽपि वा मित्रवर्गे मित्रदृष्टः स ग्रहः सबलः स्मृतः। **विजययोग** - गुरु चन्द्र लग्न में, मगंल व शनि छठे स्थान में हो तो जययोग होता है। वैसे ही ग्यारहवें बुध, शुक्र व गुरु, दसवें सूर्य सभी कार्यों में सफलता देता है। **कुम्भ प्रार्थना**- वरुणांगस्वरूपाय जीवनानां समाश्रय। पतिं जीवय कन्यायाश्चिरं पुत्रसुखं कुरु। देहि विष्णो परं देव कन्यां पालय दुःखतः। ततोलंकारवस्त्रादि वराय प्रतिपादयेत्।। मूर्तिदानमन्त्र- ब्राह्मणं साधुमामंत्र्य सम्पूज्य विविधार्हणैः। तस्मै दद्यादिधानेन विष्णोमूर्तिं चतुर्भुजम्।।

सूर्यादि स्पष्ट ग्रह भा.स्टै.टा.प्रातः 5 बजकर 29 मिनट का राशि, अंश, कला, विकला में

दि.	स्पष्ट सूर्य				स्पष्ट चन्द्र				स्पष्ट मङ्गल				स्पष्ट बुध				स्पष्ट गुरु				स्पष्ट शुक्र				स्पष्ट शनि				स्पष्ट राहु			
18	2	2	22	48	8	9	59	9	2	26	58	26	2	26	33	47	7	24	25	20	1	16	45	53	8	24	37	45	2	24	33	5
19	2	3	20	3	8	22	31	56	2	27	36	43	2	27	48	21	7	24	17	50	1	17	59	5	8	24	33	50	2	24	29	54
20	2	4	17	18	9	4	50	41	2	28	14	59	2	28	59	57	7	24	10	23	1	19	12	18	8	24	29	51	2	24	26	43
21	2	5	14	33	9	16	57	30	2	28	53	14	3	0	8	30	7	24	2	58	1	20	25	32	8	24	25	50	2	24	23	32
22	2	6	11	47	9	28	55	19	2	29	31	29	3	1	13	58	7	23	55	36	1	21	38	47	8	24	21	47	2	24	20	21
23	2	7	9	1	10	10	47	43	3	0	9	44	3	2	16	14	7	23	48	18	1	22	52	3	8	24	17	41	2	24	17	11
24	2	8	6	15	10	22	38	53	3	0	47	57	3	3	15	16	7	23	41	4	1	24	5	19	8	24	13	34	2	24	14	0
25	2	9	3	29	11	4	33	19	3	1	26	11	3	4	10	56	7	23	33	53	1	25	18	37	8	24	9	24	2	24	10	49
26	2	10	0	42	11	16	35	41	3	2	4	24	3	5	3	10	7	23	26	47	1	26	31	56	8	24	5	12	2	24	7	38
27	2	10	57	56	11	28	50	33	3	2	42	36	3	5	51	51	7	23	19	46	1	27	45	16	8	24	0	58	2	24	4	27
28	2	11	55	10	0	11	22	4	3	3	20	48	3	6	36	52	7	23	12	49	1	28	58	37	8	23	56	42	2	24	1	17
29	2	12	52	23	0	24	13	37	3	3	59	00	3	7	18	7	7	23	5	58	2	0	11	59	8	23	52	25	2	23	58	6
30	2	13	49	37	1	7	27	24	3	4	37	11	3	7	55	29	7	22	59	12	2	1	25	22	8	23	48	6	2	23	54	55
01	2	14	46	50	1	21	4	5	3	5	15	22	3	8	28	50	7	22	52	32	2	2	38	46	8	23	43	47	2	23	51	44
02	2	15	44	4	2	5	2	30	3	5	53	33	3	8	58	3	7	22	45	57	2	3	52	11	8	23	39	25	2	23	48	33

विष्णुशयन - क्षीराब्धौ शेषपर्यङ्के आषाढ्यां संविशेद्धरिः। निद्रां त्यजति कार्त्तिक्यां तयोः सम्पूजयेत्सदा।। ब्रह्महत्यादिकं पापं क्षिप्रमेवं व्यपोहति। हिंसात्मकैस्तु किं तस्य यज्ञैः कार्य महात्मनः।। प्रस्वापे च प्रबोधे च पूजितो येन केशवः।। **चातुर्मास्य**- आषाढे तु सिते पक्षे एकादश्यामुपोषितः। चातुर्मास्यव्रतं कुर्याद्यात्किंचिन्नियतो नरः।। **आषाढ पूर्णिमा को वायु परीक्षण** - इस दिन पूर्व पश्चिम वायव्य कोण उत्तर एवं ईशान कोण से वायु चले तो धान्य वृद्धि सुवृष्टि तथा प्रजा के लिए शुभकारक होता है।

25 जून 2019, अष्टमी, मंगलवार
सूर्योदयकालीन

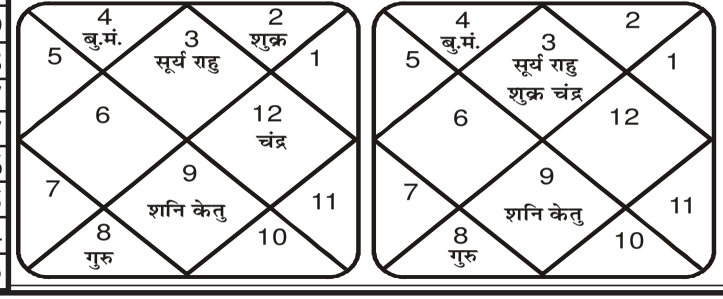

02 जुलाई 2019, अमवास्या, मंगलवार
सूर्योदयकालीन

चन्द्रप्रशंसा - भगणदोषं वार-संक्रान्तिदोषं कुतिथिकुलिकदोषं यामयामार्धदोषम्। कुजशनिरविदोषं राहुकेत्वादि दोषं हरति सकलदोषं चन्द्रमा सम्मुखस्थः।।(करणदोष, नक्षत्रदोष, वारदोष, संक्रान्तिदोष, तिथिदोष, कुलिकदोष, प्रहार्द्ध वारवेला दोष, मंगल, शनि, रवि, राहु केतु के दोष को सम्मुख चन्द्र नष्ट करता है ।)

लग्नान्तकाल (भारतीय मानक समय में)

दि.	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष
18	07:42:04	09:57:00	12:08:56	14:21:52	16:36:52	18:49:56	20:57:56	22:42:00	00:16:00	01:48:20	03:29:16	05:26:12
19	07:38:08	09:53:04	12:05:00	14:17:56	16:32:56	18:46:00	20:54:00	22:38:04	00:12:04	01:44:24	03:25:20	05:22:16
20	07:34:12	09:49:08	12:01:04	14:14:00	16:29:00	18:42:04	20:50:04	22:34:08	00:08:08	01:40:28	03:21:24	05:18:20
21	07:30:16	09:45:12	11:57:08	14:10:04	16:25:04	18:38:08	20:46:08	22:30:12	00:04:12	01:36:32	03:17:28	05:14:24
22	07:26:20	09:41:16	11:53:12	14:06:08	16:21:08	18:34:12	20:42:12	22:26:16	00:00:16	01:32:36	03:13:32	05:10:28
23	07:22:24	09:37:20	11:49:16	14:02:12	16:17:12	18:30:16	20:38:16	22:22:20	23:56:20	01:28:40	03:09:36	05:06:32
24	07:18:28	09:33:24	11:45:20	13:58:16	16:13:16	18:26:20	20:34:20	22:18:24	23:52:24	01:24:44	03:05:40	05:02:36
25	07:14:32	09:29:28	11:41:24	13:54:20	16:09:20	18:22:24	20:30:24	22:14:28	23:48:28	01:20:48	03:01:44	04:58:40
26	07:10:36	09:25:32	11:37:28	13:50:24	16:05:24	18:18:28	20:26:28	22:10:32	23:44:32	01:16:52	02:57:48	04:54:44
27	07:06:40	09:21:36	11:33:32	13:46:28	16:01:28	18:14:32	20:22:32	22:06:36	23:40:36	01:12:56	02:53:52	04:50:48
28	07:02:44	09:17:40	11:29:36	13:42:32	15:57:32	18:10:36	20:18:36	22:02:40	23:36:40	01:09:00	02:49:56	04:46:52
29	06:58:48	09:13:44	11:25:40	13:38:36	15:53:36	18:06:40	20:14:40	21:58:44	23:32:44	01:05:04	02:46:00	04:42:56
30	06:54:52	09:09:48	11:21:44	13:34:40	15:49:40	18:02:44	20:10:44	21:54:48	23:28:48	01:01:08	02:42:04	04:39:00
01	06:50:56	09:05:52	11:17:48	13:30:44	15:45:44	17:58:48	20:06:48	21:50:52	23:24:52	00:57:12	02:38:08	04:35:04
02	06:47:00	09:01:56	11:13:52	13:26:48	15:41:48	17:54:52	20:02:52	21:46:56	23:20:56	00:53:16	02:34:12	04:31:08

ग्रहचार

मार्गी मंगल- पुन. में 28 जून को 4:58 से पुष्य में, बुध 24 जून को 7:28 से पुष्य में,वक्री गुरु ज्येष्ठा में,मार्गी शुक्र- रोहिणी में 23 जून को 14:38 से मृग. में, शनि- वक्री पू.षा. में, राहु- पुन. में, केतु- पू.षा. में

आषाढ शुक्लपक्ष **परिधावी संवत्सर, वि. संवत् 2076, शक 1941** सू.उ. सू.अ. दि.मा. च.रा.प्र.

तिथि	वार	घ.प.	घ.मि.	नक्षत्र	घ.प.	घ.मि.	योग	घ.प.	घ.मि.	करण	घ.मि	करण	घ.मि.	घ.मि.	घ.मि.	घ.प.	घ.मि.
01	बुध	55/13	22:05	आर्द्रा पुनर्वसु	15/15 57/22	06:06 28:39	ध्रुव	29/15	11:42	किंस्तु.	11:26	बव	22:05	05:42	19:06	33/30	कर्क 23:09
02	गुरु	33/40	19:10	पुष्य	52/00	26:30	व्याघ्रा. हर्ष.	06/35 57/48	08:20 28:50	बालव	08:38	कौलव तैतिल	19:10 29:40	05:43	19:06	33/28	
03	शुक्र	26/05	16:09	आश्ले.	46/28	24:18	वज्र	48/58	25:18	गर	16:09	वणिज	26:40	05:43	19:06	33/28	सिंह 18:00
04	शनि	18/37	13:10	मघा	41/08	22:10	सिद्धि	40/20	21:51	विष्टि	13:10	बव	23:44	05:43	19:06	33/28	
05	रवि	11/30	10:19	पू.फा.	36/18	20:14	व्यति.	32/02	18:32	बालव	10:19	कौलव	21:01	05:44	19:06	33/25	कन्या 25:47
06 07	सोम	04/55 59/13	07:42 29:25	उ.फा.	32/05	18:34	वरी.	24/15	15:26	तैतिल	0:7:42	डगर वणिज	18:34 29:25	05:44	19:06	33/25	
08	मङ्गल	54/28	27:31	हस्त	28/47	17:15	परिघ	17/15	12:38	विष्टि	16:28	बव	27:31	05:44	19:06	33/25	तुला 28:45
09	बुध	50/48	26:03	चित्रा	26/35	16:22	शिव	11/05	10:10	बालव	14:47	कौलव	26:03	05:45	19:06	33/22	
10	गुरु	48/18	25:03	स्वाती	25/27	15:55	सिद्ध	05/50	08:04	तैतिल	13:33	गर	25:03	05:45	19:06	33/22	
11	शुक्र	46/55	24:31	विशाखा	25/30	15:57	साध्य शुभ	01/27 58/08	06:20 29:00	वणिज	12:47	विष्टि	24:31	05:46	19:06	33/20	वृश्चि. 09:54
12	शनि	46/50	24:29	अनुराधा	26/45	16:27	शुक्ल	55/43	28:02	बव	12:30	बालव	24:55	05:46	19:06	33/20	
13	रवि	47/53	24:55	ज्येष्ठा	29/10	17:26	ब्रह्म	54/13	27:27	कौलव	12:42	तैतिल	25:48	05:46	19:05	33/17	धनु 17:26
14	सोम	50/05	25:48	मूल	32/43	18:51	ऐन्द्र	53/40	27:14	गर	13:22	वणिज	25:48	05:47	19:05	33/15	
15	मङ्गल	53/23	27:08	पू.षा.	37/20	20:43	वैधृति	53/55	27:21	विष्टि	14:28	बव	27:08	05:47	19:05	33/15	मकर 27:15

टिप्पणी उत्तरायण, उत्तरगोल, ग्रीष्मऋतु (03 जुलाई से 16 जुलाई 2019 ई. तक) गुरु पश्चिम, शुक्र पूर्व

व्रतपर्व विवरण (भारतीय मानक समय में) दैनिकमुहूर्त्तादि विवरण (भद्रा, पञ्चक एवं त्रिपुष्कर, सर्वार्थसिद्धि योगादि)

03 गुप्तनवरात्रारम्भ, प्रतिपदा में घटस्थापन, राहुयुति मुहूर्त्ताभाव।
04 रथयात्रा, श्रीरामबलराम रथोत्सव, रथयात्रा (श्रीजगन्नाथपुरी)। पुष्य में भौमयुति दोष के कारण मुहूर्ताभाव है। अमृतसिद्धि/गुरुपुष्य/सवार्थसि. सूर्यो.से 26:30 तक,
05 भद्रा 26:40 से, श्रेष्ठा में वस्तुविक्रय, पशु-पक्षी-मत्स्यादि पालन, कृषिकार्य मुहूर्त्त है।
06 भद्रा 13:10 तक, विनायक चतुर्थी। सूर्य पुन. में 16:49 से, रिक्तादोष मुहूर्त्ताभाव।
07 स्कन्दषष्ठी, कुमारषष्ठी (पंचमीयुता ग्राह्या), व्यतिपात दोष मुहूर्त्ताभाव। सर्वार्थसि. 20:10 से सूर्योदय तक।
08 भद्रा 29:25 से, विवस्वत सप्तमी सूर्यपूजा, कर्दमषष्ठी (बंगाल)। उ.फा. में जातकर्म-नामकरण-अन्नप्राशन-कृषिकार्य-शिल्पकार्य-वस्तु-भूमि-भवन-वाहन कार्य के मुहूर्त्त हैं।
09 भद्रा 16:28 तक,महिषासुरमर्दिनी देवीपूजा, ऐन्द्रीदेवीपूजा, खर्चिपूजा (त्रिपुरा), परशुरामाष्टमी (उड़ीसा), हस्त में गर्भाधान-उग्र-अग्निकार्य का मुहूर्त्त है।
10 गुप्तनवरात्रि समाप्त, मेला शरीक भगवती (कश्मीर) रिक्तादोष मुहूर्त्ताभाव।
11 गिरिजा/मन्वादि दशमी, स्वाती में जातकर्म-नामकरण-अन्नप्राशन-शिल्पकार्य-वस्तु-भूमि-भवन-वाहन कार्य का मुहूर्त्त है।
12 भद्रा 12:47 से 24:31 तक, विष्णुशयनी एकादशी (सर्वेषाम्), विष्णुशयनोत्सव, विशाखा में भद्रापूर्व कृषि-विक्रय-वाटिकादि रोपण का मुहूर्त्त है।
13 एकादशीव्रत पारणा, वासुदेवद्वादशी, श्रीवामनपूजा, चातुर्मासव्रतारम्भ। अनुराधा में व्यापार-वस्तु-भूमि-भवन-वाहन का मुहूर्त्त है, ज्येष्ठा में भौमवेध।
14 प्रदोषव्रत, ज्येष्ठा में भौमवेध, मूल में सूर्यवेध मुहूर्त्ताभाव। सि.यो./सर्वार्थसि.17:26 से सूर्यो. तक,
15 भद्रा 25:48 से, मेला चक्रेश्वरी (जैन), चौमासी चौदस (जैन)। मूल में सूर्य व राहुवेध मुहूर्ताभाव है ।
16 भद्रा 14:28 तक, शिवशयनोत्सव, गुरु/आषाढी/व्रत/व्यासपूर्णिमा, चाक्षुषमन्वादि, पवित्रारोपण, कोकिलाव्रत, अन्नादिदान,**सूर्यप्रवेश कर्क में 28:34 पर पुण्यकाल अगले दिन मध्याह्न तक,** सत्यनारायणव्रत, वायुपरीक्षण, पू.षा. में शनियुति वैधृतिदोष।

रथोत्सव - आषाढस्य सिते पक्षे द्वितीया पुष्ययंयुता। तस्यां रथे समारोप्य रामं वै भद्रया सह।। यात्रोत्सवं प्रवर्त्याथ प्रीणयेत द्विजान् बहून्।। ऋक्षाभावे तिथौ कार्या यात्रासौ मम पुण्यदा।।

सर्वकार्य सिद्धि गणपति प्रयोग - मन्त्र - ऊँ गं गणपतये नमः अथवा ऊँ वक्रतुण्डाय हुम्। इनमें से किसी मन्त्र का साढे १२ लाख जप करने से असम्भव कार्य भी सिद्ध होता है। गणपति आराधना सभी विघ्नों को दूर करती है, प्रतिदिन निश्चित स्थान समय व जप संख्या का ध्यान करते हुए अनुष्ठान करना चाहिए। प्रयोग अवधि में नियमों का पालन अनिवार्य होता है। गणेशजी को मोदक का भोग लगाएँ।

चातुर्मास्य में वर्ज्य -वार्षिकांक्षतुरो मासान् प्रसुप्ते वै जनार्दने, मंचखट्वादिशयनं वर्जयेद्भक्तिमान्नरः। अनृतौ वर्जयेद् भार्यां मांसं मधुपरौदनम्, पटोलं मूलकं चैव वृंताकं च न भक्षयेत्।। अभक्ष्यं वर्जयद्धीमान् मसूर सितसर्षपम्, राजमाषान् कुलत्थांश्च आशुधान्यं च संत्यजेत्। आषाढादिचतुर्मासानभ्यङ्गं वर्जयेन्नरः। समाप्तौ च पुनर्दद्यात्तिलतैलयुतं घटम्।।

सूर्यादि स्पष्ट ग्रह भा.स्टै.टा.प्रातः 5 बजकर 29 मिनट का राशि, अंश, कला, विकला में

दि.	स्पष्ट सूर्य				स्पष्ट चन्द्र				स्पष्ट मङ्गल				स्पष्ट बुध				स्पष्ट गुरु				स्पष्ट शुक्र				स्पष्ट शनि				स्पष्ट राहु			
03	2	16	41	17	2	19	19	33	3	6	31	43	3	9	23	0	7	22	39	30	2	5	5	37	8	23	35	3	2	23	45	22
04	2	17	38	31	3	3	50	29	3	7	9	53	3	9	43	36	7	22	33	8	2	6	19	3	8	23	30	40	2	23	42	12
05	2	18	35	44	3	18	29	24	3	7	48	2	3	9	59	43	7	22	26	54	2	7	32	31	8	23	26	16	2	23	39	1
06	2	19	32	57	4	3	9	56	3	8	26	12	3	10	11	16	7	22	20	46	2	8	45	59	8	23	21	52	2	23	35	50
07	2	20	30	10	4	17	46	7	3	9	4	20	3	10	18	10	7	22	14	46	2	9	59	29	8	23	17	27	2	23	32	39
08	2	21	27	23	5	2	12	55	3	9	42	28	3	10	20	23	7	22	8	54	2	11	12	59	8	23	13	1	2	23	29	28
09	2	22	24	35	5	16	26	41	3	10	20	36	3	10	17	52	7	22	3	9	2	12	26	30	8	23	8	36	2	23	26	18
10	2	23	21	47	6	0	25	11	3	10	58	43	3	10	10	40	7	21	57	33	2	13	40	2	8	23	4	10	2	23	23	7
11	2	24	18	59	6	14	7	26	3	11	36	50	3	9	58	50	7	21	52	4	2	14	53	35	8	22	59	45	2	23	19	56
12	2	25	16	11	6	27	33	24	3	12	14	57	3	9	42	28	7	21	46	44	2	16	7	8	8	22	55	20	2	23	16	45
13	2	26	13	23	7	10	43	39	3	12	53	3	3	9	21	46	7	21	41	32	2	17	20	43	8	22	50	55	2	23	13	34
14	2	27	10	35	7	23	39	7	3	13	31	8	3	8	56	57	7	21	36	30	2	18	34	18	8	22	46	30	2	23	10	24
15	2	28	7	47	8	6	20	53	3	14	9	14	3	8	28	19	7	21	31	36	2	19	47	55	8	22	42	6	2	23	7	13
16	2	29	4	59	8	18	50	9	3	14	47	19	3	7	56	16	7	21	26	51	2	21	1	32	8	22	37	43	2	23	4	2

यात्रा में शुभशकुन - विप्र, दो अश्व, गजमद, फल, अन्न, दुग्ध, गोदधि, सर्षप, कमल, निर्मवस्त्र, वाद्य, वेश्या, मयूर, नकुल, सिंहासन, शस्त्र, मांस, दीप्ताग्नि, मत्स्य, ससुत-स्त्री, गोरी कन्या, धोबी, कार्यसिद्धि वाक्य, जलपूर्णघट। यात्रा पश्चात् रिक्तघट यात्रा के समय देखने में शुभ है। **यात्रा में अशुभ शकुन** - बन्ध्या स्त्री, चर्म, अस्थि, इन्धन, संन्यासी, भैंसों का युद्ध, सर्प, शत्रु, मार्जारयुद्ध, कुटुम्बकलह, विधवास्त्री, जातिभ्रष्ट, अङ्गहीन, छिक्का, दुष्टवाणी यात्रा के समय देखना अशुभ तथा कष्टप्रद है।

09 जुलाई 2019, अष्टमी, मंगलवार
सूर्योदयकालीन

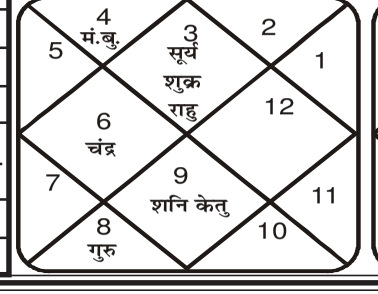

16 जुलाई 2019, पूर्णिमा, मंगलवार
सूर्योदयकालीन

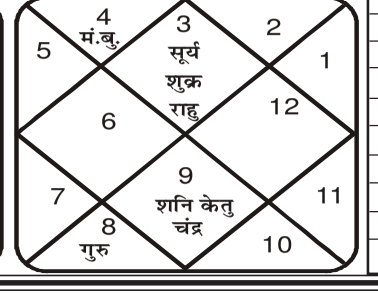

व्रत में अत्यावश्यक होने पर - अष्टौ तान्यव्रतघ्नानि आपो मूलं फलं पयः। हविर्ब्राह्मणकाम्या च गुरोर्वचनमौषधम्। अनुकल्पो नृणां प्रोक्ता क्षीणानां वरवर्णिनि। मूलं फलं पयस्तोयमुपभोज्यं भवेच्छुभे।। न त्वेवं भोजनं कैश्चिदेकादश्यां बुधैः स्मृतम्।। व्रतों में वृद्ध और अशक्त व्यक्तियों के लिए स्वास्थ्य अनुकूल आचरण कर्मादि का शास्त्र निर्देश देते हैं। **मृत्युयोग में यात्रा निषिध है।**

लग्नान्तकाल (भारतीय मानक समय में)

दि.	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष
03	06:43:04	08:58:00	11:09:56	13:22:52	15:37:52	17:50:56	19:58:56	21:43:00	23:17:00	00:49:20	02:30:16	04:27:12
04	06:39:08	08:54:04	11:06:00	13:18:56	15:33:56	17:47:00	19:55:00	21:39:04	23:13:04	00:45:24	02:26:20	04:23:16
05	06:35:12	08:50:08	11:02:04	13:15:00	15:30:00	17:43:04	19:51:04	21:35:08	23:09:08	00:41:28	02:22:24	04:19:20
06	06:31:16	08:46:12	10:58:08	13:11:04	15:26:04	17:39:08	19:47:08	21:31:12	23:05:12	00:37:32	02:18:28	04:15:24
07	06:27:20	08:42:16	10:54:12	13:07:08	15:22:08	17:35:12	19:43:12	21:27:16	23:01:16	00:33:36	02:14:32	04:11:28
08	06:23:24	08:38:20	10:50:16	13:03:12	15:18:12	17:31:16	19:39:16	21:23:20	22:57:20	00:29:40	02:10:36	04:07:32
09	06:19:28	08:34:24	10:46:20	12:59:16	15:14:16	17:27:20	19:35:20	21:19:24	22:53:24	00:25:44	02:06:40	04:03:36
10	06:15:32	08:30:28	10:42:24	12:55:20	15:10:20	17:23:24	19:31:24	21:15:28	22:49:28	00:21:48	02:02:44	03:59:40
11	06:11:36	08:26:32	10:38:28	12:51:24	15:06:24	17:19:28	19:27:28	21:11:32	22:45:32	00:17:52	01:58:48	03:55:44
12	06:07:40	08:22:36	10:34:32	12:47:28	15:02:28	17:15:32	19:23:32	21:07:36	22:41:36	00:13:56	01:54:52	03:51:48
13	06:03:44	08:18:40	10:30:36	12:43:32	14:58:32	17:11:36	19:19:36	21:03:40	22:37:40	00:10:00	01:50:56	03:47:52
14	05:59:48	08:14:44	10:26:40	12:39:36	14:54:36	17:07:40	19:15:40	20:59:44	22:33:44	00:06:04	01:47:00	03:43:56
15	05:55:52	08:10:48	10:22:44	12:35:40	14:50:40	17:03:44	19:11:44	20:55:48	22:29:48	00:02:08	01:43:04	03:40:00
16	05:51:56	08:06:52	10:18:48	12:31:44	14:46:44	16:59:48	19:07:48	20:51:52	22:25:52	23:58:12	01:39:08	03:36:04

ग्रहचार

मार्गी मंगल- पुष्य में, मा.बुध पुष्य में,वक्री गुरु मूल में,वक्री गुरु ज्येष्ठा में,शुक्र-मृग. में, 4 जुलाई को 12:19 से आर्द्रा में व 15 जुलाई को 9:25 से पुनर्वसु में, शनि- वक्री पू.षा. में, राहु- पुन. में, केतु- पू.षा. में

श्रावण कृष्णपक्ष **परिधावी संवत्सर, वि. संवत् 2076, शक 1941** सू.उ. सू.अ. दि.मा. च.रा.प्र.

टिप्पणी: दक्षिणायन, उत्तरगोल, वर्षाऋतु (17 जुलाई से 01 अगस्त 2019 ई. तक) — गुरु पश्चिम, शुक्र २३ जुलाई को पूर्व में अस्त

तिथि	वार	घ.प.	घ.मि.	नक्षत्र	घ.प.	घ.मि.	योग	घ.प.	घ.मि.	करण	घ.मि.	करण	घ.मि.	घ.मि.	घ.मि.	घ.प.	घ.मि.
01	बुध	57/38	28:52	उ.षा.	57/25	22:58	विष्कु	54/55	27:46	बालव	15:59	कौलव	28:51	05:48	19:05	33/12	
02	गुरु	--	--	श्रवण	49/25	25:34	प्रीति	56/35	28:26	तैतिल	14:26	गर	--	05:48	19:04	33/10	
02	शुक्र	02/48	06:55	धनिष्ठा	56/33	28:25	आयु	58/47	29:19	गर	06:55	वणिज	20:04	05:49	19:04	33/07	कुम्भ 14:58
03	शनि	08/32	09:14	शत.	--	--	सौभा	--	--	विष्टि	09:14	बव	22:27	05:49	19:04	33/07	
04	रवि	14/37	11:40	शत.	04/00	07:25	सौभा	01/15	06:18	बालव	11:40	कौलव	24:52	05:49	19:04	33/07	मीन 27:40
05	सोम	20/37	14:04	पू.भा.	11/28	10:24	शोभ	03/40	07:17	तैतिल	14:04	गर	27:10	05:50	19:03	33/02	
06	मङ्गल	26/05	16:16	उ.भा.	18/30	13:14	अति	05/47	08:09	वणिज	16:16	विष्टि	29:11	05:50	19:03	33/02	
07	बुध	30/37	18:05	रेवती	24/40	15:42	सुक	07/20	08:46	बव	18:05	बालव	--	05:51	19:03	33/00	मेष 15:42
08	गुरु	33/45	19:21	अश्विनी	29/30	17:39	धृति	07/52	09:00	बालव	06:43	कौलव	19:21	05:51	19:02	32/57	
09	शुक्र	35/13	19:56	भरणी	32/43	18:56	शूल	07/15	08:45	तैतिल	07:38	गर	19:56	05:52	19:02	32/55	वृष 25:9
10	शनि	34/45	19:46	कृतिका	34/05	19:30	गण्ड	05/05	07:54	वणिज	07:51	विष्टि	19:46	05:52	19:01	32/52	
11	रवि	32/25	18:50	रोहिणी	33/35	19:18	वृद्धि ध्रुव	01/30 56/17	06:28 28:24	बव	07:18	बालव	18:50	05:53	19:01	32/50	
12	सोम	28/10	17:09	मृगशिरा	31/13	18:22	व्याघा.	49/43	25:46	कौलव	05:59	तैतिल गर	17:09 27:59	05:53	19:00	32/47	मिथु. 6:55
13	मङ्गल	22/20	14:49	आर्द्रा	27/15	16:47	हर्ष.	41/52	22:38	वणिज	14:49	विष्टि	25:23	05:53	19:00	32/47	
14	बुध	15/13	11:58	पुनर्वसु	22/00	14:41	वज्र	33/00	19:05	शकुनि	11:58	चतु.	22:20	05:54	18:59	32/43	कर्क 9:15
30 01	गुरु	07/00 58/15	08:42 29:12	पुष्य	15/43	12:11	सिद्धि	23/25	15:16	नाग	08:42	किंस्तु. बव	19:12 29:12	05:54	18:59	32/43	

व्रतपर्व विवरण (भारतीय मानक समय में) — दैनिकमुहूर्त्तादि विवरण (भद्रा, पञ्चक एवं त्रिपुष्कर, सर्वार्थसिद्धि योगादि)

17 मैथिलनववर्षारम्भ, प्रतिदिनशिवपूजन, पार्थिवपूजन, उ.षा. में पुंसवन-सीमन्त-जातकर्म-नामकरण-वस्तु-भवन-भूमि-वाहन-व्यापारारम्भ का मुहूर्त्त है।

18 पञ्चक आरम्भ 25:34 से, अशून्यशयनव्रत, श्रवण में अन्नप्रासन-गर्भाधान-वस्त्राभूषणादिधारण-वस्तु-भूमि-भवन-वाहन-क्रयविक्रय, वास्तु/कृषिकर्म का मुहूर्त है।

19 भद्रा 20:04 से, धनिष्ठा में भद्रापूर्व पशु-पक्षी-मत्स्यादि पालन, वास्तु-कृषि व व्यापारारम्भ का मुहूर्त्त है।

20 भद्रा 09:14 तक, सूर्य प्रवेश पुष्य में 16:26 पर, गणेशचतुर्थी, चंद्रोदय 21:38, रिक्ता पूर्व शतभिषा में वस्त्राभूषणादिधारण, पशुपक्षीमत्स्यादिपालनकर्म वास्तु/कृषिकर्म, अस्पताल कार्य, व्यापारारम्भ का मुहूर्त्त है।

21 रिक्ता उपरान्त पू.भा. में शिल्पविद्या-आभूषणनिर्माण-अग्नि-शस्त्रकार्य व विक्रय मुहूर्त्त है।

22 नागपञ्चमी (बंगाल), श्रावणसोमवार, उ.भा. में अन्नप्राशन-जातकर्म-नामकरण-वस्त्राभूषणादिधारण,वास्तु/कृषिकर्म, वस्तु-भवन-भूमि-वाहन-व्यापारारम्भ का मुहूर्त्त का है।

23 भद्रा 16:16 से 29:11 तक, सायनसूर्य सिंह में, मधुश्रावणी पूजारम्भ (मिथिला), भौमव्रत, गौरी/हनुमत् पूजा, उ.भा. में अग्निकार्य- ईंटभट्टा लगाना-शस्त्रनिर्माण का मुहूर्त्त है। सि.यो./सर्वार्थ. सूर्यो. से 13:13 तक,

24 पञ्चक 15:42 तक, शीतला सप्तमी, भानुसप्तमी, कालाष्टमी, केरपूजा (त्रिपुरा), इन्द्र सावर्णि मन्वादि, रेवती में व्यापारारम्भ, अन्नप्राशन, का मुहूर्त है।

25 अश्विनी में रिक्तापूर्व वस्त्राभूषण-शिक्षण-प्रशिक्षण, व्यापारारम्भ, धान्यच्छेदन, रसायनिक कार्य, प्रयोगशाला कार्य, शान्तिकर्म, वाटिकादिकार्य आदि का मूहूर्त है। सर्वार्थसि. सूर्यो. से 17:39 तक।

26 भरणी में रिक्तादोष मुहूर्त्ताभाव।

27 भद्रा 07:51 से 19:46 तक, कृत्तिका में उग्रकार्य-स्थिर-शस्त्रनिर्माण का मुहूर्त्त है। अमृतसिद्धि/सर्वार्थसि. 19:30 से,सूर्यो.तक,

28 कामिका एकादशी (सर्वेषाम्), भौमव्रत, रोहिणी में रोगमुक्तस्नान, रसायनिककार्य, प्रयोगशालाकार्य, वस्तु-भवन-भूमि-वाहन-व्यापारारम्भ का मुहूर्त्त है। द्विपुष्कर 19:18 से सूर्योदय तक।

29 श्रावणसोमवार, सोमप्रदोष, मृगशिरा में वस्तु-भवन-भूमि-वाहन-व्यापारारम्भ का मुहूर्त्त है। अमृतसिद्धि सूर्यो.से 18:22.तक,

30 भद्रा 14:49 से 25:23 तक, मासान्तदोष मुहूर्त्ताभाव।

31 श्राद्ध अमावस्या, देवसावर्णि मन्वादि, मासान्तदोष मुहूर्त्ताभाव।

01 स्नान/दान/हरियाली अमावस्या, चिताऊ अमावस्या, लोकमान्यतिलक स्मृति दिवस, मासान्तदोष मुहूर्त्ताभाव। अमृतसिद्धि/गुरुपुष्य/सर्वार्थसि. सूर्यो. से 12:11 तक,

संकल्प करके शिवलिंग के पास रुद्राक्ष माला से महामृत्युंजय मन्त्र जप करना चाहिये - **ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्व्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् भूर्भुवः स्वरों जूं सः हौं ॐ ।।** जपसंख्या का दशांश हवन, उसका दशांश तर्पण, दशांश मार्जन एवं दशांश ब्राह्मण भोजन करना चाहिये। लघुमृत्युंजलमन्त्र - **ॐ हौं जूं सः/ॐ जूं सः**

श्रावण विशेष- श्रावण में शिव कृपा प्राप्ति के लिए शिव की साधना करना चाहिए। श्रावण में प्रतिदिन या सोमवार के दिन पार्थिवार्चन, ज्योतिर्लिंग दर्शन, शिव मंत्र आदि कार्य करना भी फलदायी होता है। विविध द्रव्यों से होने वाला रुद्राभिषेक सभी कामनाओं को पूर्ण करने वाला होता है। **रुद्र मन्त्र- ॐ नमो भगवते रुद्राय।।**

सूर्यादि स्पष्ट ग्रह भा.स्टै.टा.प्रातः 5 बजकर 29 मिनट का राशि, अंश, कला, विकला में

दि.	स्पष्ट सूर्य				स्पष्ट चन्द्र				स्पष्ट मङ्गल				स्पष्ट बुध				स्पष्ट गुरु				स्पष्ट शुक्र				स्पष्ट शनि				स्पष्ट राहु			
17	3	0	2	12	9	1	8	14	3	15	25	24	3	7	21	14	7	21	22	15	2	22	15	11	8	22	33	21	2	23	0	51
18	3	0	59	25	9	13	16	36	3	16	3	28	3	6	43	45	7	21	17	48	2	23	28	50	8	22	28	59	2	22	57	40
19	3	1	56	38	9	25	17	1	3	16	41	33	3	6	4	24	7	21	13	31	2	24	42	31	8	22	24	39	2	22	54	30
20	3	2	53	52	10	7	11	33	3	17	19	37	3	5	23	49	7	21	9	24	2	25	56	13	8	22	20	20	2	22	51	19
21	3	3	51	6	10	19	2	48	3	17	57	41	3	4	42	40	7	21	5	26	2	27	9	56	8	22	16	2	2	22	48	8
22	3	4	48	21	11	0	53	48	3	18	35	45	3	4	1	42	7	21	1	38	2	28	23	40	8	22	11	46	2	22	44	57
23	3	5	45	37	11	12	48	5	3	19	13	49	3	3	21	38	7	20	58	0	2	29	37	26	8	22	7	31	2	22	41	46
24	3	6	42	54	11	24	49	36	3	19	51	53	3	2	43	11	7	20	54	33	3	0	51	13	8	22	3	18	2	22	38	36
25	3	7	40	11	0	7	2	37	3	20	29	57	3	2	7	4	7	20	51	15	3	2	5	1	8	21	59	7	2	22	35	25
26	3	8	37	30	0	19	31	28	3	21	8	1	3	1	33	57	7	20	48	8	3	3	18	50	8	21	54	57	2	22	32	14
27	3	9	34	49	1	2	20	15	3	21	46	6	3	1	4	28	7	20	45	11	3	4	32	40	8	21	50	50	2	22	29	3
28	3	10	32	9	1	15	32	25	3	22	24	10	3	0	39	12	7	20	42	25	3	5	46	32	8	21	46	45	2	22	25	53
29	3	11	29	31	1	29	10	11	3	23	2	14	3	0	18	39	7	20	39	49	3	7	0	25	8	21	42	43	2	22	22	42
30	3	12	26	53	2	13	13	58	3	23	40	19	3	0	3	15	7	20	37	24	3	8	14	19	8	21	38	43	2	22	19	31
31	3	13	24	16	2	27	41	50	3	24	18	23	2	29	53	23	7	20	35	10	3	9	28	14	8	21	34	45	2	22	16	20
01	3	14	21	40	3	12	29	15	3	24	56	28	2	29	49	22	7	20	33	7	3	10	42	11	8	21	30	51	2	22	13	9

श्रावण सोमवारव्रतं प्रदोषव्रतवदाचारणीयम् स्त्रीणां व्रते विशेषः- गन्धालंकारताम्बूल पुष्पमालानुपेलपनम्। उपवासे न दुष्यन्ति दन्तधावनमञ्जनम्।। सभर्तृकव्रतों में स्त्रियों को श्रृंगार आदि के करने में दोष नहीं होता है। व्रत कर्म- ब्रह्मचर्य तथा शौचं सत्यमामिषवर्जनम्। व्रतेष्वेतानि चत्वारि वरिष्ठानीति निश्चयः।। उपवास की असमर्थता में - उपवासासमर्थश्चेत् एकं विप्रं तु भोजयेत्। तावद्धनादि व दद्यात् भुक्तश्चेतद्विगुणं तथा।असमर्थता में एक विप्र को भोजन करवाना चाहिए न कर पाने पर उसको दक्षिणा देनी चाहिए।

यदि ब्राह्मण पहले ही भोजन कर लिया है तो दुगुना धन देना चाहिए। बिल्वपत्र से प्रतिदिन या केवल सोमवार को **ॐ नमः शिवाय**, शिव सहस्रनाम से , रुद्राष्टध्यायी के पंचम अध्याय से अर्चन करने का विशेष फल होता है। बिल्वपत्र के अभाव में पुष्प , दूर्वा, शमीपत्र, मंदारपुष्प, धतूरफल आदि द्रव्यों से भी शिवार्चन शुभ होता है।

25 जुलाई 2019, अष्टमी, गुरुवार
सूर्योदयकालीन

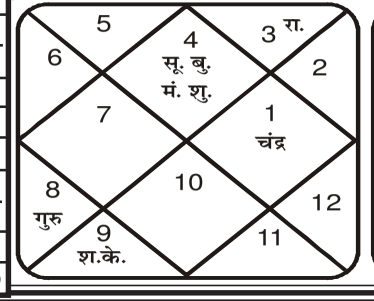

01 अगस्त 2019, अमावस्या, गुरुवार
सूर्योदयकालीन

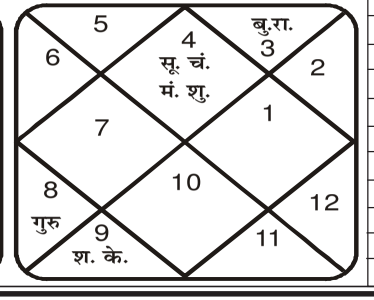

लग्नान्तकाल (भारतीय मानक समय में)

दि.	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन
17	08:02:56	10:14:52	12:27:48	14:42:48	16:55:52	19:03:52	20:47:56	22:21:56	23:54:16	01:35:12	03:32:08	05:48:00
18	07:59:00	10:10:56	12:23:52	14:38:52	16:51:56	18:59:56	20:44:00	22:18:00	23:50:20	01:31:16	03:28:12	05:44:04
19	07:55:04	10:07:00	12:19:56	14:34:56	16:48:00	18:56:00	20:40:04	22:14:04	23:46:24	01:27:20	03:24:16	05:40:08
20	07:51:08	10:03:04	12:16:00	14:31:00	16:44:04	18:52:04	20:36:08	22:10:08	23:42:28	01:23:24	03:20:20	05:36:12
21	07:47:12	09:59:08	12:12:04	14:27:04	16:40:08	18:48:08	20:32:12	22:06:12	23:38:32	01:19:28	03:16:24	05:32:16
22	07:43:16	09:55:12	12:08:08	14:23:08	16:36:12	18:44:12	20:28:16	22:02:16	23:34:36	01:15:32	03:12:28	05:28:20
23	07:39:20	09:51:16	12:04:12	14:19:12	16:32:16	18:40:16	20:24:20	21:58:20	23:30:40	01:11:36	03:08:32	05:24:24
24	07:35:24	09:47:20	12:00:16	14:15:16	16:28:20	18:36:20	20:20:24	21:54:24	23:26:44	01:07:40	03:04:36	05:20:28
25	07:31:28	09:43:24	11:56:20	14:11:20	16:24:24	18:32:24	20:16:28	21:50:28	23:22:48	01:03:44	03:00:40	05:16:32
26	07:27:32	09:39:28	11:52:24	14:07:24	16:20:28	18:28:28	20:12:32	21:46:32	23:18:52	00:59:48	02:56:44	05:12:36
27	07:23:36	09:35:32	11:48:28	14:03:28	16:16:32	18:24:32	20:08:36	21:42:36	23:14:56	00:55:52	02:52:48	05:08:40
28	07:19:40	09:31:36	11:44:32	13:59:32	16:12:36	18:20:36	20:04:40	21:38:40	23:11:00	00:51:56	02:48:52	05:04:44
29	07:15:44	09:27:40	11:40:36	13:55:36	16:08:40	18:16:40	20:00:44	21:34:44	23:07:04	00:48:00	02:44:56	05:00:48
30	07:11:48	09:23:44	11:36:40	13:51:40	16:04:44	18:12:44	19:56:48	21:30:48	23:03:08	00:44:04	02:41:00	04:56:52
31	07:07:52	09:19:48	11:32:44	13:47:44	16:00:48	18:08:48	19:52:52	21:26:52	22:59:12	00:40:08	02:37:04	04:52:56
01	07:03:56	09:15:52	11:28:48	13:43:48	15:56:52	18:04:52	19:48:56	21:22:56	22:55:16	00:36:12	02:33:08	04:49:00

ग्रहचार

मार्गी मंगल- पुष्य में, 19 जुला.को 4:30 से श्लेषा में, वक्री बुध 23 जुलाई को 6:29 से पुन. में, वक्री गुरु मूल में, वक्री गुरुज्येष्ठा में, मार्गी शुक्र-पुन. में 26 जुला. को 5:52 से पुष्य में, शनि- वक्री पू.षा. में, राहु- पुन. में, केतु- पू.षा. में

श्रावण शुक्लपक्ष परिधावी संवत्सर, वि. संवत् 2076, शक 1941

दक्षिणायन, उत्तरगोल, वर्षा ऋतु (02 अगस्त से 15 अगस्त 2019 ई. तक) — गुरु पश्चिम में, शुक्र पूर्व में अस्त

तिथि	वार	घ.प.	घ.मि.	नक्षत्र	घ.प.	घ.मि.	योग	घ.प.	घ.मि.	करण	घ.मि.	करण	घ.मि.	सू.उ. घ.मि.	सू.अ. घ.मि.	दि.मा. घ.प.	च.रा.प्र. घ.मि.	दिनांक	व्रतपर्व विवरण (भारतीय मानक समय में) / दैनिकमुहूर्त्तादि विवरण (भद्रा, पञ्चक एवं त्रिपुष्कर, सर्वार्थसिद्धि योगादि)
02	शुक्र	49/12	25:36	आश्ले.	23/42	09:29	व्यति.	28/10	11:16	बालव	15:24	कौलव	25:36	05:55	18:58	32/37	सिंह 09:29	02	श्रेषा में भौमयुति तदुपरान्त व्यतिपातदोष।
03	शनि	40/28	22:06	मघा पू.फा.	02/02 55/25	06:44 28:05	वरी. परिघ	03/17 53/30	07:14 27:19	तैतिल	11:51	गर	22:06	05:55	18:58	32/37		03	सूर्यप्रवेश श्रेषा में 15:17 पर, मधुश्रुवा तृतीया (परयुता ग्रह्या इति ,मिथिला/गुजरात) दूर्वागणपतिव्रत, स्वर्णगौरीव्रत, स्वामीकरपात्री जयन्ती, मधुश्रावणी (मधुश्रवाव्रत), मघा/पू.फा. में रोगमुक्तस्नान, उग्रकर्म, शस्त्र निर्माण कार्य शुभ हैं।
04	रवि	32/15	18:49	उ.फा.	49/33	25:44	शिव	44/15	23:37	वणिज	08:28	विष्टि बव	18:49 29:22	05:56	18:57	32/32	कन्या 09:28	04	भद्रा 08:28 से 18:49 तक, विनायक चतुर्थी, उ.भा. में रिक्तादोष मुहूर्त्ताभाव। सर्वार्थसि. सूर्यो. से 25:44 तक
05	सोम	24/57	15:55	हस्त	44/37	23:47	सिद्ध	35/50	20:16	बालव	15:55	कौलव	26:43	05:56	18:57	32/32		05	श्रावण सोमवार, नागपञ्चमी, तक्षकपूजा, भित्तिनागपूजा, हस्त में पुंसवन, सीमन्त, जातकर्म, नामकरण, अन्नप्रशन, वृक्षारोपण, वस्त्राभूषणधारण, वस्तुभूमिभवनवाहनक्रयविक्रय,वास्तु/कृषिकर्म शुभ है।
06	मङ्गल	18/55	13:30	चित्रा	41/07	22:23	साध्य	28/30	17:20	तैतिल	13:30	गर	24:36	05:56	18:56	32/30	तुला 11:01	06	कल्किजयन्ती, लुण्ठनषष्ठी (बंगाल), भौमव्रत, चित्रा में ऑपरेशन, उग्रकार्य का मुहूर्त्त है। द्विपुष्कर सूर्योदय से 22:23 तक।
07	बुध	14/22	11:41	स्वाती	39/10	21:36	शुभ	22/22	14:53	वणिज	11:41	विष्टि	23:06	05:57	18:55	32/25		07	भद्रा 11:41 से 23:06 तक, श्रीतुलसीदास जयन्ती, भद्रापूर्व स्वाती में पुंसवन, सीमन्त, अन्नप्राशन, जातकर्म, नामकरण, वृक्षारोपण, वस्तुभूमिभवनवाहनादि क्रयविक्रय, वास्तु/कृषिकर्म, शिक्षणप्रशिक्षणादि शुभ हैं।
08	गुरु	11/25	10:31	विशाखा	38/45	21:27	शुक्ल	17/35	12:59	बव	10:31	बालव	22:16	05:57	18:55	32/25	वृश्चि. 15:26	08	विशाखा में रिक्तापूर्व वस्तुविक्रय-धान्यारोपण-शस्त्रनिर्माण का मुहूर्त्त है। सर्वार्थसि. सूर्यो. से 21:27 से सूर्योदय तक।
09	शुक्र	10/07	10:00	अनुराधा	40/03	21:58	ब्रह्म	14/07	11:36	कौलव	10:00	तैतिल	22:05	05:58	18:54	32/20		09	अनुराधा में रिक्तादोष व सूर्यवेध मुहूर्त्ताभाव।
10	शनि	10/27	10:09	ज्येष्ठा	42/50	23:06	ऐन्द्र	11/55	10:44	गर	10:09	वणिज	22:31	05:58	18:53	32/17	धनु 23:06	10	भद्रा 22:31 से,ज्येष्ठा में स्थिरकार्य-पशुपक्षीमत्स्यादिपालन, 10:44 से वैधृतिदोष।
11	रवि	12/15	10:52	मूल	46/57	24:45	वैधृति	10/52	10:19	विष्टि	10:52	बव	23:30	05:59	18:53	32/15		11	भद्रा 10:52 तक, पवित्रा/पुत्रदा एकादशीव्रत (सर्वेषाम्) मूल में राहुवेध मुहूर्त्ताभाव है। सि.यो./सर्वार्थसि. सूर्यो. से 24:45 तक
12	सोम	15/20	12:07	पू.षा.	52/10	26:51	विष्कु	10/50	10:19	बालव	12:07	कौलव	24:56	05:59	18:52	32/13		12	श्रावणसोमवार, सोमप्रदोष, दामोदर द्वादशी, पू.षा. में शनिकेतु युति मुहूर्त्ताभाव।
13	मङ्गल	19/27	13:46	उ.षा.	58/20	29:19	प्रीति	11/37	10:38	तैतिल	13:46	गर	26:46	05:59	18:51	32/10	मकर 9:26	13	आखेटक त्रयोदशी, भौमव्रत, उ.षा. में अग्नि-ईंटभट्टा-उग्रकार्य का मुहूर्त्त है।
14	बुध	24/28	15:46	श्रवण	--	--	आयु	13/05	11:13	वणिज	15:46	विष्टि	28:52	06:00	18:51	32/07		14	भद्रा 15:46 से 28:52 तक, व्रतपूर्णिमा, हयग्रीव उत्पत्ति, श्रवण में रिक्तादोष मुहूर्त्ताभाव।
15	गुरु	29/57	17:59	श्रवण	05/05	08:02	सौभा	14/58	11:59	बव	17:59	बालव	--	06:00	18:50	32/05	कुम्भ 21:28	15	पञ्चक आरम्भ 08:02 से, श्रावणीउपाकर्म, रक्षाबन्धन, श्रीसत्यनारायणव्रत, धनिष्ठा में व्यापार, पशुपक्षीमत्स्यादिकर्म, वास्तुकृषिकार्य, वस्तुभूमिभवनवाहनादिक्रयादि शुभ है।

भूमिशोधन विधि-खातं भूमिपरीक्षणे करमितं तत्पूरयेत्तन्मृदा।हीने हीनफलं समे समफलं लाभो रजो वर्द्धने।।अर्थात्- भूमि के शुभाशुभ का परीक्षण करना हो उसके स्वामी के हाथ के माप से एक हाथ लम्बा, एक हाथ चौडा और एक हाथ गहरा गड्ढा खोदकर निकली हुई मिट्टी को वापस उसी गड्ढे में भरे। गड्ढा भरने के बाद भी मिट्टी बच जाए तो उत्तम, शेष न बचे परन्तु गड्ढा भर जाए तो मध्यम, मिट्टी से गड्ढा न भरे तो अधम भूमि होती है। तत्कृत्वा जलपूर्णमाणऽऽशतपदं गत्वा परीक्ष्यं पुन:। पादोनाऽर्धविहीनकेऽवनिभृते मध्याधमेष्टाम्बुभि:।।स्वामी के हाथ के परिमाप से एक हाथ लम्बाई-चौडाई एवं गहराई के गड्ढे की मिट्टी निकालकर उसमें जलभरकर सौ कदम दूर जाकर पुन: लौटकर गड्ढे के जल को देखे। यदि गड्ढा यथावत् हो तो उत्तम। चतुर्थांश कम हो तो मध्यम और आधे से भी कम जल बचे तो अधम फल होता है।

सूर्यादि स्पष्ट ग्रह भा.स्टै.टा.प्रात: 5 बजकर 29 मिनट का राशि, अंश, कला, विकला में

दि.	स्पष्ट सूर्य				स्पष्ट चन्द्र				स्पष्ट मङ्गल				स्पष्ट बुध				स्पष्ट गुरु				स्पष्ट शुक्र				स्पष्ट शनि				स्पष्ट राहु			
02	3	15	19	5	3	27	29	13	3	25	34	32	2	29	51	25	7	20	31	15	3	11	56	8	8	21	26	59	2	22	9	59
03	3	16	16	30	4	12	33	4	3	26	12	37	2	29	59	45	7	20	29	33	3	13	10	6	8	21	23	10	2	22	6	48
04	3	17	13	57	4	27	31	45	3	26	50	42	3	0	14	29	7	20	28	3	3	14	24	6	8	21	19	24	2	22	3	37
05	3	18	11	24	5	12	17	12	3	27	28	47	3	0	35	41	7	20	26	44	3	15	38	6	8	21	15	42	2	22	0	26
06	3	19	8	51	5	26	43	26	3	28	6	51	3	1	3	25	7	20	25	36	3	16	52	7	8	21	12	2	2	21	57	16
07	3	20	6	20	6	10	46	59	3	28	44	56	3	1	37	40	7	20	24	39	3	18	6	9	8	21	8	27	2	21	54	5
08	3	21	3	49	6	24	26	54	3	29	23	1	3	2	18	24	7	20	23	54	3	19	20	12	8	21	4	54	2	21	50	54
09	3	22	1	19	7	7	44	11	4	0	1	6	3	3	5	33	7	20	23	19	3	20	34	16	8	21	1	26	2	21	47	43
10	3	22	58	50	7	20	41	7	4	0	39	11	3	3	59	1	7	20	22	56	3	21	48	20	8	20	58	1	2	21	44	33
11	3	23	56	21	8	3	20	39	4	1	17	16	3	4	58	41	7	20	22	44	3	23	2	25	8	20	54	40	2	21	41	22
12	3	24	53	53	8	15	45	54	4	1	55	21	3	6	4	23	7	20	22	43	3	24	16	32	8	20	51	23	2	21	38	11
13	3	25	51	27	8	27	59	50	4	2	33	26	3	7	15	55	7	20	22	53	3	25	30	39	8	20	48	10	2	21	35	0
14	3	26	49	1	9	10	5	5	4	3	11	32	3	8	33	5	7	20	23	14	3	26	44	47	8	20	45	1	2	21	31	49
15	3	27	46	37	9	22	3	55	4	3	49	37	3	9	55	37	7	20	23	47	3	27	58	56	8	20	41	56	2	21	28	39

नागपञ्चमी - श्रावणेमासि पञ्चम्यां शुक्लपक्षे नराधिप। द्वारस्योभयतो लेख्या गोमयेन विषोल्बणा:।। पूजयेद्विधिवद्वीर दधिदूर्वाङ्कुरै: कुशै:। गन्धपुष्पोपहारैश्च ब्राह्मणानां च तर्पणै:।। ये तस्यां पूजयन्तीह नागान् भक्तिपुर: सरा:। न तेषां सर्पतो वीर भयं भवति कुत्रचित्।।

श्रावणी विशेष - संक्रान्तिर्ग्रहणं वापि यदि पर्वणि जायते, तन्मासे हस्तयुक्तायां पञ्चम्यां वा तदिष्यते।।अपि च -यदि स्यात् श्रावणं पर्व ग्रहसंक्रान्ति दूषितम्। स्यादुपाकरणं शुक्पल पञ्चम्यां श्रावणस्य तु। पूर्णिमा के दिन ग्रहण होने के कारण पंचमी को श्रावणी करनी चाहिए

08 अगस्त 2019, अष्टमी, गुरुवार
सूर्योदयकालीन

15 अगस्त 2019, पूर्णिमा, गुरुवार
सूर्योदयकालीन

नदियों का रजोदोष- सिंहकर्कटयोर्मध्ये सर्वा नद्यो रजस्वला:। तासु स्नानं न कुर्वीत वर्जयित्वा समुद्रगाम्। विशेष:- या: शोषमुपगच्छन्ति ग्रीष्मे कुसरितो भुवि। तासु प्रावृषि न स्नायादपूर्णे दशवासरे। धनु: सहस्राण्यादौ तु गतिर्यासां न विद्यते। न ता नदीशब्दावहा गर्तास्ता: परिकीर्तिता:।। नि.सिं.

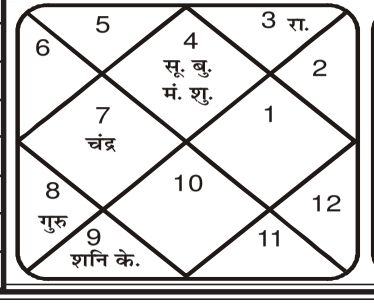

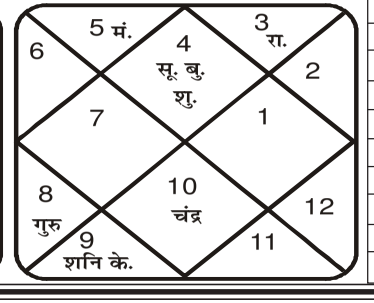

लग्नान्तकाल (भारतीय मानक समय में)

दि.	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन
02	07:00:00	09:11:56	11:24:52	13:39:52	15:52:56	18:00:56	19:45:00	21:19:00	22:51:20	00:32:16	02:29:12	04:45:04
03	06:56:04	09:08:00	11:20:56	13:35:56	15:49:00	17:57:00	19:41:04	21:15:04	22:47:24	00:28:20	02:25:16	04:41:08
04	06:52:08	09:04:04	11:17:00	13:32:00	15:45:04	17:53:04	19:37:08	21:11:08	22:43:28	00:24:24	02:21:20	04:37:12
05	06:48:12	09:00:08	11:13:04	13:28:04	15:41:08	17:49:08	19:33:12	21:07:12	22:39:32	00:20:28	02:17:24	04:33:16
06	06:44:16	08:56:12	11:09:08	13:24:08	15:37:12	17:45:12	19:29:16	21:03:16	22:35:36	00:16:32	02:13:28	04:29:20
07	06:40:20	08:52:16	11:05:12	13:20:12	15:33:16	17:41:16	19:25:20	20:59:20	22:31:40	00:12:36	02:09:32	04:25:24
08	06:36:24	08:48:20	11:01:16	13:16:16	15:29:20	17:37:20	19:21:24	20:55:24	22:27:44	00:08:40	02:05:36	04:21:28
09	06:32:28	08:44:24	10:57:20	13:12:20	15:25:24	17:33:24	19:17:28	20:51:28	22:23:48	00:04:44	02:01:40	04:17:32
10	06:28:32	08:40:28	10:53:24	13:08:24	15:21:28	17:29:28	19:13:32	20:47:32	22:19:52	00:00:48	01:57:44	04:13:36
11	06:24:36	08:36:32	10:49:28	13:04:28	15:17:32	17:25:32	19:09:36	20:43:36	22:15:56	23:56:52	01:53:48	04:09:40
12	06:20:40	08:32:36	10:45:32	13:00:32	15:13:36	17:21:36	19:05:40	20:39:40	22:12:00	23:52:56	01:49:52	04:05:44
13	06:16:44	08:28:40	10:41:36	12:56:36	15:09:40	17:17:40	19:01:44	20:35:44	22:08:04	23:49:00	01:45:56	04:01:48
14	06:12:48	08:24:44	10:37:40	12:52:40	15:05:44	17:13:44	18:57:48	20:31:48	22:04:08	23:45:04	01:42:00	03:57:52
15	06:08:52	08:20:48	10:33:44	12:48:44	15:01:48	17:09:48	18:53:52	20:27:52	22:00:12	23:41:08	01:38:04	03:53:56

ग्रहचार

मार्गी मंगल- श्रेषा में 9 अग.को 4:46 से मघा में, बुध- 09 अगस्त को 12:15 से पुष्य में मार्गी, वक्रीगुरु- ज्येष्ठा में 11 अगस्त को 19:09 से ज्येष्ठा में मार्गी होगा। शुक्र-पुष्य में 6 अग. को 1:33 से श्रेषा में, शनि- वक्री पू.षा. में, राहु- पुन. में, केतु- पू.षा. में

भाद्रपद कृष्णपक्ष	परिधावी संवत्सर, वि. संवत् 2076, शक 1941													सू.उ.	सू.अ.	दि.मा.	च.रा.प्र.
तिथि	वार	घ.प.	घ.मि.	नक्षत्र	घ.प.	घ.मि.	योग	घ.प.	घ.मि.	करण	घ.मि	करण	घ.मि.	घ.मि.	घ.मि.	घ.प.	घ.मि.
01	शुक्र	50/55	20:22	धनिष्ठा	27/22	10:57	शोभ	32/13	12:53	बालव	07:10	कौलव	20:22	06:01	18:49	32/00	
02	शनि	42/00	22:49	शत.	44/45	13:55	अति	19/35	13:51	तैतिल	09:36	गर	22:49	06:01	18:48	31/58	
03	रवि	48/03	25:14	पू.भा.	27/15	16:55	सुक	22/00	14:49	वणिज	12:01	विष्टि	25:14	06:01	18:48	31/58	मीन 10:10
04	सोम	53/43	27:30	उ.भा.	34/28	19:48	धृति	24/15	15:43	बव	14:22	बालव	27:30	06:02	18:47	31/53	
05	मङ्गल	58/43	29:31	रेवती	41/05	22:28	शूल	26/03	16:27	कौलव	16:31	तैतिल	29:31	06:02	18:46	31/50	मेष 22:28
06	बुध	--	--	अश्विनी	46/53	24:47	गण्ड	27/15	16:56	गर	18:18	वणिज	--	06:02	18:45	31/48	
06	गुरु	02/40	07:06	भरणी	51/25	26:36	वृद्धि	27/33	17:03	वणिज	07:06	विष्टि	19:37	06:03	18:44	31/43	
07	शुक्र	05/15	08:09	कृतिका	54/20	27:47	ध्रुव	26/35	16:41	बव	08:09	बालव	20:20	06:03	18:43	31/40	वृष 08:58
08	शनि	06/12	08:32	रोहिणी	55/32	28:16	व्याघा.	24/20	15:47	कौलव	08:32	तैतिल	20:22	06:04	18:43	31/37	
09	रवि	05/18	08:11	मृगशिरा	54/47	27:59	हर्ष.	20/33	14:17	गर	08:11	वणिज	19:37	06:04	18:42	31/35	मिथु. 16:13
10 11	सोम	02/27 57/45	07:03 29:10	आर्द्रा	52/10	26:56	वज्र	15/15	12:10	विष्टि	07:03	बव बालव	18:07 29:10	06:04	18:41	31/33	
12	मङ्गल	51/20	26:36	पुनर्वसु	47/52	25:13	सिद्धि	08/25	09:26	कौलव	15:53	तैतिल	26:36	06:05	18:40	31/28	कर्क 19:42
13	बुध	43/25	23:29	पुष्य	42/05	22:55	व्याति. वरी.	00/13 50/55	06:10 26:27	गर	13:02	वणिज	23:27	06:05	18:39	31/25	
14	गुरु	34/38	19:56	आश्ले.	35/15	20:11	परिघ	40/45	22:23	विष्टि	09:42	शकुनि चतु.	19:56 30:02	06:05	18:38	31/22	सिंह 20:11
30	शुक्र	25/05	16:07	मघा	27/45	17:11	शिव	30/07	18:08	नाग	16:07	किंस्तु.	26:10	06:06	18:37	31/18	

दक्षिणायन, उत्तरगोल, वर्षा ऋतु (16 अगस्त से 30 अगस्त 2019 ई. तक) — गुरु पश्चिम में, शुक्र पूर्व में अस्त

दिनांक	व्रतपर्व विवरण (भारतीय मानक समय में) — दैनिकमुहूर्त्तादि विवरण (भद्रा, पञ्चक एवं त्रिपुष्कर, सर्वार्थसिद्धि योगादि)
16	दधित्यागव्रत, धनिष्ठा/शत. में जातकर्म, नामकरण, वृक्षारोपण, वस्त्राभूषणादिधारण, वस्तुभूमिभवनवाहनादिकर्म वास्तु/कृषिकर्म का मुहूर्त्त है।
17	अशून्यशयनव्रत, पलंग पर लक्ष्मी-विष्णु की स्थापना कर पूजन, **सूर्यप्रवेश मघा/सिंह 13:02 पर, पुण्यकाल प्रात. 06:38 के बाद**, शत. में वृक्षारोपण, वस्त्राभूषण-वस्तुभूमिभवनवाहनादिकर्म वास्तु/कृषिकर्म मुहूर्त्त है। त्रिपुष्कर 23:55 से सूर्यो.तक
18	भद्रा 12:01 से 25:14 तक, विन्ध्याचली भीमचण्डी, देवी जयन्ती, कज्जली तृतीया, गोपूजा, भद्रापूर्व पू. भा. में शस्त्रादिकार्य, रोगमुक्तस्नान, आप्रेशन, अग्निकार्य, भट्टा लगाने से सम्बन्धित कार्यों का मुहूर्त है।●
19	श्रीगणेश(संकष्टहर)बहुला चतुर्थी, चंद्रोदय 21:20, उ.भा. में रिक्तादोष मुहूर्त्ताभाव।● सर्वार्थसि. 16:55 से सूर्योदय तक।
20	पञ्चक समाप्त 22:28 पर, रक्षापञ्चमी (उड़ीसा), रेवती में शस्त्रादिकार्य, रोगमुक्तस्नान, आप्रेशन, अग्निकार्य, भट्टा लगाने से सम्बन्धित कार्यों का मुहूर्त है। अमृतसिद्धि 22:28 तदु. सर्वार्थसि. सूर्यो.तक,
21	श्रीचन्द्र/हल/ललही षष्ठी, अश्विनी में पुंसवन, सीमन्त, जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, वृक्षारोपण, वस्त्राभूषणादिधारण, वस्तुभूमिभवनवाहनादि क्रयविक्रय, व्यापार, कृषिकर्म का मुहूर्त्त है।
22	भद्रा 07:06 से 19:37 तक, शीतलासप्तमी, भरणी में सूर्यभौमवेध मुहूर्त्ताभाव।
23	श्रीकृष्णजन्माष्टमी (स्मार्त), कृष्णावतार, रात्रिकाल में भगवान कृष्ण की पूजादि, सायनसूर्य कन्या में, कृत्तिका में व्यापार, पशुपक्षीमत्स्यादि कर्म, धान्यच्छेदनादि शुभ हैं।
24	श्रीकृष्णजन्माष्टमी (वैष्णव), गोकुलाष्टमी, दूर्वाष्टमी, कौमारीपूजा, रोहिणी में रिक्तापूर्व व्यापारारम्भ, वस्तुभूमिभवनवाहनादि क्रयविक्रय, कृषिकर्म का मुहूर्त है। अमृतसिद्धि/सर्वार्थसि. सूर्यो. से 28:16 तक,
25	भद्रा आरम्भ 19:37 से, रिक्तोपरान्त मृगशिरा में भव्यापारारम्भ, वस्तुभूमिभवनवाहनादि क्रयविक्रय, कृषिकर्म का मुहूर्त है।
26	भद्रा 07:03 तक, अजा/जया एकादशी (स्मार्त.) आर्द्रा में शनिकेतु वेध मुहूर्त्ताभाव।
27	जया एकादशी (वैष्णव.), अघोरद्वादशी, पुनर्वसु में राहुयुति मुहूर्त्ताभाव। त्रिपुष्कर सूर्यो.25:13 तक
28	भद्रा 23:27 से, प्रदोषव्रत, शिवपूजनजपादि कार्य, मासान्तदोष मुहूर्त्ताभाव।
29	भद्रा 09:42 तक, अघोरचतुर्दशी, शिवपूजन विशेष, अघोरमन्त्र जपहोमादि शुभ, मासान्तदोष मुहूर्त्ताभाव।
30	अमास्या, कुशोत्पाटनी, ॐ हुं फट् मन्त्र से कुश ग्रहण, मासान्तदोष मुहूर्त्ताभाव। सि.यो./सर्वार्थसि. 17:11 से सूर्यो.तक,

कृष्णजन्माष्टमीव्रतम् - ये न कुर्वन्ति जानन्तः कृष्णजन्माष्टमीव्रतम्। ते भवन्ति नराः प्राज्ञ व्याला व्याघ्राश्च कानने।। कृष्ण मन्त्र जप- क्लीं कृष्णाय गोविन्दाय गोपीजनवल्लभाय स्वाहा। यह मन्त्र सन्ततिप्रद, व्यापार में वृद्धि देने वाला है। द्वादशाक्षर मन्त्र- ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।। अभीष्टसिद्धि- ॐ क्लीं हृषीकेशाय नमः। अथवा ॐ ह्रीं क्लीं कृष्णाय गोविन्दाय स्वाहा। सन्तति प्रद गोपाल मन्त्र- ॐ क्लीं देवकीसुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते। देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः क्लीं ॐ ।। इनमें से किसी मन्त्र का तुलसी की माला से १ २ लाख जप, त्रिमधु से होम करें।**कुशोत्पाटन मन्त्र-** कुशाग्रे वसते रुद्रः कुशमध्ये तु केशवः। कुशमूले वशेद् ब्रह्मा कुशान्ते देहि मेदिनी। कुशोऽसि कुशुत्रोऽसि ब्रह्मणा निर्मितः पुरा। देव पितृहितार्थाय कुशमुत्पाटयाम्यहम्।।

सूर्यादि स्पष्ट ग्रह भा.स्टै.टा.प्रातः 5 बजकर 29 मिनट का राशि, अंश, कला, विकला में

दि.	स्पष्ट सूर्य				स्पष्ट चन्द्र				स्पष्ट मङ्गल				स्पष्ट बुध				स्पष्ट गुरु				स्पष्ट शुक्र				स्पष्ट शनि				स्पष्ट राहु			
16	3	28	44	13	10	3	58	18	4	4	27	43	3	11	23	15	7	20	24	30	3	29	13	6	8	20	38	55	2	21	25	28
17	3	29	41	51	10	15	50	5	4	5	5	49	3	12	55	38	7	20	25	25	4	0	27	16	8	20	35	59	2	21	22	17
18	4	0	39	31	10	27	41	5	4	5	43	56	3	14	32	26	7	20	26	30	4	1	41	28	8	20	33	7	2	21	19	6
19	4	1	37	12	11	9	33	21	4	6	22	3	3	16	13	16	7	20	27	47	4	2	55	41	8	20	30	20	2	21	15	56
20	4	2	34	54	11	21	29	17	4	7	0	10	3	17	57	45	7	20	29	14	4	4	9	54	8	20	27	37	2	21	12	45
21	4	3	32	38	0	3	31	48	4	7	38	17	3	19	45	27	7	20	30	52	4	5	24	9	8	20	24	59	2	21	9	34
22	4	4	30	23	0	15	44	15	4	8	16	25	3	21	35	56	7	20	32	42	4	6	38	24	8	20	22	26	2	21	6	23
23	4	5	28	10	0	28	10	28	4	8	54	34	3	23	28	48	7	20	34	42	4	7	52	41	8	20	19	58	2	21	3	13
24	4	6	25	59	1	10	54	32	4	9	32	43	3	25	23	36	7	20	36	53	4	9	6	58	8	20	17	34	2	21	0	2
25	4	7	23	49	1	24	0	26	4	10	10	52	3	27	19	57	7	20	39	15	4	10	21	17	8	20	15	15	2	20	56	51
26	4	8	21	41	2	7	31	35	4	10	49	3	3	29	17	28	7	20	41	47	4	11	35	36	8	20	13	2	2	20	53	41
27	4	9	19	36	2	21	30	2	4	11	27	13	4	1	15	48	7	20	44	31	4	12	49	56	8	20	10	53	2	20	50	30
28	4	10	17	31	3	5	55	41	4	12	5	24	4	3	14	36	7	20	47	25	4	14	4	17	8	20	8	49	2	20	47	19
29	4	11	15	29	3	20	45	33	4	12	43	36	4	5	13	36	7	20	50	29	4	15	18	39	8	20	6	51	2	20	44	8
30	4	12	13	28	4	5	53	21	4	13	21	48	4	7	12	33	7	20	53	45	4	16	33	2	8	20	4	58	2	20	40	58

गोप्रसवशान्ति - भानौ सिंहगते चैव यस्य गौः सम्प्रसूयते। मरणं तस्य निर्दिष्टं षड्भिर्मासैर्न संशयः। तत्र शांति प्रवक्ष्यामि येन संपद्यते शुभम्। प्रसूतां तत्क्षणादेव तां गां विप्राय दापयेत्।। ततो होमं प्रकुर्वीत घृताक्तै राजसर्षपैः। आहुतीनां घृताक्तानामयुतं जुहुयात्ततः।। व्याहतिभिश्चायं होमः कुर्वीत शुभप्राप्तये। सोपवासः प्रयत्नेन दद्याद्विप्राय दक्षिणाम्।। **पवित्री धारण आवश्यक-** स्नाने होमे जपे दाने स्वाध्याये पितृकर्मणि। करौ सदर्भौ कुवीत तथा सन्ध्याभिवादने।। यथावज्रं सुरेन्द्रस्य यथा चक्रं हरेस्तथा। त्रिशूलं च त्रिनेत्रस्य तथा विप्रपवित्रकम्।। कुशधारण महत्त्व- सपवित्रेण हस्तेन कुर्यादाचमनक्रियाम्। नोच्छिष्टं तत्पवित्रं तु भुक्तोच्छिष्टं तु वर्जयेत्।।

24 अगस्त 2019, अष्टमी, शनिवार
सूर्योदयकालीन

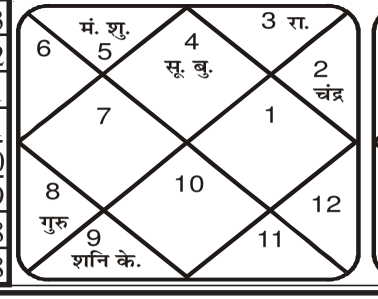

30 अगस्त 2019, अमावस्या, शुक्रवार
सूर्योदयकालीन

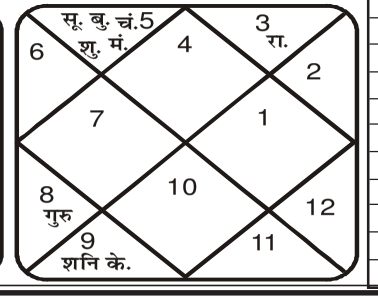

लग्नान्तकाल (भारतीय मानक समय में)

दि.	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन
16	06:04:56	08:16:52	10:29:48	12:44:48	14:57:52	17:05:52	18:49:56	20:23:56	21:56:16	23:37:12	01:34:08	03:50:00
	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क
17	08:12:56	10:25:52	12:40:52	14:53:56	17:01:56	18:46:00	20:20:00	21:52:20	23:33:16	01:30:12	03:46:04	06:01:00
18	08:09:00	10:21:56	12:36:56	14:50:00	16:58:00	18:42:04	20:16:04	21:48:24	23:29:20	01:26:16	03:42:08	05:57:04
19	08:05:04	10:18:00	12:33:00	14:46:04	16:54:04	18:38:08	20:12:08	21:44:28	23:25:24	01:22:20	03:38:12	05:53:08
20	08:01:08	10:14:04	12:29:04	14:42:08	16:50:08	18:34:12	20:08:12	21:40:32	23:21:28	01:18:24	03:34:16	05:49:12
21	07:57:12	10:10:08	12:25:08	14:38:12	16:46:12	18:30:16	20:04:16	21:36:36	23:17:32	01:14:28	03:30:20	05:45:16
22	07:53:16	10:06:12	12:21:12	14:34:16	16:42:16	18:26:20	20:00:20	21:32:40	23:13:36	01:10:32	03:26:24	05:41:20
23	07:49:20	10:02:16	12:17:16	14:30:20	16:38:20	18:22:24	19:56:24	21:28:44	23:09:40	01:06:36	03:22:28	05:37:24
24	07:45:24	09:58:20	12:13:20	14:26:24	16:34:24	18:18:28	19:52:28	21:24:48	23:05:44	01:02:40	03:18:32	05:33:28
25	07:41:28	09:54:24	12:09:24	14:22:28	16:30:28	18:14:32	19:48:32	21:20:52	23:01:48	00:58:44	03:14:36	05:29:32
26	07:37:32	09:50:28	12:05:28	14:18:32	16:26:32	18:10:36	19:44:36	21:16:56	22:57:52	00:54:48	03:10:40	05:25:36
27	07:33:36	09:46:32	12:01:32	14:14:36	16:22:36	18:06:40	19:40:40	21:13:00	22:53:56	00:50:52	03:06:44	05:21:40
28	07:29:40	09:42:36	11:57:36	14:10:40	16:18:40	18:02:44	19:36:44	21:09:04	22:50:00	00:46:56	03:02:48	05:17:44
29	07:25:44	09:38:40	11:53:40	14:06:44	16:14:44	17:58:48	19:32:48	21:05:08	22:46:04	00:43:00	02:58:52	05:13:48
30	07:21:48	09:34:44	11:49:44	14:02:48	16:10:48	17:54:52	19:28:52	21:01:12	22:42:08	00:39:04	02:54:56	05:09:52

ग्रहचार

मार्गी मंगल- मघा में 30 अग. को 4:20 से पू.फा. में, मार्गी बुध- 19 अगस्त को 11:42 से श्लेषा में व 26 को 14:7से मघा में, मार्गी गुरु ज्येष्ठा में,मार्गी शुक्र-श्लेषा में 16 को 20:39 से मघा में व 27 को 15:11 से पू.फा. में, शनि- वक्री पू.षा. में, राहु- पुन. में, केतु- पू.षा. में

भाद्रपद शुक्लपक्ष — परिधावी संवत्सर, वि. संवत् 2076, शक 1941

दक्षिणायन, उत्तरगोल, वर्षाऋतु (31 अगस्त से 14 सितम्बर 2019 ई. तक) — गुरु पश्चिम में, शुक्र ९ सित. को पश्चिम में उदय

तिथि	वार	घ.प.	घ.मि.	नक्षत्र	घ.प.	घ.मि.	योग	घ.प.	घ.मि.	करण	घ.मि.	करण	घ.मि.	सू.उ. घ.मि.	सू.अ. घ.मि.	दि.मा. घ.प.	च.रा.प्र. घ.मि.	दिनांक	व्रतपर्व विवरण (भारतीय मानक समय में) / दैनिकमुहूर्त्तादि विवरण (भद्रा, पञ्चक एवं त्रिपुष्कर, सर्वार्थसिद्धि योगादि)
01	शनि	30/35	12:14	पू.फा.	35/17	14:07	सिद्ध	34/32	13:49	बव	12:14	बालव	22:21	06:06	18:36	31/15	कन्या 19:22	31	पू.फा. में सूयप्रवेश 09:00 से, पू.फा. में सूर्यभौम युति मुहूर्त्ताभाव। ◆ सर्वार्थसि. सूर्यो. से 11:11 तक, अमृतसिद्धि/सवार्थसि.11:12 से सूर्यो.तक, त्रिपुष्कर 14:07 से सूर्यो.तक
02 03	रवि	05/52 57/08	08:27 28:57	उ.फा.	12/43	11:11	साध्य शुभ	08/45 58/50	09:36 29:38	कौलव	08:27	तैतिल गर	18:42 28:57	06:06	18:35	31/12		01	सुवर्णगौरी/हरितालिका/गौरीतृतीयाव्रत, वराहजयन्ती, रुद्रसावर्णिमन्वादि, उ.फा. में पुंसवन, सीमन्त, शिल्प-शिक्षण-प्रशिक्षणकार्य,वस्तु-भूमि-भवन-वाहनकार्य, व्यापारारंभ मुहूर्त्त है। ◆
04	सोम	49/27	25:54	हस्त	06/05	08:33	शुक्ल	49/53	26:03	वणिज	15:26	विष्टि	25:54	06:07	18:34	31/08	तुला 19:24	02	भद्रा 15:26 से 25:54 तक, कंलकचतुर्थी, विनायकचतुर्थी, गणेशोत्सवारम्भ,(चन्द्रदर्शन निषेध), सामवेदीय उपाकर्म, रिक्तोपरान्त हस्त में भद्रादोष मुहूर्त्ताभाव।
05	मङ्गल	43/22	23:28	चित्रा स्वाती	00:43 56/55	06:24 28:53	ब्रह्म	42/07	22:58	बव	12:41	बालव	23:28	06:07	18:33	31/05		03	ऋषिपञ्चमी, बौद्धजयन्ती, चित्रा/स्वाती में उग्र कार्य, ईंट-भट्टा लगाना, शस्त्रनिर्माण का मुहूर्त्त है।
06	बुध	39/05	21:45	विशाखा	55/00	28:07	ऐन्द्र	35/55	20:29	कौलव	10:37	तैतिल	21:45	06:07	18:32	31/03	वृश्चि. 22:14	04	सूर्य/देव/लोलार्कषष्ठी, लोलाद्मोर्छश्वर/कार्तिकेयदर्शन, विशाखा में वस्तुविक्रय, पशु-पक्षी-मत्स्यादिपालन कार्य का मुपूर्त्है। अमृतसिद्धि 28:07 से सूर्यो.तक,
07	गुरु	36/47	20:50	अनुराधा	55/05	28:09	वैधृति	31/18	18:38	गर	09:17	वणिज	20:50	06:07	18:31	31/00		05	भद्रा 20:50 से, भानु/सन्तान/फल/ललितासप्तमी/मुक्ताभरण/अपराजिता सप्तमी व्रत,शिक्षकदिवस, अनुराधा में वैधृतिदोष मुहूर्ताभाव है। सर्वार्थसि. सूर्यो. से 28:09 तक।
08	शुक्र	36/27	20:43	ज्येष्ठा	57/02	28:57	विष्कु	28/13	17:25	विष्टि	08:46	बव	20:43	06:08	18:30	30/55	धनु 28.57	06	भद्रा 08:46 तक, राधा/दूर्वा/दुर्गाशयनाष्टमी (उड़ीसा), महालक्ष्मी व्रतारम्भ (16 दिवसीय),ज्येष्ठा में पशु-पक्षी-मत्स्यादि कार्य, वस्तुविक्रय का मुहूर्त्त है।
09	शनि	38/05	21:22	मूल	--	--	प्रीति	26/42	16:49	बालव	09:03	कौलव	21:22	06:08	18:29	30/53		07	अदु:खनवमी, श्रीचन्द्रजयन्ती, महानंदानवमी रिक्तादोष, रोगमुक्तस्नान, मूल में राहुवेध मुहूर्त्ताभाव है।
10	रवि	41/22	22:41	मूल	00:52	06:29	आयु	26/33	16:45	तैतिल	10:01	गर	22:41	06:08	18:28	30/50		08	दशावतार दशमी, महारविवार व्रत (जलाशय में स्नानकर देवपितृ तर्पणकर भगवान के 10 अवतारों का पूजनजपहोमादि कर्म), मूल में राहुवेध, पू.षा. में शनिकेतुयुति मुहूर्ताभाव है। सि.यो./सर्वासि. सूर्यो.से 6: 29 तक,
11	सोम	45/55	24:31	पू.षा.	06/07	08:36	सौभा	27/23	17:06	वणिज	11:36	विष्टि	24:31	06:09	18:27	30/45	मकर 15:12	09	भद्रा 11:36 से 24:31 तक, पद्मा एकादशीव्रत (सर्वेषाम्), कर्मा एकादशी, डोलग्यारस, पू.षा. में शनि केतुयुति, उ.षा. में भद्रादोष मुहूर्ताभाव है।, श्रवण में जातकर्म, नामकरण, व्यापार, वस्तुभूमिभवनवाहनादि क्रय,
12	मङ्गल	51/25	26:43	उ.षा.	12/30	11:09	शोभ	29/00	17:45	बव	13:37	बालव	26:43	06:09	18:26	30/42		10	शक्रद्वादशी, प्रदोषव्रत, वामनद्वादशी, श्रवणद्वादशी, उ.षा./श्रवण में उग्र-अग्नि-शस्त्रकार्य, आभूषणनिर्माण का मुहूर्त है। त्रिपुष्कर सूर्यो.से 11:09 तक
13	बुध	57/25	29:07	श्रवण	19/35	13:59	अति	31/07	18:36	कौलव	15:55	तैतिल	29:07	06:09	18:25	30/40	कुम्भ 27:28	11	पंचकारंभ 13:59 से, प्रदोषव्रत,शुक्रबाल्यत्वनिवृत्ति, श्रवण/धनि.में शिल्पविद्या,वस्तु-भमि-भवन-वाहनकार्य, पशु-पक्षी-मत्स्यादि कार्य, रात्रि में गर्भाधान का मुहूर्त्त है।
14	गुरु	--	--	धनिष्ठा	27/00	16:58	सुक	33/28	19:33	गर	18:24	वणिज	--	06:10	18:24	30/35		12	अनन्तचतुर्दशीव्रत (मध्याह्न व्यापिनी कारणात्, 14 गाठों का अनन्तसूत्र निर्मितकर अनन्तपूजन करें मन्त्र- नमस्ते देव देवेश नमस्ते धरणीधर। नमस्ते सर्वनागेन्द्र नमस्ते पुरुषोत्तम।)रिक्तादोष मुहूर्त्ताभाव।
14	शुक्र	03/32	07:35	शत.	34/30	19:58	धृति	35/50	20:30	वणिज	07:35	विष्टि	20:49	06:10	18:23	30/32		13	भद्रा 07:35 से 20:49 तक, व्रतपूर्णिमा, गणपति विसर्जन, महालयारंभ/मध्याह्न में नान्दीमातामह श्राद्ध, उ.फा. में सूर्यप्रवेश 26:54 पर, रिक्तोपरान्त भद्रादोष मुहूर्त्ताभाव है।
15	शनि	09/43	10:03	पू.भा.	41/52	22:55	शूल	38/05	21:24	बव	10:03	बालव	23:13	06:10	18:22	30/30	मीन 16:12	14	भाद्रपदपूर्णिमा स्नान-दान, प्रतिपद्श्राद्ध, अथर्ववेदियों की श्रावणी, पू.भा. में उग्रकार्य, अग्निकार्य, भट्टालगाना, शस्त्रनिर्माण आदि का मुहूर्त है।

दुर्मरणयोग- षष्ठाष्टमव्यये चन्द्रे लग्ननाथेन वीक्षते। मन्दमान्द्यगुसंयुक्ते तस्य दुर्मरणं भवेत्।।अर्थात्- यदि चंद्रमा शनि, गुलिक, राहु से युक्त होकर ६,८,१२ वें भाव में हो और लग्नेश भी देखता हो तो अपमृत्यु होती है। मेषूरणस्थे यदि चित्रभानौ भौमे चतुर्थे न च सौम्ययुक्ते। सौम्ये विलग्नोपगते तु मृत्युं गोश्रृंगत: शूलनिपाततो वा।। अर्थात्- सूर्य १० में, मंगल ४ में, शुभग्रह से युक्त व दृष्ट न हों, बुध लग्न में हो तो किसी हिंसक जानवर की चोट से व्यक्ति की अपमृत्यु हो जाती है। अन्य विशेष योग- शनि व सूर्य लग्न में राहु से दृष्ट हों तो वृक्षपतन से मृत्यु होती है। सूर्य व चंद्र षष्ठ/अष्टम हों तो भी जानवर से भय रहता है। चन्द्रज्ञौ षष्ठेऽष्टमे वा विषेण मृत्यु:। धर्मे पापा: शुभादृष्टा: शरेण मृत्यु:। क्षीणेन्दावष्टमे जलघात:। लग्नेशऽबले सुखे पापे जलघात:। सुखेशेऽबले सुखे पापे जलघात:। सुखपे सपापे केन्द्रे जलघात:।। चन्द्रारौ केन्द्रे वाऽष्टमे वाहनभयम्।सुखे क्षीणेन्दौ वाहनभयम्। शत्रुभे मन्दे शुक्रयुतदृष्टे करच्छेद:। भौमार्कौ रन्ध्रे मस्तकच्छेद:।।

सूर्यादि स्पष्ट ग्रह भा.स्टै.टा.प्रात: 5 बजकर 29 मिनट का राशि, अंश, कला, विकला में

दि.	स्पष्ट सूर्य				स्पष्ट चन्द्र				स्पष्ट मङ्गल				स्पष्ट बुध				स्पष्ट गुरु				स्पष्ट शुक्र				स्पष्ट शनि				स्पष्ट राहु			
31	4	13	11	29	4	21	9	56	4	14	0	1	4	9	11	13	7	20	57	11	4	17	47	25	8	20	3	11	2	20	37	47
01	4	14	9	31	5	6	24	26	4	14	38	14	4	11	9	25	7	21	0	47	4	19	1	49	8	20	1	29	2	20	34	36
02	4	15	7	35	5	21	26	15	4	15	16	27	4	13	6	59	7	21	4	34	4	20	16	14	8	19	59	52	2	20	31	25
03	4	16	5	40	6	6	6	49	4	15	54	41	4	15	3	48	7	21	8	31	4	21	30	39	8	19	58	21	2	20	28	15
04	4	17	3	47	6	20	20	44	4	16	32	56	4	16	59	45	7	21	12	38	4	22	45	4	8	19	56	55	2	20	25	4
05	4	18	1	55	7	4	6	1	4	17	11	11	4	18	54	45	7	21	16	56	4	23	59	31	8	19	55	35	2	20	21	53
06	4	19	0	5	7	17	23	39	4	17	49	26	4	20	48	45	7	21	21	24	4	25	13	57	8	19	54	21	2	20	18	42
07	4	19	58	16	8	0	16	35	4	18	27	42	4	22	41	40	7	21	26	1	4	26	28	24	8	19	53	12	2	20	15	32
08	4	20	56	28	8	12	48	57	4	19	5	58	4	24	33	30	7	21	30	49	4	27	42	51	8	19	52	9	2	20	12	21
09	4	21	54	42	8	25	5	17	4	19	44	15	4	26	24	13	7	21	35	46	4	28	57	19	8	19	51	12	2	20	9	10
10	4	22	52	58	9	7	9	58	4	20	22	32	4	28	13	48	7	21	40	53	5	0	11	47	8	19	50	20	2	20	6	0
11	4	23	51	15	9	19	6	59	4	21	0	50	5	0	2	15	7	21	46	10	5	1	26	15	8	19	49	34	2	20	2	49
12	4	24	49	33	10	0	59	37	4	21	39	9	5	1	49	33	7	21	51	36	5	2	40	44	8	19	48	54	2	19	59	38
13	4	25	47	54	10	12	50	34	4	22	17	28	5	3	35	44	7	21	57	12	5	3	55	13	8	19	48	20	2	19	56	27
14	4	26	46	16	10	24	41	53	4	22	55	48	5	5	20	47	7	22	2	57	5	5	9	42	8	19	47	51	2	19	53	17

चतुर्थी में चन्द्र दर्शन विशेष -सिंहादित्ये शुक्लपक्षे चतुर्थ्यां चन्द्रदर्शनम्। मिथ्याभिदूषणं कुर्यात्तस्मात्पश्येन्न तं सदा।। **सूर्यषष्ठी** -शुक्लभाद्रपदे षष्ठ्यां स्नानं भास्करपूजनम्। प्राशनं पञ्चगव्यञ्च अश्वमेधफलाधिकम्।। **दूर्वाष्टमी में दूर्व पूजा** - त्वं दूर्वेऽमृतजन्मासि वन्दितासि सुरासुरै:। सौभाग्यं संततिं देहि सर्वकार्यकरी भव।। यथा शाखाप्रशाखाभिर्विस्तृतासि महीतले।। तथा ममापि संतानं देहि त्वमजरामरम्।।

06 सितम्बर 2019, अष्टमी, शुक्रवार
सूर्योदयकालीन

14 सितम्बर 2019, पूर्णिमा, शनिवार
सूर्योदयकालीन

सौभाग्य चतुर्थी में गणेश पूजन- एकदन्तं शूर्पकर्णं नागयज्ञोपवीतिनम्। पाशाङ्कुशधरं देवं ध्यायेत् सिद्धिविनायकम्।।

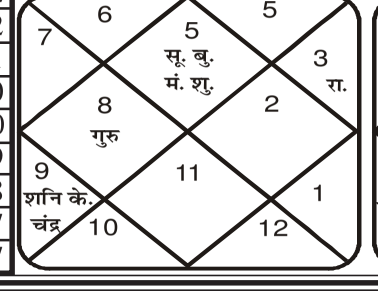

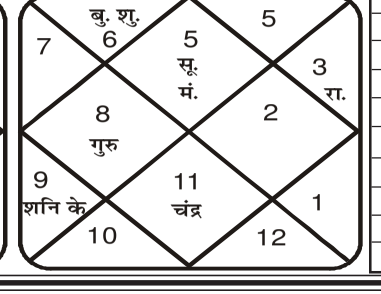

लग्नान्तकाल (भारतीय मानक समय में)

दि.	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क
31	07:17:52	09:30:48	11:45:48	13:58:52	16:06:52	17:50:56	19:24:56	20:57:16	22:38:12	00:35:08	02:51:00	05:05:56
01	07:13:56	09:26:52	11:41:52	13:54:56	16:02:56	17:47:00	19:21:00	20:53:20	22:34:16	00:31:12	02:47:04	05:02:00
02	07:10:00	09:22:56	11:37:56	13:51:00	15:59:00	17:43:04	19:17:04	20:49:24	22:30:20	00:27:16	02:43:08	04:58:04
03	07:06:04	09:19:00	11:34:00	13:47:04	15:55:04	17:39:08	19:13:08	20:45:28	22:26:24	00:23:20	02:39:12	04:54:08
04	07:02:08	09:15:04	11:30:04	13:43:08	15:51:08	17:35:12	19:09:12	20:41:32	22:22:28	00:19:24	02:35:16	04:50:12
05	06:58:12	09:11:08	11:26:08	13:39:12	15:47:12	17:31:16	19:05:16	20:37:36	22:18:32	00:15:28	02:31:20	04:46:16
06	06:54:16	09:07:12	11:22:12	13:35:16	15:43:16	17:27:20	19:01:20	20:33:40	22:14:36	00:11:32	02:27:24	04:42:20
07	06:50:20	09:03:16	11:18:16	13:31:20	15:39:20	17:23:24	18:57:24	20:29:44	22:10:40	00:07:36	02:23:28	04:38:24
08	06:46:24	08:59:20	11:14:20	13:27:24	15:35:24	17:19:28	18:53:28	20:25:48	22:06:44	00:03:40	02:19:32	04:34:28
09	06:42:28	08:55:24	11:10:24	13:23:28	15:31:28	17:15:32	18:49:32	20:21:52	22:02:48	23:59:44	02:15:36	04:30:32
10	06:38:32	08:51:28	11:06:28	13:19:32	15:27:32	17:11:36	18:45:36	20:17:56	21:58:52	23:55:48	02:11:40	04:26:36
11	06:34:36	08:47:32	11:02:32	13:15:36	15:23:36	17:07:40	18:41:40	20:14:00	21:54:56	23:51:52	02:07:44	04:22:40
12	06:30:40	08:43:36	10:58:36	13:11:40	15:19:40	17:03:44	18:37:44	20:10:04	21:51:00	23:47:56	02:03:48	04:18:44
13	06:26:44	08:39:40	10:54:40	13:07:44	15:15:44	16:59:48	18:33:48	20:06:08	21:47:04	23:44:00	01:59:52	04:14:48
14	06:22:48	08:35:44	10:50:44	13:03:48	15:11:48	16:55:52	18:29:52	20:02:12	21:43:08	23:40:04	01:55:56	04:10:52

ग्रहचार

मार्गी मंगल- पू.फा. में, मार्गी बुध- 02सित. को 08:9 से पू.फा. में व 09 को 8:55से उ.फा. में, मार्गी गुरु- ज्येष्ठा में,शुक्र- पू.फा. में 07 सित. को 9:13 से उ.फा. में, शनि- वक्री पू.षा. में, राहु- पुन. में11 सित.को 24:44 से आर्द्रा में, केतु- पू.षा. में

आश्विन कृष्णपक्ष परिधावी संवत्सर, वि. संवत् 2076, शक 1941

दक्षिणायन, उत्तरगोल, वर्षा/शरद ऋतु (15 सितम्बर से 28 सितम्बर 2019 ई. तक) — गुरु एवं शुक्र पश्चिम

तिथि	वार	घ.प.	घ.मि.	नक्षत्र	घ.प.	घ.मि.	योग	घ.प.	घ.मि.	करण	घ.मि.	करण	घ.मि.	सू.उ. घ.मि.	सू.अ. घ.मि.	दि.मा. घ.प.	च.रा.प्र. घ.मि.	दिनांक	व्रतपर्व विवरण (भारतीय मानक समय में)
01	रवि	15/35	12:24	उ.भा.	48/55	25:44	गण्ड	40/07	22:13	कौलव	12:24	तैतिल	25:30	06:10	18:21	30/27		15	आवश्यकता द्वितीयाश्राद्ध, अशून्यशयनव्रत, उ.भा. में पुंसवन,सीमन्त,पशुपक्षीमत्स्यादि कार्य,वाटिकारोपण,वस्तुभूमिभवन-वाहनकार्य, व्यापारारंभ का मुहूर्त्त है। सर्वार्थसि. सूर्यो. से 25:44 तक
02	सोम	21/00	14:35	रेवती	55/28	28:22	वृद्धि	41/45	22:53	गर	14:35	वणिज	27:34	06:11	18:20	30/22	मेष 28:22	16	पञ्चक 28:22 तक,भद्रा आरम्भ 27:34 से,द्वितीयाश्राद्ध, सूर्यप्रवेश कन्या में 13:03 पर, पुण्यकाल प्रात. 06:38 के बाद, रेवती में सूर्यवेध के कारण मूहूर्ताभाव है।
03	मङ्गल	25/55	16:33	अश्विनी	--	--	ध्रुव	42/55	23:21	विष्टि	16:33	बव	29:23	06:11	18:19	30/20		17	भद्रा16:33 तक, तृतीयाश्राद्ध,गणेशचतु., चंद्रोदय 20:29, विश्वकर्मापूजा, अश्विनी में भौमवेध है। **सूर्यप्रवेश कन्या में 13:03 पर, पुण्यकाल प्रात. 06:38 के बाद**
04	बुध	30/03	18:12	अश्विनी	01/23	06:44	व्याघा.	43/25	23:33	बालव	18:12	कौलव	--	06:11	18:18	30/18		18	चतुर्थी/भरणीश्राद्ध (भरणी श्राद्ध का गयावत फल),अश्विनी में भौमवेध रिक्तादोष है। अमृतसिद्धि सूर्यो.तक,
05	गुरु	33/08	19:27	भरणी	06/22	08:45	हर्ष.	43/05	23:26	कौलव	06:49	तैतिल	19:27	06:12	18:17	30/13	वृष 15:11	19	पञ्चमी श्राद्ध, भरणी में कृषिकार्य, कृत्तिका में पशु-पक्षी-मत्स्यादि कार्य, वस्तुविक्रय व कृषिकार्य का मुहूर्त्त है।
06	शुक्र	35/00	20:12	कृतिका	10/20	10:20	वज्र	41/48	22:55	गर	08:17	वणिज	20:12	06:12	18:16	30/10		20	भद्रा आरम्भ 20:12 से, षष्ठी श्राद्ध, चन्द्रषष्ठी, रोहिणी में पुंसवन, सीमन्त, जातकर्म, नामकरण,पशु-पक्षी-मत्स्यादि कार्य, व्यापारारंभ का मुहूर्त्त है।
07	शनि	35/22	20:21	रोहिणी	12/55	11:22	सिद्धि	39/20	21:56	विष्टि	08:21	बव	20:21	06:12	18:15	30/07	मिथु. 23.39	21	भद्रा समाप्ति 08:21, महालक्ष्मीव्रत, सप्तमीश्राद्ध, रोहिणी/मृगशिरा में व्यतीपात पूर्व व्यापारारंभ, वाहनविक्रय, पशुपक्षीमत्यादिपालन का मुहूर्त्त है। अमृतसिद्धि/सर्वार्थसि. सूर्यो. से 11:22 तक✸
08	रवि	34/02	19:50	मृगशिरा	13/52	11:46	व्यति.	35/30	20:25	बालव	08:05	कौलव	19:50	06:13	18:14	30/03		22	जीवितपुत्रिका(जीमूतवाहन) व्रत, अष्टमीश्राद्ध, गया मध्याष्टमी, आर्द्रा में व्यतीपात दोष, शनिकेतु वेध व राहुयुति मुहूर्त्ताभाव है। ✸द्विपुष्कर 11:22 से सूर्योदय तक
09	सोम	31/00	18:37	आर्द्रा	13/10	11:29	वरी.	30/17	18:20	तैतिल	07:14	गर वणिज	18:37 29:40	06:13	18:13	30/00	कर्क 28:49	23	भद्रा 29:40 से, मातृ/दुर्गा/अविधवा नवमी, अन्वष्टका/नवमीश्राद्ध, सौभाग्यवती स्त्रियों का श्राद्ध, जीवितपुत्रिका व्रत पारण, सायनसूर्य तुला में, आर्द्रा में शनिकेतुवेध व रिक्तादोष है।
10	मङ्गल	26/12	16:42	पुनर्वसु	10/45	10:31	परिघ	23/40	15:41	विष्टि	16:42	बव	27:25	06:13	18:12	29/57		24	भद्रा16:42 तक, दशमीश्राद्ध, पुन.में उग्र-अग्निकार्य का मुहूर्त्त है। अमृतसिद्धि सूर्यो.से, सर्वार्थसि. सूर्योदय से सूर्योदय तक।
11	बुध	19/50	14:09	पुष्य	06/40	08:53	शिव	15/45	12:31	बालव	14:09	कौलव	24:36	06:13	18:11	29/55		25	इन्द्रिरा एकादशीव्रत (सर्वेषाम्), एकादशी व द्वादशी श्राद्ध, पुष्य में शिल्प-शिक्षण-प्रशिक्षण-वस्तु-भूमि-भवन-वाहनकार्य का मुहूर्त्त है।
12	गुरु	12/03	11:03	आश्ले. मघा	01/05 54/28	06:40 28:01	सिद्ध साध्य	06/37 56/38	08:53 28:53	तैतिल	11:03	गर	21:18	06:14	18:10	29/50	सिंह 06:40	26	प्रदोष, मघाश्राद्ध, त्रयोदशीश्राद्ध, यतिमहालय, यतिवैष्णवश्राद्ध, मासान्तदोष
13 14	शुक्र	03/15 53/50	07:32 27:46	पू.फा.	47/05	25:04	शुभ	46/05	24:40	वणिज	07:32	विष्टि शकुनि	17:39 27:46	06:14	18:09	29/48		27	भद्रा 07:32 से 17:39 तक, चतुर्दशीश्राद्ध, शस्त्रहतमहालय, शास्त्रादिहत श्राद्ध, हस्त मे सूर्यप्रवेश 18:27 पर, सि.यो./सर्वार्थसि. सूर्यो. से 25:04 तक,
30	शनि	44/15	23:56	उ.फा.	39/30	22:02	शुक्ल	35/20	20:22	चतुष्प.	13:51	नाग	23:56	06:14	18:08	29/45	कन्या 06:19	28	सर्वपैत्री अमावस्या श्राद्ध,महालयसमापन, अज्ञाततिथि जनों का श्राद्ध, पितृविसर्जन, मासान्तदोष के कारण मुहूर्ताभाव रहेगा।

दैनिकमुहूर्त्तादि विवरण (भद्रा, पञ्चक एवं त्रिपुष्कर, सर्वार्थसिद्धि योगादि)

श्राद्धतिथि निर्णय -या तिथिर्यस्य मासस्य मृताहे तु प्रवर्तते। सा तिथिः पितृपक्षे तु पूजनीया प्रयत्नतः।। तिथिच्छेदो न कर्त्तव्यो विनाऽशौचं यदृच्छया। पिण्ड श्राद्धं च कर्तव्यं विच्छित्तिं न कारयेत्।। अशक्तः पक्षमध्ये तु करोत्येकदिने यदा। निषिद्धेऽपि दिने कुर्याद् पिण्डदानं यथाविधि।। **सन्यासिनां श्राद्धम्** - संन्यासिनां तु द्वादश्यां श्राद्धं कार्यम्। यतीनां च वनस्थानां वैष्णवानां विशेषतः। द्वादश्यां विहितं श्राद्धं कृष्णपक्षे विशेषतः।।(नि.सि.) श्राद्ध भेद- नित्यं नैमित्तकं काम्यं वृद्धिश्राद्धं सपिण्डनम्। पार्वणं चेति विज्ञेयं गोष्ठ्यां शुध्यर्थमष्टमम्।। कर्मांगं नवमं प्रोक्तं दैविकं दशमं स्मृतम्।। यात्रास्वेकादशं प्रोक्तं पुष्ट्यर्थं द्वादशं स्मृतम्।। पितृ न मानने का दोष- न सन्ति पितरश्चेति कृत्वा मनसि यो नरः। श्राद्धं न कुरुते तत्र तस्य रक्तं पिबन्ति ते।। श्राद्ध लक्षण- अहन्यनि यच्छ्राद्धं तन्नित्यमिति कीर्तितम्। वैश्वदेवविहीनं तदशक्तावुदकेन तु। एकोद्दिष्टं तु यच्छ्राद्धं तन्नैमित्तिकमुच्यते। तदप्यदैवं कर्तव्यमयुग्मान् भोजयेद् द्विजान्। कामाय विहितं काम्यम्। वृद्धौ यत्क्रियते श्राद्धं वृद्धिश्राद्धम्।अमायां यत्क्रियते तत् पार्वणम्। देवानुद्दिश्य यत्क्रियते दैविकम्।

सूर्यादि स्पष्ट ग्रह भा.स्टै.टा.प्रातः 5 बजकर 29 मिनट का राशि, अंश, कला, विकला में

दि.	स्पष्ट सूर्य				स्पष्ट चन्द्र				स्पष्ट मङ्गल				स्पष्ट बुध				स्पष्ट गुरु				स्पष्ट शुक्र				स्पष्ट शनि				स्पष्ट राहु			
15	4	27	44	40	11	6	35	14	4	23	34	8	5	7	4	43	7	22	8	51	5	6	24	12	8	19	47	29	2	19	50	6
16	4	28	43	6	11	18	32	0	4	24	12	29	5	8	47	34	7	22	14	55	5	7	38	42	8	19	47	12	2	19	46	55
17	4	29	41	34	0	0	33	39	4	24	50	51	5	10	29	21	7	22	21	7	5	8	53	12	8	19	47	1	2	19	43	44
18	5	0	40	4	0	12	41	52	4	25	29	14	5	12	10	3	7	22	27	29	5	10	7	43	8	19	46	56	2	19	40	34
19	5	1	38	36	0	24	58	50	4	26	7	38	5	13	49	43	7	22	33	59	5	11	22	14	8	19	46	56	2	19	37	23
20	5	2	37	11	1	7	27	15	4	26	46	2	5	15	28	22	7	22	40	39	5	12	36	46	8	19	47	3	2	19	34	12
21	5	3	35	47	1	20	10	22	4	27	24	27	5	17	6	00	7	22	47	27	5	13	51	18	8	19	47	16	2	19	31	2
22	5	4	34	26	2	3	11	47	4	28	2	53	5	18	42	38	7	22	54	24	5	15	5	51	8	19	47	34	2	19	27	51
23	5	5	33	7	2	16	35	3	4	28	41	20	5	20	18	18	7	23	1	29	5	16	20	24	8	19	47	58	2	19	24	40
24	5	6	31	50	3	0	23	0	4	29	19	48	5	21	52	59	7	23	8	43	5	17	34	57	8	19	48	29	2	19	21	29
25	5	7	30	35	3	14	37	1	4	29	58	17	5	23	26	43	7	23	16	6	5	18	49	31	8	19	49	5	2	19	18	19
26	5	8	29	23	3	29	15	58	5	0	36	47	5	24	59	31	7	23	23	37	5	20	4	5	8	19	49	47	2	19	15	8
27	5	9	28	13	4	14	15	33	5	1	15	17	5	26	31	23	7	23	31	16	5	21	18	39	8	19	50	35	2	19	11	57
28	5	10	27	5	4	29	28	6	5	1	53	49	5	28	2	18	7	23	39	3	5	22	33	14	8	19	51	29	2	19	8	47

गयाश्राद्धकालः - मीने मेषेस्थिते सूर्ये कन्यायां कार्मुकेघटे दुर्लभं त्रिषु लोकेषु गयायां पिण्डपातनम्। गयायां सर्वकालेषु पिण्डं दद्याद्विचक्षणः। अधिमासे जन्मदिने तथास्ते गुरुशुक्रयोः न त्यक्तव्यं गयाश्राद्धं सिंहस्थे च वृहस्पतौ । गयाश्राद्धं प्रकुर्वीत संक्रान्त्यादौ विशेषतः।। काले वा परपक्षे वा चतुर्थ्यादितिथिष्वपि। महालयं गयाश्राद्धं मातापित्रोर्मृतेऽहनि।। कृतोद्वाहोऽपिकुर्वीत पिण्डदानं यथाविधिः। मृताहश्च सपिण्डञ्च गयाश्राद्धं महालयम्।। श्राद्ध में त्याज्य- दन्तधावनताम्बूलं तैलाभ्यंगमभोजनम्। रत्यौषधं परान्नं च श्राद्धकृत् सप्त वर्जयेत्।। पुनर्भोजनमध्वानं भारमायासमैथुनम्। दानं प्रतिग्रहो होमः श्राद्धभुक् त्वष्ट वर्जयेत्।

कुतप काल- दिन के आठवाँ भाग कुतप काल कहलाता है लगभग मध्याह्न ११:३० से १२:३० तक का काल कुतप काल प्रचलित है। **आठ कुतप-** मध्याह्नः खड्गपात्रञ्च तथा नेपालकम्बलः। रूप्यं दर्भास्तिला गावो दौहित्रश्चाष्टमः स्मृतः।। पापं कुत्सितमित्याहुस्तस्य संतापकारिणः। अष्टावेते यतस्तस्मात् कुतपा इति विश्रुताः। कुत्सित (पाप) को नष्ट करने वाले को कुतप कहते हैं। त्रीणि श्राद्धे पवित्राणि दौहित्रः कुतपस्तिलाः। रजतस्य तथा दानं कथासंकीर्तनादिकम्। गायत्रीजाप्यनिरतं हव्यकव्येषु योजयेत्।।

22 सितम्बर 2019, अष्टमी, रविवार
सूर्योदयकालीन

28 सितम्बर 2019, अमावस्य, शनिवार
सूर्योदयकालीन

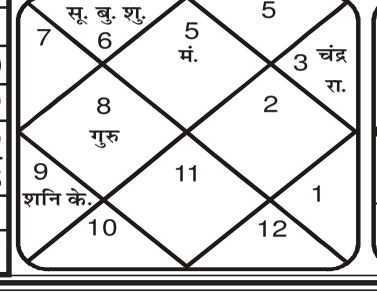

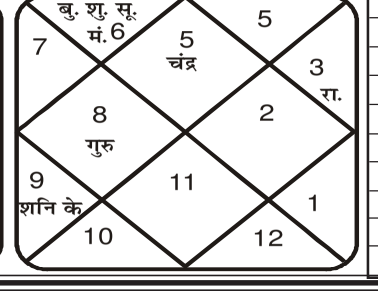

लग्नान्तकाल (भारतीय मानक समय में)

दि.	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क
15	06:18:52	08:31:48	10:46:48	12:59:52	15:07:52	16:51:56	18:25:56	19:58:16	21:39:12	23:36:08	01:52:00	04:06:56
16	06:14:56	08:27:52	10:42:52	12:55:56	15:03:56	16:48:00	18:22:00	19:54:20	21:35:16	23:32:12	01:48:04	04:03:00
	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह
17	08:23:56	10:38:56	12:52:00	15:00:00	16:44:04	18:18:04	19:50:24	21:31:20	23:28:16	01:44:08	03:59:04	06:11:00
18	08:20:00	10:35:00	12:48:04	14:56:04	16:40:08	18:14:08	19:46:28	21:27:24	23:24:20	01:40:12	03:55:08	06:07:04
19	08:16:04	10:31:04	12:44:08	14:52:08	16:36:12	18:10:12	19:42:32	21:23:28	23:20:24	01:36:16	03:51:12	06:03:08
20	08:12:08	10:27:08	12:40:12	14:48:12	16:32:16	18:06:16	19:38:36	21:19:32	23:16:28	01:32:20	03:47:16	05:59:12
21	08:08:12	10:23:12	12:36:16	14:44:16	16:28:20	18:02:20	19:34:40	21:15:36	23:12:32	01:28:24	03:43:20	05:55:16
22	08:04:16	10:19:16	12:32:20	14:40:20	16:24:24	17:58:24	19:30:44	21:11:40	23:08:36	01:24:28	03:39:24	05:51:20
23	08:00:20	10:15:20	12:28:24	14:36:24	16:20:28	17:54:28	19:26:48	21:07:44	23:04:40	01:20:32	03:35:28	05:47:24
24	07:56:24	10:11:24	12:24:28	14:32:28	16:16:32	17:50:32	19:22:52	21:03:48	23:00:44	01:16:36	03:31:32	05:43:28
25	07:52:28	10:07:28	12:20:32	14:28:32	16:12:36	17:46:36	19:18:56	20:59:52	22:56:48	01:12:40	03:27:36	05:39:32
26	07:48:32	10:03:32	12:16:36	14:24:36	16:08:40	17:42:40	19:15:00	20:55:56	22:52:52	01:08:44	03:23:40	05:35:36
27	07:44:36	09:59:36	12:12:40	14:20:40	16:04:44	17:38:44	19:11:04	20:52:00	22:48:56	01:04:48	03:19:44	05:31:40
28	07:40:40	09:55:40	12:08:44	14:16:44	16:00:48	17:34:48	19:07:08	20:48:04	22:45:00	01:00:52	03:15:48	05:27:44

ग्रहचार

मार्गी मंगल-पू.फा. में 20 सित.को 1:41 से उ.फा. में, मार्गी बुध-16 सित. को 22:32 से हस्त में व 24से 27:45से चित्रा में,मार्गी गुरु-ज्येष्ठा में, शुक्र-उ.फा. में 18 को 2:59 से हस्त में व 28 को 20:31 से चित्रा में, शनि- वक्री पू.षा. में 18 सित. को 14:18 से पू.षा. में मार्गी होगा। राहु- आर्द्रा में, केतु-पू.षा. में

आश्विन शुक्लपक्ष **परिधावी संवत्सर, वि. संवत् 2076, शक 1941** सू.उ. सू.अ. दि.मा. च.रा.प्र.

तिथि	वार	घ.प.	घ.मि.	नक्षत्र	घ.प.	घ.मि.	योग	घ.प.	घ.मि.	करण	घ.मि.	करण	घ.मि.	घ.मि.	घ.मि.	घ.प.	घ.मि.
01	रवि	34/58	20:14	हस्त	32/10	19:07	ब्रह्म	24/40	16:07	किंस्तु.	10:05	बव	20:14	06:15	18:07	29/40	तुला 29:45
02	सोम	26/27	16:50	चित्रा	25/35	16:29	ऐन्द्र	14/42	12:08	बालव	06:32	कौलव	16:50	06:15	18:06	29/38	
03	मङ्गल	19/10	13:55	स्वाती	20/15	14:21	वैधृति विष्कु.	05/40 57/50	08:31 29:23	गर	13:55	वणिज	24:48	06:15	18:05	29/35	
04	बुध	13/30	11:40	विशाखा	16/30	12:52	प्रीति	51/33	26:53	विष्टि	11:40	बव	22:56	06:16	18:04	29/30	वृश्चि. 07:10
05	गुरु	09/50	10:12	अनुराधा	14/45	12:10	आयु	46/55	25:02	बालव	10:12	कौलव	21:54	06:16	18:03	29/28	
06	शुक्र	08/18	09:35	ज्येष्ठा	15/08	12:19	सौभा	44/02	23:53	तैतिल	09:35	गर	21:43	06:16	18:02	29/25	धनु 12:19
07	शनि	08/55	09:51	मूल	17/32	13:18	शोभ	42/45	23:23	वणिज	09:51	विष्टि	22:23	06:17	18:01	29/20	
08	रवि	11/33	10:54	पू.षा.	21/55	15:03	अति	42/55	23:27	बव	10:54	बालव	23:46	06:17	18:00	29/17	मकर 21:36
09	सोम	15/52	12:38	उ.षा.	27/50	17:25	सुक	44/10	23:57	कौलव	12:38	तैतिल	25:44	06:17	17:59	29/15	
10	मङ्गल	21/20	14:50	श्रवण	34/45	20:12	धृति	46/08	24:45	गर	14:50	वणिज	28:04	06:18	17:58	29/10	
11	बुध	27/32	17:19	धनिष्ठा	42/15	23:12	शूल	48/28	25:41	विष्टि	17:19	बव	--	06:18	17:57	29/07	कुम्भ 09:41
12	गुरु	33/53	19:52	शत.	49/48	26:14	गण्ड	50/48	26:38	बव	06:35	बालव	19:52	06:19	17:56	29/02	
13	शुक्र	40/02	22:20	पू.भा.	57/05	29:09	वृद्धि	52/58	27:30	कौलव	09:06	तैतिल	22:20	06:19	17:55	29/00	मीन 22:26
14	शनि	45/45	24:37	उ.भा.	--	--	ध्रुव	54/43	28:12	गर	11:29	वणिज	24:37	06:19	17:54	28/57	
15	रवि	50/45	26:38	उ.भा.	03/53	07:53	व्याघा.	55/55	28:42	विष्टि	13:38	बव	26:38	06:20	17:53	28/53	

विवरण दक्षिणायन, उत्तरगोल, शरदऋतु (29 सितम्बर से 13 अक्टूबर 2019 ई. तक) गुरु एवं शुक्र पश्चिम

व्रतपर्व विवरण (भारतीय मानक समय में) दैनिकमुहूर्त्तादि विवरण (भद्रा, पञ्चक एवं त्रिपुष्कर, सर्वार्थसिद्धि योगादि)

29 शारदीयनवरात्रारम्भ, कलशस्थापन (अभिजित् मुहूर्त्त 11:50 से 12:38 तक), ध्वजारोहण ,महाराज अग्रसेन जयन्ती, अमृतसिद्धि/सर्वार्थसि. सूर्यो.से 19:07 तदुप. द्विपुष्कर सूर्योदय तक।

30 द्वितीया ब्रह्मचारिणी पूजन, वैधृतिपूर्व चित्रा में आभूषण-वस्त्र व्यापार, शिक्षण-प्रशिक्षण कार्य का मुहूर्त्त है।

01 भद्रा 24:48 से, तृतीया चंद्रघण्टा पूजा, स्वाती में 8:31 के बाद ऑप्रेशन, उग्रकार्य, तकनीकी कार्य का मुहूर्त्त है।

02 भद्रा 11:40 तक, विनायक चतुर्थी कूष्माण्डा पूजन/व्रत, महात्मागान्धी जयन्ती रिक्तोपरान्त विशाखा में आभूषणधातु-अग्नि कार्य,अनुराधा में गर्भाधान, शिल्प/वास्तु, व्यापारम्भ, वस्तुभूमिभवनवाहनकर्म का मुहूर्त्त है। अमृतसिद्धि/ सर्वार्थसि. 12:52 से सूर्यो.तक,

03 पंचमी स्कन्दमाता पूजन, उपाङ्गललितागौरीव्रत, अनुराधा में जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, शिक्षण-प्रशिक्षणकार्य, ऑप्रेशन, व्यापारम्भ, वस्तुभूमिभवनवाहनकर्म व ज्येष्ठा में अग्नि कार्य का मुहूर्त्त है।

04 षष्ठी कात्यायनी पूजन, सरस्वती आवाहन, ज्येष्ठा में पशु-पक्षी-मत्स्यादि कार्य व मूल में शस्त्र निर्माणादि कार्य का मुहूर्त्त है।

05 भद्रा 09:51 से 22:23 तक, सप्तमी कालरात्रि सरस्वती पूजन, मूल/पू.षा. में शनि केतु युति व राहु वेध के कारण मुहूर्त्त नहीं है।

06 अष्टमी महागौरी, महाष्टमीव्रत, श्रीदुर्गाष्टमी, महानिशापूजा, बलिकर्म, देवीत्रिरात्रव्रत प्रारम्भ, अन्नपूर्णापरिक्रमा, पू.षा. में शनि केतु युति व राहु वेध के कारण मुहूर्त्त नहीं है। सर्वार्थसि. 15:03 से सूर्योदय तक।

07 महानवमी सिद्धिदात्री व्रत, नवरात्र व्रतपारणा, मन्वादि नवमी, उ.षा. में रिक्तादोष के कारण मुहूर्ताभाव है। सि.यो./सर्वार्थसि. 17:25 से सूर्यो. तक,

08 भद्रा 28:4 से, पञ्चक आरम्भ 20.12 से, दुर्गाविसर्जन, विजयदशमी, दशहरा,अपराजिता/शमीपूजा, बलिहोमादि अर्पण, श्रवण में गर्भाधान,शिल्प/वास्तु औषधसेवन उग्रकार्य का मुहूर्त्त है

09 भद्रा 17:19 तक,पापांकुशा एकादशी (सर्वे.), धनिष्ठा में अन्नप्राशन,पशुपक्षीमत्स्यादि पालन, वास्तु कृषिकार्य,वस्तुभूमिभवनवाहनकर्म का मुहूर्त्त है।

10 गोद्वादशी, पद्मनाभद्वादशी, शतभिषा में जातकर्म, नामकरण, गर्भाधान, शिल्प/वास्तु कार्य,कृषिकार्य, वस्तुभूमिभवनवाहनकर्म का मुहूर्त्त है।

11 प्रदोषव्रत, सूर्य प्रवेश चित्रा में 7:26 से, पू.भा. में सूर्यवेध के कारण मुहूर्ताभाव है।

12 भद्रा 24:37 से, उ.भा. में भौमवेध मुहूर्त्ताभाव है।

13 भद्रा 13:38तक, शरत् पूर्णिमा, कौमदीमहोत्सव, कार्तिकस्नान प्रारम्भ, श्रीवाल्मीकि जयन्ती, श्रीसत्यनारायणव्रत, उ.भा. में भौमवेध व रेवती में भौमभुक्तदोष है। सर्वार्थसि. सूर्यो. से 07:53 तक

अपराजिता धारणमन्त्र- जयदे वरदे देवि दशम्यामपराजिते। धारयामि भुजे दक्षे जयलाभाभिवृद्धये।पूजा- **ॐ अपराजितायै नमः,ॐ क्रियाशक्त्यै नमः, ॐ उमायै नमः।**
प्रार्थना- चारुणा मुखपद्मेन विचित्र कनकोज्ज्वला। जया देवी भवे भक्ता सर्वकामान् ददातु मे। काञ्चनेन विचित्रेण केयूरेण विभूषिता। जयप्रदा महामाया शिव- भावितमानसा।। विजया तु महाभागा ददातु विजयं मम। हारेण सुविचित्रेण भास्वत्कनकमेखला। अपराजिता रुद्ररता करोतु विजयं मम।।इत्यादि मन्त्रों से अपराजिता का पूजन करें

सूर्यादि स्पष्ट ग्रह भा.स्टै.टा.प्रातः 5 बजकर 29 मिनट का राशि, अंश, कला, विकला में

दि.	स्पष्ट सूर्य				स्पष्ट चन्द्र				स्पष्ट मङ्गल				स्पष्ट बुध				स्पष्ट गुरु				स्पष्ट शुक्र				स्पष्ट शनि				स्पष्ट राहु			
29	5	11	25	59	5	14	43	21	5	2	32	21	5	29	32	18	7	23	46	59	5	23	47	49	8	19	52	29	2	19	5	36
30	5	12	24	55	5	29	50	5	5	3	10	54	6	1	1	21	7	23	55	2	5	25	2	24	8	19	53	35	2	19	2	25
01	5	13	23	53	6	14	38	14	5	3	49	28	6	2	29	29	7	24	3	14	5	26	17	00	8	19	54	46	2	18	59	14
02	5	14	22	53	6	29	0	32	5	4	28	3	6	3	56	39	7	24	11	33	5	27	31	35	8	19	56	4	2	18	56	4
03	5	15	21	54	7	12	53	20	5	5	6	39	6	5	22	52	7	24	20	00	5	28	46	10	8	19	57	28	2	18	52	53
04	5	16	20	58	7	26	16	26	5	5	45	15	6	6	48	7	7	24	28	34	6	0	0	46	8	19	58	57	2	18	49	42
05	5	17	20	3	8	9	12	15	5	6	23	52	6	8	12	22	7	24	37	16	6	1	15	21	8	20	0	32	2	18	46	31
06	5	18	19	10	8	21	45	00	5	7	2	30	6	9	35	35	7	24	46	6	6	2	29	56	8	20	2	13	2	18	43	21
07	5	19	18	19	9	3	59	40	5	7	41	9	6	10	57	44	7	24	55	2	6	3	44	31	8	20	4	0	2	18	40	10
08	5	20	17	29	9	16	1	30	5	8	19	49	6	12	18	48	7	25	4	6	6	4	59	6	8	20	5	53	2	18	36	59
09	5	21	16	41	9	27	55	26	5	8	58	29	6	13	38	44	7	25	13	17	6	6	13	41	8	20	7	51	2	18	33	49
10	5	22	15	56	10	9	45	49	5	9	37	11	6	14	57	27	7	25	22	35	6	7	28	16	8	20	9	55	2	18	30	38
11	5	23	15	12	10	21	36	17	5	10	15	53	6	16	14	55	7	25	31	59	6	8	42	50	8	20	12	5	2	18	27	27
12	5	24	14	30	11	3	29	39	5	10	54	36	6	17	31	3	7	25	41	31	6	9	57	25	8	20	14	20	2	18	24	16
13	5	25	13	49	11	15	27	56	5	11	33	20	6	18	45	45	7	25	51	9	6	11	11	59	8	20	16	41	2	18	21	6

नवरात्रि व्रतमाहात्म्य - नवरात्रव्रते शक्तस्त्रिरात्रं चैकरात्रकम्। व्रतं चरति यो भक्तस्तस्मै दास्यामि वाञ्छितम्।। **मूर्तिस्थापने विशेष:** -याम्यास्या शुभदा दुर्गा पूर्वास्या जयवर्धिनी। पश्चिमाभिमुखी नित्यं न स्थाप्या सौम्यदिङ्मुखी।। **पूजनकाल** -प्रातरावाहयेद्देवीं प्रातरेव प्रवेशयेत्। प्रातः प्रातश्च सम्पूज्य प्रातरेव विसर्जयेत्।। यस्तेवकस्यामथाष्टम्यां नवम्यामथ साधकः। पूजयेद्वरदां देवीं महाविभवविस्तरैः।। कन्या पूजन - एकैकां पूजयेत्कन्नामेकवृद्धया तथैव च। द्विगुणं विगुणं वाऽपि प्रत्येकं नवकं तु वा।। ऊँ दुर्गे दुर्गे रक्षिणि स्वाहा अथवा ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे इत्यस्य कामनार्थे जपः।

विजयदशमी- आश्विनस्य सिते पक्षे दशम्यां तारकोदये। स कालो विजयो ज्ञेयः सर्वकार्यार्थसिद्धये।। देवे दत्त्वा तु दानानि देवे दद्याच्च दक्षिणाम्। तत् सर्वं ब्राह्मणो दद्यादन्यथानिष्फलं भवेत्।। शमी प्रार्थना- शमी शमय मे पापं शमी लोहितकण्टका। धारिण्यर्जुन बाणानां रामस्य प्रियवादिनी।।

06 अक्टूबर 2019, अष्टमी, रविवार
सूर्योदयकालीन

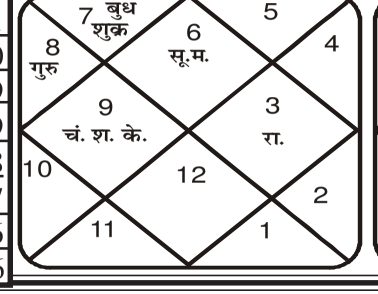

13 अक्टूबर 2019, पूर्णिमा, रविवार
सूर्योदयकालीन

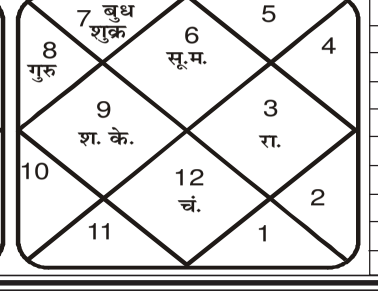

लग्नान्तकाल (भारतीय मानक समय में)

दि.	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह
29	07:36:44	09:51:44	12:04:48	14:12:48	15:56:52	17:30:52	19:03:12	20:44:08	22:41:04	00:56:56	03:11:52	05:23:48
30	07:32:48	09:47:48	12:00:52	14:08:52	15:52:56	17:26:56	18:59:16	20:40:12	22:37:08	00:53:00	03:07:56	05:19:52
01	07:28:52	09:43:52	11:56:56	14:04:56	15:49:00	17:23:00	18:55:20	20:36:16	22:33:12	00:49:04	03:04:00	05:15:56
02	07:24:56	09:39:56	11:53:00	14:01:00	15:45:04	17:19:04	18:51:24	20:32:20	22:29:16	00:45:08	03:00:04	05:12:00
03	07:21:00	09:36:00	11:49:04	13:57:04	15:41:08	17:15:08	18:47:28	20:28:24	22:25:20	00:41:12	02:56:08	05:08:04
04	07:17:04	09:32:04	11:45:08	13:53:08	15:37:12	17:11:12	18:43:32	20:24:28	22:21:24	00:37:16	02:52:12	05:04:08
05	07:13:08	09:28:08	11:41:12	13:49:12	15:33:16	17:07:16	18:39:36	20:20:32	22:17:28	00:33:20	02:48:16	05:00:12
06	07:09:12	09:24:12	11:37:16	13:45:16	15:29:20	17:03:20	18:35:40	20:16:36	22:13:32	00:29:24	02:44:20	04:56:16
07	07:05:16	09:20:16	11:33:20	13:41:20	15:25:24	16:59:24	18:31:44	20:12:40	22:09:36	00:25:28	02:40:24	04:52:20
08	07:01:20	09:16:20	11:29:24	13:37:24	15:21:28	16:55:28	18:27:48	20:08:44	22:05:40	00:21:32	02:36:28	04:48:24
09	06:57:24	09:12:24	11:25:28	13:33:28	15:17:32	16:51:32	18:23:52	20:04:48	22:01:44	00:17:36	02:32:32	04:44:28
10	06:53:28	09:08:28	11:21:32	13:29:32	15:13:36	16:47:36	18:19:56	20:00:52	21:57:48	00:13:40	02:28:36	04:40:32
11	06:49:32	09:04:32	11:17:36	13:25:36	15:09:40	16:43:40	18:16:00	19:56:56	21:53:52	00:09:44	02:24:40	04:36:36
12	06:45:36	09:00:36	11:13:40	13:21:40	15:05:44	16:39:44	18:12:04	19:53:00	21:49:56	00:05:48	02:20:44	04:32:40
13	06:41:40	08:56:40	11:09:44	13:17:44	15:01:48	16:35:48	18:08:08	19:49:04	21:46:00	00:01:52	02:16:48	04:28:44

ग्रहचार

मार्गी मंगल-उ.फा. में 10 सित. को 19:36 से हस्त में, मार्गी बुध- 03 अक्टू. को 27:11 से स्वा.में,13 को 29:50 से विशाखा में,मार्गी गुरु ज्येष्ठा में, मार्गीशुक्र- चित्रा में 9 अक्टू.को 13:56 से स्वाती में, मार्गीशनि- पू.षा. में, राहु- आर्द्रा में, केतु- पू.षा. में

कार्तिक कृष्णपक्ष — परिधावी संवत्सर, वि. संवत् 2076, शक 1941 — सू.उ. — सू.अ. — दि.मा. — च.रा.प्र.

तिथि	वार	घ.प.	घ.मि.	नक्षत्र	घ.प.	घ.मि.	योग	घ.प.	घ.मि.	करण	घ.मि.	करण	घ.मि.	घ.मि.	घ.मि.	घ.प.	घ.मि.
01	सोम	55/02	28:21	रेवती	10/00	10:20	हर्ष.	56/35	28:58	बालव	15:30	कौलव	28:21	06:20	17:52	28/50	मेष 10:20
02	मङ्गल	58/30	29:45	अश्विनी	15/23	12:30	वज्र	56/38	29:00	तैतिल	17:03	गर	29:45	06:21	17:51	28/45	
03	बुध	--	--	भरणी	20/00	14:21	सिद्धि	56/00	28:45	वणिज	18:16	विष्टि	--	06:21	17:50	28/42	वृष 20:46
03	गुरु	01/08	06:48	कृतिका	23/47	15:52	व्यति.	54/40	28:13	विष्टि	06:48	बव	19:09	06:21	17:50	28/42	
04	शुक्र	02/48	07:29	रोहिणी	26/33	16:59	वरी.	52/30	27:22	बालव	07:29	कौलव	19:36	06:22	17:49	28/38	मिथु. 29.23
05	शनि	03/23	07:44	मृगशिरा	28/15	17:40	परिघ	49/27	26:09	तैतिल	07:43	गर	19:37	06:22	17:48	28/35	
06	रवि	02/47	07:30	आर्द्रा	28/42	17:52	शिव	45/20	24:31	वणिज	07:30	विष्टि	19:08	06:23	17:47	28/30	
07 08	सोम	00:55 57/35	06:45 29:25	पुनर्वसु	27/53	17:32	सिद्ध	40/07	22:26	बव	06:45	बालव कौलव	18:05 29:25	06:23	17:46	28/27	कर्क 11:40
09	मङ्गल	52/52	27:33	पुष्य	25/35	16:38	साध्य	33/45	19:54	तैतिल	16:29	गर	27:33	06:24	17:45	28/22	
10	बुध	46/52	25:09	आश्ले.	22/03	15:13	शुभ	26/22	16:57	वणिज	14:21	विष्टि	25:09	06:24	17:45	28/22	सिंह 15:13
11	गुरु	39/40	22:17	मघा	17/13	13:18	शुक्ल	17/57	13:36	बव	11:43	बालव	22:17	06:25	17:44	28/17	
12	शुक्र	31/47	19:08	पू.फा.	11/27	11:00	ब्रह्म एन्द्र	08/48 59/03	09:56 30:03	कौलव	08:43	तैतिल गर	19:08 29:28	06:25	17:43	28/15	कन्या 16:23
13	शनि	23/22	15:47	उ.फा. हस्त	05/02 58/28	08:27 29:49	वैधृति	49/07	26:05	वणिज	15:47	विष्टि	26:05	06:26	17:42	28/10	
14	रवि	14/52	12:23	चित्रा	52/05	27:16	विष्कु	39/20	22:10	शकुनि	12:23	चतुष्प.	22:46	06:26	17:42	28/10	तुला 16:31
30 01	सोम	06/42 59/25	09:08 30:13	स्वाती	46/23	25:00	प्रीति	29/57	18:26	नाग	09:08	किंस्तु. बव	19:40 30:13	06:27	17:41	28/05	

टिप्पणी

दक्षिणायन, उत्तरगोल, शरदऋतु (14 अक्टूबर से 28 अक्टूबर 2019 ई. तक) — गुरु एवं शुक्र पश्चिम

व्रतपर्व विवरण (भारतीय मानक समय में) — दैनिकमुहूर्त्तादि विवरण (भद्रा, पञ्चक एवं त्रिपुष्कर, सर्वार्थसिद्धि योगादि)

14 पंचक 10:20 तक, दीपदान, रेवती में भौमभुक्तदोष व अश्विनी में जातकर्म, नामकरण, वस्तुभूमिभवनवाहन क्रयादि, वास्तु/कृषिकर्म, चिकित्साकर्म, व्यापार का मुहूर्त्त है।

15 अशून्यशयनव्रत,अश्विनी में उग्र-शस्त्रकार्य का मूहूर्त्त है। अमृतसिद्धि/सर्वार्थसि. सूर्यो. से 12:30 तक,

16 भद्रा 18:16 से, , भद्रापूर्व भरणी वस्तु विक्रय व कृषिकर्म का मुहूर्त है। सि.यो./सर्वार्थसि. 14:21 से सूर्यो. तक,

17 भद्रा 06:48 तक, संकष्टहर/करक/करवाचतुर्थीव्रत, चन्द्रोदय 20:25, **सूर्यप्र. तुला में 25:3 पर, पुण्यकाल अगले दिन मध्याह्न तक**, कृत्तिका/रोहिणी में रिक्ता व व्यतीपात दोष है।

18 रोहिणी में अन्नप्राशन, शिल्प/वास्तु, व्यापार, वाटिकारोपण एवं मृगशिरा में गर्भाधान का मुहूर्त्त है।

19 मृगशिरा में व्यापार, वाहनकार्य व शस्त्रनिर्माण का मुहूर्त्त है।

20 भद्रा 7:30 से 19:08 तक, आर्द्रा में राहुयुति, शनिकेतु वेध के कारण मुहूर्त्त नही है। त्रिपुष्कर 17:52 से सूर्यो.तक

21 अहोइ अष्टमी, राधा अष्टमी, पुनर्वसु में शिल्प/वास्तु कार्य एवं पुष्य में वस्तुभूमिभवनवाहन क्रयादि, वास्तु/कृषिकर्म, चिकित्साकर्म, व्यापार का मुहूर्त्त है। सर्वार्थसि. 17:32 से सूर्योदय तक।

22 पुष्य में रोगमुक्तस्नान व रिक्तादोष के कारण मुहूर्त्त नहीं है।

23 भद्रा 14:21 से 25:09 तक, सायनसूर्य वृश्चिक में,भद्रा पूर्व श्रेणा में वस्तुविक्रय, कृषिकर्म शुभ है।

24 रंभा एकादशी व्रत (सर्वेषाम्) गोवत्स द्वादशी, स्वाती मे सूर्य प्रवेश 18:00 पर, मघा में कृषिकर्म व पू.फा. में व्यापारारंभ का मुहूर्त है।

25 धन्वन्तरी जयन्ती, धनत्रयोदशी,(धनतेरस), उ.फा. में जातकर्म, नामकरण, वस्तुभूमिभवनवाहन क्रयादि, वास्तु/कृषि-चिकित्सा, व्यापार का मुहूर्त्त है। सि.यो./सर्वार्थसि. सूर्यो. से 11:00 तक।

26 भद्रा आरम्भ 15:47 से 26:05 तक, सायं दीपदान, नरकचतुर्दशी, यमदीपदान, हस्त में भौमयुति व मासान्तदोष के कारण मुहूर्ताभाव है।।

27 हनुमान् जयन्ती, छोटी दिवाली, माषपत्रभक्षण, यमतर्पण, प्रेतचतुर्दशी, महाकालीपूजा (रात्रि में), विशाखा में मासान्तदोष के कारण मूहूर्त्त नहीं है।

28 सोमवतीअमावस्या स्नानादि, दीपावली, महालक्ष्मीपूजन, उल्काभ्रमण, प्रातः यमतर्पण, प्रातः हनुमत् पूजन, सायं लक्ष्मी-कुबेर-इन्द्रपूजा, सायं दीपदान, दरिद्रा निस्सारण,गोक्रीडा, गोवर्धन/बलिपूजा, आकाशदीपप्रारंभ अन्नकूट, द्यूतक्रीडा मासान्तदोष मुहूर्ताभाव है।

दीपावली पूजन विशेष- दिवातत्र न भोक्तव्यमृते बालातुराज्जनात्। प्रदोषसमये लक्ष्मीं पूजयित्वा ततः क्रमात्।। दीपवृक्षाश्च वातव्या शक्त्या देवगृहेषु च। **लक्ष्मी प्राप्ति हेतु उपाय -** श्रीसूक्त का ब्राह्मणों द्वारा सहस्रपाठ श्रीयन्त्रार्चन के साथ करवाने से/दुर्गासप्तशती में लक्ष्मी मन्त्र का सम्पुटित पाठ से व्यापार में वृद्धि होती है। मन्त्र का जाप करके श्रीसूक्त या निम्नांकित संक्षिप्त लक्ष्मीस्तोत्र का पाठ करने से इष्टलाभ होता है। **मन्त्र :-ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः।।** स्तोत्ररूप में प्रार्थना - **त्रैलोक्यपूजिते देवी कमले विष्णुवल्लभे। यस्य त्वमचला कृष्णे तथा भव मयि स्थिरा ।। ईश्वरी कमला लक्ष्मीरचला भूति हरिप्रिया । पद्मा पद्मालया सम्पदुच्चैः श्रीपद्मधारिणी द्वादशैतानि नामानि लक्ष्मीं सम्पूज्य यः पठेत् । स्थिरा लक्ष्मी भवेत्तस्य पुत्रदारादिभिः सह ।।** लक्ष्मीप्राप्ति के लिए कुबेर मन्त्र - **ॐ वक्षाय कुबेराय वैश्रवणाय धनधान्याधिपतये समृद्धिं मे देहि, दापय दापय स्वाहा।** इस मन्त्र के जाप के बाद लाल पुष्पों से लक्ष्मी माता का ध्यान करें एवं कुबेर जी के निम्न मूल मन्त्र का जाप भी करें - **ॐ श्रीं ॐ ह्रीं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं वित्तेश्वराय नमः।** इस मन्त्र का जाप प्रतिदिन करें ।

सूर्यादि स्पष्ट ग्रह भा.स्टै.टा.प्रातः 5 बजकर 29 मिनट का राशि, अंश, कला, विकला में

दि.	स्पष्ट सूर्य				स्पष्ट चन्द्र				स्पष्ट मङ्गल				स्पष्ट बुध				स्पष्ट गुरु				स्पष्ट शुक्र				स्पष्ट शनि				स्पष्ट राहु			
14	5	26	13	11	11	27	32	32	5	12	12	5	6	19	58	56	7	26	0	53	6	12	26	33	8	20	19	7	2	18	17	55
15	5	27	12	35	0	9	44	24	5	12	50	52	6	21	10	29	7	26	10	45	6	13	41	7	8	20	21	39	2	18	14	44
16	5	28	12	1	0	22	4	17	5	13	29	39	6	22	20	16	7	26	20	42	6	14	55	41	8	20	24	16	2	18	11	33
17	5	29	11	29	1	4	33	7	5	14	8	27	6	23	28	8	7	26	30	46	6	16	10	15	8	20	26	59	2	18	8	23
18	6	0	11	00	1	17	12	8	5	14	47	17	6	24	33	56	7	26	40	56	6	17	24	49	8	20	29	47	2	18	5	12
19	6	1	10	32	2	0	3	7	5	15	26	7	6	25	37	27	7	26	51	12	6	18	39	23	8	20	32	41	2	18	2	1
20	6	2	10	7	2	13	8	17	5	16	4	59	6	26	38	28	7	27	1	35	6	19	53	58	8	20	35	40	2	17	58	50
21	6	3	9	45	2	26	30	11	5	16	43	52	6	27	36	46	7	27	12	3	6	21	8	32	8	20	38	44	2	17	55	40
22	6	4	9	24	3	10	11	11	5	17	22	46	6	28	32	3	7	27	22	37	6	22	23	6	8	20	41	53	2	17	52	29
23	6	5	9	6	3	24	12	48	5	18	1	42	6	29	23	59	7	27	33	17	6	23	37	40	8	20	45	8	2	17	49	18
24	6	6	8	50	4	8	35	1	5	18	40	38	7	0	12	16	7	27	44	3	6	24	52	14	8	20	48	28	2	17	46	7
25	6	7	8	36	4	23	15	23	5	19	19	36	7	0	56	28	7	27	54	54	6	26	6	49	8	20	51	54	2	17	42	57
26	6	8	8	25	5	8	8	44	5	19	58	35	7	1	36	9	7	28	5	51	6	27	21	23	8	20	55	24	2	17	39	46
27	6	9	8	16	5	23	7	18	5	20	37	35	7	2	10	52	7	28	16	54	6	28	35	57	8	20	58	59	2	17	36	35
28	6	10	8	8	6	8	1	49	5	21	16	36	7	2	40	3	7	28	28	1	6	29	50	32	8	21	2	40	2	17	33	24

कार्तिक में विशेष - कार्तिकं सकलं मासं नित्यस्नायी जितेन्द्रियः। जपन्हविष्यभुक्छान्तः सर्वपापैः प्रमुच्यते। **त्रयोदश्यां दीपदानमन्त्रः** - मृत्युना पाशदण्डाभ्यां कालेन यमया सह त्रयोदश्यां दीपदानात्सूर्यजः प्रीयतां ममेति।। कार्त्तिकस्यासितेपक्षे त्रयोदश्यां निशामुखे। यमदीपं बहिर्दद्यादपमृत्युर्विनश्यति।। इस मन्त्र से त्रयोदशी की संध्या में असमय मृत्यु निवारण हेतु घर के बाहर चतुर्मुख दीपदान करना चाहिए। **दीपावली में कृत्य -** प्रत्यूष आश्वयुग्दर्शे कृताभ्यंगादिमङ्गलः। भक्त्या प्रपूजयेद्देवीमलक्ष्मीविनिवृत्तये।। अर्द्धरात्रे भवत्येव लक्ष्मीराश्रयितुं गृहान्। अतः स्वलंकृता लिप्ता दीपैर्जाग्रज्जनोत्सवाः।। **दरिद्रा निस्सारण कृत्य -** एवं गते निशीथे तु जने निद्रार्धलोचने। तावन्नगरनारीभिः शूर्पडिंडिमवादनैः।। निष्कास्यते प्रहृष्टाभिरलक्ष्मीः स्वगृहाङ्गणात्।। त्रयोदशी में स्वास्थ्य लाभ के लिए धन्वन्तरि पूजा व यम के लिए दीपदान करना चाहिए। चतुर्दशी को प्रातः तर्पण व सायंकाल दीपदान पूर्वक हनुमत् पूजा करनी चाहिए। दीपावली के दिन सायं १९.१८ से २१.२० व १.४७ से ३.५९ रात्रि में लक्ष्मीगणेशकुबेर श्रीयन्त्रार्चन, श्रीसूक्त पाठ, कनकधारा, गोपाल सहस्रनाम का पाठ करना चाहिए।

21 अक्टूबर 2019, अष्टमी, सोमवार 28 अक्टूबर 2019, अमावस्या, सोमवार

सूर्योदयकालीन

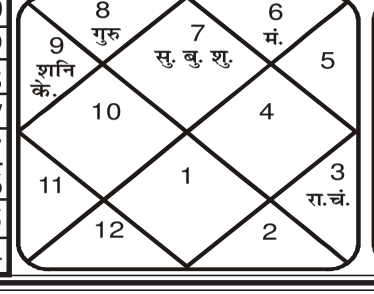

सूर्योदयकालीन

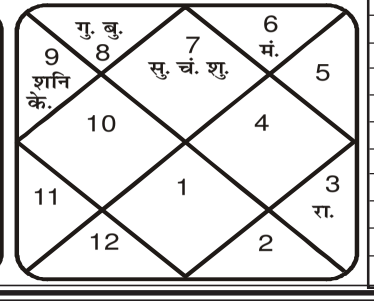

लग्नान्तकाल (भारतीय मानक समय में)

दि.	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह
14	06:37:44	08:52:44	11:05:48	13:13:48	14:57:52	16:31:52	18:04:12	19:45:08	21:42:04	23:57:56	02:12:52	04:24:48
15	06:33:48	08:48:48	11:01:52	13:09:52	14:53:56	16:27:56	18:00:16	19:41:12	21:38:08	23:54:00	02:08:56	04:20:52
16	06:29:52	08:44:52	10:57:56	13:05:56	14:50:00	16:24:00	17:56:20	19:37:16	21:34:12	23:50:04	02:05:00	04:16:56
17	06:25:56	08:40:56	10:54:00	13:02:00	14:46:04	16:20:04	17:52:24	19:33:20	21:30:16	23:46:08	02:01:04	04:13:00
	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या
18	08:37:00	10:50:04	12:58:04	14:42:08	16:16:08	17:48:28	19:29:24	21:26:20	23:42:12	01:57:08	04:09:04	06:22:00
19	08:33:04	10:46:08	12:54:08	14:38:12	16:12:12	17:44:32	19:25:28	21:22:24	23:38:16	01:53:12	04:05:08	06:18:04
20	08:29:08	10:42:12	12:50:12	14:34:16	16:08:16	17:40:36	19:21:32	21:18:28	23:34:20	01:49:16	04:01:12	06:14:08
21	08:25:12	10:38:16	12:46:16	14:30:20	16:04:20	17:36:40	19:17:36	21:14:32	23:30:24	01:45:20	03:57:16	06:10:12
22	08:21:16	10:34:20	12:42:20	14:26:24	16:00:24	17:32:44	19:13:40	21:10:36	23:26:28	01:41:24	03:53:20	06:06:16
23	08:17:20	10:30:24	12:38:24	14:22:28	15:56:28	17:28:48	19:09:44	21:06:40	23:22:32	01:37:28	03:49:24	06:02:20
24	08:13:24	10:26:28	12:34:28	14:18:32	15:52:32	17:24:52	19:05:48	21:02:44	23:18:36	01:33:32	03:45:28	05:58:24
25	08:09:28	10:22:32	12:30:32	14:14:36	15:48:36	17:20:56	19:01:52	20:58:48	23:14:40	01:29:36	03:41:32	05:54:28
26	08:05:32	10:18:36	12:26:36	14:10:40	15:44:40	17:17:00	18:57:56	20:54:52	23:10:44	01:25:40	03:37:36	05:50:32
27	08:01:36	10:14:40	12:22:40	14:06:44	15:40:44	17:13:04	18:54:00	20:50:56	23:06:48	01:21:44	03:33:40	05:46:36
28	07:57:40	10:10:44	12:18:44	14:02:48	15:36:48	17:09:08	18:50:04	20:47:00	23:02:52	01:17:48	03:29:44	05:42:40

ग्रहचार

मार्गी मंगल- हस्त में, मार्गी बुध- विशाखा में, मार्गी गुरु- ज्येष्ठा में,मार्गी शुक्र-स्वाती में 20 अक्टू.को 07:25से विशाखा में, मार्गीशनि- पू.षा. में, राहु- आर्द्रा में, केतु- पू.षा. में

कार्तिक शुक्लपक्ष — परिधावी संवत्सर, वि. संवत् 2076, शक 1941

दक्षिणायन, दक्षिणगोल, शरदऋतु (29 अक्टूबर से 12 नवम्बर 2019 ई. तक) — गुरु एवं शुक्र पश्चिम

तिथि	वार	घ.प.	घ.मि.	नक्षत्र	घ.प.	घ.मि.	योग	घ.प.	घ.मि.	करण	घ.मि.	करण	घ.मि.	सू.उ. घ.मि.	सू.अ. घ.मि.	दि.मा. घ.प.	च.रा.प्र. घ.मि.	दिनांक	व्रतपर्व विवरण (भारतीय मानक समय में) / दैनिकमुहूर्त्तादि विवरण (भद्रा, पञ्चक एवं त्रिपुष्कर, सर्वार्थसिद्धि योगादि)
02	मङ्गल	53/23	27:48	विशाखा	41/50	23:11	आयु	21/27	15:02	बालव	17:00	कौलव	27:48	06:27	17:40	28/02	वृश्चि. 17:35	29	यमपूजा,भ्रतृद्वितीया (भैयादूज) भगिनी गृह भोजन, विशाखा में उग्र-अग्नि-शस्त्र कार्य के मुहूर्त्त है। त्रिपुष्कर सूर्यो.से 23:11तक
03	बुध	48/55	26:02	अनुराधा	38/48	21:59	सौभा	14/03	12:05	तैतिल	14:55	गर	26:02	06:28	17:40	28/00		30	त्रिलोचनगौरीव्रत,अनुराधा में जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, वस्तुभूमिभवनवाहनादिकर्म, व्यापारारम्भ, वृक्षारोपण, पशुपक्षीमत्स्यादिपालन का मुहूर्त है। अमृतसिद्धि/सर्वार्थसि. सूर्यो.21:59 तक,
04	गुरु	46/23	25:01	ज्येष्ठा	37/37	21:31	शोभ	08/05	09:42	वणिज	13:31	विष्टि	25:01	06:28	17:39	27/57	धनु 21:31	31	भद्रा 13:31 से 25:01 तक, नागचतुर्थी, दूर्वागणपतिव्रत, विनायकचतुर्थी, त्रिदिवसीय सूर्यषष्ठी व्रतारम्भ, प्रतिहारिषष्ठीव्रत का संयम,ज्येष्ठा में रिक्तादोष के कारण मुहूर्ताभाव है।
05	शुक्र	45/55	24:51	मूल	38/27	21:52	अति	03/40	07:57	बव	12:56	बालव	24:51	06:29	17:38	27/53		01	नाग/सौभाग्यपञ्चमी, सूर्यषष्ठीव्रत द्वितीय दिन, मूल में पुंसवन,सीमन्त,वाटिका/कृषि/शिल्प/वास्तु कार्य शुभ है।
06	शनि	47/32	25:31	पू.षा.	41/17	23:01	सुक. धृति	00:52 59/42	06:51 30:23	कौलव	13:11	तैतिल	25:31	06:30	17:38	27/50	मकर 29:26	02	स्कन्धषष्ठी, सूर्यषष्ठीव्रत (छठपूजा सायं कालिक अर्घदान)प्रतिहारिषष्ठीव्रत (सायं कालीन अर्घ), पू.षा. में शनिकेतु युति व राहुवेध मुहूर्त्ताभाव है।
07	रवि	51/05	26:56	उ.षा.	46/02	24:55	शूल	--	--	गर	14:13	वणिज	26:56	06:30	17:37	27/48		03	भद्रा 26:56 से,प्रतिहारिषष्ठी का प्रातःकालीन अर्घ्यदान, कल्पादि सप्तमी, सूर्यषष्ठी व्रत की पारणा,उ.षा. में पुंसवन, सीमन्त, व्यापारारम्भ, वास्तुभूमिकर्म, पशुपक्षीमत्स्यादिपालन शुभ है। सर्वार्थसि./त्रिपुष्कर सूर्यो. से 24:55 तक
08	सोम	56/05	28:57	श्रवण	52/10	27:23	शूल	00:00	06:31	विष्टि	15:56	बव	28:57	06:31	17:37	27/45		04	भद्रा 15:56 तक, पंचकारंभ 27:23 से, दुर्गाष्टमी, गोपाष्टमी, कार्तवीर्योत्पत्ति, भद्रोपरान्त श्रवण में गर्भाधान,वास्तुकर्म, वस्तुभूमिभवनवाहनादिकर्म शुभ है। सि.यो./सवार्थसि. सूर्यो. से 27:23 तक,
09	मङ्गल	--	--	धनिष्ठा	59/20	30:15	गण्ड	01/13	07:00	बालव	18:09	कौलव	--	06:31	17:36	27/43	कुम्भ 16:47	05	अक्षयनवमी, कूष्माण्डनवमी, सतयुगादि, विष्णुत्रिरात्रव्रत, धात्रीपूजन, अयोध्या मथुरा परिक्रमा, धनिष्ठा में रिक्तादोष के कारण मुहूर्त्त नहीं है।
09	बुध	02/05	07:22	शत.	--	--	वृद्धि	03/08	07:47	कौलव	07:22	तैतिल	27:41	06:32	17:36	27/40		06	सूर्य प्रवेश विशाखा में 26:41 पर, शतभिषा में सूर्यवेध मुहूर्त्ताभाव है।
10	गुरु	08/25	09:55	शत.	06/45	09:15	ध्रुव	05/20	08:41	गर	09:55	वणिज	20:39	06:33	17:35	27/35	मीन 29:29	07	भद्रा 20:39 से, शतभिषा में सूर्यवेध व पू.भा. में भौमवेध मुहूर्त्ताभाव है।
11	शुक्र	14/37	12:24	पू.भा.	14/07	12:12	व्याघा.	07/30	09:33	विष्टि	12:24	बव	25:32	06:33	17:35	27/35		08	भद्रा समाप्ति 12:24 पर, हरिप्रबोधिनी/वरुथनी/देवउठनी एकादशीव्रत सर्वेषाम्, तुलसीविवाह, भीष्मपञ्चकारम्भ, श्रीविष्णुत्रिरात्रनिवृत्ति, पू.भा. में भौमवेध
12	शनि	20/15	14:40	उ.भा.	20/52	14:55	हर्ष.	09/10	10:14	बालव	14:40	कौलव	27:36	06:34	17:34	27/30		09	नारायण द्वादशी, तुलसीविवाह, चातुर्मास समाप्ति, मन्वादि द्वादशी, शनिप्रदोष, उ.भा. में भौमभुक्त दोष है।
13	रवि	24/57	16:33	रेवती	26/50	17:18	वज्र	10/15	10:40	तैतिल	16:33	गर	29:17	06:34	17:34	27/30	मेष 17:18	10	पञ्चक 17:18 तक,श्रीमहाविष्णुपूजा, वैकुण्ठचतुर्दशी, प्रातः मणिकर्णिका स्नान, रेवती में पुंसवन, सीमन्त, वाटिका/कृषि वस्तुभूमिभवनवाहन कार्य शुभ है। सर्वार्थसि.17:18 से सूर्योदय तक।
14	सोम	28/38	18:02	अश्विनी	31/45	19:17	सिद्धि	10/33	10:48	वणिज	18:02	विष्टि	30:33	06:35	17:33	27/25		11	भद्रा 18:02 से 30:33 तक, काशीविश्वनाथप्रतिष्ठा, पाषाणचतुर्दशी, पूर्णिमा/सत्यनारायणव्रत, रिक्तादोष के कारण मुहूर्ताभाव है।
15	मङ्गल	31/10	19:04	भरणी	35/37	20:51	व्यति.	10/00	10:36	बव	19:04	बालव	--	06:36	17:33	27/23	वृष 27:11	12	स्नान-दान-कार्तिकपूर्णिमा,व्रतोद्यापन,गुरुनानकजयन्ती,ज.गु.निम्बार्कज., त्रिपुरोत्सव तुलसी उद्यापन, पुष्करमेला, देवदीपावली ,भीष्मपञ्चकसमाप्ति, भरणी में व्यतीपात दोष मुहूर्त्त है। सर्वार्थसि. 20:51 से सूर्योदय तक।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चै। इस नवार्ण मन्त्र का जप होम कार्य सर्वकार्य साधक होता है। विशेष- कन्याओं की रक्षा,महिलाओं का सम्मान करना ही शक्ति की मुख्य आराधना है यही शक्ति का मूलाधार है। अत: नवरात्रि काल में प्रतिदिन कन्याओं की पूजा करना, निर्धन कन्याओं के लिए वस्त्र पुस्तकादि का दान, अपंगों एवं भूखों को भोजन करवाना , अस्वस्थों के लिए दवा बाँटने से देवी की कृपा निरन्तर बनी रहती है।

यात्रा में शुभशकुन - विप्र, दो अश्व, गजमद, फल, अन्न, दुग्ध, गोदधि, सर्षप, कमल, निर्मवस्त्र, वाद्य, वेश्या, मयूर, नकुल, सिंहासन, शस्त्र, मांस, दीप्ताग्नि, मत्स्य, ससुत-स्त्री, गोरी कन्या, धोबी, कार्यसिद्धि वाक्य, जलपूर्णघट। यात्रा पश्चात् रिक्तघट यात्रा के समय देखने में शुभ है।

सूर्यादि स्पष्ट ग्रह भा.स्टै.टा.प्रात: 5 बजकर 29 मिनट का राशि, अंश, कला, विकला में

दि.	स्पष्ट सूर्य				स्पष्ट चन्द्र				स्पष्ट मङ्गल				स्पष्ट बुध				स्पष्ट गुरु				स्पष्ट शुक्र				स्पष्ट शनि				स्पष्ट राहु			
29	6	11	8	3	6	22	43	1	5	21	55	38	7	3	3	10	7	28	39	15	7	1	5	6	8	21	6	26	2	17	30	14
30	6	12	8	00	7	7	3	17	5	22	34	41	7	3	19	37	7	28	50	33	7	2	19	40	8	21	10	16	2	17	27	3
31	6	13	7	58	7	20	57	45	5	23	13	45	7	3	28	47	7	29	1	56	7	3	34	14	8	21	14	11	2	17	23	52
01	6	14	7	58	8	4	24	38	5	23	52	50	7	3	30	2	7	29	13	25	7	4	48	47	8	21	18	12	2	17	20	41
02	6	15	8	00	8	17	24	53	5	24	31	57	7	3	22	47	7	29	24	58	7	6	3	21	8	21	22	17	2	17	17	31
03	6	16	8	3	9	0	1	35	5	25	11	4	7	3	6	30	7	29	36	36	7	7	17	54	8	21	26	27	2	17	14	20
04	6	17	8	8	9	12	19	9	5	25	50	12	7	2	40	48	7	29	48	18	7	8	32	26	8	21	30	41	2	17	11	9
05	6	18	8	15	9	24	22	39	5	26	29	22	7	2	5	27	8	0	0	6	7	9	46	58	8	21	35	0	2	17	7	58
06	6	19	8	23	10	6	17	22	5	27	8	32	7	1	20	30	8	0	11	57	7	11	1	30	8	21	39	24	2	17	4	48
07	6	20	8	33	10	18	8	18	5	27	47	44	7	0	26	18	8	0	23	53	7	12	16	2	8	21	43	52	2	17	1	37
08	6	21	8	44	10	29	59	59	5	28	26	56	6	29	23	38	8	0	35	54	7	13	30	32	8	21	48	24	2	16	58	26
09	6	22	8	57	11	11	56	12	5	29	6	10	6	28	13	44	8	0	47	58	7	14	45	3	8	21	53	1	2	16	55	15
10	6	23	9	11	11	23	59	56	5	29	45	25	6	26	58	17	8	1	0	7	7	15	59	33	8	21	57	43	2	16	52	5
11	6	24	9	27	0	6	13	16	6	0	24	41	6	25	39	22	8	1	12	20	7	17	14	3	8	22	2	28	2	16	48	54
12	6	25	9	45	0	18	37	25	6	1	3	58	6	24	19	25	8	1	24	36	7	18	28	32	8	22	7	18	2	16	45	43

बलिपूजा -कृत्वैतत्सर्वमेवेह रात्रौ दैत्यपतेर्बलेः। पूजां कुर्यान्नृपासाक्षाद्भूमौ मण्डलके शुभे।। बलिमालिख्य दैत्येन्द्रं वर्णकैः पञ्चरङ्गकैः। गृहस्य मध्ये शालायां विशालायां ततोऽर्चयेत्।। लोकश्चापि गृहस्यांतः शय्यायां शुक्लतण्डुलैः। संस्थाप्य बलिराजानं फलैः पुष्पैस्तु पूजयेत्।। बलिराज नमस्तुभ्यं दैत्यदानववन्दित। इन्द्रशत्रोऽमराराते विष्णुसान्निध्यदो भव।।

पञ्चक में विशेष - वासवोत्तरदलादिपञ्चके याम्यदिग्गमनगेहगोपनम्। प्रेतदाहतृणकाष्ठसंग्रहणम् शय्यकाविरचनं च वर्जयेत्। अर्थात् धनिष्ठा के उत्तरार्द्ध यानि अंतिम दो चरण से लेकर अगले पाँच नक्षत्रों को पञ्चक कहते हैं। **पञ्चक में त्याज्य -** दक्षिण दिशा की यात्रा, गृहच्छादन (छत इत्यादि डालना या छाया करना) प्रेत (मृतक व्यक्ति) का दाह, घास अथवा लकड़ी-कंडा का संग्रह और चारपाई बुनना वर्जित है। अत: अन्य कार्यों में पञ्चक का विचार न करें।

04 नवम्बर 2019, अष्टमी, सोमवार
सूर्योदयकालीन

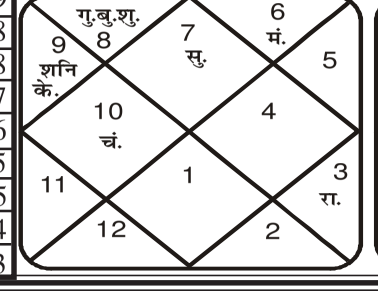

12 नवम्बर 2019, पूर्णिमा, मंगलवार
सूर्योदयकालीन

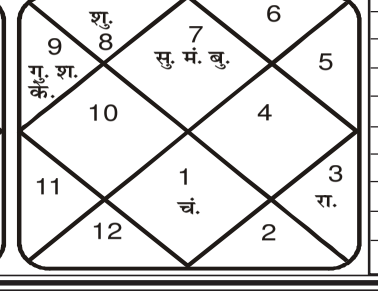

लग्नान्तकाल (भारतीय मानक समय में)

दि.	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या
29	07:53:44	10:06:48	12:14:48	13:58:52	15:32:52	17:05:12	18:46:08	20:43:04	22:58:56	01:13:52	03:25:48	05:38:44
30	07:49:48	10:02:52	12:10:52	13:54:56	15:28:56	17:01:16	18:42:12	20:39:08	22:55:00	01:09:56	03:21:52	05:34:48
31	07:45:52	09:58:56	12:06:56	13:51:00	15:25:00	16:57:20	18:38:16	20:35:12	22:51:04	01:06:00	03:17:56	05:30:52
01	07:41:56	09:55:00	12:03:00	13:47:04	15:21:04	16:53:24	18:34:20	20:31:16	22:47:08	01:02:04	03:14:00	05:26:56
02	07:38:00	09:51:04	11:59:04	13:43:08	15:17:08	16:49:28	18:30:24	20:27:20	22:43:12	00:58:08	03:10:04	05:23:00
03	07:34:04	09:47:08	11:55:08	13:39:12	15:13:12	16:45:32	18:26:28	20:23:24	22:39:16	00:54:12	03:06:08	05:19:04
04	07:30:08	09:43:12	11:51:12	13:35:16	15:09:16	16:41:36	18:22:32	20:19:28	22:35:20	00:50:16	03:02:12	05:15:08
05	07:26:12	09:39:16	11:47:16	13:31:20	15:05:20	16:37:40	18:18:36	20:15:32	22:31:24	00:46:20	02:58:16	05:11:12
06	07:22:16	09:35:20	11:43:20	13:27:24	15:01:24	16:33:44	18:14:40	20:11:36	22:27:28	00:42:24	02:54:20	05:07:16
07	07:18:20	09:31:24	11:39:24	13:23:28	14:57:28	16:29:48	18:10:44	20:07:40	22:23:32	00:38:28	02:50:24	05:03:20
08	07:14:24	09:27:28	11:35:28	13:19:32	14:53:32	16:25:52	18:06:48	20:03:44	22:19:36	00:34:32	02:46:28	04:59:24
09	07:10:28	09:23:32	11:31:32	13:15:36	14:49:36	16:21:56	18:02:52	19:59:48	22:15:40	00:30:36	02:42:32	04:55:28
10	07:06:32	09:19:36	11:27:36	13:11:40	14:45:40	16:18:00	17:58:56	19:55:52	22:11:44	00:26:40	02:38:36	04:51:32
11	07:02:36	09:15:40	11:23:40	13:07:44	14:41:44	16:14:04	17:55:00	19:51:56	22:07:48	00:22:44	02:34:40	04:47:36
12	06:58:40	09:11:44	11:19:44	13:03:48	14:37:48	16:10:08	17:51:04	19:48:00	22:03:52	00:18:48	02:30:44	04:43:40

ग्रहचार

मार्गी मंगल- हस्त में 31 अक्टू. को 09:17 से चित्रा में, मार्गी बुध- 30 अक्टू. को 06:05 से अनु.में 02 नव.को 10:32से विशा. में वक्री, मार्गी गुरु- ज्येष्ठा में व 4 नव.को 29:17 से मूल में, मार्गीशुक्र- विशाखा में 21 अक्टू.को 00:53 से अनुराधा में व 10 को 18:30 से ज्येष्ठा में, मार्गीशनि- पू.षा. में, राहु- आर्द्रा में, केतु- पू.षा. में

मार्गशीर्ष कृष्णपक्ष परिधावी संवत्सर, वि. संवत् 2076, शक 1941

दक्षिणायन, दक्षिणगोल, शरद/हेमन्त ऋतु (13 नवम्बर से 26 नवम्बर 2019 ई. तक) — गुरु एवं शुक्र पश्चिम

तिथि	वार	घ.प.	घ.मि.	नक्षत्र	घ.प.	घ.मि.	योग	घ.प.	घ.मि.	करण	घ.मि	करण	घ.मि.	सू.उ. घ.मि.	सू.अ. घ.मि.	दि.मा. घ.प.	च.रा.प्र. घ.मि.	दिनांक	व्रतपर्व विवरण (भारतीय मानक समय में)
01	बुध	32/45	19:42	कृतिका	38/32	22:01	वरी.	08/40	10:04	बालव	07:23	कौलव	19:42	06:36	17:33	27/23		13	कृत्तिका में व्यापारारम्भ, वस्तुभूमिभवनवाहन-कृषि-पशुपक्षीमत्स्यादिपालनकार्य शुभ है। सि.यो. सूर्यो.से 22:01 तक,
02	गुरु	33/15	19:55	रोहिणी	40/25	22:47	परिघ	06/30	09:13	तैतिल	07:48	गर	19:55	06:37	17:32	27/18		14	बालदिवस, रोहिणी में पुंसवन, सीमन्त, जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन का मुहूर्त्त है।
03	शुक्र	32/50	19:46	मृगशिरा	41/25	23:12	शिव	03/35	08:04	वणिज	07:55	विष्टि	19:46	06:38	17:32	27/15	मिथु. 11:02	15	भद्रा 07:55 से 19:46 तक, सौभाग्यसुन्दरी व्रत,मृगशिरा में भद्रापूर्व वाटिकारोपण का मुहूर्त है।
04	शनि	31/33	19:15	आर्द्रा	41/35	23:16	सिद्ध साध्य	00:00 55/43	06:38 28:55	बव	07:30	बालव	19:15	06:38	17:32	27/15		16	**सूर्यप्रवेश वृश्चिक में 24:51 पर, पु.का. अगले दिन मध्याह्न तक,** संकष्टचतुर्थी व्रत, चंद्रोदय 20:52, आर्द्रा में राहुयुति,शनिकेतुवेध मुहूर्ताभाव है।
05	रवि	29/20	18:23	पुनर्वसु	40/50	22:59	शुभ	50/40	26:55	कौलव	06:49	तैतिल गर	18:23 29:46	06:39	17:31	27/10	कर्क 17:05	17	पुन. में पुंसवन,सीमन्त, आभूषण, वस्तुभूमिभवनवाहनक्रयविक्रय का मुहूर्त्त है। सर्वार्थसि. 22:59 से सूर्योदय तक।
06	सोम	26/15	17:10	पुष्य	39/12	22:21	शुक्ल	44/58	24:39	वणिज	17:10	विष्टि	28:23	06:40	17:31	27/07		18	भद्रा17:10 से 28:23 तक, भद्रापूर्व पुष्य में जातकर्म,नामकरण, वस्तुभूमिभवनवाहनक्रय विक्रय मुहूर्त्त है।
07	मङ्गल	22/18	15:36	आश्ले.	36/42	21:22	ब्रह्म	38/32	22:06	बव	15:36	बालव	26:39	06:41	17:31	27/05	सिंह 21:22	19	सावित्री कल्प, रुक्मणी, अष्टमी, कालभैरवाष्टमी, श्लेषा में उग्र-शस्त्र-अग्निकार्य का मुहूर्त्त है। सर्वार्थसि. सूर्यो. से 21:22 तक
08	बुध	17/30	13:41	मघा	33/27	20:04	ऐन्द्र	31/30	19:17	कौलव	13:41	तैतिल	24:35	06:41	17:31	27/05		20	अनुराधा में सूर्यप्रवेश 8:12 पर, रिक्तापूर्व मघा में अग्निकर्म, कृषिकर्म का मुहूर्त्त है।
09	गुरु	11/58	11:29	पू.फा.	29/28	18:29	वैधृति	23/50	16:14	गर	11:29	वणिज	22:15	06:42	17:30	27/00	कन्या 24:03	21	भद्रा 22:15से, पू.फा. में वैधृति व रिक्तादोष मुहूर्त्ताभाव है।
10 11	शुक्र	05/45 59/12	09:01 30:24	उ.फा.	24/55	16:41	विष्कु	15/43	13:00	विष्टि	09:01	बव बालव	19:42 30:24	06:43	17:30	26/57		22	भद्रा 9:9 तक, एकादशी व्रत सर्वेषाम्,सायनसूर्य धनु में, उ.फा. में भद्रोपरान्त वस्तुभूमिभवनवाहनादि कार्य, व्यापारारंभ का मुहूर्त्त है।
12	शनि	52/30	27:43	हस्त	20/05	14:45	प्रीति आयु	07/05 58/48	09:33 30:14	कौलव	17:04	तैतिल	27:43	06:43	17:30	26/57	तुला 25:46	23	एकादशी वैष्णवानाम्, हस्त में स्थिरकार्य का मुहूर्त्त है। द्विपुष्कर 14:45 से सूर्योदय तक
13	रवि	45/55	25:06	चित्रा	15/08	12:47	सौभा	50/25	26:54	गर	14:24	वणिज	25:06	06:44	17:30	26/55		24	भद्रा में 25:6 से, चित्रा में मासान्तदोष।
14	सोम	39/50	22:41	स्वाती	10/30	10:57	शोभ	42/28	23:44	विष्टि	11:53	शकुनि	22:41	06:45	17:30	26/52	वृश्चि. 27:44	25	भद्रा 11:53 तक, स्वाती में मंगलयुति, मासान्तदोष।
30	मङ्गल	34/38	20:36	विशाखा	41/35	09:23	अति	35/15	20:51	चतुष्पद	09:38	नाग	20:36	06:45	17:30	26/52		26	स्नान-दानश्राद्धादि अमावस्या, विशाखा/अनुराधा में मासान्तदोष।

दैनिकमुहूर्त्तादि विवरण (भद्रा, पञ्चक एवं त्रिपुष्कर, सर्वार्थसिद्धि योगादि)

करमाला - अनामिकामूलमारभ्य कनिष्ठादित एव च। तर्जनीमध्यपर्यन्तमष्टपर्वसु संजपेत् । । प्रातः कर्म- ब्राह्मेकाले समुत्थाय गणेशादीन्स्मरेत्ततः। प्रातः स्तोत्रं मंगलानि पठित्वा शौचमाचरेत्। । प्रातः दर्शनीय- श्रोत्रियं सुभगां गाञ्च अग्निमग्निचितं तथा। प्रातरुत्थाय यः पश्येदापद्भ्यः स प्रमुच्यते। यज्ञोपवीत नियम- मूत्रे तु दक्षिणे कर्णे वसन्तिमनरब्रवीत्। मूत्रे तु दक्षिणे कर्णे पुरीषे बामकर्णके। उपवीतं सदा धार्यं मैथुने तूपवीतवत्। । मलमूत्रं त्यजेद् विप्रो विस्मृत्यैवोपवीतधृक्। उपवीतं तदुत्सृज्य धार्यमन्यन्नवं तदा। । मौनकर्म- पुरीषे मैथुने होमे प्रस्रावे दन्तधावने। स्नानभोजनजाप्येषु सदामौनं समाचरेत्। (कर्मठगुरु)
संकल्प- संकल्चमूल कामो वै यज्ञाः संकल्पसम्भवाः। व्रतं नियमधर्मौं च सर्वे संकल्पजाः स्मृताः। । चंदन नियम- ललाटे तिलकं कृत्वा सन्ध्याकर्म समाचरेत्। अकृत्वा भालतिलकं तस्य कर्म निरर्थकम्। । मृद्भस्म चन्दनं प्रोक्तं तोयं चैव चतुर्थकम्। गायत्रीजप- अष्टोत्तरशतं नित्यमष्टाविंशतिरेव वा। विधिना दशकं वापि त्रिकालेषु जपेद्बुधः। न स द्विजो यो न करोति सन्ध्यां, सन्ध्या न सा या मनसा विशुद्धम्। शुद्धिर्न सा यत्र सत्यमस्ति सत्यन्न तन्निर्भयता न यत्र। (कर्मठगुरु)

रविवार को त्याज्य वस्तु- क्षौरं तैलं जलं चोष्णमामिषं निशिभोजनम्। रतिः स्नानं च मध्याह्ने रवौ सप्त विवर्जयेत्।। नष्टवस्तु विचार - तिथिवारं च नक्षत्र लग्नं वह्नि विमिश्रितम्। पञ्चभिस्तुहरेत् भागं शेषं तत्त्वं विनिर्दिशेत्। पृथिव्यां तु स्थिरं ज्ञेयमप्सु व्योम्नि च लभ्यते। तेजस्सु राजसाज्ज्ञेयं वायौ शोकं विनिर्दिशेत्। अर्थात् प्रश्न की तिथि वार नक्षत्र व लग्न को जोड़कर ३ मिलाकर ५ का भाग दें। १ बचे तो पृथ्वी में २ बचे तो जल में, ३ बचे तो आकाश में (ऊपर किसी स्थान में) ४ बचे तो अग्नि अथवा धूप के स्थान में, ० शेष में निर्जन स्थान में वस्तु कहनी चाहिए।

सूर्यादि स्पष्ट ग्रह भा.स्टै.टा.प्रातः 5 बजकर 29 मिनट का राशि, अंश, कला, विकला में

दि.	स्पष्ट सूर्य				स्पष्ट चन्द्र				स्पष्ट मङ्गल				स्पष्ट बुध				स्पष्ट गुरु				स्पष्ट शुक्र				स्पष्ट शनि				स्पष्ट राहु			
13	6	26	10	4	1	1	12	57	6	1	43	16	6	23	1	2	8	1	36	57	7	19	43	0	8	22	12	12	2	16	42	32
14	6	27	10	25	1	13	59	56	6	2	22	36	6	21	46	45	8	1	49	21	7	20	57	29	8	22	17	10	2	16	39	21
15	6	28	10	48	1	26	58	13	6	3	1	57	6	20	38	59	8	2	1	49	7	22	11	56	8	22	22	12	2	16	36	11
16	6	29	11	13	2	10	7	44	6	3	41	19	6	19	39	42	8	2	14	21	7	23	26	24	8	22	27	18	2	16	33	0
17	7	0	11	39	2	23	28	40	6	4	20	43	6	18	50	28	8	2	26	56	7	24	40	51	8	22	32	28	2	16	29	49
18	7	1	12	8	3	7	1	27	6	5	0	8	6	18	12	19	8	2	39	35	7	25	55	18	8	22	37	42	2	16	26	38
19	7	2	12	38	3	20	46	36	6	5	39	34	6	17	45	48	8	2	52	17	7	27	9	44	8	22	42	59	2	16	23	28
20	7	3	13	10	4	4	44	27	6	6	19	2	6	17	30	59	8	3	5	2	7	28	24	10	8	22	48	21	2	16	20	17
21	7	4	13	43	4	18	54	35	6	6	58	31	6	17	27	37	8	3	17	51	7	29	38	36	8	22	53	46	2	16	17	6
22	7	5	14	19	5	3	15	25	6	7	38	1	6	17	35	8	8	3	30	43	8	0	53	2	8	22	59	15	2	16	13	55
23	7	6	14	56	5	17	43	48	6	8	17	33	6	17	52	50	8	3	43	38	8	2	7	27	8	23	4	47	2	16	10	44
24	7	7	15	36	6	2	15	1	6	8	57	6	6	18	19	50	8	3	56	36	8	3	21	52	8	23	10	23	2	16	7	34
25	7	8	16	16	6	16	43	9	6	9	36	40	6	18	55	16	8	4	9	37	8	4	36	16	8	23	16	2	2	16	4	23
26	7	9	16	58	7	1	1	55	6	10	16	15	6	19	38	15	8	4	22	41	8	5	50	40	8	23	21	45	2	16	1	12

मार्गशीर्ष में रविवार व्रत- मार्गादिरविवारेषु काम्यं व्रतमुक्तं हेमाद्रौ। तत्र भक्ष्याण्युक्तानि संग्रहे - पत्रत्रित्वं तुलस्यास्त्रिपलमथघृतं मार्गशीर्षादिभक्ष्यं मुष्टीनां त्रिस्तिलानां त्रिपलदधि तथा दुग्धकं गोमयं च। त्रित्वं तोय- अञ्जलीनांत्रिमरिचकमथो त्रिः पलाः सक्तवः स्युः गोमूत्रं शर्करा सद्भविरिति विधिना भानुवारे क्रमेण।।**व्यतिपातनिर्णय** श्रवणाश्विधनिष्ठाद्रा-नागदैवतमस्तकैः। यद्यमा रविवारेण व्यतीपातः स उच्यते। वृद्धमनु का कथन है कि - श्रवण, अश्विनी, धनिष्ठा, आर्द्रा, अश्लेषा, मृगशीर्ष, नक्षत्र यदि अमावास्या और रविवार से युत हो तो उसे व्यतिपात कहेतें है । किसीके मत से मृगशिरा का प्रथम पाद लेना चाहिए ।

20 नवम्बर 2019, अष्टमी, बुधवार
सूर्योदयकालीन

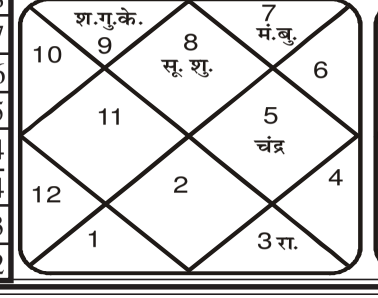

26 नवम्बर 2019, अमावस्या, मंगलवार
सूर्योदयकालीन

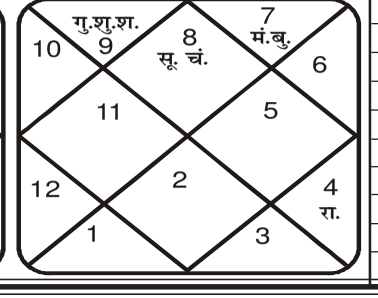

भैरव विशेष - कृत्वा च विविधां पूजां महासम्भारविस्तरैः। नरो मार्गासिताष्टम्यां वार्षिकं विघ्नमुत्सृजेत्। तीर्थे कालोदके स्नात्वा कृत्वा तर्पणमत्वरः। विलोक्य कालराजानं निरयादुद्धरेत्पितृन्। इस प्रकार भैरवाष्टमी पर्व में कालोदक तीर्थ में स्नान करने के बाद कालराज भैरव का पूजन करने से व रात्रिजागरण पूर्वक् व्रत करने से वर्ष भर के विघ्न दूर होते है। **आठ महाद्वादशी -** शुद्धाधिकैकादशीयुता द्वादशी उन्मीलनी संज्ञा। द्वादश्येव शुद्धाधिका वर्द्धते चेत्सा वञ्जुली। वासरत्रयस्पर्शिनी त्रिस्पृशा। अग्रे पर्वणः सम्पूर्णा धिकत्वे पक्षवर्द्धिनी। पुष्यर्क्षयुता जया। श्रवणयुता विजया। पुनर्वसुयुता जयन्ती। रोहिणीयुता पापनाशिनी।

लग्नान्तकाल (भारतीय मानक समय में)

दि.	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या
13	06:54:44	09:07:48	11:15:48	12:59:52	14:33:52	16:06:12	17:47:08	19:44:04	21:59:56	00:14:52	02:26:48	04:39:44
14	06:50:48	09:03:52	11:11:52	12:55:56	14:29:56	16:02:16	17:43:12	19:40:08	21:56:00	00:10:56	02:22:52	04:35:48
15	06:46:52	08:59:56	11:07:56	12:52:00	14:26:00	15:58:20	17:39:16	19:36:12	21:52:04	00:07:00	02:18:56	04:31:52
16	06:42:56	08:56:00	11:04:00	12:48:04	14:22:04	15:54:24	17:35:20	19:32:16	21:48:08	00:03:04	02:15:00	04:27:56
	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला
17	08:52:04	11:00:04	12:44:08	14:18:08	15:50:28	17:31:24	19:28:20	21:44:12	23:59:08	02:11:04	04:24:00	06:39:00
18	08:48:08	10:56:08	12:40:12	14:14:12	15:46:32	17:27:28	19:24:24	21:40:16	23:55:12	02:07:08	04:20:04	06:35:04
19	08:44:12	10:52:12	12:36:16	14:10:16	15:42:36	17:23:32	19:20:28	21:36:20	23:51:16	02:03:12	04:16:08	06:31:08
20	08:40:16	10:48:16	12:32:20	14:06:20	15:38:40	17:19:36	19:16:32	21:32:24	23:47:20	01:59:16	04:12:12	06:27:12
21	08:36:20	10:44:20	12:28:24	14:02:24	15:34:44	17:15:40	19:12:36	21:28:28	23:43:24	01:55:20	04:08:16	06:23:16
22	08:32:24	10:40:24	12:24:28	13:58:28	15:30:48	17:11:44	19:08:40	21:24:32	23:39:28	01:51:24	04:04:20	06:19:20
23	08:28:28	10:36:28	12:20:32	13:54:32	15:26:52	17:07:48	19:04:44	21:20:36	23:35:32	01:47:28	04:00:24	06:15:24
24	08:24:32	10:32:32	12:16:36	13:50:36	15:22:56	17:03:52	19:00:48	21:16:40	23:31:36	01:43:32	03:56:28	06:11:28
25	08:20:36	10:28:36	12:12:40	13:46:40	15:19:00	16:59:56	18:56:52	21:12:44	23:27:40	01:39:36	03:52:32	06:07:32
26	08:16:40	10:24:40	12:08:44	13:42:44	15:15:04	16:56:00	18:52:56	21:08:48	23:23:44	01:35:40	03:48:36	06:03:36

ग्रहचार

मार्गी मंगल-चित्रा में 20 नव.को 18:12 से स्वाती में, वक्री बुध- 15नव. को 20:50 से स्वा.में व 26 को 16:22से विशाखा में मार्गी, मार्गी गुरु - पू.षा. में,मार्गीशुक्र- ज्येष्ठा में 21 को 12:22 से मूल में,मार्गीशनि- पू.षा. में, राहु- आर्द्रा में, केतु- पू.षा. में

मार्गशीर्ष शुक्लपक्ष परिधावी संवत्सर, वि. संवत् 2076, शक 1941

दक्षिणायन, दक्षिणगोल, हेमन्तऋतु (27 नवम्बर से 12 दिसम्बर 2019 ई. तक) — गुरु एवं शुक्र पश्चिम

तिथि	वार	घ.प.	घ.मि.	नक्षत्र	घ.प.	घ.मि.	योग	घ.प.	घ.मि.	करण	घ.मि.	करण	घ.मि.	सू.उ. घ.मि.	सू.अ. घ.मि.	दि.मा. घ.प.	च.रा.प्र. घ.मि.	दिनांक	व्रतपर्व विवरण (भारतीय मानक समय में)
01	बुध	30/33	18:59	अनुराधा	03/35	08:12	सुक	28/58	18:21	किंस्तु.	07:47	बव बालव	18:59 30:29	06:46	17:30	26/50		27	अनुराधा में सूर्ययुति मुहूर्त्ताभाव है। अमृतसिद्धि/सर्वार्थसि. सूर्यो.से 08:12 तक,
02	गुरु	28/00	17:59	ज्येष्ठा	01/58	07:34	धृति	23/47	16:18	कौलव	17:59	तैतिल	29:49	06:47	17:30	26/48	धनु 07:34	28	चंद्रदर्शन मूल में पुंसवन, सीमन्त, वाटिका/शिल्पादि कार्य का मुहूर्त है।
03	शुक्र	27/12	17:40	मूल	01/58	07:34	शूल	20/03	14:48	गर	17:40	वणिज	30:39	06:47	17:30	26/48		29	भद्रा 29:47 से, भद्रापूर्व मूल में पुंसवन, सीमन्त, वाटिका/कृषिकर्म व पू.षा. में शनियुति के कारण मुहूर्ताभाव है।
04	शनि	28/12	18:05	पू.षा.	03/38	08:15	गण्ड	17/40	13:52	विष्टि	18:05	बव	29:52	06:48	17:30	26/45	मकर 14:32	30	भद्रा 18:5 तक, विनायक चतुर्थी, रिक्तादोष के कारण मुहूर्त्ताभाव है।
05	रवि	31/00	19:13	उ.षा.	07/05	09:39	वृद्धि	16/42	13:30	बालव	19:13	कौलव	--	06:49	17:30	26/42		01	श्रीरामविवाहोत्सव, नागपञ्चमी, उ.षा. में पुंसवन, सीमन्त, वस्त्राभूषणकर्म, वस्तुभमिभवनवाहन क्रयविक्रय का मुहूर्त्त है। सर्वार्थसि. सूर्यो. से 09:39 तक
06	सोम	35/25	21:00	श्रवण	12/12	11:43	ध्रुव	16/57	13:37	कौलव	08:07	तैतिल	21:00	06:50	17:30	26/40	कुम्भ 24.56	02	पंचकारंभ 11:43 से, स्कन्द/संहार/मल्लार/चम्पाषष्ठी (महा.)सुब्रह्मण्यम् षष्ठी (द.भा.), श्रवण में जात.नामकरण, वस्त्राभूषण, वस्तुभमिभवनवाहनादि कार्य शुभ हैं। सि.यो./सर्वार्थ. सूर्यो.से11:43 तक,
07	मङ्गल	41/00	23:14	धनिष्ठा	18/35	14:16	व्याघा.	18/15	14:08	गर	10:07	वणिज	23:14	06:50	17:30	26/40		03	भद्रा 23:14 से, नन्दासप्तमी, मित्रसप्तमी, धनिष्ठा में उग्र-अग्नि-शस्त्राभूषण कार्य का मुहूर्त्त है। द्विपुष्कर सूर्योदय से 14:16 तक।
08	बुध	47/13	25:44	शत.	25/45	17:09	हर्ष.	20/05	14:53	विष्टि	12:29	बव	25:44	06:51	17:30	26/37		04	भद्रा समाप्ति 12:29 पर, दुर्गाष्टमी,बुधाष्टमी शतभिषा में मंगल वेध।
09	गुरु	53/30	28:16	पू.भा.	33/08	20:07	वज्र	22/10	15:44	बालव	15:00	कौलव	28:16	06:52	17:30	26/35	मीन 13:23	05	महानवमीव्रत, कल्पादि नवमी, पू.भा. में रिक्तादोष है।
10	शुक्र	59/15	30:34	उ.भा.	40/13	22:57	सिद्धि	24/05	16:30	तैतिल	17:25	गर	30:34	06:52	17:30	26/35		06	उ.भा. व्यतीपात पूर्व में अन्नप्राशन, व्यापारारम्भ, वस्तुभूमिभवनवाहनादिकर्म, पशुपक्षीमत्स्यादिपालनकर्म, कृषिकर्म शुभ है। अमृतसिद्धि/सर्वार्थसि. 22:57 से सूर्यो.तक,
11	शनि	--	--	रेवती	46/27	25:28	व्यति.	25/25	17:03	वणिज	19:32	विष्टि	--	06:53	17:30	26/33	मेष 25:28	07	पंचक 25:28 तक, भद्रा 19:32 से, रेवती में व्यतीपात दोष मुहूर्त्ताभाव है।
11	रवि	04/00	08:30	अश्विनी	51/30	27:30	वरी.	25/52	17:15	विष्टि	08:30	बव	21:12	06:54	17:31	26/33		08	भद्रा समाप्ति 08:29 पर, मोक्षदा एकादशी (सर्वे.),गीता जयन्ती, बैकुण्ठ एकादशी, भद्रोपरान्त अश्विनी में वस्त्राभूषण, वस्तुभमिभवनवाहनादिकर्म,शिक्षणादि कार्य शुभ हैं। सर्वार्थसि. सूर्यो. से 27:30 तक
12	सोम	07/30	09:54	भरणी	55/15	29:00	परिघ	25/22	17:03	बालव	09:54	कौलव	22:19	06:54	17:31	26/33	वृष 11:18	09	सोमप्रदोष,मत्स्यद्वादशी, धरणीव्रत, भरणी में वस्तुविक्रय, कृषिकर्म शुभ है।
13	मङ्गल	09/32	10:44	कृतिका	57/35	29:57	शिव	23/42	16:24	तैतिल	10:44	गर	22:51	06:55	17:31	26/30		10	पिशाचमोचनयात्रा, पार्वणश्राद्ध, कपर्दीश्वरदर्शन, कृत्तिका में उग्र-अग्नि-शस्त्रकार्य का मुहूर्त है। सर्वार्थसि. सूर्यो. से 29:57 तक
14	बुध	10/10	10:59	रोहिणी	58/37	30:22	सिद्ध	21/03	15:20	वणिज	10:59	विष्टि	22:50	06:55	17:31	26/30		11	भद्रा 10:59 से 25:50 तक, व्रतपूर्णिमा, सत्यनारायणव्रत, रोहिणी रिक्तोपरान्त भद्रादोष के कारण मुहूर्ताभाव है। सर्वार्थसि. सूर्यो. से 30:22 तक
15	गुरु	09/25	10:42	मृगशिरा	58/25	30:18	साध्य	17/15	13:50	बव	10:42	बालव	22:20	06:56	17:32	26/30	मिथु. 18:23	12	स्नान दान मार्गशीर्ष पूर्णिमा, दत्तात्रेय जयन्ती, त्रिपुरसुन्दरी/भैरवी/अन्नपूर्णा जयन्ती, मृग. में अन्नप्राशन, वाटिका/वृक्ष, वस्तुभमिभवनवाहनादिकर्म,शिक्षणादि कार्य शुभ हैं।

दैनिकमुहूर्त्तादि विवरण (भद्रा, पञ्चक एवं त्रिपुष्कर, सर्वार्थसिद्धि योगादि)

यात्रा में अशुभ शकुन - बन्ध्या स्त्री, चर्म, अस्थि, इन्धन, संन्यासी, भैंसों का युद्ध, सर्प, शत्रु, मार्जारयुद्ध, कुटुम्बकलह, विधवास्त्री, जातिभ्रष्ट, अङ्गहीन, छिक्का, दुष्टवाणी यात्रा के समय देखना अशुभ तथा कष्टप्रद है।

द्वार (कपाट) सम्बन्धी दोष	शुभाशुभफल
स्वयमेव किवाड़ खुलना	उन्माद, भ्रम
स्वयमेव किवाड़ बन्द होना	कुलनाश
मान से अधिक द्वार	राजभय
नाप से कम द्वार	चोरभय, दुःख, विपत्ति
द्वार के ठीक ऊपर अन्य द्वार	अशुभ, संकट
द्वार व कपाट की चौड़ाई कम या अधिक	क्षुधा व पीड़ा कारक
टेढ़ा-मेढ़ा या झुका द्वार या कपाट	कुलनाश
कपाटों में जोड़	पीड़ाकारक
गृह में भीतर की ओर झुका द्वार	धन जन की हानि
बाहर की ओर झुका द्वार	प्रवास
अन्य दिशा में झुका या खुला द्वार	दस्युभय, चौरभय

मकरसंक्रान्तौ स्नानमन्त्रः - मकस्थे रवौ माघे गोविन्दाच्युतमाधव। स्नानेनानेन मे देव यथोक्तफलदो भव।। मकरे तिलवस्त्रम् इष्ठान्नादीनां दानं कल्याणाय भवति।

सूर्यादि स्पष्ट ग्रह भा.स्टै.टा.प्रातः 5 बजकर 29 मिनट का राशि, अंश, कला, विकला में

दि.	स्पष्ट सूर्य				स्पष्ट चन्द्र				स्पष्ट मङ्गल				स्पष्ट बुध				स्पष्ट गुरु				स्पष्ट शुक्र				स्पष्ट शनि				स्पष्ट राहु			
27	7	10	17	42	7	15	5	32	6	10	55	52	6	20	27	54	8	4	35	48	8	7	5	4	8	23	27	32	2	15	58	1
28	7	11	18	27	7	28	49	35	6	11	35	30	6	21	23	25	8	4	48	57	8	8	19	27	8	23	33	21	2	15	54	50
29	7	12	19	13	8	12	11	37	6	12	15	9	6	22	24	3	8	5	2	9	8	9	33	49	8	23	39	14	2	15	51	40
30	7	13	20	0	8	25	11	11	6	12	54	49	6	23	29	9	8	5	15	23	8	10	48	10	8	23	45	10	2	15	48	29
01	7	14	20	49	9	7	49	43	6	13	34	30	6	24	38	7	8	5	28	39	8	12	2	31	8	23	51	9	2	15	45	18
02	7	15	21	38	9	20	10	9	6	14	14	12	6	25	50	24	8	5	41	58	8	13	16	51	8	23	57	11	2	15	42	7
03	7	16	22	28	10	2	16	29	6	14	53	56	6	27	5	32	8	5	55	19	8	14	31	10	8	24	3	15	2	15	38	56
04	7	17	23	19	10	14	13	21	6	15	33	40	6	28	23	9	8	6	8	42	8	15	45	28	8	24	9	23	2	15	35	46
05	7	18	24	11	10	26	5	40	6	16	13	26	6	29	42	51	8	6	22	7	8	16	59	45	8	24	15	33	2	15	32	35
06	7	19	25	4	11	7	58	18	6	16	53	13	7	1	4	22	8	6	35	34	8	18	14	1	8	24	21	47	2	15	29	24
07	7	20	25	58	11	19	55	54	6	17	33	1	7	2	27	25	8	6	49	3	8	19	28	15	8	24	28	2	2	15	26	13
08	7	21	26	52	0	2	2	29	6	18	12	50	7	3	51	47	8	7	2	34	8	20	42	29	8	24	34	21	2	15	23	2
09	7	22	27	47	0	14	21	25	6	18	52	41	7	5	17	17	8	7	16	6	8	21	56	41	8	24	40	42	2	15	19	52
10	7	23	28	43	0	26	55	4	6	19	32	33	7	6	43	45	8	7	29	40	8	23	10	52	8	24	47	5	2	15	16	41
11	7	24	29	40	1	9	44	45	6	20	12	26	7	8	11	3	8	7	43	15	8	24	25	2	8	24	53	31	2	15	13	30
12	7	25	30	38	1	22	50	44	6	20	52	20	7	9	39	3	8	7	56	52	8	25	39	10	8	24	59	59	2	15	10	19

दत्तात्रेयजयन्ती -मार्गशीर्षे तथा मासि दशमेह्नि सुनिर्मिले। मृगशीर्षयुते पौर्णमास्यां यज्ञस्य वासरे।। जनयामास दैदीप्यमानं पुत्रं सती शुभम्।। तं विष्णुमागतं ज्ञात्वा अत्रिर्नामा करोत्स्वयम्।। दत्तवान् स्वस्य पुत्रत्वाद्दत्तात्रेय इतीश्वरः।। पिशाचमोचनश्राद्ध - मार्गशीर्ष चतुर्दश्यां पिशाचमोचनतीर्थे श्राद्धम्। मार्ग शुक्ल चतुर्दशी में पिशाचमोचन तीर्थ काशी में श्राद्ध करने का विशेष फल है। यह श्राद्ध एकोदिष्ट होता है जिसमें अज्ञात मित्र, बन्धु या आत्मीय लोगों के कल्याण के लिए पिण्डदान किया जाता है। जिससे हमें सदैव प्रसन्नता होती है।

04 दिसम्बर 2019, अष्टमी, बुधवार
सूर्योदयकालीन

12 दिसम्बर 2019, पूर्णिमा, गुरुवार
सूर्योदयकालीन

नाग पञ्चमी - शुक्लामार्गगिरेपुण्या श्रावणे या च पञ्चमी स्नानदानैः बहुफला नागलोक प्रदायिनी। पञ्चमीनागपूजायां कार्या षष्ठी समन्विता तस्यां तु तुषिता नागा इतरा स चतुर्थिका। **चम्पाषष्ठी -** मार्गे भाद्रपदे शुक्ला षष्ठी वैधृति संयुता। रविवारेण संयुक्ता सा चम्पेतीह कीर्तिता।। **स्कन्दमन्त्र -** सेनाविदारक स्कन्द महासेन महाबल। रुद्रोमाग्निज षड्वक्त्र गङ्गागर्भ नमोऽस्तुते।। स्कन्दपूजा विवादिकार्यों में लाभप्रद होती है।

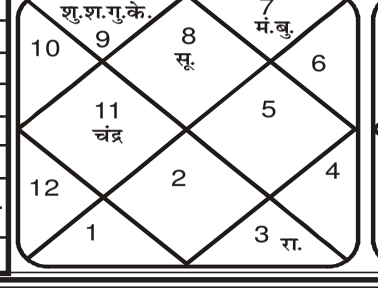

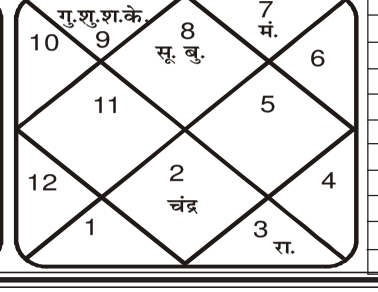

लग्नान्तकाल (भारतीय मानक समय में)

दि.	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला
27	08:12:44	10:20:44	12:04:48	13:38:48	15:11:08	16:52:04	18:49:00	21:04:52	23:19:48	01:31:44	03:44:40	05:59:40
28	08:08:48	10:16:48	12:00:52	13:34:52	15:07:12	16:48:08	18:45:04	21:00:56	23:15:52	01:27:48	03:40:44	05:55:44
29	08:04:52	10:12:52	11:56:56	13:30:56	15:03:16	16:44:12	18:41:08	20:57:00	23:11:56	01:23:52	03:36:48	05:51:48
30	08:00:56	10:08:56	11:53:00	13:27:00	14:59:20	16:40:16	18:37:12	20:53:04	23:08:00	01:19:56	03:32:52	05:47:52
01	07:57:00	10:05:00	11:49:04	13:23:04	14:55:24	16:36:20	18:33:16	20:49:08	23:04:04	01:16:00	03:28:56	05:43:56
02	07:53:04	10:01:04	11:45:08	13:19:08	14:51:28	16:32:24	18:29:20	20:45:12	23:00:08	01:12:04	03:25:00	05:40:00
03	07:49:08	09:57:08	11:41:12	13:15:12	14:47:32	16:28:28	18:25:24	20:41:16	22:56:12	01:08:08	03:21:04	05:36:04
04	07:45:12	09:53:12	11:37:16	13:11:16	14:43:36	16:24:32	18:21:28	20:37:20	22:52:16	01:04:12	03:17:08	05:32:08
05	07:41:16	09:49:16	11:33:20	13:07:20	14:39:40	16:20:36	18:17:32	20:33:24	22:48:20	01:00:16	03:13:12	05:28:12
06	07:37:20	09:45:20	11:29:24	13:03:24	14:35:44	16:16:40	18:13:36	20:29:28	22:44:24	00:56:20	03:09:16	05:24:16
07	07:33:24	09:41:24	11:25:28	12:59:28	14:31:48	16:12:44	18:09:40	20:25:32	22:40:28	00:52:24	03:05:20	05:20:20
08	07:29:28	09:37:28	11:21:32	12:55:32	14:27:52	16:08:48	18:05:44	20:21:36	22:36:32	00:48:28	03:01:24	05:16:24
09	07:25:32	09:33:32	11:17:36	12:51:36	14:23:56	16:04:52	18:01:48	20:17:40	22:32:36	00:44:32	02:57:28	05:12:28
10	07:21:36	09:29:36	11:13:40	12:47:40	14:20:00	16:00:56	17:57:52	20:13:44	22:28:40	00:40:36	02:53:32	05:08:32
11	07:17:40	09:25:40	11:09:44	12:43:44	14:16:04	15:57:00	17:53:56	20:09:48	22:24:44	00:36:40	02:49:36	05:04:36
12	07:13:44	09:21:44	11:05:48	12:39:48	14:12:08	15:53:04	17:50:00	20:05:52	22:20:48	00:32:44	02:45:40	05:00:40

ग्रहचार

मार्गी मंगल-स्वाती में 10 दिस. को 21:59 से विशाखा में, मार्गी बुध- 07 दिस.को 20:29 से अनु. में,मार्गी गुरु- मूल में,मार्गी शुक्र-मूल में 02 दिस.को 06:29 से पू.षा. में, मार्गीशनि- पू.षा. में, राहु- आर्द्रा में, केतु- पू.षा. में

पौष कृष्णपक्ष — परिधावी संवत्सर, वि. संवत् 2076, शक 1941

दक्षिणायन, दक्षिणगोल, हेमन्तऋतु (13 दिसम्बर से 26 दिसम्बर 2019 ई. तक)

गुरु १५ दिस.को पश्चिम में अस्त, शुक्र पश्चिम

तिथि	वार	घ.प.	घ.मि.	नक्षत्र	घ.प.	घ.मि.	योग	घ.प.	घ.मि.	करण	घ.मि.	करण	घ.मि.	सू.उ. घ.मि.	सू.अ. घ.मि.	दि.मा. घ.प.	च.रा.प्र. घ.मि.	दिनांक	व्रतपर्व विवरण (भारतीय मानक समय में)
01	शुक्र	07/32	09:57	आर्द्रा	57/12	29:50	शुभ	12/37	11:59	कौलव	09:57	तैतिल	21:22	06:57	17:32	26/28		13	आर्द्रा में राहुयुति के कारण मुहूर्ताभाव है,
02	शनि	21/57	08:47	पुनर्वसु	57/15	29:03	शुक्ल	24/32	09:49	गर	08:47	वणिज	20:03	06:57	17:32	26/28	कर्क 23:16	14	भद्रा 20:03 से, पुन. में भद्रापूर्व वाहनक्रय का मुहूर्त्त है। त्रिपुष्कर सूर्यो.से 29:03 तक
03 04	रवि	00/52 56/35	07:18 29:35	पुष्य	52/40	28:01	ब्रह्म ऐन्द्र	01/08 54/35	07:24 28:47	विष्टि	07:18	बव बालव	18:27 29:35	06:58	17:33	26/28		15	भद्रा समाप्ति 07:18 पर, संकष्टहर चतुर्थी, चंद्रोदय 20:45,पुष्य में सूर्यवेध व रिक्तादोष मुहूर्ताभाव रहेगा। सर्वार्थसि. सूर्यो. से 28:01 तक।
05	सोम	51/48	27:40	आश्ले.	49/35	26:47	वैधृति	47/40	26:01	कौलव	16:38	तैतिल	27:40	06:58	17:33	26/28	सिंह 26:47	16	**सूर्यप्रवेश धनु में 15:28 पर पुण्यकाल 09:03 के बाद** , खरमासारंभ, श्लेषा में वैधृतिदोष मुहूर्ताभाव रहेगा।
06	मङ्गल	46/43	25:38	मघा	46/10	25:26	विष्कु	40/30	23:09	गर	14:39	वणिज	25:38	06:59	17:33	26/25		17	भद्रा आरम्भ 25:38 से, मघा में अग्निकार्य, मशीनलगाना, धान्यच्छेदन, आप्रेशन शुभ है।
07	बुध	41/22	23:31	पू.फा.	42/35	24:00	प्रीति	33/07	20:13	विष्टि	12:35	बव	23:31	07:00	17:34	26/25	कन्या 29:39	18	भद्रा समाप्ति 12:35 पर, भद्रोपरान्त पू.फा. में कृषिकर्म, वस्तुविक्रय शुभ है।
08	गुरु	36/00	21:23	उ.फा.	38/58	22:34	आयु	25/42	17:16	बालव	10:27	कौलव	21:23	07:00	17:34	26/25		19	अष्टकाश्राद्ध पार्वणविधि के अनुसार, कालाष्टमी, उ.फा. में गर्भाधान,वाटिका, शिल्प/वास्तुकार्य,व्यापारारम्भ, वस्तुभूमिभवनवाहनादि कार्य शुभ है।
09	शुक्र	30/42	19:17	हस्त	35/22	21:09	सौभा	18/20	14:20	तैतिल	08:20	गर वणिज	19:17 30:16	07:01	17:35	26/25		20	भद्रा 30:16 से, अन्वष्टकाश्राद्ध, हस्त में रिक्तादोष के कारण मुहूर्ताभाव है,
10	शनि	25/37	17:15	चित्रा	32/02	19:49	शोभ	11/05	11:26	विष्टि	17:15	बव	28:18	07:01	17:35	26/25	तुला 08:28	21	भद्रा 17:15 तक, सायनसूर्य मकर में, चित्रा में भद्रादोष के कारण मुहूर्ताभाव है, सि.यो./सवार्थसि. 19:49 से सूर्यो. तक,
11	रवि	20/52	15:22	स्वाती	29/02	18:38	अति सुक	04/05 57/30	08:39 30:01	बालव	15:22	कौलव	26:32	07:02	17:36	26/25		22	सफला एकादशी, स्वाती में भौमभुक्तदोष व विशाखा में भौमयुति दोष। त्रिपुष्कर 18:38 से सूर्यो.तक
12	सोम	16/42	13:42	विशाखा	26/37	17:40	धृति	51/22	27:35	तैतिल	13:42	गर	25:00	07:02	17:36	26/25	वृश्चि. 11:53	23	सोमप्रदोष,विशाखा में भौमयुति दोष व अनुराधा में गर्भाधान, वस्तुभूमिभवनवाहनादि कार्य शुभ है। सर्वार्थसि. 17:40 से सूर्योदय तक।
13	मङ्गल	13/13	12:19	अनुराधा	24/52	16:59	शूल	45/55	25:24	वणिज	12:19	विष्टि	23:48	07:03	17:37	26/25		24	भद्रा 12:19 से 23:42 तक, मासान्तदोष,
14	बुध	10/40	11:18	ज्येष्ठा	24/08	16:41	गण्ड	41/20	23:34	शकुनि	11:18	चतुष्प.	23:00	07:03	17:37	26/25	धनु 16:41	25	श्राद्ध अमावस्या, मासान्तदोष।
30	गुरु	09/10	10:43	मूल	24/28	16:50	वृद्धि	37/37	22:06	नाग	10:43	किंस्तु.	22:41	07:03	17:38	26/28		26	स्नादान अमावस्या, मासान्तदोष।

दैनिकमुहूर्त्तादि विवरण (भद्रा, पञ्चक एवं त्रिपुष्कर, सर्वार्थसिद्धि योगादि)

गण्डान्त जनन दोष - यह दोष तीन प्रकार का होता है - तिथिगण्डान्त, नक्षत्रगण्डान्त और लग्नगण्डान्त। इनका विचार जन्म, यात्रा और विवाहादि कार्यों में करना चाहिए जैसा कि बृहत्पाराशर में प्राप्त होता है - **तिथिनक्षत्र लग्नानां गण्डान्तं त्रिविधं स्मृतम्। जन्म यात्रा विवाहादौ भवेत्तन्निधनप्रदम्।।तिथिगण्डान्त -** पूर्णा तिथि की अन्तिम २ घटी तथा नन्दा तिथि की आरम्भिक २ घटी मिलाकर ४ घटी का तिथिगण्डान्त होता है। अर्थात् पूर्णिमा की अन्तिम २ घटी और प्रतिपदा की आरम्भिक २ घटी, पञ्चमी की अन्तिम २ घटी तथा षष्ठी की आरम्भिक २ घटी एवं दशमी की अन्तिम २ घटी तथा एकादशी की प्रारम्भिक २ घटी में तिथिगण्डान्त होता है। **नक्षत्र गण्डान्त -** रेवती का अन्त अश्विनी का आदि, श्लेषान्त मघा का आदि और ज्येष्ठान्त मूलादि की २-२ घटी अर्थात् ४ घटी नक्षत्र गण्डान्त होता है। **लग्न गण्डान्त -** मीन-मेष की, कर्क-सिंह की, वृश्चिक-धनु लग्न की सीमा में आधी घटी मिलाकर कुल १ घटी लग्नगण्डान्त कहालाता है। **अभुक्तमूल जनन दोष -** पूर्वोक्त गण्डान्तों में ज्येष्ठा के अन्त की ५ घटी एवं मूल के आरम्भ की ८ घटी अभुक्त मूल कहा गया है। यह विघ्नकारक एवं अशुभफलदायक माना जाता है। अभुक्तमूल जनन दोष के बारे में ग्रन्थों में मतान्तर प्राप्त होते हैं जैसा कि मुहूर्त्तचिन्तामणि में - **अभुक्तमूलं घटिकाचतुष्टयं ज्येष्ठान्त्यमूलादिभवं हि नारदः। वसिष्ठ एकद्विघटीमितं जगौ बृहस्पतिस्त्वेकघटीप्रमाणकम्।।** अर्थात् अभुक्तमूल जनन दोष के सन्दर्भ में नारद का मत है ज्येष्ठा के अन्तिम की ४ घटी और मूल के आदि की ४ घटी दोनों को मिलाकर ८ घटी अभुक्त मूल होता है। वसिष्ठ के मत में ज्येष्ठा नक्षत्र की अन्त की १ घटी और मूल नक्षत्र के प्रारम्भ की २ घटी दोनों की ३ घटी अभुक्तमूल जनन दोष होता है। बृहस्पति के अनुसार ज्येष्ठा नक्षत्र की अन्त और मूल नक्षत्र की आदि की आधी-आधी घटी दोनों मिलाकर १ घटी अभुक्तमूलजननदोष होता है। **अथोचुरन्ये प्रथमाष्टघट्यो मूलस्य शाक्रान्तिमपञ्चनाड्यः। जातं शिशुं तत्र परित्यजेद्वा मुखं पितास्याष्टसमा न पश्येत्।।** अर्थात् ज्येष्ठा नक्षत्र की अन्त्य की ८ घटी और मूल नक्षत्र की आदि की ५ घटी दोनों को मिलाकर १३ घटी अभुक्तमूल होता है। मूल व अश्लेषा नक्षत्र में जन्म लेने वाले जातक का नक्षत्र चरणानुसार शुभाशुभ फल मु.चि.अनुसार - आद्ये पिता नाशमुपैति मूले पादे द्वितीये जननी तृतीये। धनं चतुर्थोऽस्य शुभोऽथ शान्त्या सर्वत्र सत्स्यादहिभे विलोमम्।।मूल के प्रथम चरण में पिता का नाश, द्वितीय में माता का नाश, तृतीय में धननाश और चतुर्थ चरण में जन्म हो तो शुभ होता है।

पौषे मेघगर्भपुष्टि विचार :- वाताभ्रगर्जत्तडितोदकानि हिमप्रपातः करकावघातः। अकालसन्ध्यापरिवेषणश्च नवप्रकारैः प्रभवन्ति गर्भाः।। **पौषमासकृत्यम् -** पौषमासे तु कौन्तेय एकभक्तेन यः क्षिपेत्। सुभगो दर्शनीयश्च यशोभागी च जायते।। (महाभारते) प्रासादनगरादीनि गृहप्रावरणानि च। नारायणस्य तुष्ट्यर्थे पौषे देयानि यत्नतः।। (वामनपुराणे)

सूर्यादि स्पष्ट ग्रह भा.स्टै.टा.प्रातः 5 बजकर 29 मिनट का राशि, अंश, कला, विकला में

दि.	स्पष्ट सूर्य				स्पष्ट चन्द्र				स्पष्ट मङ्गल				स्पष्ट बुध				स्पष्ट गुरु				स्पष्ट शुक्र				स्पष्ट शनि				स्पष्ट राहु			
13	7	26	31	36	2	6	12	14	6	21	32	16	7	11	7	41	8	8	10	30	8	26	53	17	8	25	6	29	2	15	7	8
14	7	27	32	36	2	19	47	39	6	22	12	13	7	12	36	50	8	8	24	10	8	28	7	23	8	25	13	2	2	15	3	57
15	7	28	33	36	3	3	34	53	6	22	52	11	7	14	6	28	8	8	37	51	8	29	21	27	8	25	19	36	2	15	0	47
16	7	29	34	37	3	17	31	29	6	23	32	11	7	15	36	30	8	8	51	33	9	0	35	30	8	25	26	13	2	14	57	36
17	8	0	35	39	4	1	35	5	6	24	12	12	7	17	6	55	8	9	5	16	9	1	49	31	8	25	32	52	2	14	54	25
18	8	1	36	42	4	15	43	20	6	24	52	15	7	18	37	39	8	9	19	00	9	3	3	31	8	25	39	32	2	14	51	14
19	8	2	37	46	4	29	54	6	6	25	32	19	7	20	8	41	8	9	32	45	9	4	17	30	8	25	46	15	2	14	48	3
20	8	3	38	51	5	14	5	15	6	26	12	24	7	21	40	00	8	9	46	31	9	5	31	27	8	25	52	59	2	14	44	53
21	8	4	39	57	5	28	14	36	6	26	52	31	7	23	11	34	8	10	0	17	9	6	45	23	8	25	59	45	2	14	41	42
22	8	5	41	4	6	12	19	43	6	27	32	39	7	24	43	24	8	10	14	5	9	7	59	17	8	26	6	33	2	14	38	31
23	8	6	42	11	6	26	18	3	6	28	12	49	7	26	15	28	8	10	27	53	9	9	13	10	8	26	13	22	2	14	35	20
24	8	7	43	19	7	10	6	52	6	28	53	00	7	27	47	46	8	10	41	41	9	10	27	1	8	26	20	13	2	14	32	9
25	8	8	44	28	7	23	43	34	6	29	33	12	7	29	20	18	8	10	55	30	9	11	40	50	8	26	27	6	2	14	28	58
26	8	9	45	37	8	7	5	56	7	0	13	25	8	0	53	4	8	11	9	20	9	12	54	37	8	26	33	59	2	14	25	48

19 दिसम्बर 2019, अष्टमी, गुरुवार
सूर्योदयकालीन

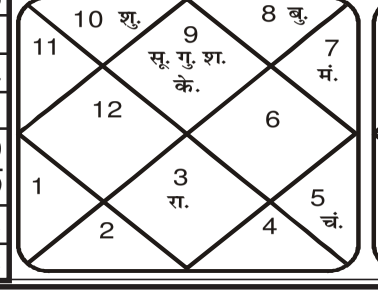

26 दिसम्बर 2019, अमावस्या, गुरुवार
सूर्योदयकालीन

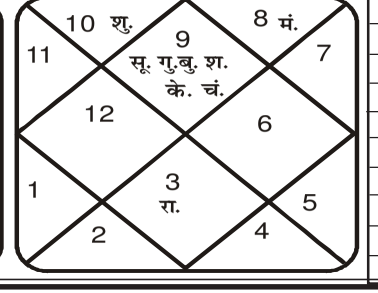

लग्नान्तकाल (भारतीय मानक समय में)

दि.	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला
13	07:09:48	09:17:48	11:01:52	12:35:52	14:08:12	15:49:08	17:46:04	20:01:56	22:16:52	00:28:48	02:41:44	04:56:44
14	07:05:52	09:13:52	10:57:56	12:31:56	14:04:16	15:45:12	17:42:08	19:58:00	22:12:56	00:24:52	02:37:48	04:52:48
15	07:01:56	09:09:56	10:54:00	12:28:00	14:00:20	15:41:16	17:38:12	19:54:04	22:09:00	00:20:56	02:33:52	04:48:52
	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.
16	09:06:00	10:50:04	12:24:04	13:56:24	15:37:20	17:34:16	19:50:08	22:05:04	00:17:00	02:29:56	04:44:56	06:58:00
17	09:02:04	10:46:08	12:20:08	13:52:28	15:33:24	17:30:20	19:46:12	22:01:08	00:13:04	02:26:00	04:41:00	06:54:04
18	08:58:08	10:42:12	12:16:12	13:48:32	15:29:28	17:26:24	19:42:16	21:57:12	00:09:08	02:22:04	04:37:04	06:50:08
19	08:54:12	10:38:16	12:12:16	13:44:36	15:25:32	17:22:28	19:38:20	21:53:16	00:05:12	02:18:08	04:33:08	06:46:12
20	08:50:16	10:34:20	12:08:20	13:40:40	15:21:36	17:18:32	19:34:24	21:49:20	00:01:16	02:14:12	04:29:12	06:42:16
21	08:46:20	10:30:24	12:04:24	13:36:44	15:17:40	17:14:36	19:30:28	21:45:24	23:57:20	02:10:16	04:25:16	06:38:20
22	08:42:24	10:26:28	12:00:28	13:32:48	15:13:44	17:10:40	19:26:32	21:41:28	23:53:24	02:06:20	04:21:20	06:34:24
23	08:38:28	10:22:32	11:56:32	13:28:52	15:09:48	17:06:44	19:22:36	21:37:32	23:49:28	02:02:24	04:17:24	06:30:28
24	08:34:32	10:18:36	11:52:36	13:24:56	15:05:52	17:02:48	19:18:40	21:33:36	23:45:32	01:58:28	04:13:28	06:26:32
25	08:30:36	10:14:40	11:48:40	13:21:00	15:01:56	16:58:52	19:14:44	21:29:40	23:41:36	01:54:32	04:09:32	06:22:36
26	08:26:40	10:10:44	11:44:44	13:17:04	14:58:00	16:54:56	19:10:48	21:25:44	23:37:40	01:50:36	04:05:36	06:18:40

ग्रहचार

मार्गी मंगल-विशाखा में, मार्गी बुध 16 दिस. को 22:21 से ज्ये. में व 25 दिस.को 15:46 से मूल में, मार्गी गुरु-मूल में, मार्गीशुक्र-13 को 01:10 से उ.षा. में व 23 को 20:42 से श्रवण में, मार्गीशनि-पू.षा. में 26 दिस.को 26:20 से उ.षा. में राहु- आर्द्रा में, केतु-पू.षा. में

पौष शुक्लपक्ष — परिधावी संवत्सर, वि. संवत् 2076, शक 1941

दक्षिणायन, दक्षिणगोल, हेमन्त ऋतु (27 दिसम्बर 2019 से 10 जनवरी 2020 ई. तक)

गुरु ८ जनवरी को पूर्व में उदय, शुक्र पश्चिम में

तिथि	वार	घ.प.	घ.मि.	नक्षत्र	घ.प.	घ.मि.	योग	घ.प.	घ.मि.	करण	घ.मि.	करण	घ.मि.	सू.उ. घ.मि.	सू.अ. घ.मि.	दि.मा. घ.प.	च.रा.प्र. घ.मि.	दिनांक	व्रतपर्व विवरण (भारतीय मानक समय में) / दैनिकमुहूर्त्तादि विवरण (भद्रा, पञ्चक एवं त्रिपुष्कर, सर्वार्थसिद्धि योगादि)
01	शुक्र	09/02	10:40	पू.षा.	26/08	17:30	ध्रुव	35/00	21:03	बव	10:40	बालव	22:51	07:04	17:38	26/25	मकर 23:45	27	पू.षा. में केतुयुति व उ.षा. में शनियुति के कारण मुहूर्ताभाव है।,
02	शनि	09/55	11:02	उ.षा.	29/07	18:43	व्याघा.	33/25	20:26	कौलव	11:02	तैतिल	23:39	07:04	17:39	26/27		28	उ.षा. में शनियुति के कारण मुहूर्ताभाव है। सर्वार्थसि. 18:43 से सूर्योदय तक। त्रिपुष्कर सूर्यो.से 18:43 तक
03	रवि	13/00	12:16	श्रवण	33/35	20:30	हर्ष.	33/00	20:16	गर	12:16	वणिज	25:06	07:05	17:39	26/25		29	पंचक 20:30 से, भद्रा 25:6 से, वैनायकी श्रीगणेशचतुर्थी, सूर्यप्रवेश पू.षा.में 17:36 पर, रिक्तापूर्व पुंसवन, सीमन्त, उग्रकार्य, आप्रेशन शुभ है।
04	सोम	17/05	13:55	धनिष्ठा	39/15	22:47	वज्र	33/33	20:30	विष्टि	13:55	बव	26:58	07:05	17:40	26/28	कुम्भ 09:35	30	भद्रा 13:55 तक, धनि. में भौमवेध मुहूर्त्ताभाव है।
05	मङ्गल	22/23	16:02	शत.	45/57	25:28	सिद्धि	34/58	21:04	बालव	16:02	कौलव	29:15	07:05	17:41	26/30		31	शतभिषा में व्यतीपात पूर्व आभूषणनिर्माण, वस्तुक्रय उग्रकार्य, आप्रेशन शुभ है।
06	बुध	28/27	18:28	पू.भा.	53/15	28:23	व्यति.	36/52	21:50	तैतिल	18:28	गर	–	07:06	17:41	26/28	मीन 21:38	01	ईसाई नववर्ष 2020 प्रारंभ, पू.भा में व्यतीपात दोष के कारण मुहूर्ता भाव है।
07	गुरु	34/47	21:01	उ.भा.	--	--	वरी.	38/55	22:40	गर	07:45	वणिज	21:10	07:06	17:42	26/30		02	भद्रा 21:10 से, गुरुगोविन्दसिंह जयन्ती, भद्रापूर्व उ.भा में पुंसवन, सीमन्त, जातकर्म,नामकरण, अन्नप्राशन,व्यापारारम्भ, वस्तुभूमिभवनवाहनकार्य शुभ है।
08	शुक्र	40/52	23:27	उ.भा.	00/35	07:20	परिघ	40/45	23:24	विष्टि	10:14	बव	23:27	07:06	17:42	26/30		03	भद्रा 10:14 तक,महाभद्राष्टमीव्रत, रेवती में कृषि, व्यापारारंभ, वस्तुभूमिभवनवाहनकार्य शुभ है। अमृतसिद्धि 7:20 से सूर्यो.तक,
09	शनि	46/08	25:33	रेवती	07/28	10:05	शिव	41/58	23:53	बालव	12:30	कौलव	25:33	07:06	17:43	26/33	मेष 10:05	04	पंचक 10:5 पर , रिक्ता में रोगमुक्तस्नान का मुहूर्त्त है।
10	रवि	50/03	27:07	अश्विनी	13/23	12:27	सिद्ध	42/12	23:59	तैतिल	14:20	गर	27:07	07:07	17:44	26/33		05	श्रीगुरुगोविन्दसिंह जयन्ती, साम्बदशमी, सूर्यपूजा (उड़ीसा), अश्विनी में व्यापार, चिकित्साकार्य, कृषिकर्म, वाटिकारोपण, वस्तुभूमिभवनवाहनकार्य का मुहूर्त है। सर्वार्थसि. सूर्यो. से 12:27 तक
11	सोम	52/18	28:02	भरणी	17/50	14:15	साध्य	41/15	23:37	वणिज	15:35	विष्टि	28:02	07:07	17:44	26/33	वृष 20:36	06	भद्रा 15:35 से 28:02 तक,पुत्रदा एकादशीव्रत (सर्वेषाम्), मन्वादि रैवत 11, भरणी में व्यापारारम्भ, कृषिकार्य शुभ है,
12	मङ्गल	52/50	28:15	कृतिका	20/43	15:24	शुभ	38/57	22:42	बव	16:08	बालव	28:15	07:07	17:45	26/35		07	कूर्मद्वादशी, कृत्तिका में व्यापारारम्भ, अग्निकार्य,धान्यच्छेदन व रोहिणी में ऑप्रेशन का मुहूर्त्त है। सर्वार्थसि./त्रिपुष्कर सूर्यो. से 15:24 तक
13	बुध	51/33	27:44	रोहिणी	21/50	15:51	शुक्ल	35/18	21:14	कौलव	15:00	तैतिल	27:44	07:07	17:46	26/37	मिथु.27:49	08	प्रदोषव्रत, रोहिणी में कृषिकर्म, वाटिकारोपण, वस्तुभूमिभवनवाहनकार्य का मुहूर्त्त है। मृग.में शनिवेध है। सर्वार्थसि. सूर्यो. से 15:51 तक
14	गुरु	48/40	26:35	मृगशिरा	21/17	15:38	ब्रह्म	30/18	19:14	गर	15:10	वणिज	26:35	07:07	17:47	26/40		09	भद्रा 26:35 से, मृग.में शनि व आर्द्रा में सूर्यवेध है।
15	शुक्र	44/20	24:51	आर्द्रा	19/13	14:48	ऐन्द्र	24/08	16:46	विष्टि	13:43	बव	24:51	07:07	17:47	26/40		10	भद्रा 13:43 तक, व्रतस्नानदानपूर्णिमा, श्रीसत्यनारायण व्रत, माघस्नान प्रारंभ, आर्द्रा में सूर्यवेध के कारण मुहूर्ताभाव रहेगा। सर्वार्थसि. 14:48 से सूर्योदय तक।

विष्णुपूजाप्रकार: - पीताम्बरं कृष्णवर्णं शङ्खचक्रगदाम्बुजम्। वैकुण्ठवासिनं विष्णुं मृत्कुम्भे स्थापयेत्ततः।। विष्णोः स्वरूपं कनकेन कृत्वा तल्लिङ्गमन्त्रैरथ गन्धधूपैः वस्त्राक्षतैः गुग्गुलुधूपदीपैर्नैवेद्यताम्बूल-फलैश्च सम्यक् पूजनं कुर्यात्।

प्रश्नकाल से रोगबाधा ज्ञान - तिथि, वार, नक्षत्र, लग्न और प्रहर इन सब को जोड़कर ८ का भाग दें। ३,७ शेष रहने पर देवबाधा के कारण रोग है। २,८ शेष पर पितृबाधा, ६,४ शेष पर भूतबाधा, १,५ शेष पर ग्रहबाधा रोग का कारण होती है। प्रकारान्तर - तिथि, वार, नक्षत्र, लग्न, प्रहर को जोड़कर १२ का भाग दें। ३,५, ६, ८, ९,११ शेष बचे तो रोग से निवृत्ति हो जायेगी। १, २, ४, ७, १०, १२ शेष होने पर रोग मृत्यु का कारण बनेगा। अथवा वार, नक्षत्र, तिथि और दिशा आदि की संख्यायोग में ८ का भाग दें। २ और ८ के शेष में पितृबाधा, ३ और ७ से देवबाधा, ४ और ६ से प्रेतबाधा, १ और ५ से ग्रहबाधाजन्य रोग होता है। **रोगारम्भकाल-** लग्नोदितोडुतश्चन्द्रो यावत्युडुनि संस्थितः। तस्मात्तावति नक्षत्रे रोगारम्भमुदीरयेत्। यद्वा मान्दिनवांशस्य द्वादशांशर्क्षगे विधौ। मान्दीन्दुयोगभे वैषु ग्राह्यं प्रष्टुरनिष्टभम्। षष्ठेशाश्रितराशिस्थे चन्द्रे वा रोगसम्भवः। शमनं व रुजां वाच्यं सुखेशाश्रितराशिगे।। शीघ्र विवाह किंवा शीघ्र वरप्राप्ति के लिए मन्त्र - **ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं सर्वपूज्ये मंगलचण्डिके देवि क्लीं श्रीं ह्रीं ॐ।** इस मन्त्र की ३ माला प्रतिदिन करके पार्वतीमाताजी का पूजा करें जिस से शीघ्र विवाह होगा एवं शीघ्र दाम्पत्य सुख मिलेगा

सूर्यादि स्पष्ट ग्रह भा.स्टै.टा.प्रातः 5 बजकर 29 मिनट का राशि, अंश, कला, विकला में

दि.	स्पष्ट सूर्य				स्पष्ट चन्द्र				स्पष्ट मङ्गल				स्पष्ट बुध				स्पष्ट गुरु				स्पष्ट शुक्र				स्पष्ट शनि				स्पष्ट राहु			
27	8	10	46	47	8	20	12	24	7	0	53	39	8	2	26	4	8	11	23	10	9	14	8	23	8	26	40	54	2	14	22	37
28	8	11	47	56	9	3	2	20	7	1	33	55	8	3	59	20	8	11	36	57	9	15	22	6	8	26	47	51	2	14	19	26
29	8	12	49	6	9	15	36	6	7	2	14	11	8	5	32	50	8	11	50	49	9	16	35	47	8	26	54	48	2	14	16	15
30	8	13	50	16	9	27	55	11	7	2	54	29	8	7	6	37	8	12	4	39	9	17	49	26	8	27	1	47	2	14	13	4
31	8	14	51	27	10	10	1	59	7	3	34	48	8	8	40	40	8	12	18	28	9	19	3	2	8	27	8	46	2	14	9	54
01	8	15	52	37	10	21	59	49	7	4	15	8	8	10	15	1	8	12	32	18	9	20	16	36	8	27	15	47	2	14	6	43
02	8	16	53	46	11	3	52	41	7	4	55	29	8	11	49	39	8	12	46	7	9	21	30	7	8	27	22	48	2	14	3	32
03	8	17	54	56	11	15	45	0	7	5	35	51	8	13	24	37	8	12	59	56	9	22	43	35	8	27	29	51	2	14	0	21
04	8	18	56	6	11	27	41	31	7	6	16	15	8	14	59	54	8	13	13	45	9	23	57	1	8	27	36	54	2	13	57	10
05	8	19	57	15	0	9	46	56	7	6	56	39	8	16	35	32	8	13	27	33	9	25	10	23	8	27	43	57	2	13	54	0
06	8	20	58	24	0	22	5	44	7	7	37	5	8	18	11	32	8	13	41	20	9	26	23	43	8	27	51	1	2	13	50	49
07	8	21	59	32	1	4	41	46	7	8	17	32	8	19	47	54	8	13	55	7	9	27	36	59	8	27	58	6	2	13	47	38
08	8	23	0	41	1	17	37	59	7	8	58	0	8	21	24	39	8	14	8	53	9	28	50	12	8	28	5	11	2	13	44	27
09	8	24	1	49	2	0	56	00	7	9	38	30	8	23	1	49	8	14	22	38	10	0	3	21	8	28	12	17	2	13	41	16
10	8	25	2	56	2	14	35	48	7	10	19	1	8	24	39	24	8	14	36	22	10	1	16	27	8	28	19	23	2	13	38	6

भूमिशयन - सूर्य नक्षत्र से ५, ७, ९, १२, १९ और २६वें नक्षत्र में चन्द्र के रहने पर भूमिशयन कहा जाता है। भूमिशयन में गृहारम्भ हेतु खात खनन, वापी, कूप, तड़ागादि हेतु खनन आदि कार्य नहीं करने चाहिए। **पौष पूर्णिमा से माघ स्नान आरम्भ -** दुःखदारिद्र्यनाशाय श्रीविष्णोस्तोषणाय च। प्रातः स्नानं करोम्यद्य माघे पापविनाशने।। **माघे अर्घ्यदानमन्त्र -** सवित्रे प्रसवित्रे च परं धाम जले मम। त्वत्तेजसा परिभ्रष्टं पापं यातु सहस्रधा।

03 जनवरी 2020, अष्टमी, शुक्रवार
सूर्योदयकालीन

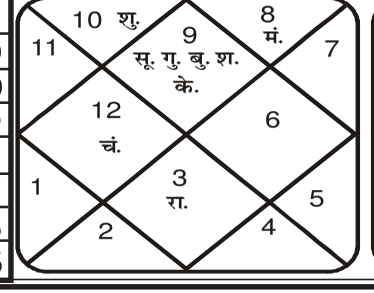

10 जनवरी 2020, पूर्णिमा, शुक्रवार
सूर्योदयकालीन

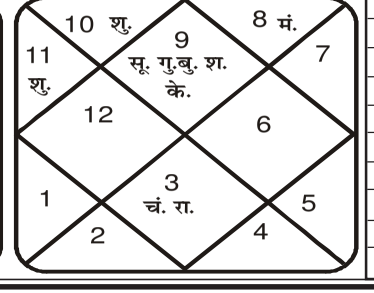

लग्नान्तकाल (भारतीय मानक समय में)

दि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.
27	08:22:44	10:06:48	11:40:48	13:13:08	14:54:04	16:51:00	19:06:52	21:21:48	23:33:44	01:46:40	04:01:40	06:14:44
28	08:18:48	10:02:52	11:36:52	13:09:12	14:50:08	16:47:04	19:02:56	21:17:52	23:29:48	01:42:44	03:57:44	06:10:48
29	08:14:52	09:58:56	11:32:56	13:05:16	14:46:12	16:43:08	18:59:00	21:13:56	23:25:52	01:38:48	03:53:48	06:06:52
30	08:10:56	09:55:00	11:29:00	13:01:20	14:42:16	16:39:12	18:55:04	21:10:00	23:21:56	01:34:52	03:49:52	06:02:56
31	08:07:00	09:51:04	11:25:04	12:57:24	14:38:20	16:35:16	18:51:08	21:06:04	23:18:00	01:30:56	03:45:56	05:59:00
01	08:03:04	09:47:08	11:21:08	12:53:28	14:34:24	16:31:20	18:47:12	21:02:08	23:14:04	01:27:00	03:42:00	05:55:04
02	07:59:08	09:43:12	11:17:12	12:49:32	14:30:28	16:27:24	18:43:16	20:58:12	23:10:08	01:23:04	03:38:04	05:51:08
03	07:55:12	09:39:16	11:13:16	12:45:36	14:26:32	16:23:28	18:39:20	20:54:16	23:06:12	01:19:08	03:34:08	05:47:12
04	07:51:16	09:35:20	11:09:20	12:41:40	14:22:36	16:19:32	18:35:24	20:50:20	23:02:16	01:15:12	03:30:12	05:43:16
05	07:47:20	09:31:24	11:05:24	12:37:44	14:18:40	16:15:36	18:31:28	20:46:24	22:58:20	01:11:16	03:26:16	05:39:20
06	07:43:24	09:27:28	11:01:28	12:33:48	14:14:44	16:11:40	18:27:32	20:42:28	22:54:24	01:07:20	03:22:20	05:35:24
07	07:39:28	09:23:32	10:57:32	12:29:52	14:10:48	16:07:44	18:23:36	20:38:32	22:50:28	01:03:24	03:18:24	05:31:28
08	07:35:32	09:19:36	10:53:36	12:25:56	14:06:52	16:03:48	18:19:40	20:34:36	22:46:32	00:59:28	03:14:28	05:27:32
09	07:31:36	09:15:40	10:49:40	12:22:00	14:02:56	15:59:52	18:15:44	20:30:40	22:42:36	00:55:32	03:10:32	05:23:36
10	07:27:40	09:11:44	10:45:44	12:18:04	13:59:00	15:55:56	18:11:48	20:26:44	22:38:40	00:51:36	03:06:36	05:19:40

ग्रहचार

मार्गी मंगल- विशाखा में 30 दिस.को 20:40 से अनु. में, मार्गी बुध 02 जन. को 28:19 से पू.षा में,मार्गी गुरु- मूल में व 4 जन. को 16:21 से पू.षा. में, मार्गी शुक्र -श्रवण में 03 जन.को 17:22से धनि. में, मार्गीशनि- उ.षा. में, राहु- आर्द्रा में, केतु- पू.षा. में

माघ कृष्णपक्ष — परिधावी संवत्सर, वि. संवत् 2076, शक 1941

दक्षिणायन, दक्षिणगोल, हेमन्त/शिशिर ऋतु (11 जनवरी से 24 जनवरी 2020 ई. तक) — गुरु पूर्व, शुक्र पश्चिम

तिथि	वार	घ.प.	घ.मि.	नक्षत्र	घ.प.	घ.मि.	योग	घ.प.	घ.मि.	करण	घ.मि	करण	घ.मि.	सू.उ. घ.मि.	सू.अ. घ.मि.	दि.मा. घ.प.	च.रा.प्र. घ.मि.	दिनांक	व्रतपर्व विवरण (भारतीय मानक समय में) / दैनिकमुहूर्त्तादि विवरण (भद्रा, पञ्चक एवं त्रिपुष्कर, सर्वार्थसिद्धि योगादि)
01	शनि	56/43	22:41	पुनर्वसु	33/45	13:30	वैधृति	34/45	13:54	बालव	11:46	कौलव	22:41	07:08	17:48	26/40	कर्क 07:52	11	सूर्यप्रवेश उ.षा. में 19:36 पर, पुनर्वसु में वैधृतिदोष है।
02	रवि	32/40	20:12	पुष्य	11/45	11:50	विष्कु	09/02	10:45	तैतिल	09:26	गर वणिज	20:12 30:52	07:08	17:49	26/42		12	भद्रा 30:52से, पुष्य में पुंसवन, सीमन्त, वाटिका, वस्तुभूमिभवनवाहन कार्य, व्यापारारंभ मुहूर्त्त है। सर्वार्थसि. सूर्यो. से 11:50 तक।
03	सोम	26/03	17:33	आश्ले.	06/57	09:55	प्रीति आयु	00/47 52/05	07:25 27:58	विष्टि	17:33	बव	28:11	07:08	17:49	26/42	सिंह 09:55	13	भद्रा 17:33 तक, सौभाग्य सुन्दरी व्रत, श्री गणेशसंकटहर/तिल/गौरीचतुर्थीव्रत,चंद्रोदय 20:40, श्लेषा में भौमवेध व मघा में रिक्तादोष के कारण मुहूर्ताभाव रहेगा।
04	मङ्गल	19/15	14:50	मघा पू.फा.	01/57 57/03	07:55 29:57	सौभा	43/32	24:33	बालव	14:50	कौलव	25:30	07:08	17:50	26/45		14	**सूर्यप्रवेश मकर में 26:08 पर, मकरसंक्रान्ति पर्व पुण्यकाल अग्रिम सम्पूर्ण दिन**, खरमाससमाप्ति, मघा/पू.फा.में उग्र-अग्नि-शस्त्रादि कार्य का मुहूर्त्त है।
05	बुध	12/38	12:11	उ.फा.	52/28	28:07	शोभ	35/10	21:12	तैतिल	12:11	गर	22:56	07:08	17:51	26/48	कन्या 11:28	15	उ.फा. में अन्नप्राशन, शिल्प/वास्तु, कृषि, व्यापारारंभ का मुहूर्त्त है।
06	गुरु	06/25	09:42	हस्त	48/28	26:31	अति	27/15	18:02	वणिज	09:42	विष्टि	20:35	07:08	17:52	26/50		16	भद्रा 09:42 से 20:35 तक, हस्त में वाटिका/वृक्षारोपण, वस्तुभूमिभवनवाहन कार्य, व्यापारारंभ मुहूर्त्त हैं।
07 08	शुक्र	00/50 56/05	07:28 29:34	चित्रा	45/13	25:13	सुक	19/52	15:05	बव	07:28	बालव कौलव	18:31 29:34	07:08	17:52	26/50	तुला 13:49	17	व्यष्टकाश्राद्ध,सप्तमी, श्रीरामानन्दाचार्य जयन्ती। चित्रा में अन्नप्राशन, व्यापारारम्भ, वस्तुभूमिभवनवाहनकर्म, वास्तुकृषिकर्म, वाटिकाकार्य का मूहूर्त है,
09	शनि	52/13	28:01	स्वाती	42/50	24:16	धृति	13/12	12:25	तैतिल	16:47	गर	28:01	07:08	17:53	26/52		18	स्वाती में रिक्तादोष मुहूर्त्ताभाव है। सि.यो./सर्वार्थसि. सूर्यो. से 24:16तक,
10	रवि	49/20	26:52	विशाखा	41/23	23:41	शूल	07/15	10:02	वणिज	15:26	विष्टि	26:52	07:08	17:54	26/55	वृश्चि. 17:48	19	भद्रा 15:22 से 26:52 तक,भद्रापूर्व विशाखा में रसायनिककर्म, अग्निकर्म, उग्रकर्म, पशुपक्षीमत्स्यादि कर्म, आप्रेशन आदि का मुहूर्त है।
11	सोम	47/25	26:06	अनुराधा	40/55	23:30	गण्ड वृद्धि	02/05 57/45	07:58 30:13	बव	14:29	बालव	26:06	07:07	17:54	26/57		20	षट्तिला एकादशी व्रत (सर्वेषाम्), सायनसूर्य कुंभ में,अनुराधा में जातकर्म, अन्नप्राशन, कृषिकर्म, व्यापारारम्भ, वस्तुभूमिभवनवाहनकर्म का मूहूर्त्त है। सर्वार्थसि. सूर्यो. से 23:30 तक
12	मङ्गल	46/35	25:45	ज्येष्ठा	41/30	23:43	ध्रुव	54/10	28:47	कौलव	13:55	तैतिल	25:45	07:07	17:55	27/00	धनु 23:43	21	तिलद्वादशी, ज्येष्ठा में भौमवेध, मूल में केतु युति के कारण मुहूर्ताभाव है।
13	बुध	46/45	25:49	मूल	43/03	24:20	व्याघा.	51/22	27:40	गर	13:47	वणिज	25:49	07:07	17:56	27/03		22	भद्रा 25:49 से, प्रदोष, त्रयोदशीव्रत, मूल में केतु युति व मासान्तदोष मुहूर्त्ताभाव
14	गुरु	47/57	26:18	पू.षा.	45/35	25:21	हर्ष.	49/23	26:52	विष्टि	14:04	शकुनि	26:18	07:07	17:57	27/05		23	भद्रा 14:04 तक, सुभाषचंद्रबोस जयन्ती, मासान्तदोष मुहूर्त्ताभाव
30	शुक्र	50/13	27:12	उ.षा.	49/07	26:46	वज्र	48/12	26:24	चतुष्प.	14:45	नाग	27:12	07:07	17:57	27/05	मकर 07:40	24	स्नानदानश्राद्ध अमा., माघ/मौनी/भौमवतीअमावस्या, त्रिवेणीगंगास्नान, थई अमावस्या (द.भा.), मासान्तदोष मुहूर्त्ताभाव, सूर्यप्रवेश श्रवण में 21:51 पर,

कल्पादि निणर्य- ब्रह्मणो या दिनस्यादिः कल्पादिः सा प्रकीर्तिता। वैशाखस्य तृतीया या कृष्णा या फाल्गुनस्य च। पंचमी चैत्रमासस्य तथैवान्त्या तथा परा। शुक्ला त्रयोदशी माघे कार्तिकस्य तु सप्तमी। नवमी मार्गशीर्षस्य सप्तैताः संस्मराम्यहम्।।

वास्तु में वेधवस्तु	शुभाशुभफल
रास्ता, गलियाला	गृहस्वामी का नाश
वृक्ष	घर के बालकों के लिए दोष
कीचड़ व जलस्थान	शोककारक
नली	धनव्यय
कुआँ	मानसिक अस्थिरता मिर्गी रोग
देवप्रतिमा	गृहस्वामी विनाश
स्तम्भ (खम्बा)	स्त्रियों के लिए दोष
ब्रह्म स्थान (गृहमध्य)	कुलनाश
ब्राह्मण गृह	कुलनाश

गर्भिणी प्रश्न विचार - तत्प्रश्नलग्ने रविजीवभौमे तृतीयभूमृन्नवपञ्चमे च गर्भापुमान्वैत्रृषिभिःप्रणीतश्चाऽन्येग्रहे स्त्रीविबुधैः प्रणीताः। गर्भप्रश्न में लग्न से तीसरे, सातवें, पांचवें और नवम् में यदि सूर्य मङ्गल व गुरु का प्रभाव हो शुभ सम्बन्ध हो तो पुत्र योग कहना चाहिए अन्यथा कन्या योग समझना चाहिए।

सूर्यादि स्पष्ट ग्रह भा.स्टै.टा.प्रातः 5 बजकर 29 मिनट का राशि, अंश, कला, विकला में

दि.	स्पष्ट सूर्य				स्पष्ट चन्द्र				स्पष्ट मङ्गल				स्पष्ट बुध				स्पष्ट गुरु				स्पष्ट शुक्र				स्पष्ट शनि				स्पष्ट राहु			
11	8	26	4	4	2	28	35	32	7	10	59	33	8	26	17	25	8	14	50	5	10	2	29	29	8	28	26	29	2	13	34	55
12	8	27	5	11	3	12	51	34	7	11	40	6	8	27	55	53	8	15	3	47	10	3	42	28	8	28	33	35	2	13	31	44
13	8	28	6	18	3	27	18	47	7	12	20	41	8	29	34	47	8	15	17	28	10	4	55	22	8	28	40	42	2	13	28	33
14	8	29	7	25	4	11	51	17	7	13	1	17	9	1	14	9	8	15	31	8	10	6	8	13	8	28	47	46	2	13	25	22
15	9	0	8	31	4	26	23	8	7	13	41	54	9	2	53	59	8	15	44	47	10	7	21	1	8	28	54	54	2	13	22	12
16	9	1	9	38	5	10	49	9	7	14	22	33	9	4	34	17	8	15	58	24	10	8	33	44	8	29	2	0	2	13	19	1
17	9	2	10	44	5	25	5	21	7	15	3	13	9	6	15	2	8	16	12	0	10	9	46	23	8	29	9	7	2	13	15	50
18	9	3	11	50	6	9	9	12	7	15	43	55	9	7	56	14	8	16	25	35	10	10	58	59	8	29	16	13	2	13	12	39
19	9	4	12	56	6	22	59	27	7	16	24	38	9	9	37	53	8	16	39	8	10	12	11	30	8	29	23	19	2	13	9	28
20	9	5	14	2	7	6	35	51	7	17	5	22	9	11	19	56	8	16	52	39	10	13	23	57	8	29	30	24	2	13	6	18
21	9	6	15	7	7	19	58	41	7	17	46	7	9	13	2	23	8	17	6	8	10	14	36	19	8	29	37	29	2	13	3	7
22	9	7	16	12	8	3	8	29	7	18	26	54	9	14	45	10	8	17	19	36	10	15	48	37	8	29	44	34	2	12	59	56
23	9	8	17	17	8	16	5	48	7	19	7	41	9	16	28	14	8	17	33	2	10	17	0	51	8	29	51	38	2	12	56	45
24	9	9	18	20	8	28	51	4	7	19	48	30	9	18	11	31	8	17	46	25	10	18	13	00	8	29	58	42	2	12	53	34

माघमासनियमाः - भूमौ शयीतहोतव्यं साज्यं तिलसमन्वितम्। सर्वान् कामानवाप्नोति विन्दते परमं सुखम्।। **गणेशोत्पत्तिः** - सर्वदेवमयः साक्षात्सर्व मङ्गलकारकः। माघकृष्णचतुर्थ्यान्तु प्रादुर्भूतो गणेश्वरः।। **माघे प्रातःस्नानफलम्** -यो माघमास्युषसि सूर्यकरान्विताभ्रे। स्नानं समाचरति चासनदीप्रवाहे।। उद्धृत्य सप्तपुरुषान् पितमातृवंश्यान्। स्वर्गं प्रयात्यमरदेहधरो नरोऽसौ।। माघमास में कर्त्तव्य - तुला मकरमेषेषु प्रातः स्नायी सदा भवेत्। हविष्यं ब्रह्मचर्यं च माघस्नाने महाफलम्।। माघ में प्रतिदिन स्नान व विष्णुपूजा करने से अनन्त फल की प्राप्ति होती है। **सोमवती अमावास्या** अमा वा सोमवारेण रविवारेण सप्तमी। चतुर्थी भौमवारेण विषुवत्सदृशं फलम्।।सिनीवाली कुहूर्वापि यदि सोमदिने भवेत् गोसहस्रफलं दद्यात् स्नानं चेन्मौनिना कृतम्

17 जनवरी 2020, अष्टमी, शुक्रवार
सूर्योदयकालीन

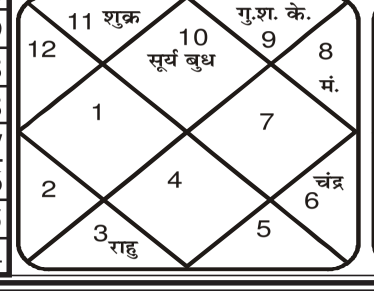

24 जनवरी 2020, अमावस्या, शुक्रवार
सूर्योदयकालीन

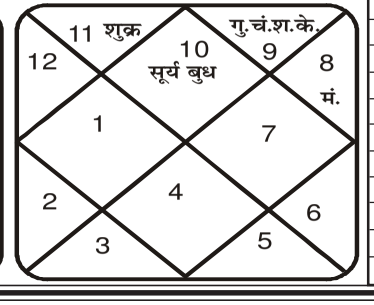

विवाह में सपिण्ड निषेध

असपिण्डा च या मातुरसगोत्रा च या पितुः। सा प्रशस्ता द्विजातीनां दारकर्मणि मैथुने । मनु कहतें हैं कि जो कन्या माता या पिता से असपिण्ड (सात पीढी तक न हो) हो, पिता के गोत्र की न हो ऐसी कन्या के साथ ही विवाह करना चाहिए। **लेपभाजश्चतुर्थाद्याः पित्राद्याः पिण्डभागिनः। पिण्डदः सप्तमस्तेषां सापिण्ड्यं साप्तपौरुषम्।।** मत्स्यपराण में कहा है कि सातपीढी तक सापिण्ड रहता है । गुरु और शिष्य आदि का भी श्राद्धदेवता होने से सापिण्ड है। वसिष्ठ के अनुसार - **पञ्चमीं सप्तमीं चैव मातृतः पितृतस्तथा** । अर्थात् माता से पांचवी और पिता से सातवी पंक्ति में विवाह ग्राह्य है ।

लग्नान्तकाल (भारतीय मानक समय में)

दि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.
11	07:23:44	09:07:48	10:41:48	12:14:08	13:55:04	15:52:00	18:07:52	20:22:48	22:34:44	00:47:40	03:02:40	05:15:44
12	07:19:48	09:03:52	10:37:52	12:10:12	13:51:08	15:48:04	18:03:56	20:18:52	22:30:48	00:43:44	02:58:44	05:11:48
13	07:15:52	08:59:56	10:33:56	12:06:16	13:47:12	15:44:08	18:00:00	20:14:56	22:26:52	00:39:48	02:54:48	05:07:52
14	07:11:56	08:56:00	10:30:00	12:02:20	13:43:16	15:40:12	17:56:04	20:11:00	22:22:56	00:35:52	02:50:52	05:03:56
	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु
15	08:52:04	10:26:04	11:58:24	13:39:20	15:36:16	17:52:08	20:07:04	22:19:00	00:31:56	02:46:56	05:00:00	07:08:00
16	08:48:08	10:22:08	11:54:28	13:35:24	15:32:20	17:48:12	20:03:08	22:15:04	00:28:00	02:43:00	04:56:04	07:04:04
17	08:44:12	10:18:12	11:50:32	13:31:28	15:28:24	17:44:16	19:59:12	22:11:08	00:24:04	02:39:04	04:52:08	07:00:08
18	08:40:16	10:14:16	11:46:36	13:27:32	15:24:28	17:40:20	19:55:16	22:07:12	00:20:08	02:35:08	04:48:12	06:56:12
19	08:36:20	10:10:20	11:42:40	13:23:36	15:20:32	17:36:24	19:51:20	22:03:16	00:16:12	02:31:12	04:44:16	06:52:16
20	08:32:24	10:06:24	11:38:44	13:19:40	15:16:36	17:32:28	19:47:24	21:59:20	00:12:16	02:27:16	04:40:20	06:48:20
21	08:28:28	10:02:28	11:34:48	13:15:44	15:12:40	17:28:32	19:43:28	21:55:24	00:08:20	02:23:20	04:36:24	06:44:24
22	08:24:32	09:58:32	11:30:52	13:11:48	15:08:44	17:24:36	19:39:32	21:51:28	00:04:24	02:19:24	04:32:28	06:40:28
23	08:20:36	09:54:36	11:26:56	13:07:52	15:04:48	17:20:40	19:35:36	21:47:32	00:00:28	02:15:28	04:28:32	06:36:32
24	08:16:40	09:50:40	11:23:00	13:03:56	15:00:52	17:16:44	19:31:40	21:43:36	23:56:32	02:11:32	04:24:36	06:32:36

ग्रहचार

मार्गी मंगल-अनु. में 19 को 14:32 से ज्येष्ठा में, मार्गी बुध- 11 जन. को 11:00 से उ.षा. में व 19 जन.10:41 से श्रवण में, मार्गी गुरु- पू.षा. में,मार्गी शुक्र- धनि. में 14 को 15:57 से शत. में, मार्गीशनि- उ.षा. में, राहु- आर्द्रा में, केतु- पू.षा. में 15 को 22:3 से मूल में

माघ शुक्लपक्ष — परिधावी संवत्सर, वि. संवत् 2076, शक 1941

उत्तरायण, दक्षिणगोल, शिशिरऋतु (25 जनवरी से 09 फरवरी 2020 ई. तक) — गुरु पूर्व, शुक्र पश्चिम

तिथि	वार	घ.प.	घ.मि.	नक्षत्र	घ.प.	घ.मि.	योग	घ.प.	घ.मि.	करण	घ.मि.	करण	घ.मि.	सू.उ. घ.मि.	सू.अ. घ.मि.	दि.मा. घ.प.	च.रा.प्र. घ.मि.	दिनांक	व्रतपर्व विवरण (भारतीय मानक समय में) / दैनिकमुहूर्त्तादि विवरण (भद्रा, पञ्चक एवं त्रिपुष्कर, सर्वार्थसिद्धि योगादि)
01	शनि	53/33	28:32	श्रवण	53/40	28:35	सिद्धि	47/50	26:15	किंस्तु.	15:52	बव	28:32	07:07	17:58	27/07		25	पञ्चक 28:35 से, गुप्त/साधनानवरात्र आरम्भ, वल्लभाचार्य जयन्ती। श्रवण में सूर्ययुति 28:35, सर्वार्थसि. सूर्यो. से 28:35 तक।
02	रवि	57/53	30:16	धनिष्ठा	59/15	30:49	व्यति.	48/12	26:24	बालव	17:24	कौलव	30:16	07:06	17:59	27/12	कुम्भ 17:39	26	गणतंत्र दिवस, धनिष्ठा में सूर्य भोग्यदोष व व्यतीपात दोष मुहूर्त्ताभाव है। द्विपुष्कर सूर्योदय से 30:49 तक।
03	सोम	--	--	शत.	--	--	वरी.	49/23	26:51	तैतिल	19:19	गर	--	07:06	18:00	27/15		27	शतभिषा में जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, गर्भाधान, व्यापारारम्भ, वस्तुभूमिभवनवाहनकर्म का मुहूर्त है।
03	मङ्गल	03/10	08:22	शत.	05/43	09:23	परिघ	51/05	27:32	गर	08:22	वणिज	21:32	07:06	18:00	27/15	मीन 29:05	28	भद्रा 21:32 से, गौरीतृतीयाव्रत,तिल/भौम चतुर्थी, कुन्दचतुर्थी, विनायक चतुर्थी, पू.भा. में रिक्तादोष मुहूर्त्ताभाव है। रिक्तोपरान्त व्यापारारम्भ, वस्तुभूमिभववाहनकर्म,पशुपक्षीमत्स्यादिकर्म का मुहूर्त है।
04	बुध	09/10	10:46	पू.भा.	12/48	12:13	शिव	53/08	28:21	विष्टि	10:46	बव	24:03	07:06	18:01	27/17		29	भद्रा 10:46 तक, श्री/लक्ष्मी/बसन्त पंचमी (पूर्वविद्धा) रिक्तोपरान्त उ.भा में पशुपक्षीमत्स्यादिकर्म, अन्नप्राशन, गर्भाधान, व्यापारारम्भ, वस्तुभूमिभवनवाहनकर्म का मुहूर्त है।
05	गुरु	15/35	13:20	उ.भा.	20/15	15:12	सिद्ध	55/17	29:13	बालव	13:20	कौलव	26:36	07:05	18:02	27/23		30	लेखनीपूजा (बंगाल), वागीश्वरीजयन्ती, तक्षकपूजा। उ.भा./रेवती में जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, गर्भाधान, व्यापारारम्भ, वस्तुभूमिभवनवाहनकर्म का मुहूर्त है। सर्वार्थसि. 15:12 से सूर्यो. तक।
06	शुक्र	21/57	15:52	रेवती	27/43	18:10	साध्य	57/10	29:57	तैतिल	15:52	गर	29:02	07:05	18:02	27/23	मेष 18:09	31	पञ्चक 18:10 तक, शीतलाषष्ठी, रेवती में जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, गर्भाधान, व्यापारारम्भ, वस्तुभूमिभवनवाहनकर्म का मुहूर्त है।अमृतसिद्धि सूर्यो. से 18:10 तक,
07	शनि	27/45	18:11	अश्विनी	34/30	20:53	शुभ	58/30	30:29	वणिज	18:11	विष्टि	--	07:04	18:03	27/28		01	भद्रा 18:11 से, अभोज्यार्कव्रत, रथ/अचला/आरोग्य/मन्वादिसप्तमी, सूर्यजयन्ती, नर्मदा जयन्ती, भद्रापूर्व अश्विनी में शिल्प/वास्तुकर्म, व्यापारकार्य, ईंट-भट्टा कार्य का मुहूर्त्त है। सर्वार्थसि. सूर्यो. से 18:10 तक।
08	रवि	32/30	20:04	भरणी	40/17	23:11	शुक्ल	58/25	30:36	विष्टि	07:08	बव	20:04	07:04	18:04	27/30	वृष 29:40	02	भद्रा 7:4 तक, भीष्माष्टमी,दुर्गाष्टमी, भरणी में उग्ररासायनिककर्म, अग्निकर्म, वस्तुविक्रय मुहूर्त्त है।
09	सोम	35/40	21:20	कृतिका	44/30	24:52	ब्रह्म	57/53	30:13	बालव	08:42	कौलव	21:20	07:04	18:04	27/30		03	महानन्दानवमी, नन्दिनीदेवी पूजा, श्रीहरसूब्रह्मजयन्ती, गुप्तनवरात्रसमाप्त,कृत्तिका में सूर्यवेधरिक्तादोष मुहूर्त्ताभाव है।
10	मङ्गल	36/55	21:50	रोहिणी	46/53	25:49	ऐन्द्र	55/22	29:13	तैतिल	09:35	गर	21:50	07:03	18:05	27/35		04	रोहिणी में पुंसवन, सीमन्त, आभूषण, उग्रकार्य, ऑप्रेशन का मुहूर्त है।
11	बुध	36/10	21:31	मृगशिरा	47/18	25:58	वैधृति	51/20	27:35	वणिज	09:41	विष्टि	21:31	07:03	18:06	27/38	मिथु. 14:00	05	भद्रा 09:41 से 21:31 तक, जया (भैमी)एकादशी (सर्वे.)भक्त पुण्डरीक उत्सव (पण्ढरपुर), मृगशिरा में शनिवेध के कारण मुहूर्त्ताभाव है। सर्वार्थसि. सूर्यो. से 25:58 तक।
12	गुरु	33/22	20:24	आर्द्रा	45/45	25:21	विष्कु	45/40	25:19	बव	08:58	बालव	20:24	07:02	18:06	27/40		06	भीम/वराहद्वादशी, सन्तान/आमलकी द्वादशी, प्रदोषव्रत, भीष्मद्वादशी/तर्पण, आर्द्रा में राहुयुति मुहूर्त्ताभाव है।
13	शुक्र	28/45	18:32	पुनर्वसु	42/28	24:01	प्रीति	38/38	22:29	कौलव	07:28	तैतिल गर	18:32 29:17	07:02	18:07	27/43	कर्क 18:24	07	कल्पादि 13, पुन.में केतुवेध मुहूर्त्ताभाव रहेगा। सर्वार्थसि. सूर्यो. से 24:01 तक।
14	शनि	22/30	16:02	पुष्य	37/37	22:05	आयु	30/20	19:10	वणिज	16:02	विष्टि	26:33	07:01	18:08	27/48		08	भद्रा 16:02 से,26:33 तक, माघव्रतपूर्णिमा, श्रीसत्यनारायण व्रत, पुष्य में रिक्तादोष है।
15	रवि	15/05	13:03	आश्ले.	31/45	19:43	सौभा	21/07	15:28	बव	13:03	बालव	23:24	07:01	18:08	27/48	सिंह 19:43	09	माघीस्नानदानादि पूर्णिमा, माघ समाप्ति,श्लेषा में रासायनिककार्य, उग्र-शस्त्र-अग्निकार्य का मुहूर्त्त है।

माघशुक्लचतुर्थी

माघशुक्लचतुर्थी एव तिलचतुर्थी। सा प्रदोषव्यापिनी ग्राह्या। माघशुक्लचतुर्थ्यां तु नक्तव्रतपरायणाः। ये त्वां दुण्ढेऽर्चयिष्यन्ति तेऽर्च्याः स्युरसुरद्रुहाम्। माघमासे चतुर्थ्यां तु तस्मिन् काल उपोषितः। अर्चयित्वा तु यो देवि जागरं तत्र कारयेत्।। इयमेव कुन्दचतुर्थी प्रदोषव्यापिनी ग्राह्या। माघशुक्लचतुर्थ्यां तु कुन्दपुष्पैः सदाशिवम्। सम्पूज्य यो हि नक्ताशीं स प्राप्नोति श्रियं नरः।

यात्रा विधि - राजा यात्रा के अवसर पर पहले अग्नि में हवन और देवताओं का पूजन करें फिर ब्राह्मणों को नमस्कार करे। जिस दिशा में यात्रा करनी हो, उस दिशा के स्वामी (इन्द्रादि दिक्पालों) का पूजन करे, ब्राह्मणों को दान देकर दिशा के स्वामी का मन में ध्यान करके गन्तव्य दिशा में यात्रा करे।।

सूर्यादि स्पष्ट ग्रह भा.स्टै.टा.प्रातः 5 बजकर 29 मिनट का राशि, अंश, कला, विकला में

दि.	स्पष्ट सूर्य				स्पष्ट चन्द्र				स्पष्ट मङ्गल				स्पष्ट बुध				स्पष्ट गुरु				स्पष्ट शुक्र				स्पष्ट शनि				स्पष्ट राहु			
25	9	10	19	24	9	11	24	44	7	20	29	20	9	19	54	57	8	17	59	47	10	19	25	4	9	0	5	44	2	12	50	24
26	9	11	20	26	9	23	47	20	7	21	10	11	9	21	38	25	8	18	13	6	10	20	37	2	9	0	12	46	2	12	47	13
27	9	12	21	27	10	5	59	41	7	21	51	3	9	23	21	47	8	18	26	23	10	21	48	56	9	0	19	47	2	12	44	2
28	9	13	22	28	10	18	3	9	7	22	31	56	9	25	4	55	8	18	39	37	10	23	0	44	9	0	26	47	2	12	40	51
29	9	14	23	28	10	29	59	40	7	23	12	50	9	26	47	38	8	18	52	49	10	24	12	26	9	0	33	47	2	12	37	40
30	9	15	24	26	11	11	51	53	7	23	53	45	9	28	29	43	8	19	5	58	10	25	24	3	9	0	40	45	2	12	34	30
31	9	16	25	23	11	23	43	10	7	24	34	41	10	0	10	54	8	19	19	5	10	26	35	33	9	0	47	42	2	12	31	19
01	9	17	26	19	0	5	37	34	7	25	15	38	10	1	50	55	8	19	32	9	10	27	46	57	9	0	54	37	2	12	28	8
02	9	18	27	14	0	17	39	36	7	25	56	36	10	3	29	24	8	19	45	10	10	28	58	15	9	1	1	32	2	12	24	57
03	9	19	28	7	0	29	54	7	7	26	37	35	10	5	5	59	8	19	58	8	11	0	9	26	9	1	8	25	2	12	21	47
04	9	20	28	59	1	12	25	57	7	27	18	35	10	6	40	11	8	20	11	3	11	1	20	30	9	1	15	16	2	12	18	36
05	9	21	29	50	1	25	19	31	7	27	59	36	10	8	11	32	8	20	23	55	11	2	31	27	9	1	22	6	2	12	15	25
06	9	22	30	39	2	8	38	18	7	28	40	38	10	9	39	27	8	20	36	44	11	3	42	17	9	1	28	55	2	12	12	14
07	9	23	31	27	2	22	24	7	7	29	21	42	10	11	3	19	8	20	49	29	11	4	52	59	9	1	35	42	2	12	9	4
08	9	24	32	14	3	6	36	27	8	0	2	46	10	12	22	28	8	21	2	11	11	6	3	34	9	1	42	27	2	12	5	53
09	9	25	32	59	3	21	11	58	8	0	43	52	10	13	36	13	8	21	14	50	11	7	14	1	9	1	49	11	2	12	2	42

सूर्यसप्तमी - अरुणोदयवेलायां शुक्लामाघस्य सप्तमी प्रयागे यदि लभ्येत कोटि सूर्यग्रहैःसमा। भास्कर अर्घ्य **मन्त्र** - जननी सर्वलोकानां सप्तमी सप्तसप्तिके सप्तमीसहितो देव गृहाणार्घ्यं दिवाकर। सूर्य को आक के पत्तों पुष्पों दूर्वा, चावल, जौ, दूध, कुशा, दही, तिल चन्दन इत्यादि से अर्घ्य प्रदान करें। यद्यज्जन्मकृतं पापं मया जन्मसु सप्तसु तन्मे रोगं च शोकं च माकरी हन्तु सप्तमी।

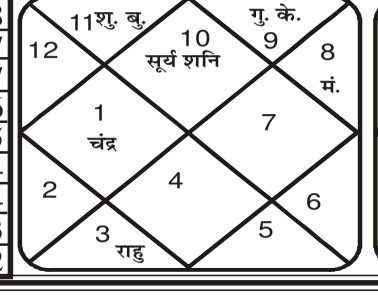

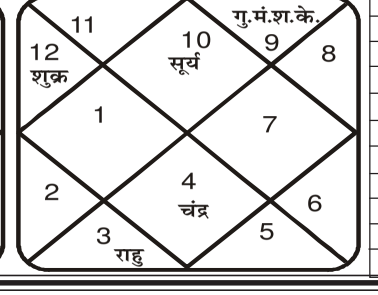

02 फरवरी 2020, अष्टमी, रविवार
सूर्योदयकालीन

09 फरवरी 2020, पूर्णिमा, रविवार
सूर्योदयकालीन

माघ शुक्ल पञ्चमी - बसंतपंचमी पर्व मुख्यतः माता सरस्वती की आराधना का है। इस दिन पीतवस्त्र धारण, पीत भोजन व पीतपुष्पों से माता की पूजा लाभार्थ होती है। इसी दिन कामदेव की आराधना की जाती है। पञ्चमी को नौ नागों की पूजा भी कल्याणप्रद होती है।

लग्नान्तकाल (भारतीय मानक समय में)

दि.	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु
25	08:12:44	09:46:44	11:19:04	13:00:00	14:56:56	17:12:48	19:27:44	21:39:40	23:52:36	02:07:36	04:20:40	06:28:40
26	08:08:48	09:42:48	11:15:08	12:56:04	14:53:00	17:08:52	19:23:48	21:35:44	23:48:40	02:03:40	04:16:44	06:24:44
27	08:04:52	09:38:52	11:11:12	12:52:08	14:49:04	17:04:56	19:19:52	21:31:48	23:44:44	01:59:44	04:12:48	06:20:48
28	08:00:56	09:34:56	11:07:16	12:48:12	14:45:08	17:01:00	19:15:56	21:27:52	23:40:48	01:55:48	04:08:52	06:16:52
29	07:57:00	09:31:00	11:03:20	12:44:16	14:41:12	16:57:04	19:12:00	21:23:56	23:36:52	01:51:52	04:04:56	06:12:56
30	07:53:04	09:27:04	10:59:24	12:40:20	14:37:16	16:53:08	19:08:04	21:20:00	23:32:56	01:47:56	04:01:00	06:09:00
31	07:49:08	09:23:08	10:55:28	12:36:24	14:33:20	16:49:12	19:04:08	21:16:04	23:29:00	01:44:00	03:57:04	06:05:04
01	07:45:12	09:19:12	10:51:32	12:32:28	14:29:24	16:45:16	19:00:12	21:12:08	23:25:04	01:40:04	03:53:08	06:01:08
02	07:41:16	09:15:16	10:47:36	12:28:32	14:25:28	16:41:20	18:56:16	21:08:12	23:21:08	01:36:08	03:49:12	05:57:12
03	07:37:20	09:11:20	10:43:40	12:24:36	14:21:32	16:37:24	18:52:20	21:04:16	23:17:12	01:32:12	03:45:16	05:53:16
04	07:33:24	09:07:24	10:39:44	12:20:40	14:17:36	16:33:28	18:48:24	21:00:20	23:13:16	01:28:16	03:41:20	05:49:20
05	07:29:28	09:03:28	10:35:48	12:16:44	14:13:40	16:29:32	18:44:28	20:56:24	23:09:20	01:24:20	03:37:24	05:45:24
06	07:25:32	08:59:32	10:31:52	12:12:48	14:09:44	16:25:36	18:40:32	20:52:28	23:05:24	01:20:24	03:33:28	05:41:28
07	07:21:36	08:55:36	10:27:56	12:08:52	14:05:48	16:21:40	18:36:36	20:48:32	23:01:28	01:16:28	03:29:32	05:37:32
08	07:17:40	08:51:40	10:24:00	12:04:56	14:01:52	16:17:44	18:32:40	20:44:36	22:57:32	01:12:32	03:25:36	05:33:36
09	07:13:44	08:47:44	10:20:04	12:01:00	13:57:56	16:13:48	18:28:44	20:40:40	22:53:36	01:08:36	03:21:40	05:29:40

ग्रहचार

मार्गी मंगल- ज्ये. में 08 फर. को 03:52से मूल में, मार्गी बुध- 26 जन. को 29:4 से धनि. में व 03 फर.से 29:26से शत. में,मागीगुरु- पू.षा. में,मार्गी शुक्र- 25 को 17:07 से पू.भा. में व 05 फर.को 21:55 से उ.भा. में, मार्गीशनि- उ.षा. में, राहु- आर्द्रा में, केतु- मूल में

फाल्गुन कृष्णपक्ष — परिधावी संवत्सर, वि. संवत् 2076, शक 1941

उत्तरायण, दक्षिणगोल, शिशिर ऋतु (10 फरवरी से 23 फरवरी 2020 ई. तक) — गुरु पूर्व, शुक्र पश्चिम

तिथि	वार	घ.प.	घ.मि.	नक्षत्र	घ.प.	घ.मि.	योग	घ.प.	घ.मि.	करण	घ.मि.	करण	घ.मि.	सू.उ. घ.मि.	सू.अ. घ.मि.	दि.मा. घ.प.	च.रा.प्र. घ.मि.	दिनांक	व्रतपर्व विवरण (भारतीय मानक समय में)
01 02	सोम	24/22 58/15	09:45 30:18	मघा	42/45	17:06	शोभ	28/50	11:32	कौलव	09:45	तैतिल गर	20:01 30:18	07:00	18:09	27/53		10	मघा में उग्रकार्य,कृषिकर्म का मुहूर्त्त है।
03	मङ्गल	49/43	26:53	पू.फा.	18/50	14:32	अति सुक	01/13 51/10	07:29 27:28	वणिज	16:36	विष्टि	26:53	07:00	18:10	27/55	कन्या 19:43	11	भद्रा 16:36 से 26:53 तक, पू.फा. में उग्रशस्त्र-अग्निकार्य व वस्तुविक्रय का मुहूर्त्त है।
04	बुध	41/40	23:40	उ.फा.	11/55	11:46	धृति	41/30	23:36	बव	13:16	बालव	23:40	06:59	18:10	27/58		12	चन्द्रोदय 21:36,संकष्टहरचतुर्थीव्रत, उ.फा. में रिक्तादोष है। सर्वार्थसि. 11:46 से सूर्योदय तक।
05	गुरु	34/30	20:47	हस्त	06/05	09:25	शूल	32/38	20:02	कौलव	10:14	तैतिल	20:47	06:58	18:11	28/02	तुला 20:23	13	**सूर्यप्रवेश कुंभ में 15:04 पर पुण्यकाल 08:39 के बाद,** स्वाती में सूर्यवेध के कारण मुहूर्ताभाव है, हस्त में पुंसवन, सीमन्त, जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, व्यापारारम्भ, ✸
06	शुक्र	28/27	18:21	चित्रा स्वाती	01/15 57/38	07:28 30:01	गण्ड	24/40	16:50	गर	07:34	वणिज विष्टि	18:21 29:26	06:58	18:12	28/05		14	भद्रा 18:21 से 29:26 तक,स्वाती में भद्रापूर्व जातकर्म, नामकरण, वाटिकारोपण, वस्तुभूमिभवनवाहनकार्य का मुहूर्त्त है।
07	शनि	23/50	16:30	विशाखा	55/27	29:09	वृद्धि	17/47	14:05	बव	16:30	बालव	27:52	06:57	18:12	28/07	वृश्चि. 23:19	15	विशाखा में सूर्यवेध मुहूर्ताभाव है। त्रिपुष्कर सूर्यो.से 29:09 तक। ✸ वस्तुभूमिभवनवाहनकार्य का मुहूर्त्त है।
08	रवि	20/42	15:14	अनुराधा	54/52	28:54	ध्रुव	12/08	11:48	कौलव	15:14	तैतिल	26:55	06:57	18:13	28/10		16	जानकीजयन्ती, अनुराधा में वाटिकारोपण, वस्तुभूमिभवनवाहनकार्य का मुहूर्त्त है।
09	सोम	19/07	14:36	ज्येष्ठा	55/43	29:14	व्याघा.	07/40	10:01	गर	14:36	वणिज	26:35	06:56	18:13	28/12	धनु 29:14	17	भद्रा 26:35 से, ज्येष्ठा में रिक्तादोष है।
10	मङ्गल	19/03	14:33	मूल	57/55	30-06	हर्ष.	04/27	08:43	विष्टि	14:33	बव	26:48	06:55	18:14	28/18		18	भद्रा 14:33 तक, मूल में मंगलकेतु युति मुहूर्ताभाव है। ,
11	बुध	20/20	15:03	पू.षा.	--	--	वज्र	02/15	07:49	बालव	15:03	कौलव	27:32	06:54	18:14	28/20		19	विजया एकादशीव्रत सर्वेषाम्,सूर्यप्रवेश शतभिषा में 29:38पर,सायनसूर्य मीन में, पू.षा. में राहुयुति है,
12	गुरु	22/45	16:00	पू.षा.	01/25	07:28	सिद्धि	01/02	07:19	तैतिल	16:00	गर	28:41	06:54	18:15	28/22	मकर 13:52	20	प्रदोषव्रत, महाद्वादशी, उ.षा. में शनियुति मुहूर्ताभाव है।
13	शुक्र	26/08	17:21	उ.षा.	05/47	09:13	व्यति.	00/35	07:08	वणिज	17:21	विष्टि	30:12	06:53	18:15	28/25		21	भद्रा 17:21 से 30:12 तक, श्रीवैद्यनाथजयन्ती, महाशिवरात्रिव्रत, श्रवण में व्यतीपात व भद्रादोष के कारण मुहूर्त्ताभाव है, सर्वार्थसि. 09:13 से सूर्योदय तक।
14	शनि	30/25	19:03	श्रवण	11/05	11:19	वरी.	00/50	07:13	शकुनि	19:03	चतुष्पद	--	06:52	18:16	28/30	कुम्भ 24:29	22	पंचकारंभ 11:19 से, आरटन्ती चतुर्दशी, चतुर्दशलिङ्गपूजा, मासान्तदोष के कारण मुहूर्ताभाव है ।।
30	रवि	35/25	21:02	धनिष्ठा	17/07	13:43	परिघ	01/40	07:32	चतुष्पद	08:03	नाग	21:02	06:51	18:17	28/35		23	स्नानदान-श्राद्ध अमावस्या, ब्रह्मपूजा, फाल्गुन अमावस्या, द्वापरोत्पत्ति, मासान्तदोष।

दैनिकमुहूर्त्तादि विवरण (भद्रा, पञ्चक एवं त्रिपुष्कर, सर्वार्थसिद्धि योगादि)

फाल्गुनकृष्णाष्टमी- फाल्गुनस्य च मासस्य कृष्णाष्टम्यां महीपते। इत्युपक्रम्य जाता दाशरथे: पत्नी तस्मिन्नहनि जानकी। उपोषितो रघुपति: समुद्रस्य तटे तदा ।। रामपत्नी च सम्पूज्या सीता जनकनन्दिनी।।फाल्गुन कृष्णाष्टमी के दिन जनक नन्दिनी का जन्म हुआ था अत: इस दिन सीता का पूजन करें

कालपुरुषाङ्गविभाग:

शीर्षमुखबाहुहृदयोदराणि कटिबस्तिगुह्यसंज्ञानि । ऊरूजानूजंघे चरणाविति राशयोऽजाद्या: ।। कालनरस्यावयवान् पुरुषाणां चिन्तयेत्प्रसवकाले । सदसद्ग्रहसंयोगात् पुष्टा: सोपद्रवास्ते च ।। अर्थात् कालपुरुषस्य द्वादशभागेषु एते राशय: अङ्ग इव सन्निवेष्टिता: सन्ति । येन ब्रह्माण्डस्थ प्रत्येकजीवानामुपरि एतेषां प्रभाव: प्रतिफलति ।अत: कालपुरुषस्य अङ्गावयवै: साकं एतेषां यथाक्रमं स्वरूपम् आलोच्यते ।अस्य चापि महानुपयोग: फलकथने भवति। मत्स्यद्वयाकार: मीनराशि:, घटधारकपुरुषस्याकार: कुम्भराशि:, स्त्रीपुरुषयो: युगलचित्रं मिथुनराशि: अत्र पुरुषस्य हस्ते गदा तथा स्त्रिया: हस्ते वीणा शोभते, धनुर्धारिपुरुषस्याकार: धनुरत्र पुरुषस्य कटिप्रदेशादध: भाग: अश्वाकार: ऊर्ध्वभागश्च पुरुषाकार:, मकरराशि: मकरसदृश: वर्तते, परन्तु तस्य मुखं हरिणसदृशं, तुलराशे: स्वरूपं तुलधारिपुरुषस्य वर्तते, कन्याराशे: स्वरूपं बालिकाया: वर्तते यस्या: एकस्मिन् हस्तेऽग्निरन्यस्मिन् च अन्नं वर्तते तथा च सा नावोपरि उपविष्टा भवति, मेषराशे: मेष इव स्वरूपं, बृषराशे: वृष इव, कर्कस्य कर्क इव, सिंहस्य सिंह इव तथा च वृश्चिकस्य वृश्चिक इव स्वरूपं वर्तते ।

सूर्यादि स्पष्ट ग्रह भा.स्टै.टा.प्रात: 5 बजकर 29 मिनट का राशि, अंश, कला, विकला में

दि.	स्पष्ट सूर्य				स्पष्ट चन्द्र				स्पष्ट मङ्गल				स्पष्ट बुध				स्पष्ट गुरु				स्पष्ट शुक्र				स्पष्ट शनि				स्पष्ट राहु			
10	9	26	33	43	4	6	4	28	8	1	24	59	10	14	43	48	8	21	27	25	11	8	24	19	9	1	55	53	2	11	59	31
11	9	27	34	26	4	21	5	27	8	2	6	7	10	15	44	29	8	21	39	57	11	9	34	30	9	2	2	33	2	11	56	20
12	9	28	35	7	5	6	5	26	8	2	47	16	10	16	37	30	8	21	52	25	11	10	44	32	9	2	9	11	2	11	53	10
13	9	29	35	48	5	20	55	33	8	3	28	26	10	17	22	9	8	22	4	49	11	11	54	26	9	2	15	47	2	11	49	59
14	10	0	36	27	6	5	28	54	8	4	9	38	10	17	57	45	8	22	17	10	11	13	4	12	9	2	22	21	2	11	46	38
15	10	1	37	5	6	19	41	18	8	4	50	51	10	18	23	46	8	22	29	27	11	14	13	48	9	2	28	52	2	11	43	37
16	10	2	37	42	7	3	31	16	8	5	32	5	10	18	39	44	8	22	41	39	11	15	23	16	9	2	35	22	2	11	40	27
17	10	3	38	18	7	16	59	32	8	6	13	20	10	18	45	21	8	22	53	48	11	16	32	35	9	2	41	50	2	11	37	16
18	10	4	38	52	8	0	8	12	8	6	54	37	10	18	40	31	8	23	5	52	11	17	41	44	9	2	48	15	2	11	34	5
19	10	5	39	26	8	13	0	3	8	7	35	54	10	18	25	22	8	23	17	52	11	18	50	44	9	2	54	37	2	11	30	54
20	10	6	39	58	8	25	37	57	8	8	17	12	10	18	0	15	8	23	29	48	11	19	59	34	9	3	0	58	2	11	27	44
21	10	7	40	28	9	8	4	29	8	8	58	31	10	17	25	47	8	23	41	39	11	21	8	14	9	3	7	15	2	11	24	33
22	10	8	40	58	9	20	21	44	8	9	39	51	10	16	42	52	8	23	53	25	11	22	16	44	9	3	13	31	2	11	21	22
23	10	9	41	25	10	2	31	18	8	10	21	12	10	15	52	35	8	24	5	7	11	23	25	3	9	3	19	43	2	11	18	11

महाशिवरात्रिव्रतमहात्म्यम् - माघफाल्गुनयोर्मध्ये कृष्णा या च चतुर्दशी, दत्तं शिव: फलं यस्मात्तेन सर्वसुरासुरै:।। शिवरात्रिरित ख्याता मत्कलैव पृथक स्थिता।।मम भक्तस्तु यो देवि शिवरात्री मुपोषक:। गणत्वमक्षयं दिव्यं लभते शिवशासनम्।। सर्वान्भुक्त्वा महाभोगान् ततो मोक्षमवाप्नुयात्। **शिवरात्रिव्रते तिथि निर्णय:** - तत्काल व्यापिनी ग्राह्या शिवरात्रिव्रते तिथि:। अर्धरात्रादधश्चोर्ध्वं युक्ता यत्र चतुर्दशी।। आज के दिन शिव का चारों प्रहर में अभिषेक, पूजन अनन्त फल देने वाला होता है। अर्धरात्रि का पूजन व बिल्वार्चन सिद्धिप्रद है।

16 फरवरी 2020, अष्टमी, रविवार
सूर्योदयकालीन

23 फरवरी 2020, अमावस्या, रविवार
सूर्योदयकालीन

फाल्गुनामायां शतभिषक्योग:- माघासिते पञ्चदशी कदाचिदुपैति योगं यदि वारुणेन। ऋक्षेण काल: स पर: पितृणां न ह्यल्पपुण्यैर्नृप लभ्यतेऽसौ।। दत्तं तिलान्नं प्रददाति तृप्तिं वर्षायुतं तत्कुलजैर्मनुष्यै:।। शिवरात्रि पूजा विशेष - प्रथम प्रहर दूध से ऊँ ह्रौं ईशानाय नम:, द्वितीय प्रहर दही से ऊँ ह्रौं अघोराय नम:, तृतीय प्रहर घी से ऊँ ह्रौं वामदेवाय नम:, चतुर्थ प्रहर में मधु से ऊँ ह्रौं सद्योजाताय नम: से क्रमश: पूजन व अभिषेक करना चाहिए।

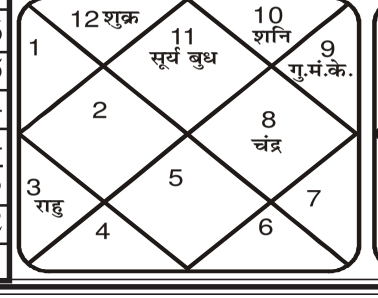

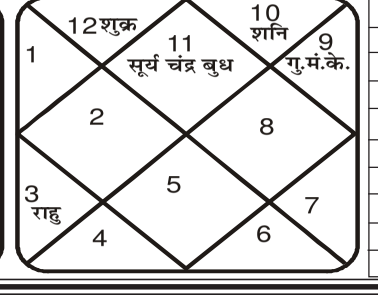

लग्नान्तकाल (भारतीय मानक समय में)

दि.	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु
10	07:09:48	08:43:48	10:16:08	11:57:04	13:54:00	16:09:52	18:24:48	20:36:44	22:49:40	01:04:40	03:17:44	05:25:44
11	07:05:52	08:39:52	10:12:12	11:53:08	13:50:04	16:05:56	18:20:52	20:32:48	22:45:44	01:00:44	03:13:48	05:21:48
12	07:01:56	08:35:56	10:08:16	11:49:12	13:46:08	16:02:00	18:16:56	20:28:52	22:41:48	00:56:48	03:09:52	05:17:52
	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर
13	08:32:00	10:04:20	11:45:16	13:42:12	15:58:04	18:13:00	20:24:56	22:37:52	00:52:52	03:05:56	05:13:56	06:58:00
14	08:28:04	10:00:24	11:41:20	13:38:16	15:54:08	18:09:04	20:21:00	22:33:56	00:48:56	03:02:00	05:10:00	06:54:04
15	08:24:08	09:56:28	11:37:24	13:34:20	15:50:12	18:05:08	20:17:04	22:30:00	00:45:00	02:58:04	05:06:04	06:50:08
16	08:20:12	09:52:32	11:33:28	13:30:24	15:46:16	18:01:12	20:13:08	22:26:04	00:41:04	02:54:08	05:02:08	06:46:12
17	08:16:16	09:48:36	11:29:32	13:26:28	15:42:20	17:57:16	20:09:12	22:22:08	00:37:08	02:50:12	04:58:12	06:42:16
18	08:12:20	09:44:40	11:25:36	13:22:32	15:38:24	17:53:20	20:05:16	22:18:12	00:33:12	02:46:16	04:54:16	06:38:20
19	08:08:24	09:40:44	11:21:40	13:18:36	15:34:28	17:49:24	20:01:20	22:14:16	00:29:16	02:42:20	04:50:20	06:34:24
20	08:04:28	09:36:48	11:17:44	13:14:40	15:30:32	17:45:28	19:57:24	22:10:20	00:25:20	02:38:24	04:46:24	06:30:28
21	08:00:32	09:32:52	11:13:48	13:10:44	15:26:36	17:41:32	19:53:28	22:06:24	00:21:24	02:34:28	04:42:28	06:26:32
22	07:56:36	09:28:56	11:09:52	13:06:48	15:22:40	17:37:36	19:49:32	22:02:28	00:17:28	02:30:32	04:38:32	06:22:36
23	07:52:40	09:25:00	11:05:56	13:02:52	15:18:44	17:33:40	19:45:36	21:58:32	00:13:32	02:26:36	04:34:36	06:18:40

ग्रहचार

मार्गी मंगल-मूल में, मार्गी बुध शतभिषा में, मार्गी गुरु- पू.षा. में, मार्गी शुक्र- उ.भा. में 17 फर.को 08:03से रेवती में , मार्गीशनि- उ.षा. में, राहु- आर्द्रा में, केतु- मूल में

फाल्गुन शुक्लपक्ष **परिधावी संवत्सर, वि. संवत् 2076, शक 1941** सू.उ. सू.अ. दि.मा. च.रा.प्र.

तिथि	वार	घ.प.	घ.मि.	नक्षत्र	घ.प.	घ.मि.	योग	घ.प.	घ.मि.	करण	घ.मि.	करण	घ.मि.	घ.मि.	घ.मि.	घ.प.	घ.मि.
01	सोम	58/08	23:15	शत.	40/52	16:21	शिव	20/07	08:03	किंस्तु.	10:08	बव	23:15	06:51	18:17	28/35	
02	मङ्गल	47/03	25:40	पू.भा.	30/48	19:10	सिद्ध	04/42	08:44	बालव	12:27	कौलव	25:40	06:50	18:18	28/40	मीन 12:27
03	बुध	53/25	28:12	उ.भा.	38/15	22:08	साध्य	06/48	09:33	तैतिल	14:56	गर	28:12	06:49	18:18	28/42	
04	गुरु	59/50	30:45	रेवती	45/48	25:08	शुभ	09/03	10:26	वणिज	17:28	विष्टि	30:45	06:48	18:19	28/47	मेष 25:08
05	शुक्र	--	--	अश्विनी	53/08	28:03	शुक्ल	11/17	11:19	बव	19:57	बालव	--	06:47	18:19	28/50	
05	शनि	05/58	09:10	भरणी	59/48	30:42	ब्रह्म	13/13	12:04	बालव	09:10	कौलव	22:13	06:47	18:20	28/52	
06	रवि	11/13	11:16	कृतिका	--	--	ऐन्द्र	14/30	12:35	तैतिल	11:16	गर	24:14	06:46	18:20	28/55	वृष 13:18
07	सोम	15/17	12:53	कृतिका	05/23	08:55	वैधृति	14/55	12:44	वणिज	12:53	विष्टि	25:21	06:45	18:21	29/00	
08	मङ्गल	17/43	13:50	रोहिणी	09/28	10:32	विष्कु	14/02	12:22	बव	13:50	बालव	25:55	06:44	18:21	29/02	मिथु.23:03
09	बुध	18/10	14:00	मृगशिरा	11/37	11:23	प्रीति	11/43	11:25	कौलव	14:00	तैतिल	25:39	06:43	18:21	29/05	
10	गुरु	16/30	13:19	आर्द्रा	11/47	11:26	आयु	07/43	09:48	गर	13:19	वणिज	24:33	06:42	18:22	29/10	कर्क 28:55
11	शुक्र	12/43	11:47	पुनर्वसु	09/50	10:38	सौभा ग्य	02/00 54/45	07:30 28:35	विष्टि	11:47	बव	22:38	06:41	18:22	29/13	
12 13	शनि	07/00 59/40	09:29 30:32	पुष्य	06/00	09:05	अति	46/03	25:06	बालव	09:29	कौलव तैतिल	21:03 30:32	06:40	18:23	29/17	
14	रवि	51/00	27:04	आश्ल. मघा	00/30 53/47	06:52 28:10	सुक	36/17	21:11	गर	16:48	वणिज	27:04	06:39	18:23	29/20	सिंह 06:52
15	सोम	41/37	23:18	पू.फा.	46/18	25:09	धृति	25/45	16:57	विष्टि	13:11	बव	23:18	06:38	18:24	29/25	

सूर्यादि स्पष्ट ग्रह भा.स्टै.टा.प्रातः 5 बजकर 29 मिनट का राशि, अंश, कला, विकला में

दि.	स्पष्ट सूर्य				स्पष्ट चन्द्र				स्पष्ट मङ्गल				स्पष्ट बुध				स्पष्ट गुरु				स्पष्ट शुक्र				स्पष्ट शनि				स्पष्ट राहु			
24	10	10	41	51	10	14	34	28	8	11	2	34	10	14	56	18	8	24	16	44	11	24	33	12	9	3	25	53	2	11	15	1
25	10	11	42	16	10	26	32	20	8	11	43	56	10	13	55	31	8	24	28	16	11	25	41	9	9	3	31	60	2	11	11	50
26	10	12	42	39	11	8	26	11	8	12	25	20	10	12	51	50	8	24	39	43	11	26	48	55	9	3	38	4	2	11	8	39
27	10	13	43	00	11	20	17	38	8	13	6	44	10	11	46	54	8	24	51	5	11	27	56	28	9	3	44	5	2	11	5	28
28	10	14	43	19	0	2	8	53	8	13	48	8	10	10	42	18	8	25	2	21	11	29	3	50	9	3	50	3	2	11	2	18
29	10	15	43	36	0	14	2	50	8	14	29	34	10	9	39	32	8	25	13	33	0	0	10	59	9	3	55	58	2	10	59	7
01	10	16	43	51	0	26	3	10	8	15	11	00	10	8	39	56	8	25	24	39	0	1	17	55	9	4	1	50	2	10	55	56
02	10	17	44	4	1	8	14	9	8	15	52	27	10	7	44	37	8	25	35	39	0	2	24	37	9	4	7	38	2	10	52	46
03	10	18	44	15	1	20	40	37	8	16	33	54	10	6	54	31	8	25	46	34	0	3	31	6	9	4	13	23	2	10	49	35
04	10	19	44	24	2	3	27	30	8	17	15	22	10	6	10	19	8	25	57	23	0	4	37	20	9	4	19	6	2	10	46	24
05	10	20	44	31	2	16	39	23	8	17	56	51	10	5	32	31	8	26	8	7	0	5	43	19	9	4	24	44	2	10	43	13
06	10	21	44	35	3	0	19	41	8	18	38	21	10	5	1	24	8	26	18	44	0	6	49	4	9	4	30	19	2	10	40	3
07	10	22	44	38	3	14	29	52	8	19	19	51	10	4	37	6	8	26	29	16	0	7	54	33	9	4	35	51	2	10	36	52
08	10	23	44	38	3	29	8	21	8	20	1	23	10	4	19	39	8	26	39	42	0	8	59	45	9	4	41	19	2	10	33	41
09	10	24	44	37	4	14	9	57	8	20	42	55	10	4	8	54	8	26	50	1	0	10	4	42	9	4	46	44	2	10	30	30

नोट: उत्तरायण, दक्षिणगोल, शिशिर ऋतु (24 फरवरी से 09 मार्च 2020 ई. तक) गुरु पूर्व, शुक्र पश्चिम

व्रतपर्व विवरण (भारतीय मानक समय में)

24 चन्द्रदर्शन। शतभिषा में सूर्ययुति व पू.भा. में सूर्यभोग्य के कारण मूहूर्ताभाव है।
25 उ.भा. में अग्नि-उग्र-शस्त्रकार्य, आभूषण निर्माण का मुहूर्त्त है। सि.यो./सर्वार्थसि. 09:10 से सूर्यो. तक, त्रिपुष्कर सूर्यो.से 19:10 तक
26 उ.भा. में पुंसवन,सीमन्त, जातकर्म,नामकरण, अन्नप्राशन, वस्तुभूमिभवनवाहनकार्य का मुहूर्त्त है।
27 पञ्चक 25:08 तक,भद्रा 17:28 से 30:45 तक, विनायक चतुर्थी, रेवती में रिक्तादोष मुहूर्त्ताभाव है। सर्वार्थसि. सूर्यो. से 25:08 तक।
28 अश्विनी में अन्नप्राशन, वाटिकारोपण, शिल्प/वास्तुकार्य, वस्तुभूमिभववाहनकार्य का मुहूर्त्त है।
29 गोरूपिणीषष्ठी, भरणी में वस्तुविक्रय, पशुपक्षीमत्स्यादि पालन व रासायनिककार्यों का मुहूर्त्त है।
01 वैधृतिपूर्व कृत्तिका में उग्रकर्म, अग्निशस्त्राभूषणकार्य का मुहूर्त्त है। त्रिपुष्कर सूर्यो. से,
02 भद्रा 12:53से 25:21तक, कामदासमीव्रत, वैधृति के बाद भद्रादोष के कारण मुहूर्त्ताभाव है। त्रिपुष्कर सूर्यो.तक
03 होलाष्टक प्रारम्भ, रोहिणी में उग्रकर्म, अग्निशस्त्राभूषणकार्य का मुहूर्त्त है।
04 सूर्यप्रवेश पू.भा.में 11:45 पर, मृग. में रिक्तादोष, शनिवेध व आर्द्रा में राहुयुति के कारण मुहूर्ताभाव है।
05 भद्रा 24:33 से, फलगुदशमी (उड़ीसा), आर्द्रा में राहुयुति व पुनर्वसु में केतुवेध के कारण मुहूर्ताभाव है। सि.यो./सर्वार्थसि. 11:26 से सूर्यो. तक।
06 भद्रा 11:47 तक, आमलकी एकादशी व्रत सर्वेषाम्, रंगभरी एकादशी, पुनर्वसु में केतुवेध, पुष्य में जातकर्म, नामकरण,व्यापारारम्भ, वस्तुभूमिभववाहनकर्म,पशुपक्षीमत्स्य पालनादि कार्यों का मुहूर्त्त है।
07 प्रदोष व्रत, द्वादशीव्रत, नृसिंह द्वादशी, गोविन्द द्वादशी,पुष्य/श्लेषा में उग्रकर्म, अग्निशस्त्राभूषणकार्य का मुहूर्त्त है।
08 भद्रा 27:04 से, मघा में रिक्तादोष है।
09 भद्रा 13:11, अनुदया पूर्णिमा, पूर्णिमाव्रत, चैतन्यमहाप्रभुजयन्ती, होलाष्टक समाप्त, भद्रोपरान्त होलिका दहन, मन्वादि 15, पू.फा. में कृषिकार्य, वस्तुविक्रय,पशुपक्षीमत्स्यपालनादि कार्यों का मुहूर्त्त है।

दैनिकमुहूर्त्तादि विवरण (भद्रा, पञ्चक एवं त्रिपुष्कर, सर्वार्थसिद्धि योगादि)

अथारिष्टशान्ते शताक्षरी गायत्रीमन्त्र जपविधि

ॐ अस्य श्रीशताक्षरीगायत्रीमन्त्रस्य विश्वामित्रमरीचि-कश्यपवशिष्टाऋषयो गायत्री त्रिष्टुबनुष्टुप्छन्दांसि सवितृजातवेदरुय्म्बको देवता: गायत्र्यक्षराणि बीजानित्रिष्टुबक्षराणि शक्तय: अरिष्टशान्तये जपे विनियोग:। विश्वामित्रमरीचिकश्यपवशिष्टऋषिभ्यो नम: शिरसि। गायत्रीत्रिष्टुबनुष्टुपछन्देभ्यो नम: मुखे। सवितृजातवेद: त्र्यम्बकदेवेभ्यो नम: हृदये। गायत्र्यक्षराणिबीजानी गुह्ये। त्रिष्टुवक्षराणि शक्तये नम: पादयो:। ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि हृदयाय नम:। ॐ धियो यो न: प्रचोदयात् शिरसे स्वाहा। ॐ जातवेदसेसुनवामसोम-मारातीयतोनिदहातिवेद: शिखायै वषट्। ॐ स न: पर्षदातिदुर्गाणि विश्वानावेव सिन्धुदुरितात्यग्नि: कवचाय हुँ। ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनं नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ उर्व्वारूकमिवबन्धनान् मृत्योर्मुक्षीयमामृतात् अस्त्राय फट्। **अथ ध्यानम्।** स्मर्तव्यमिखिललोकवर्त्ति सततं यज्जङ्गमस्थावरम्। व्याप्तं येन च यत्प्रपंचविहितं मुक्तिश्च यत्सिध्यति। यद्वा स्यात् प्रणवत्रिभेदगहनं श्रुत्वा च यं गीयते। तद्वत्कृक्षितिसिद्धये अस्तु वरदं ज्योतिस्त्रयोत्थं मह:। एवं ध्यात्वा शताक्षरां भावयेत्। **अथ होमार्थशताक्षरागायत्रीमन्त्र: -** ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमहि धियो यो न: प्रचोदयात्। ॐ जातवेदसेसुनवामसोममारातीयतो निदहातिवेद: स न: पर्षदतिदुर्गाणि विश्वानावेव सिन्धुं दुरितात्यग्नि:। ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्व्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतात् स्वाहा।

सर्वाङ्ग सिद्धियोग - यात्राकालिक शुक्लादि तिथि तथा वार की संख्या को जोडकर तीन जगह रखें । क्रमश: ७।८।३ का भाग दें। शेष प्रथम स्थान में शून्य हो तो क्लेश, मध्य में हो तो धनक्षति और अन्त में हो तो मृत्यु होती है। सर्वत्र अङ्क आने से सौख्य, जयलाभ हो। बायां स्वर चलते समय पूर्व व ईशान को, दायां चलते समय दक्षिण व नैर्ऋत्य को मत जाऐं, हानि होती है।

होलकाष्टक निषेध - विपाशेरावती तीरे शुतद्रूश्च त्रिपुष्करे। विवाहादि शुभे नेष्टं होलिका प्राग्दिनाष्टकम्।। होलिकाष्टक का दोष केवल विपाशा, इरावती, शतद्रू और त्रिपुष्कर नदी के किनारे ही होता है, अन्य क्षेत्रों में नहीं। **होलिका दहन मुहूर्त्त -**प्रदोषव्यापिनी चेत् स्याद्यदा पूर्वदिने तदा। भद्रामुखं वर्जयित्वा होलिकाया: प्रदीपनम्।। निशागमे प्रपूज्येत होलिका सर्वदा बुधै:। न दिवा पूजयेड्डुण्डां पूजिता दु:खदा भवेत्।। **होलिका प्रदीपनमन्त्र-** दीपयाम्यत्र ते घोरां चिति राक्षसि ते नम:। हिताय सर्वजगत: प्रीतये पार्वतीपते:।।

03 मार्च 2020, अष्टमी, मंगलवार
सूर्योदयकालीन

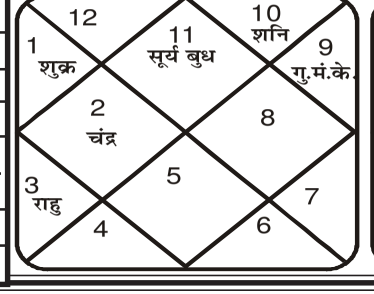

09 मार्च 2020, पूर्णिमा, सोमवार
सूर्योदयकालीन

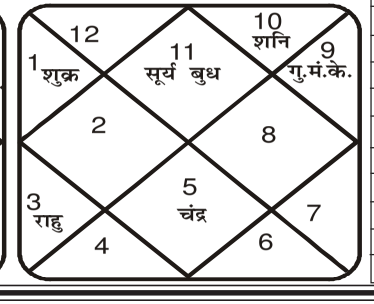

लग्नान्तकाल (भारतीय मानक समय में)

दि.	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर
24	07:48:44	09:21:04	11:02:00	12:58:56	15:14:48	17:29:44	19:41:40	21:54:36	00:09:36	02:22:40	04:30:40	06:14:44
25	07:44:48	09:17:08	10:58:04	12:55:00	15:10:52	17:25:48	19:37:44	21:50:40	00:05:40	02:18:44	04:26:44	06:10:48
26	07:40:52	09:13:12	10:54:08	12:51:04	15:06:56	17:21:52	19:33:48	21:46:44	00:01:44	02:14:48	04:22:48	06:06:52
27	07:36:56	09:09:16	10:50:12	12:47:08	15:03:00	17:17:56	19:29:52	21:42:48	23:57:48	02:10:52	04:18:52	06:02:56
28	07:33:00	09:05:20	10:46:16	12:43:12	14:59:04	17:14:00	19:25:56	21:38:52	23:53:52	02:06:56	04:14:56	05:59:00
29	07:29:04	09:01:24	10:42:20	12:39:16	14:55:08	17:10:04	19:22:00	21:34:56	23:49:56	02:03:00	04:11:00	05:55:04
01	07:25:08	08:57:28	10:38:24	12:35:20	14:51:12	17:06:08	19:18:04	21:31:00	23:46:00	01:59:04	04:07:04	05:51:08
02	07:21:12	08:53:32	10:34:28	12:31:24	14:47:16	17:02:12	19:14:08	21:27:04	23:42:04	01:55:08	04:03:08	05:47:12
03	07:17:16	08:49:36	10:30:32	12:27:28	14:43:20	16:58:16	19:10:12	21:23:08	23:38:08	01:51:12	03:59:12	05:43:16
04	07:13:20	08:45:40	10:26:36	12:23:32	14:39:24	16:54:20	19:06:16	21:19:12	23:34:12	01:47:16	03:55:16	05:39:20
05	07:09:24	08:41:44	10:22:40	12:19:36	14:35:28	16:50:24	19:02:20	21:15:16	23:30:16	01:43:20	03:51:20	05:35:24
06	07:05:28	08:37:48	10:18:44	12:15:40	14:31:32	16:46:28	18:58:24	21:11:20	23:26:20	01:39:24	03:47:24	05:31:28
07	07:01:32	08:33:52	10:14:48	12:11:44	14:27:36	16:42:32	18:54:28	21:07:24	23:22:24	01:35:28	03:43:28	05:27:32
08	06:57:36	08:29:56	10:10:52	12:07:48	14:23:40	16:38:36	18:50:32	21:03:28	23:18:28	01:31:32	03:39:32	05:23:36
09	06:53:40	08:26:00	10:06:56	12:03:52	14:19:44	16:34:40	18:46:36	20:59:32	23:14:32	01:27:36	03:35:36	05:19:40

ग्रहचार

मार्गी मंगल- मूल में, 27 फर.को 13:11 से पू.षा. में, मार्गी बुध 03 मार्च को 13:00 से धनि में वक्री,मार्गी गुरु- पू.षा. में व 7 मार्च से उ.षा. में, मार्गी शुक्र- रेवती में 29 फर. को 01:32 से अश्विनी में, मार्गीशनि- उ.षा. में, राहु- आर्द्रा में, केतु- मूल में,

चैत्र कृष्णपक्ष — परिधावी संवत्सर, वि. संवत् 2076, शक 1941

उत्तरायण, दक्षिणगोल, शिशिर/वसंत ऋतु (10 मार्च से 24 मार्च 2020 ई. तक) — गुरु पूर्व, शुक्र पश्चिम

तिथि	वार	घ.प.	घ.मि.	नक्षत्र	घ.प.	घ.मि.	योग	घ.प.	घ.मि.	करण	घ.मि.	करण	घ.मि.	सू.उ. घ.मि.	सू.अ. घ.मि.	दि.मा. घ.प.	च.रा.प्र. घ.मि.	दिनांक	व्रतपर्व विवरण (भारतीय मानक समय में) / दैनिकमुहूर्त्तादि विवरण (भद्रा, पञ्चक एवं त्रिपुष्कर, सर्वार्थसिद्धि योगादि)
01	मङ्गल	48/30	19:24	उ.फा.	55/02	22:01	शूल	31/25	12:34	बालव	09:21	कौलव तैतिल	19:24 29:29	06:37	18:24	29/27	कन्या 06:22	10	होली (वसन्तोत्सव), होलिका भस्मधारण,आम्रकुसुमप्राशन, उ.फा. में, अग्नि-उग्र-शस्त्रकार्य, रासायनिक कार्यों का मुहूर्त्त है। त्रिपुष्कर सूर्यो.से 22:01 तक
02	बुध	22/22	15:34	हस्त	30/58	19:00	गण्ड वृद्धि	03/55 53/25	08:11 27:58	गर	15:34	वणिज	25:46	06:36	18:24	29/30	तुला 29:34	11	भद्रा 25:46से, हस्त में जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, व्यापारारम्भ, वस्तुभूमिभवनवाहनकार्य का मुहूर्त्त है। सर्वार्थसि. सूर्यो. से 19:00 तक।
03	गुरु	13/28	11:59	चित्रा	24/10	16:16	ध्रुव	43/37	24:03	विष्टि	11:59	बव	22:25	06:36	18:25	29/32		12	भद्रा 11:59 तक, संकष्टचतुर्थी व्रत,चंद्रोदय 21:25,चित्रा में सूर्यवेध व स्वाती में सूर्यभुक्तदोष मुहूर्त्ताभाव है।
04 05	शुक्र	05/37 59/15	08:51 30:17	स्वाती	18/27	13:59	व्याघा.	34/55	20:34	बालव	08:51	कौलव तैतिल	19:34 30:17	06:35	18:25	29/35		13	रंगपंचमी, रिक्तोपरान्त स्वाती में सूर्यभुक्तदोष मुहूर्त्ताभाव है।
06	शनि	54/38	28:26	विशाखा	14/22	12:20	हर्ष.	27/35	17:37	गर	17:21	वणिज	28:26	06:34	18:26	29/40	वृश्चि. 06:41	14	भद्रा 28:26 से स्कन्दषष्ठी (बंगाल), **सूर्यप्रवेश मीन में 11:54 पर, पुण्यकाल 18:17 तक**, खरमासारंभ, विशाखा में वस्तुविक्रय व पशुपक्षीमत्स्यादि पालन मुहूर्त्त है।
07	रवि	51/50	27:18	अनुराधा	12/02	11:23	वज्र	21/45	15:16	विष्टि	15:52	बव	27:18	06:33	18:26	29/43		15	भद्रा 15:52 तक, अनु. व्यापारारम्भ, वस्तुभूमिभवनवाहनकार्य का मुहूर्त्त है।
08	सोम	51/07	27:00	ज्येष्ठा	11/37	11:12	सिद्धि	17/25	13:31	बालव	15:09	कौलव	27:00	06:32	18:26	29/45	धनु 11:12	16	शीतलाष्टमी (वासोड़ा) व्यतीपात पूर्व ज्येष्ठा में पशुपक्षीमत्स्यादि पालन का मुहूर्त्त है। मूल में केतुयुति के कारण मूहूर्ताभाव,
09	मङ्गल	52/10	27:24	मूल	13/05	11:46	व्यति.	14/37	12:23	तैतिल	15:12	गर	27:24	06:31	18:27	29/50		17	सूर्यप्रवेश उ.भा.में 20:14 पर, मूल में व्यतीपात, रिक्तादोष व केतुयुति के कारण मुहूर्ताभाव है,
10	बुध	54/50	28:27	पू.षा.	16/15	13:01	वरी.	13/10	11:47	वणिज	15:55	विष्टि	28:27	06:30	18:27	29/52		18	भद्रा 15:55 से 28:27तक, पू.षा. में राहुवेध व उ.षा. में शनियुति के कारण मुहूर्ताभाव है।
11	गुरु	58/45	30:00	उ.षा.	20/50	14:50	परिघ	12/50	11:38	बव	17:13	बालव	30:00	06:29	18:27	29/55	मकर 19:25	19	पापमोचिनी एकादशीव्रत (स्मार्त.) उ.षा. में शनिमंगलयुति के कारण मुहूर्ताभाव है। श्रवण में व्यापारारम्भ, वस्तुभूमिभवनवाहनकार्य का मुहूर्त्त है।
12	शुक्र	--	--	श्रवण	26/30	17:05	शिव	13/28	11:52	कौलव	18:58	तैतिल	--	06:28	18:28	30/00		20	पञ्चक 17:05 से, , पापमोचिनी एकादशीव्रत (वैष्णवानाम्), सायनसूर्य मेष में, श्रवण में जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, व्यापारारम्भ, वस्तुभूमिभवनवाहनकार्य का मुहूर्त्त है। सर्वार्थसि. सूर्यो. से 17:05 तक
12	शनि	03/40	07:56	धनिष्ठा	32/35	19:30	सिद्ध	14/42	12:21	तैतिल	07:56	गर	21:02	06:27	18:28	30/02	कुम्भ 06:20	21	शनिप्रदोषव्रत, धनि. में पशुपक्षीमत्स्यादिपालन, व्यापारारम्भ का मुहूर्त्त है। द्विपुष्कर सूर्योदय से 19:30 तक।
13	रवि	09/12	10:08	शत.	40/00	22:27	साध्य	16/27	13:02	वणिज	10:08	विष्टि	23:19	06:26	18:29	30/07		22	भद्रा 10:08 से 23:19 तक, शत. में मासान्तदोष मुहूर्त्ताभाव है।
14	सोम	15/13	12:31	पू.भा.	47/18	25:21	शुभ	18/30	13:50	शकुनि	12:31	चतुष्प.	25:44	06:25	18:29	30/10	मीन 18:37	23	श्राद्धादि अमावस्या, मासान्तदोष ,
30	मङ्गल	21/22	14:58	उ.भा.	54/45	28:19	शुक्ल	20/45	14:43	नाग	14:58	किंस्तु.	28:12	06:24	18:29	30/13		24	स्ना-दा.चैत्री, मन्वादि, वर्षान्त, विक्रम संवत 2076 पूर्ण। मासान्तदोष, सि.यो./सर्वार्थसि. सूर्यो. से 28:19 तक,

चैत्रकृष्ण प्रतिपदि वसन्तोत्सव

चैत्रकृष्णप्रतिपदि वसन्तोत्सवः। सा चौदयिकी ग्राह्या। प्रवृत्ते मधुमासे तु प्रतिपद्युदिते रवौ। इति भविष्योक्तेः। दिनद्वये तथात्वे पूर्वा। वत्सरादौ वसन्तादौ बलिराज्ये तथैव च। पूर्वविद्धैव कर्तव्या प्रतिपत्सर्वदा बुधैः। इति वसिष्ठवचनात्। चैत्रे मासि महाबाहो पुण्ये तु प्रतिपद्दिने। यस्तत्र श्वपचं स्पृष्ट्वा स्नानं कुर्यान्नरोत्तमः। न तस्य दुरितं किञ्चिन्नाधयो व्याधयो नृप।। तथा कथ्यते - प्रवृत्ते मधुमासे तु प्रतिपद्युदिते रवौ। कृत्वा चावश्यकार्याणि सन्तर्प्य पितृदेवताः

पञ्चक में विशेष - वासवोत्तरदलादिपञ्चके याम्यदिग्गमनगेहगोपनम्। प्रेतदाहतृणकाष्ठसंग्रहणम् शय्यकाविरचनं च वर्जयेत्। अर्थात् धनिष्ठा के उत्तरार्द्ध यानि अंतिम दो चरण से लेकर अगले पाँच नक्षत्रों को पञ्चक कहते हैं। **पञ्चक में त्याज्य -** दक्षिण दिशा की यात्रा, गृहच्छादन (छत इत्यादि डालना या छाया करना) प्रेत (मृतक व्यक्ति) का दाह, घास अथवा लकड़ी-कंडा का संग्रह और चारपाई बुनना वर्जित है। अतः अन्य कार्यों में पञ्चक का विचार न करें।

सूर्यादि स्पष्ट ग्रह भा.स्टै.टा.प्रात: 5 बजकर 29 मिनट का राशि, अंश, कला, विकला में

दि.	स्पष्ट सूर्य				स्पष्ट चन्द्र				स्पष्ट मङ्गल				स्पष्ट बुध				स्पष्ट गुरु				स्पष्ट शुक्र				स्पष्ट शनि				स्पष्ट राहु			
10	10	25	44	33	4	29	25	58	8	21	24	28	10	4	4	43	8	27	0	15	0	11	9	21	9	4	52	5	2	10	27	20
11	10	26	44	28	5	14	45	15	8	22	6	2	10	4	6	49	8	27	10	22	0	12	13	43	9	4	57	22	2	10	24	9
12	10	27	44	21	5	29	56	17	8	22	47	37	10	4	14	56	8	27	20	23	0	13	17	47	9	5	2	35	2	10	20	58
13	10	28	44	12	6	14	49	9	8	23	29	12	10	4	28	47	8	27	30	17	0	14	21	34	9	5	7	45	2	10	17	47
14	10	29	44	1	6	29	17	13	8	24	10	49	10	4	48	3	8	27	40	5	0	15	25	1	9	5	12	51	2	10	14	37
15	11	0	43	49	7	13	17	27	8	24	52	26	10	5	12	25	8	27	49	46	0	16	28	10	9	5	17	53	2	10	11	26
16	11	1	43	35	7	26	50	1	8	25	34	4	10	5	41	34	8	27	59	21	0	17	30	59	9	5	22	50	2	10	8	15
17	11	2	43	19	8	9	57	25	8	26	15	42	10	6	15	13	8	28	8	48	0	18	33	27	9	5	27	44	2	10	5	5
18	11	3	43	1	8	22	43	23	8	26	57	21	10	6	53	5	8	28	18	9	0	19	35	36	9	5	32	34	2	10	1	54
19	11	4	42	42	9	5	12	10	8	27	39	1	10	7	34	54	8	28	27	22	0	20	37	23	9	5	37	19	2	9	58	43
20	11	5	42	21	9	17	27	53	8	28	20	41	10	8	20	26	8	28	36	28	0	21	38	48	9	5	42	0	2	9	55	32
21	11	6	41	58	9	29	34	9	8	29	2	22	10	9	9	26	8	28	45	27	0	22	39	51	9	5	46	37	2	9	52	22
22	11	7	41	34	10	11	33	55	8	29	44	2	10	10	1	42	8	28	54	19	0	23	40	30	9	5	51	10	2	9	49	11
23	11	8	41	7	10	23	29	30	9	0	25	44	10	10	57	3	8	29	3	3	0	24	40	46	9	5	55	38	2	9	46	0
24	11	9	40	39	11	5	22	36	9	1	7	25	10	11	55	17	8	29	11	39	0	25	40	37	9	6	0	1	2	9	42	50

चैत्र कृष्ण प्रतिपदि कर्त्तव्य :- प्रवृत्ते मधुमासे तु प्रतिपद्युदिते रवौ । कृत्वा चावश्यकार्याणि सन्तर्प्य पितृदेवताः।। वन्दयेत् होलिकाभूमिं सर्वदुःखोपशान्तये। यस्तत्रश्वपचं स्पृष्ट्वा स्नानं कुर्यान्नरोत्तमः। न तस्य दुरितं किंचिन्नाधयो व्याधयो नृप।। **होलिका भस्म धारण मन्त्र -**वन्दितासि सुरेन्द्रेण ब्रह्माच्युतशिवादिभिः,अतस्त्वं पाहि नो भीतेर्भूषिता भूतिदा भव।। **चूतकुसुमप्राशन मन्त्र :** - चूतमग्र्यं वसन्तस्य माकन्दकुसुमं तव। सचन्दनं पिबाम्यद्य सर्वकामार्थसिद्धये।।

16 मार्च 2020, अष्टमी, सोमवार
सूर्योदयकालीन

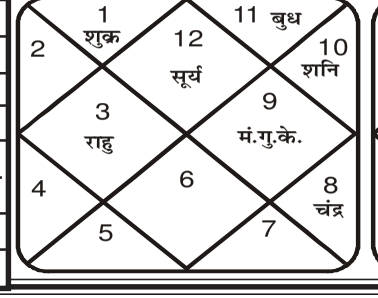

24 मार्च 2020, अमावस्या, मंगलवार
सूर्योदयकालीन

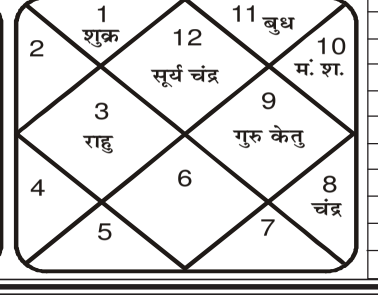

चैत्र अमावास्या - चैत्रामावास्या मन्वादिः। सा च पराह्णव्यापिनी ग्राह्या कृष्णपक्षस्थत्वात्। चैत्रकृष्ण की अमावास्या मन्वादि है और वह अपराह्णव्यापिनी ग्रहण करे क्योंकि कृष्णपक्ष होने से। यो भाट्टतन्त्रगहनार्णवकर्णधारः शास्त्रान्तरेषु निखिलेष्वपि मर्मभेत्ता। योऽत्र श्रमः किल कृतः कमलाकरेण प्रीतोऽमुना तु सुकृती बधुरामकृष्ण।।

लग्नान्तकाल (भारतीय मानक समय में)

दि.	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर
10	06:49:44	08:22:04	10:03:00	11:59:56	14:15:48	16:30:44	18:42:40	20:55:36	23:10:36	01:23:40	03:31:40	05:15:44
11	06:45:48	08:18:08	09:59:04	11:56:00	14:11:52	16:26:48	18:38:44	20:51:40	23:06:40	01:19:44	03:27:44	05:11:48
12	06:41:52	08:14:12	09:55:08	11:52:04	14:07:56	16:22:52	18:34:48	20:47:44	23:02:44	01:15:48	03:23:48	05:07:52
13	06:37:56	08:10:16	09:51:12	11:48:08	14:04:00	16:18:56	18:30:52	20:43:48	22:58:48	01:11:52	03:19:52	05:03:56
	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ
14	08:06:20	09:47:16	11:44:12	14:00:04	16:15:00	18:26:56	20:39:52	22:54:52	01:07:56	03:15:56	05:00:00	06:34:00
15	08:02:24	09:43:20	11:40:16	13:56:08	16:11:04	18:23:00	20:35:56	22:50:56	01:04:00	03:12:00	04:56:04	06:30:04
16	07:58:28	09:39:24	11:36:20	13:52:12	16:07:08	18:19:04	20:32:00	22:47:00	01:00:04	03:08:04	04:52:08	06:26:08
17	07:54:32	09:35:28	11:32:24	13:48:16	16:03:12	18:15:08	20:28:04	22:43:04	00:56:08	03:04:08	04:48:12	06:22:12
18	07:50:36	09:31:32	11:28:28	13:44:20	15:59:16	18:11:12	20:24:08	22:39:08	00:52:12	03:00:12	04:44:16	06:18:16
19	07:46:40	09:27:36	11:24:32	13:40:24	15:55:20	18:07:16	20:20:12	22:35:12	00:48:16	02:56:16	04:40:20	06:14:20
20	07:42:44	09:23:40	11:20:36	13:36:28	15:51:24	18:03:20	20:16:16	22:31:16	00:44:20	02:52:20	04:36:24	06:10:24
21	07:38:48	09:19:44	11:16:40	13:32:32	15:47:28	17:59:24	20:12:20	22:27:20	00:40:24	02:48:24	04:32:28	06:06:28
22	07:34:52	09:15:48	11:12:44	13:28:36	15:43:32	17:55:28	20:08:24	22:23:24	00:36:28	02:44:28	04:28:32	06:02:32
23	07:30:56	09:11:52	11:08:48	13:24:40	15:39:36	17:51:32	20:04:28	22:19:28	00:32:32	02:40:32	04:24:36	05:58:36
24	07:27:00	09:07:56	11:04:52	13:20:44	15:35:40	17:47:36	20:00:32	22:15:32	00:28:36	02:36:36	04:20:40	05:54:40

ग्रहचार

मार्गी मंगल- पू.षा. में 17 मार्च को 19:29 से उ.षा. में, मार्गी बुध 17 मार्च को 21:29 से शत. में, मार्गी गुरु- उ.षा. में, मार्गी शुक्र- अश्वि. में 12 मार्च को 06:18 से भरणी में, मार्गीशनि- उ.षा. में, राहु- आर्द्रा में, केतु- मूल में

विवाह-मेलापक

वर और वधू की कुण्डली को मिलाने का ही नाम मेलापक है। यह मेलापक दो प्रकार का होता है, राशिमेलापक और ग्रहमेलापक। राशिमेलापक वर और वधु के जन्मराशि एवं जन्मनक्षत्र को आधार मानकर अष्टकूटों की सहायता से गुण निर्णय द्वारा किया जाता है। आठ कूटों के कुल गुण ३६ होते हैं। इनमें से कम से १८ (आधा) और उससे अधिक गुण प्राप्त होने पर शुभ माना जा सकता है।

राशिमेलापक - जातक की मनोवृत्ति चन्द्रमा के अधीन है। अत: जन्मनक्षत्र एवं जन्मराशि के आधार पर पति और पत्नि की अनुकूलता का विचार किया जाता है। इस अनुकूलता को परखने के लिए महर्षियों ने मुख्य रूप से आठ मानदण्ड सुनिश्चित किये है, जिन्हें अष्टकूट कहते है

वर्णोवश्यं तथा तारा योनिश्च ग्रहमैत्रकम्। गणमैत्रं भकूटं च नाड़ीचैते गुणाधिका:।।

गुण प्राप्त होने पर भी निषिद्ध विचार- कभी कभी अपेक्षित अंक प्राप्त होने पर भी विवाह शुभ न होने की सम्भावना होती है। उसका मुख्य कारण होता है अष्टकूटों में निषिद्ध परिस्थितियाँ। भकूट में षष्टाष्टक, द्विर्द्वादश, नवपञ्चक आदि दोष, योनि कूट में योनि वैर, नाड़ी में एक नाड़ी आदि कुछ दोष ऐसे होते हैं जो अपेक्षित अंक प्राप्त होने पर भी विवाह को स्वीकार न करने में कारक बनते है।

दुष्टभकूटविचार - ३६ गुणो में से आधे अंक प्राप्त होने पर विवाह का चिन्तन कर सकते है। यह एक सामान्य नियम है। किन्तु यदि अंको में कमी दुष्ट भकूट के कारण हो रहा हो तब अवश्य इस पर पुनर्विचार करना आवश्यक है। ये दोष है षष्टाष्टक, नवपञ्चक व द्विर्द्वादश। वर एवं वधू की राशि एक दूसरे से ६-८ हो, ५-९ हो व ०२-१२ हो तो क्रमश: ये दोष उत्पन्न होते है। इन दोषों में क्रमश: मृत्यु, अपत्यहानि, निर्धनता सम्भव है।

मृत्यु:षष्टाष्टके ज्ञेयोपत्यहानिर्नवात्मजे। द्विर्द्वादशे निर्धनत्वं द्वयोरन्यत्र सौख्यकृत।।

(मुहूर्तचिन्तामणि,विवाहप्रकरण, पृष्ठ ३४६)

षष्ठाष्टके मृतिर्नन्दनवमे त्वनपत्यता।नै:स्वं द्विर्द्वादशे न्येशु दम्पत्यो: प्रीतिरुत्तमा।।

(महर्षि नारद)

इनका एक परिहार इस प्रकार से है - पुरुष की राशि से स्त्री की राशि यदि पांचवी हो तो सन्तान हानि होती है। स्त्री की राशि से पुरुष की राशि यदि पांचवी हो तो वह स्त्री धनी एवं पतिवल्लभा होती है। इसी तरह स्त्री की राशि पुरुष की राशि से द्वितीय होने पर धननाश, बारहवीं होने पर पति की प्रिया (पतिवल्लभा) एवं धनवती होती है।

पुंसो गृहात्सुतगृहे सुतहा च कन्या धर्मे स्थिता धनवती पतिवल्लभा च।
द्विर्द्वादशे धनगृहे धनहा च कन्या रिष्फे स्थिता धनवती पतिवल्लभा च।।

(ज्योति:प्रकाश,पीयूषधारा,पृ.३४६)

दूसरा परिहार - भकूट दोष होने पर भी यदि राश्याधिपति एक हो अथवा राश्याधिपतियों में मैत्री हो तथा नाड़ी शुद्ध हो तो विवाह हो सकता है।

प्रोक्ते दुष्टभकूटके परिणयस्त्वेकाधिपत्ये शुभो-ऽथो राशीश्वरसौहृदेपि गदितो नाड्यृक्षशुद्धिर्यदि।।

(मुहूर्तचिन्तामणि,पृ.३४८)

मैत्र्यां राशिस्वामिनोरंशनाथद्वन्द्वस्यापि स्याद् गणनां न दोष:। खेटारित्वं वाशयेत् तद्भकूटं खेटप्रीतिश्चापि दुष्टं भकूटम्।। (मुहूर्तचिन्ताणि,पृष्ठ ३५४) राश्याधिपतियों की मित्रता व शत्रुता तथा मित्रादि षष्टाष्टक, द्विर्द्वादश, नवपञ्चक आदि का ज्ञान तत्त सम्बन्धि कोष्ठकों से कर सकते है।

नाड़ी दोष - वर एवं वधू का एक नाड़ी होने पर सामान्यत: विवाह निषिद्ध है। इसका परिहार वचन निम्न प्रकार से मिलता है - **राश्यैक्ये चेद् भिन्नमृक्षं द्वयो: स्यान् नक्षत्रैक्येराशियुग्मं तथैव। नाडी दोषो नो गणानां च दोषो नक्षत्रैक्ये पादभेदे शुभं स्यात्।।** (मुहूर्तचिन्तामणि)

ग्रहमेलापक (मांगलिकयोगविचार) - वरवधू की कुण्डलियों में ग्रहस्थिति भी उन दोनों की अनुकूलता पर प्रभाव डालती है। मुख्य रूप से मंगल वैवाहिकजीवन पर घातक प्रभाव दिखाता है,यदि वह प्रतिकूल हो। लग्न अथवा चन्द्रमा से मंगल १, ४, ७, ८, १२ स्थानों में स्थित होने पर मंगली योग उत्पन्न होता है, जिसे कुजदोष के नाम से जाना जाता है। यदि वर वधू दोनों की कुण्डली में यह योग हो तो यह योग बाधक नहीं अपितु शुभ माना जाता है।

पाराशर वचन - पातालेऽपि तनौ रन्ध्रे जामित्रे वापि च व्यये। स्थित: कुज: पतिं हन्ति न चेच्छुभयुतेक्षित:।। इन्दोरप्युक्तगेहेषु स्थितो भौमोऽथवा शनि:। पतिहन्ता स्त्रियाश्चैवं वरस्य यदि स्त्रीमृति:।।

फल एवं परिहार - स्त्रीणां वैधव्यदो योग: पुंसां जन्मनि चेत् भवेत्। तदा पत्नी विनाश: स्यादुभयोश्चेच्छुभं स्मृतम्।। **दोषपरिहार** - अन्य ग्रहों के योगवश तथा अन्य राशियों के स्थितिवश भी इस मांगलिक दोष का भंग होता है जैसे - सप्तमे वाऽष्टमे भौमो गुरुणा चेन्निरीक्षित:। तदा तु सर्वसौख्यं स्यात् भौमदोषो विनश्यति।। (ज्योतिष रत्नमाला) गुरु से देखा जाता हुआ सप्तमस्थ अथवा अष्टमस्थ मंगल का दोष नष्ट होकर सभी प्रकार का सौख्य प्रदान करने वाला होता है। लग्नाद् विधोर्वा यदि जन्मकाले शुभग्रहो वा मदनाधिपो वा। द्यूनस्थितो हन्त्यनपत्यदोषं वैधव्ययोगं च विषाङ्गनाख्यम्।। (ज्योतिष रत्नमाला) यदि जन्मकुण्डली में लग्न या चन्द्र से सप्तम स्थान में कोई शुभग्रह अथवा सप्तमेश स्थित हो तो अनपत्यदोष विषकन्या योग एवं वैधव्ययोग इन सभी नष्ट कर देता है। **केन्द्रे कोणे शुभा: खेटा: त्रिषडायेष्वसद्ग्रहा:।तदा भौमोत्यदोषो न मदे वा मदनाधिप:।।** (ज्योतिष रत्नमाला) केन्द्र (१,४,७,१०) एवं कोण (५,९) स्थानों में शुभग्रह हों तथा त्रिषडाय (३,६,११) स्थानों में पापग्रह हों, अथवा सप्तम स्थान में सप्तमेश स्थित हो तो भौमकृत मंगलीदोष का परिहार हो जाता है।

भौम तुल्यो यदा भौम: पापो वा तादृशो भवेत्। तदा शुभो विवाह: स्याच्चिरायु: पुत्रपौत्रद:।।

(ज्योतिष रत्नमाला)

अर्थात् कन्या की कुण्डली में यदि मंगल मांगलिक योग बना रहा हो तथा वर की कुण्डली में भी उसी प्रकार मंगल के द्वारा मांगलिक योग बन रहा हो अथवा वर या वधू की कुण्डली में मंगल के समान प्रभावशाली शनि, सूर्य, राहु या केतु मांगलिक स्थानों में स्थित हो तो मांगिलकदोष नष्ट होकर विवाह हेतु शुभ होता है। इसी प्रकार मांगलिक दोष के परिहार के अन्य योग भी है। जैसे-

शनिभौमोऽथवा कश्चित् पापो वा तादृशो भवेत्।तेष्वेव भवनेष्वेव भौमदोषविनाश कृत।।

(फलित नवरत्नसंग्रह)

यामित्रे च यदा सौरिर्लग्ने वा हिबुके तथा। अष्टमे द्वादशे चैव भौमदोषो न विद्यते।।

यदि मेष राशि का मंगल लग्न में, वृश्चिक राशि का चतुर्थ में, मकर राशि का सप्तम में, कर्क राशि का अष्टम में तथा धनु राशि का व्यय स्थान में हो मंगल का दोष नहीं होता है।

अजे लग्ने व्यये चापे पाताले वृश्चिके कुजे। वृषे जाये घटे रन्ध्रे भौमदोषो न विद्यते।।

बली गुरु शुक्र के लग्न या सप्तम भाव में होने पर तथा मंगल के वक्री, नीचस्थ, शत्रुगृही तथा अस्तंगत होने पर भी मंगल का दोष समाप्त हो जाता है।

अजे लग्ने व्यये चापे पाताले वृश्चिके कुजे।द्यूने मृगे कर्किं चाष्टौ भौमदोषो न विद्यते।।

अन्य आचार्य के मत में वृषराशि के मंगल को सप्तम भाव तथा कुम्भराशि के मंगल को अष्टमभाव में होने पर भौमदोष नहीं होता है।

सबलौ गुरौ भृगौ वा लग्ने द्यूनेऽथवा भौमे। वक्रीनीचारिगृहस्थे वाऽस्तेऽपि न कुजदोष:।।

द्वितीय भाव में चन्द्र और शुक्र स्थित हो, मंगल पर गुरु की दृष्टि हो तथा केन्द्र स्थित राहु मंगल की युति हो तो मंगली दोष नहीं होता है। **न मंगली चन्द्रभृगुर्दृतीये, न मंगली पश्यति यस्य जीव:। न मंगली केन्द्रगते च राहुर्न मंगली मंगलराहुयोगे।।** केन्द्र त्रिकोण में शुभग्रह तथा ३,६,११ वें भाव में अशुभग्रह सप्तमेश स्वग्रही हो तो मंगल का दोष नहीं होता है। अत: विद्वान दैवज्ञ से ग्रह मेलापक अवश्य करवाना चाहिए।

विवाह मेलापन करने के लिए आवश्यक चक्र एवं उनका विवरण - यहाँ चक्र (सारणी) दिये हैं। उसमें पहला गुणबोधक चक्र तथा दूसरा शतपदचक्र। शतपदचक्र की सहायता से नामाद्याक्षर के आधार पर उसका नक्षत्र, राशि, वर्ण, वश्य, योनि, योनिवैर, राशीश, गुण जाना जा सकता है तथा गुणबोधक की सहायता से वर वधू के नक्षत्र एवं चरण के आधार पर अष्टकूटोत्पन्न गुण का ज्ञान किया जा सकता है।

वधूवरगुणमेलनचक्र देखने की विधि - इस चक्र में प्रत्येक नक्षत्र का प्रत्येक नक्षत्र के साथ उनके राशियों के आधार पर गुण दिये हुए है। सीधे नीचे के क्रम में दिये गये नक्षत्र स्त्री राशि के है तथा बाये से दाये के क्रम से दिए गए नक्षत्र पुरुष राशि के है।

उदाहरण - पुरुष नक्षत्र आर्द्रा का तृतीय चरण है। स्त्री नक्षत्र शतभिषा का प्रथम चरण है। बाये से दाये के क्रम में पुरुष का नक्षत्र आठवें खाने में तथा स्त्री का ऊपर से नीचे के क्रम में २३ वे खाने में है। अत: ऊपर से २३वा एवं बाये से ७ वे खाने के योग में जो सारिणी का खाना पड़ रहा है वहा १० दिया गया है। अर्थात् इन दोनों का मेलन से १० अंक मिला है जो अपेक्षित अंक से अत्यन्त कम है। अत: प्राथमिक दृष्ट्या आर्द्रा का पुरुष एवं शतभिषा की स्त्री का विवाह उत्तम नहीं माना जा सकता है।

शतपदचक्र देखने की विधि - शतपदचक्र में अष्टकूट के अन्तर्गत नक्षत्र के आधार पर देखे जाने वाले कूट, नक्षत्र का चरणाक्षर व स्वामी दिये गये है। शेष स्पष्ट है। इसी चक्र में नक्षत्रों की योनि भी दी गई है। घोड़ा-भैंसा, सिंह-हाथी, मेष-वानर, नकुल-साँप, मृग-कुत्ता, बिल्ली-चूहा, व्याघ्र-गौ इनका वैर होता है। योनिवैर में विवाह निषिद्ध है।

ग्रहों के मित्र सम एवं शत्रु ग्रह तथा उच्च नीच तथा उनसे मेलापक विचार-

मेलापक में राश्याधिपतियों के मित्र सम व शत्रु होने का प्रभाव अत्यन्त महत्त्व रखता है। मेलन में पर्याप्त अंक के मिलने पर भी इनकी स्थिति उस मेलनांक को असिद्ध कर सकती है। अत: आवश्यकता के अनुसार यहाँ पर मित्रादि कोष्ठक प्रस्तुत है।

नवपञ्चक एवं षष्टाष्टक में दोनों राशियों के अधिपतियों के मित्र होने पर मित्रनवपञ्चक व मित्रषष्टाष्टक कहा जाता है। यह मित्रता किन किन राशियों के योग में है इसका विवरण आगे दी गयी तालिकाओं में प्रदत्त है। शत्रु नवपञ्चक व शत्रुषष्टाष्टक में विवाह उत्तम नहीं हो सकता है।

विवाह मुहूर्त्त में दस दोषों का विचार

विवाह के मुहूर्त्त में लत्ता, पात, युति, वेध, जामित्र, पञ्चवाण, एकार्गल, उपग्रह, क्रान्तिसाम्य और दग्धतिथि इन दस दोषों का विचार करना आवश्यक है। इन सबका विचार करके विवाहमुहूर्त का लग्न चयन करना आवश्यक है। उक्त दसों दोषों का विचार इस प्रकार किया जाता है।

(१) लत्तादोष ज्ञान चक्र

सूर्य	पूर्णचन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	ग्रह
१२	२२	३	७	६	५	८	९	लग्न नक्षत्र
दक्षिण	वाम	दक्षिण	वाम	दक्षिण	वाम	दक्षिण	वाम	दिशा
धननाश	भय	मृत्यु	भय	बन्धुनाश	कार्यहानि	कुलक्षय	मरण	फल

यथा - सूर्य अश्विनी नक्षत्र पर हो और विवाह उ.फा. का हो । सूर्यस्थित अश्विनी नक्षत्र से गिना तो, उ.फा. १२ वां हुआ, यह सूर्य की लत्तादोष युक्त हुआ। अथवा विवाह नक्षत्र अश्विनी होने पर सूर्य यदि अनुराधा में हो तो सूर्य की लत्ता दोष एवं गुरु धनिष्ठा में हो तो गुरु की लत्तादोष मानी जाएकी। इसी प्रकार अन्य ग्रहों की लत्ता भी जनना चाहिए। चन्द्र के लत्तादोष के विचारार्थ चन्द्रनक्षत्र विगत पूर्णिमान्त कालिक लेना चाहिए। **ज्ञराहुपूर्णेन्दुसिता: स्वपृष्ठे भं सप्तगोजातिशरैर्मितं हि । संलत्तयन्तेऽर्कशनीज्यभौमा: सूर्याष्टतर्काग्निमितं पुरस्तात्।।** (मुहू.चि.विवा.प्र.श्लो.५९)

लत्तादोष कोष्ठक

विवाह नक्षत्र	अश्वि.	रोहि.	मृग.	मघा	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाती	अनु.	मूल	उ.षा.	श्रव.	धनि.	उ.भा.	रेव.
सूर्य	अनु.	पू.षा.	उ.षा.	उ.भा.	अश्वि.	भर.	कृत्ति.	रोहि.	आर्द्रा	पुष्य	मघा	पू.फा.	उ.फा.	स्वाती	विशा.
चन्द्र	श्रव.	पू.भा.	उ.भा.	रोहि.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	पू.फा.	हस्त	स्वाती	विशा.	अनु.	पू.षा.	उ.षा.
मंगल	उ.भा.	भर.	कृत्ति.	पुष्य	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	स्वाती	अनु.	मूल	पू.षा.	उ.षा.	शत.	पू.भा.
बुध	पुन.	मघा	पू.फा.	विशा.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	धनि.	पू.भा.	रेव.	अश्वि.	भर.	मृग.	आर्द्रा
गुरु	धनि.	उ.भा.	रेव.	मृग.	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	उ.फा.	चित्रा	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	उ.षा.	श्रवण
शुक्र	मृग.	पुष्य	आश्ले.	चित्रा	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	उ.षा.	धनि.	पू.भा.	उ.भा.	रेव.	कृत्ति.	रोहि.
शनि	उ.षा.	शत.	पू.भा.	कृत्ति.	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	मघा	उ.फा.	चित्रा	स्वाती	विशा.	मूल	पू.षा.
राहु	पू.षा.	धनि.	शत.	भर.	रोहि.	मृग.	आर्द्रा	पुन.	आश्ले.	पू.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाती	ज्येष्ठा	मूल

(२) पातदोष ज्ञान चक्र

हर्षणवैधृतिसाध्यव्यतिपातकगण्डशूलयोगानाम् । अन्ते यन्नक्षत्रं पातेन निपातितं तत्स्यात् ।।

(मुहू.चि.विवा.प्र.श्लो.६०)

हर्षण, वैधृति, शूल, गण्ड, साध्य, व्यतिपात निर्दिष्ट ६ योगों के अन्त में विद्यमान नक्षत्र पातदोष से दूषित हो जाता है और शूल योग के अन्त में विद्यमान विवाहनक्षत्र **भुजंगपात दोष** नामक अपरिहार्य दोष से दूषित होता है। यहां दिए गए इस पातदोष कोष्ठक से विवाहनक्षत्रकालिक सूर्यनक्षत्र द्वारा पातदूषित विवाहनक्षत्र पर्याप्त आसन्नता से जाना जा सकता है। जैसे विवाहनक्षत्र यदि मृगशिर्ष हो तो मृग., आर्द्रा, मघा, हस्त, ज्येष्ठ, धनिष्ठा में सूर्य होने पर यह पात दोष होगा। **भुजंग** नामक विशेष पात विवाह में सर्वत्र वर्जित माना गया है। जहां कहीं भी यह दोष है, वहां इस कोष्ठक में भु.पा.(भुजंगपात) लिखा दिया गाया है।

(२) पातदोष ज्ञान चक्र

विवाह नक्षत्र	अश्वि.	रोहि.	मृग.	मघा	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाती	अनु.	मूल	उ.षा.	श्रव.	धनि.	उ.भा.	रेव.
	रेव.	आर्द्रा भु.पा.	मृग भु.पा.	अश्वि.	कृत्ति.	भर.	रोहि.	कृत्ति.	अश्वि.	रोहि.	भर.	अश्वि.	रेव.	भर.	अश्वि.
	आश्ले भु.पा.	पुन.	आर्द्रा	मृग.	आर्द्रा	मृग.	आश्ले	पुष्य	आर्द्रा	आश्ले	पुन.	आर्द्रा	मृग.	पू.फा. भु.पा.	मघा भु.पा.
	मघा	पू.फा.	मघा	पुष्य	पू.फा.	मघा	चित्रा	हस्त	पू.फा.	ज्येष्ठा भु.पा.	विशा. भु.पा.	स्वाती भु.पा.	चित्रा भु.पा.	उ.फा.	पू.फा.
	चित्रा	चित्रा	हस्त	हस्त	विशा.	स्वाती	धनि. भु.पा.	श्रव भु.पा.	पू.षा. भु.पा.	मूल	अनु.	विशा.	स्वाती	विशा.	स्वाती
	अनु.	मूल	ज्ये.	ज्ये.	पू.भा. भु.पा.	शत. भु.पा.	शत.	धनि.	उ.षा.	धनि.	उ.षा.	पू.षा.	मूल	मूल	ज्ये.
	श्रव.	शत.	धनि.	रेव. भु.पा.	उ.भा.	पू.भा.	अश्वि.	रेव.	पू.भा.	उ.भा.	शत.	धनि.	श्रव.	शत.	धनि.

(३) क्रान्तिसाम्य महापातदोष कोष्ठक

सूर्य और चन्द्र की क्रान्तियों में साम्य होना ही क्रान्ति साम्य दोष होता है। क्रान्ति साम्य दोष के दो भेद होते हैं। १) व्यतिपात, २) वैधृति। **व्यतिपात** - अयन भेद हो और गोल एक ही हो ऐसी स्थिति में सूर्य और चन्द्रमा की क्रान्ति तुल्य हो तो व्यतिपात नामक (क्रान्तिसाम्य) दोष होता है। **वैधृति** - अयन एक हो और गोल भिन्न भिन्न होने पर सूर्य और चन्द्रमा की क्रान्तियों में समता होने पर वैधृति नामक (क्रान्तिसाम्य) दोष होता है। यथा कहा गया है - **पञ्चास्याजौ गोमृगौ तौलिकुम्भौ कन्यामीनौ कर्क्यली चापयुग्मे । तत्राऽन्योन्यं चन्द्रभान्वोर्निरुक्तं क्रान्तेः साम्यं नो शुभं मङ्गलेषु ।।** (मुहू.चि.विवा.प्र.श्लो.६१) अर्थात् सिंह-मे, वृष-मकर, तुला-कुम्भ, कन्या-मीन, कर्क-वृश्चिक, धनु-मिथुन, इन दो दो राशियों में सूर्य और चन्द्रमा की स्थिति से क्रान्ति साम्य नामक दोष होता है। जो मङ्गल कार्यों में शुभ नहीं माना गया है। यथा - सिंह में सूर्य तथा मेष में चन्द्रमा अथवा मेष में सूर्य और सिंह में चन्द्रमा हो तो क्रान्तिसाम्य दोष होगा। इसे महापात दोष भी कहा जाता है।

क्रान्तिसाम्य चक्र

सू./च. नक्षत्र	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुल	वृश्चि.	धनु	मक.	कुम्भ	मीन
च./सू. नक्षत्र	सिंह	मक.	धनु	वृश्चि.	मेष	मीन	कुम्भ	कर्क	मिथु.	वृष	तुल	कन्या

(४) यामित्र दोष कोष्ठक

(नक्षत्रानुसार)

यह दोष सभी ग्रहों से देखा जाता है। जैसे यदि विवाह नक्षत्र चित्रा हो और कोई ग्रह रेवती में हो तब उस ग्रह का वहां यामित्र दोष माना जाएगा। विशेषत: इसका विचार

विवाह नक्षत्र	अश्वि.	रोहि.	मृग.	मघा	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाती	अनु.	मूल	उ.षा.	श्रव.	धनि.	उ.भा.	रेव.
ग्रह न.	चित्रा	अनु.	ज्येष्ठा	धनि.	पू.भा.	उ.भा.	रेव.	अश्वि.	कृत्ति.	मृग.	पुन.	पुष्य	श्लेषा	उ.फा.	हस्त

मुहूर्तचिन्तामणिमतानुसार जामित्रदोष

लग्नाच्चन्द्रान्मदनभवनगे खेटे न स्यादिह परिणयनम् । किं वा बाणशुगमितलवगे जामित्रं स्यादशुभकरमिदम्।। (मुहू.चि.विवा.प्र.श्लो.६७) लग्न और चन्द्र से सप्तम भाव में यदि कोई भी ग्रह हो तो जामित्र दोष होता है। इसमें विवाह नहीं करना चाहिए। अथवा लग्न एवं चन्द्र से ५ वें नवमांश पर यदि कोई भी ग्रह हो तो जामित्र दोष विशेष अशुभ कारक होता है। (यह सूक्ष्म जामित्र दोष है।) सामान्य रूप से जामित्र दोष में सम्पूर्ण लग्न का परित्याग किया जाता है। अधिकांश आचार्यों के मतों से यही स्पष्ट होता है कि जिस लग्न या राशि से सप्तम भाव में कोई भी ग्रह हो तो विवाह में उस लग्न या राशि का परित्याग कर देना चाहिए।

जामित्रदोष का परिहार - तुङ्गत्रिकोणभवने भवने निजे वा सौम्याधिमित्रगृहगोऽपि तदीक्षितो वा । जामित्रकादि परिसञ्चितदोषराशिं हत्वा ददाति बहुश: सुखमेव चन्द्र:।।

(५) बाण पञ्चक

सूर्य के गतांशों द्वारा बाण निर्णय

रसगुणशशिनागाब्ध्याढ्यसंक्रान्तियातांशकमितिरथ तष्टाऽङ्कैर्यदा पञ्च शेषा: । रुगनलनृपचौरा मृत्युसंज्ञश्च बाणो नवहृतशरशेषे शेषकैक्ये सशल्य: ।। सूर्य के भुक्तांश को पृथक् पृथक् पाँच स्थानों में रखकर उनमें ६, ३, १, ८, ४ को क्रम से जोडकर ९ का भाग देने से यदि ५ शेष हो तो क्रम से रोग, अग्नि, नृप, चोर और मृत्यु संज्ञक पञ्चबाण होते हैं। अर्थात् यदि प्रथम स्थान में ५ शेष हो तो रोगबाण, द्वितीय स्थान में ५ शेष हो तो अग्निबाण इसी प्रकार तीसरे स्थान में नृपबाण, चौथे में चोरबाण तथा पाँचवें स्थान में ५ शेष हो तो मृत्युबाण होता है। मृत्युबाण को विवाह, अग्निबाण को गृहच्छादन, नृपबाण को राजसेवा, चौरबाण को यात्रा और रोगबाण को व्रतबन्ध में वर्जित किया जाता है। अर्थात् **८/१७/२६ गतांश से रोगबाण। २/११/२०/२९ गतांश से सशल्य अग्निबाण। ४/१३/२२ गतांश से नृपबाण। ६/१५/२४ गतांश से चौरबाण। १/१०/१९/२८ गतांश से मृत्युबाण होता है।**

बाणदोष परिहार

रात्रौ चौररुजौ दिवा नरपतिर्वह्नि: सदा सन्ध्ययोर्मृत्युश्चाथ शनौ नृपो विदि मृतिर्भौमेऽग्निचौरौ रवौ । रोगोऽथ व्रतगेहगोपनृपसेवायानपाणिग्रहे वर्ज्याश्च क्रमतो बुधै: रुगनलक्ष्मापालचौरा मृति: ।।(मुहू.चिन्त.विवा.प्र.श्लो.)

वैसे मृत्यु को बुधवार, दोनों सन्ध्याकालों में, अग्नि को मंगलवार सर्वदा, नृप को शनिवार दिन के समय, चौर को मंगलवार रात्रि में और रोग को रविवार रात्रि में वर्जित लिखा गया है। लेकिन मुहूर्त्तशोधन में इन सभी बाणों को प्रत्येक वार में सभी कालों में वर्जित करना चाहिए।

(६) एकार्गल दोष

यह दोष सूर्यनक्षत्र से विषम संख्यक नक्षत्र पर चन्द्र स्थिति के समय विष्कम्भ आदि योग होने पर होता है। जैसे - विवाहनक्षत्र मघा के समय यदि सूर्य पू.षा, अभि., धनि., पू.भा. आदि में से किसी नक्षत्र में विद्यमान हो तो एकार्गलदोष होगा, बशर्ते कि विवाहनक्षत्र के समय विष्कम्भ, अतिगण्ड, शूल, गण्ड, व्याघात, वज्र, परिघ, व्यतीपात या वैधृति योगों में से कोई योग वहां हो। यहां नक्षत्र गणना साभिजित् होगी। **व्याघातगण्डव्यतिपातपूर्वशूलान्त्यवज्रे परिघातिगण्डे । योगे विरुद्धे त्वभिजित्समेत: खार्जूरमर्काद्विषमे शशी चेत् ।।**(मुहू.चिन्त.विवा.प्र.श्लो.६२)

विशेष - वस्तुत: उक्त योग का नाम एकार्गल दोष ही है। खार्जूर चक्र से इसका विचार किया जाता है, तथा खार्जूरचक्र एकार्गल का ही अगंभूत है, अत: इस दोष को खार्जूर दोष भी कहा जाता है। खार्जूरचक्र के निर्माण की विधि नारदादि आचार्यों ने भिन्न प्रकार से बतलाया है। व्याघात, शूल, परिघ, पात, विष्कुम्भ, गण्ड, अतिगण्ड, वज्र एवं वैधृति योगों में क्रम से पुनर्वसु, मृगशिरा, मघा, आश्लेषा, अश्विनी, मूल, अनुराधा, पुष्य एवं चित्रा नक्षत्रों को खार्जूर चक्र के शीर्ष में स्थापित करना चाहिये। खार्जूरचक्र का निर्माण १ उर्ध्वाध: तथा १३ तिरछी रेखाओं से होता है। यहाँ साभिजिद् गणना ग्रहण नहीं की गई है। परन्तु अभिजित् का परित्याग करने पर एक रेखा में विषम नक्षत्र नहीं आसकेगे। अत: चक्र में अभिजित् को ग्रहण करना आवश्यक है।

एकार्गल (खार्जूर) दोष चक्र

विव. नक्षत्र	अश्वि.	रोहि.	मृग.	मघा	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाती	अनु.	मूल	उ.षा.	श्रव.	धनि.	उ.भा.	रेव.
सूर्य नक्षत्र	अश्वि	पू.भा.	शत.	पू.षा.	ज्येष्ठा	अनु.	विशा.	स्वाती	हस्त	पू.फा.	आश्ले.	मृग.	रोहि.	कृत्ति.	भर.
	कृत्ति.	रेव.	उ.भा.	अभि.	पू.षा.	मूल	ज्येष्ठा	अनु.	स्वाती	हस्त	पू.फा.	पुन.	आर्द्रा	मृग.	रोहि.
	मृग.	भर.	अश्वि.	धनि.	अभि.	उ.षा.	पू.षा.	मूल	अनु.	स्वाती	हस्त	आश्ले.	पुष्य	पुन.	आर्द्रा
	पुन.	रोहि.	कृत्ति.	पू.भा.	धनि.	श्रव.	अभि.	उ.षा.	मूल	अनु.	स्वाती	पू.फा.	मघा	आश्ले.	पुष्य
	आश्ले.	आर्द्रा	मृग.	रेव.	पू.भा.	शत.	धनि.	श्रव.	उ.षा.	मूल	अनु.	हस्त	उ.फा.	पू.फा.	मघा
	पू.फा.	पुष्य	पुन.	भर.	रेव.	उ.भा.	पू.भा.	शत.	श्रव.	उ.षा.	मूल	स्वाती	चित्रा	हस्त	उ.फा.
	हस्त	मघा	आश्ले.	रोहि.	भर.	अश्वि.	रेव.	उ.भा.	शत.	श्रव.	उ.षा.	अनु.	विशा.	स्वाती	चित्रा
	मूल	विशा	स्वाती	मघा	पू.ष्या	पुन.	आर्द्रा	मृग.	कृत्ति.	अश्वि.	उ.भा.	श्रव.	अभि.	उ.षा.	पू.षा.
	उ.षा.	ज्येष्ठा	अनु.	उ.फा.	मघा	आश्ले.	पुष्य	पुन.	मृग.	कृत्ति.	अश्वि.	सत.	धनि.	श्रव.	अभि.
	श्रव.	उ.षा.	मूल	चित्रा	पू.फा.	उ.फा.	मघा	आश्ले.	पुन.	मृग.	कृत्ति.	उ.भा.	पू.भा.	शत.	धनि.
	शत.	अभि.	उ.षा.	विशा.	चित्रा	हस्त	उ.फा.	पू.फा.	आश्ले.	पुन.	मृग.	अश्वि.	रेव.	उ.भा.	पू.भा.
	उ.भा.	धनि.	श्रव.	ज्येष्ठा	विशा.	स्वाती	चित्रा	हस्त	पू.फा.	आश्ले.	पुन.	कृत्ति.	भर.	अश्वि.	रेवती

(७) उपग्रहदोष चक्र

सूर्य नक्षत्र से चान्द्रनक्षत्र यदि ५, ८, १०, १४, ७, १९, १५, १८, २१, २२, २३, २४, २५ संख्यक हों तो उपग्रह नामक दोष होता है। यह कुरु बाह्लीक देश वासियों के लिए शुभकारक नहीं होता है। उपग्रह दोष का ज्ञान इस कोष्ठक द्वारा सूर्यनक्षत्र और विवाह नक्षत्र से किया जाता है। जैसे विवाह नक्षत्र यदि उ.फा. हो तो पुष्य, आर्द्रा, मृग. या कृत्तिका आदि किसी भी नक्षत्र में सूर्य के होने पर यह दोष होता है।

उपग्रहदोष चक्र (केवल सूर्य नक्षत्र से देखिए)

विव. नक्षत्र	अश्वि.	रोहि.	मृग.	मघा	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाती	अनु.	मूल	उ.षा.	श्रव.	धनि.	उ.भा.	रेव.
सूर्य नक्षत्र	शत.	रेव.	अश्वि.	आर्द्रा	पुष्य	श्ले.	मघा	पू.फा.	हस्त	स्वाती	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	श्रव.	धनि.
	श्रव.	पू.भा.	उ.भा.	रोहि.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	पू.फा.	हस्त	स्वाती	विशा.	अनु.	पू.षा.	उ.षा.
	मूल	श्रव.	धनि.	अश्वि.	कृत्ति.	रोहि.	मृग.	आर्द्रा	पुष्य	मघा	उ.फा.	हस्त	चित्रा	अनु.	ज्येष्ठा
	स्वाती	ज्येष्ठा	मूल	शत.	उ.भा.	रेव.	अश्वि.	भर.	रोहि.	आर्द्रा	पुष्य	आश्ले.	मघा	हस्त	चित्रा
	चित्रा	अनु.	ज्येष्ठा	धनु.	पू.भा.	उ.भा.	रेव.	अश्वि.	कृत्ति.	मृग.	पुन.	पुष्य	अश्ले.	उ.फा.	हस्त
	पू.फा.	चित्रा	स्वा.	पू.षा.	श्रव.	धनि.	शत.	पू.भा.	रेव.	भर.	रोहि.	मृग.	आर्द्रा	श्लेषा	मघा
	मघा	हस्त	चित्रा	मूल	उ.षा.	श्रव.	धनि.	शत.	उ.भा.	अश्वि.	कृत्ति.	रोहि.	मृग.	पुष्य	श्लेषा
	पुष्य	पू.फा.	उ.फा.	अनु.	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रव.	शत.	उ.भा.	अश्वि.	भर.	कृत्ति.	आर्द्रा	पुन.
	पुन.	मघा	पू.फा.	विशा.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	धनि.	पू.भा.	रेव.	अश्वि.	भर.	मृग.	आर्द्रा
	आर्द्रा	श्लेषा	मघा	स्वाती	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	श्रव.	शत.	उ.भा.	रेव.	अश्वि.	रोहि.	मृग.
	मृग.	पुष्य	श्लेषा	चित्रा	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	उ.षा.	धनि.	पू.भा.	उ.भा.	रेव.	कृत्ति.	रोहि.
	रोहि.	पुन.	पुष्य	हस्त	स्वाती	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	पू.षा.	श्रव.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	भर.	कृत्ति.

।। शतपदचक्र।।

नक्षत्र	चरण	राशि	स्वामी	वर्ण	वश्य	योनि	गण	नाडी
अश्विनी	चू,चे,चो,ला	मेष	मंगल	क्षत्रिय	चतुष्पद	अश्व	देव	आदि
भरणी	ली,लू,ले,लो	मेष	मंगल	क्षत्रिय	चतुष्पद	गज	मनुष्य	मध्य
कृत्तिका-१	अ	मेष	मंगल	क्षत्रिय	चतुष्पद	मेढ़ा	राक्षस	अन्त्य
कृत्तिका२,३,४	इ,उ,ए	वृष	शुक्र	वैश्य	चतुष्पद	मेढ़ा	राक्षस	अन्त्य
रोहिणी	ओ,वा,वी,वू	वृष	शुक्र	वैश्य	चतुष्पद	सर्प	मनुष्य	अन्त्य
मृगशिरा १,२	वे,वो	वृष	शुक्र	वैश्य	चतुष्पद	सर्प	देव	मध्य
मृगशिरा ३,४	का,की	मिथुन	बुध	शूद्र	नर	सर्प	देव	मध्य
आर्द्रा	कु,घ,ङ,छ	मिथुन	बुध	शूद्र	नर	श्वान	मनुष्य	आदि
पुनर्वसु १,२,३	के,को,ह्म	मिथुन	बुध	शूद्र	नर	मार्जार	देव	आदि
पुनर्वसु ४	ही	कर्क	चन्द्र	ब्राह्मण	जलचर	मार्जार	देव	आदि
पुष्य	हू,हे,हो,डा	कर्क	चन्द्र	ब्राह्मण	जलचर	मेढ़ा	देव	मध्य
आश्लेषा	डी,डू,डे,डो	कर्क	चन्द्र	ब्राह्मण	जलचर	मार्जार	राक्षस	अन्त्य
मघा	मा,मी,मू,मे	सिंह	सूर्य	क्षत्रिय	चतुष्पद	मूषक	राक्षस	अन्त्य
पू.फाल्गुनी	मो,टा,टी,टू	सिंह	सूर्य	क्षत्रिय	चतुष्पद	मूषक	मनुष्य	मध्य
उ.फाल्गुनी १	टे	सिंह	सूर्य	क्षत्रिय	चतुष्पद	गौ	मनुष्य	आदि
उ,फा.२,३,४	टो,पा,पी	कन्या	बुध	वैश्य	नर	गौ	मनुष्य	आदि
हस्त	पू,षा,ण,ढ	कन्या	बुध	वैश्य	नर	महिष	देव	आदि
चित्रा १,२	पे, पो	कन्या	बुध	वैश्य	नर	व्याघ्र	राक्षस	मध्य
चित्रा ३,४	रा,री	तुला	शुक्र	शूद्र	नर	व्याघ्र	राक्षस	मध्य
स्वाती	रु,रे,रो,ता	तुला	शुक्र	शूद्र	नर	महिष	देव	अन्त्य
विशाखा १,२,३	ती,तू,ते	तुला	शुक्र	शूद्र	नर	व्याघ्र	राक्षस	अन्त्य
विशाखा ४	तो	वृश्चिक	मंगल	ब्राह्मण	कीट	व्याघ्र	राक्षस	अन्त्य
अनुराधा	ना,नी,नू,ने	वृश्चिक	मंगल	ब्राह्मण	कीट	मृग	दैव	मध्य
ज्येष्ठा	नो,या,यी,यू	वृश्चिक	मंगल	ब्राह्मण	कीट	मृग	राक्षस	आदि
मूल	ये,यो,भा,भी	धनु	गुरु	क्षत्रिय	नर	श्वान	राक्षस	आदि
पूर्वाषाढ़ा	भू,धा,फा,ढा	धनु	गुरु	क्षत्रिय	नर चतुष्पद	वानर	मनुष्य	मध्य
उ.षाढा १	भे	धनु	गुरु	क्षत्रिय	चतुष्पद	नकुल	मनुष्य	अन्त्य
उ.षाढा २,३,४	भो,जा,जी	मकर	शनि	वैश्य	चतुष्पद	नकुल	मनुष्य	अन्त्य
श्रवण	खी,खू,खे,खो	मकर	शनि	वैश्य	चतुष्पद जलचर	वानर	देव	अन्त्य
धनिष्ठा १,२	गा,गी	मकर	शनि	वैश्य	चतुष्पद	सिंह	राक्षस	मध्य
धनिष्ठा ३,४	गू,गे	कुम्भ	शनि	शूद्र	नर	सिंह	राक्षस	मध्य
शतभिषा	गो,सा,सी,सू	कुम्भ	शनि	शूद्र	नर	अश्व	राक्षस	आदि
पू.भाद्र.१,२,३	से,सो,दा	कुम्भ	शनि	शूद्र	नर	सिंह	मनुष्य	आदि
पूर्वा भाद्र. ४	दी	मीन	गुरु	ब्राह्मण	जलचर	सिंह	मनुष्य	आदि
उ.भाद्रपद	दू,थ,झ,ञ	मीन	गुरु	ब्राह्मण	जलचर	गौ	मनुष्य	मध्य
रेवती	दे,दो,चा,ची	मीन	गुरु	ब्राह्मण	जलचर	गज	देव	अन्त्य

।। ग्रहमैत्री,उच्च नीच चक्र।।

ग्रह	सूर्य	चन्द्र	मंगल
मित्र	चन्द्र,मंगल,गुरु	सूर्य,बुध	सूर्य,चन्द्र,गुरु
सम	बुध	मंगल,गुरु,शुक्र,शनि	शुक्र,शनि
शत्रु	शुक्र,शनि		बुध
उच्च	मेष-१०	वृष-०३	मकर-२८
नीच	तुला-१०	वृश्चिक-०३	कर्क-२८

।। ग्रहमैत्री,उच्च नीच चक्र।।

ग्रह	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
मित्र	सूर्य,शुक्र	सूर्य,चन्द्र,मंगल	बुध,शनि	बुध,शुक्र
सम	मंगल,गुरु,शनि	शनि	मंगल,गुरु	गुरु
शत्रु	चन्द्र	बुध,शुक्र	सूर्य,चन्द्र	सुर्य,चन्द्र,मंगल
उच्च	कन्या-१५	कर्क-०५	मीन- २७	तुला-२०
नीच	मीन-१५	मकर-०५	कन्या-२७	मेष-२०

।। द्विद्वादशचक्र ।।

मित्रद्विद्वादश						शत्रुद्विद्वादश					
१२	०२	०४	०६	०८	१०	०१	०३	०५	०७	०९	११
०१	०३	०५	०७	०९	११	०२	०४	०६	०८	१०	१२

।। नव पंचमचक्र ।।

मित्रनवपंचमचक्र						शत्रुनवपंचमचक्र					
०१	०२	०३	०५	०७	०८	०९	१०	१२	११	०६	०४
०५	०६	०७	०९	११	१२	०१	०२	०४	०३	१०	०८

।। षडाष्टकचक्र ।।

मित्रषडाष्टक						शत्रुषडाष्टक					
०१	०३	०५	०७	०९	११	०१	०३	०५	०७	०९	११
०८	१०	१२	०२	०४	०६	०६	०८	१०	१२	०२	०४

।। वर्गचक्र ।।

गरुड़	बिडाल	सिंह	श्वान	सर्प	मूषक	मृग	मेष
अ,इ,उ,ए	क,ख,ग,घ,ङ	च,छ,ज,झ,ञ	ट,ठ,ड,ढ,ण	त,थ,द,ध,न	प,फ,ब,भ,म	य,र,ल,व	श,ष,स,ह

।।विवाहे रविचन्द्रगुरुशुद्धिचक्रम् ।।

रवि:	चन्द्र:	गुरु:	ग्रहा:
३/६/१०/११	३/६/७/१०/११	२/५/७/९/११	शुभस्थानानि
१/२/५/७/९	१/२/५/९	१/३/१०/६	पूज्यस्थानानि
४/८/१२	४/८/१२	४/८/१२	अशुभस्थानानि

अष्टविधमेलापक चक्र

१ वर्णगुण ।।वर।।

वर्ण	विप्र	क्षत्रिय	वैश्य	शूद्र
विप्र	1	0	0	0
क्षत्रिय	1	1	0	0
वैश्य	1	1	1	0
शूद्र	1	1	1	1

कन्या

२ वश्यगुण ।।वर।।

वश्य	चतु.	मान.	जल	वन	कीट
चतु.	2	1	1	0	1
मान.	1	2	।।	0	1
जल	1	।।	2	1	1
वन	0	0	1	2	0
कीट	1	1	1	0	2

कन्या

३ तारागुण ।।वर।।

ता.	1	2	3	4	5	6	7	8	9
1	3	3	1।।	3	1।।	3	1।।	3	3
2	3	3	1।।	3	1।।	3	1।।	3	3
3	1।।	1।।	0	1।।	0	1।।	0	1।।	1।।
4	3	3	1।।	3	1।।	3	1।।	3	3
5	1।।	1।।	0	1।।	0	1।।	0	1।।	1।।
6	3	3	1।।	3	1।।	3	1।।	3	3
7	1।।	1।।	0	1।।	3	1।।	0	1।।	1।।
8	3	3	1।।	3	1।।	3	1।।	3	3
9	3	3	1।।	3	1।।	3	1।।	3	3

कन्या

४ योनिकूटगुण ।।वर।।

योनि	अश्व	गज	मेष	सर्प	श्वान	मार्जार	मूषक	नौ	महिष	व्याघ्र	मृग	वानर	नकुल	सिंह
अश्व	4	2	3	2	2	3	3	3	1	1	3	2	2	1
गज	2	4	3	2	2	3	3	3	2	2	2	2	2	0
मेष	3	3	4	3	2	3	3	3	1	3	0	3	0	
सर्प	2	2	3	4	2	2	1	1	2	2	2	2	2	0
श्वान	2	2	2	2	4	1	1	2	2	1	0	2	2	1
मार्जार	2	2	3	2	1	4	0	2	2	1	2	2	2	2
मूषक	2	2	2	1	1	0	4	2	2	2	2	2	2	1
गौ	3	2	3	2	2	2	2	4	3	0	3	2	3	1
महिष	1	3	3	2	2	2	2	3	4	1	2	2	2	3
व्याघ्र	1	2	1	2	1	1	2	0	1	4	2	1	2	2
मृग	3	2	3	2	0	2	2	3	2	1	4	2	2	3
वानर	2	3	0	2	2	2	2	2	2	1	2	4	2	3
नकुल	2	2	3	0	2	2	2	3	2	2	2	4	4	2
सिंह	1	0	1	2	1	2	2	2	3	2	2	2	2	4

कन्या

५ ग्रहमैत्रीगुण ।।वर।।

ग्रह	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
सूर्य	5	5	5	4	5	0	0
चन्द्र	5	5	4	1	4	।।	।।
मंगल	5	4	5	।।	5	3	।।
बुध	4	1	।।	5	।।	5	4
गुरु	5	4	5	।।	5	।।	3
शुक्र	0	।।	3	5	।।	5	5
शनि	0	।।	।।	4	3	5	5

कन्या

६ गणगुण ।।वर।।

गण	देव	मानव	राक्षस
देव	6	5	0
मानव	5	6	0
राक्षस	0	0	6

कन्या

७ राशिकूटगुण ।।वर।।

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
मेष	7	0	7	7	0	0	7	0	0	7	7	7
वृष	0	7	0	7	7	7	0	7	0	0	7	7
मिथुन	7	0	7	0	7	7	0	0	7	0	0	7
कर्क	7	7	0	7	0	7	7	0	0	7	0	0
सिंह	0	7	7	0	7	0	7	7	0	0	7	0
कन्या	0	0	7	7	0	7	0	7	7	0	0	7
तुला	0	7	0	0	7	7	0	7	0	7	7	0
वृश्चिक	0	7	0	0	7	7	0	7	0	7	7	0
धनु	0	0	7	0	0	7	7	0	7	0	7	7
मकर	7	0	0	7	0	0	7	7	0	7	0	7
कुम्भ	7	7	0	0	7	0	0	7	7	0	7	0
मीन	0	7	7	0	0	7	0	0	7	7	0	7

कन्या

८ नाड़ीगुण ।।वर।।

नाडी	आद्य	मध्य	अन्त्य
आद्य	0	8	8
मध्य	8	0	6
अन्त्य	8	8	0

कन्या

ग्रहमैत्रीविचार

	मित्रग्रह	समग्रह	शत्रुग्रह
सूर्य	चं. मं. गु.	बु.	शु.श.रा.
चन्द्र	सू.बु.	मं.गु.शु.श.	रा.के.
मंगल	सू. चं. गु.	शु. श.	बु.रा.के.
बुध	सू. शु.रा.	मं.गु.श.	चं.के.
गुरु	सू. चं. मं.	श.	बु.शु.रा.के.
शुक्र	बु.श.रा.	गु.	सू.चं.के.
शनि	बु.शु.रा.	गु.	सू.चं.मं.के.
राहु	बु.शु.श.	गु.	सू.चं.मं.के.
केतु	सू.चं. मं.	बु. गु.	शु.श. रा.

अष्टकूट दोषों के परिहार - वर, कन्या के राशीशों अथवा नवमांशेशों की मैत्री तथा राशीशों, नवांशेशों की एकता द्वारा सभी दोषों का परिहार हो जाता है, परन्तु नाडी दोष का परिहार नहीं होता है। **नाडी दोष का परिहार** - वर कन्या की राशि एक और नक्षत्र भिन्न भिन्न हों अथवा नक्षत्र एक और राशियां भिन्न भिन्न हों तो नाडी दोष दूर हो जाता है। दोनों के नक्षत्रों के चरणों का वेध न होने की स्थिति में भी नाडी दोष का परिहार माना जाता है। वर-कन्या में से किसी एक का जन्म नक्षत्र के प्रथम चरण में और दूसरे का चतुर्थ चरण में अथवा एक का द्वितीय चरण में और दूसरे का तृतीय चरण में हुआ हो तो पादवेध मान लिया जाता है। दैवज्ञ को यह विशेष रूप से ध्यान में रखना चाहिए कि नाडीदोष का परिहार यदि नहीं मिले तो किसी भी स्थिति में सम्बन्ध करने की अनुमति नहीं देनी चाहिए।

वरवधूगुणबोधक चक्र

वर — कन्या	अश्विनी	भरणी	कृति.१	कृति.२	रोहिणी	मृग.१	मृग.२	आर्द्रा	पुन.३	पुन.१	पुष्य	अश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.१	उ.फा.२	हस्त	चित्रा१	चित्रा२	स्वाती	विशा.३	विशा.१	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.१	उ.षा.२	श्रवण	धनि.१	धनि.२	शत.	पू.भा.३	पू.भा.१	उ.भा.	रेवती
अश्विनी	28	33	28	18	21	22	26	17	18	22	31	27	21	26	16	11	09	13	22	26	22	19	26	14	13	26	24	26	26	20	20	15	16	14	24	26
भरणी	34	28	29	19	22	14	18	26	26	30	23	24	20	18	26	21	20	05	14	29	22	19	17	19	20	19	27	28	27	10	10	20	24	22	17	26
कृति.१	27	29	28	18	10	18	22	20	23	26	27	23	16	19	20	15	16	18	27	16	19	16	21	26	24	18	14	15	12	25	25	27	19	17	19	12
कृति.३	18	20	19	28	21	26	17	17	18	22	24	20	18	21	22	21	21	23	22	11	14	21	26	31	20	13	09	13	11	23	29	31	23	20	22	13
रोहिणी	23	23	09	18	28	36	27	23	23	27	27	13	12	26	27	25	26	20	19	15	09	16	30	24	14	20	11	16	18	20	26	24	30	27	26	19
मृग.२	23	14	18	27	35	28	19	24	23	27	20	22	20	16	25	23	26	13	11	25	17	23	22	25	15	11	17	21	26	12	19	27	29	26	17	27
मृग.२	27	18	22	18	27	20	28	33	31	19	12	15	23	19	27	30	34	21	14	27	20	14	12	14	23	19	25	21	26	13	14	22	24	26	17	27
आर्द्रा	19	27	21	18	24	26	34	28	25	13	20	13	22	28	21	24	24	27	20	27	20	13	17	03	16	28	28	23	22	18	19	12	17	19	27	27
पुन.३	19	26	23	20	22	24	32	24	28	16	23	17	22	26	20	23	24	26	19	27	21	14	20	06	14	27	27	22	23	18	19	11	17	19	27	27
पुन.१	21	28	23	22	25	26	19	10	14	28	35	28	16	20	14	17	18	20	19	27	21	20	26	11	08	21	21	26	27	22	12	07	11	17	25	24
पुष्य	30	21	26	23	25	18	11	18	21	35	28	30	18	14	23	26	27	12	11	26	21	20	19	22	17	11	22	27	25	13	04	14	18	24	18	27
अश्ले.	26	23	22	19	12	21	14	12	16	28	30	28	15	15	17	19	20	24	24	12	16	14	20	25	22	15	07	11	12	27	18	18	12	18	20	13
मघा	21	20	17	17	11	18	22	21	21	16	18	17	28	30	26	15	16	21	24	11	16	22	25	32	24	19	09	05	06	18	23	24	17	18	19	12
पू.फा.	25	19	20	21	23	15	19	27	26	23	18	17	30	28	34	23	21	07	10	24	18	24	22	24	18	17	25	21	19	04	09	18	23	23	17	25
उ.फा.१	16	25	20	21	25	23	27	20	20	17	26	19	26	34	28	17	16	13	16	25	16	22	31	17	09	25	26	22	21	12	17	11	15	16	27	25
उ.फा.३	13	21	16	21	25	23	30	23	23	19	28	21	17	25	19	28	27	24	16	25	16	18	28	13	14	29	30	26	25	16	16	10	14	18	29	27
हस्त	11	20	17	22	25	26	33	22	23	19	28	22	17	21	16	26	28	28	20	26	18	20	26	12	15	27	28	24	25	21	21	06	15	19	27	28
चित्रा२	14	06	19	23	20	13	20	26	25	21	13	26	22	08	14	24	28	28	20	20	26	28	12	25	27	13	21	17	19	17	17	24	17	21	11	22
चित्रा२	23	15	28	23	20	13	14	20	19	21	13	25	25	11	17	17	21	21	28	28	34	23	07	21	27	13	22	25	27	25	19	26	19	14	04	15
स्वाती	28	29	17	12	15	26	27	26	27	28	28	14	12	24	25	25	27	21	28	28	20	10	21	16	23	27	19	22	23	29	23	21	27	21	20	13
विशा.३	23	23	20	15	10	19	20	20	21	22	22	18	17	19	17	17	19	27	34	20	28	18	17	20	27	21	14	17	17	31	25	26	21	15	13	06
विशा.१	17	17	14	19	14	23	13	12	13	19	19	14	21	23	21	18	19	27	22	08	17	28	28	31	21	15	08	12	12	26	25	25	20	20	18	11
अनु.	24	14	19	24	27	20	11	16	19	25	18	20	24	20	29	25	25	11	06	21	17	28	28	31	15	13	21	25	26	13	13	21	26	25	18	26
ज्येष्ठा	12	17	24	29	22	23	13	03	05	10	20	25	31	23	16	13	12	25	19	15	19	31	31	28	14	17	16	20	21	26	25	18	11	10	21	21
मूल	12	20	24	19	13	14	22	15	13	09	18	24	24	18	09	13	14	26	26	22	26	22	16	15	28	28	26	15	16	20	28	21	14	16	25	28
पू.षा.	26	19	18	12	19	11	19	27	27	23	13	17	19	17	25	28	26	12	12	27	20	16	16	18	28	28	34	23	24	08	16	23	30	32	23	32
उ.षा.१	25	27	14	08	11	18	25	27	27	23	24	09	09	25	26	29	28	21	21	19	13	10	24	18	26	34	28	17	15	15	23	23	29	31	32	23
उ.षा.३	28	29	15	13	16	22	20	22	22	28	29	14	05	21	22	25	24	17	24	22	16	14	28	22	16	25	19	28	26	26	17	17	23	30	31	22
श्रवण	27	27	13	11	17	26	23	21	22	28	26	15	06	18	20	23	24	18	25	22	16	14	28	23	17	23	14	25	28	30	20	18	23	30	29	22
धनि.२	21	11	26	23	20	13	10	16	17	23	13	28	18	04	12	16	20	16	23	27	30	28	15	28	21	09	16	26	30	28	18	23	19	26	15	23
धनि.२	21	11	26	30	27	20	13	19	19	15	05	20	24	10	18	17	22	18	19	23	25	26	13	26	29	17	24	18	22	20	28	33	28	18	07	15
शत.	16	21	28	32	25	27	21	12	13	08	16	20	25	19	12	11	10	25	26	21	26	26	22	19	22	24	24	18	19	25	33	28	19	09	17	17
पू.भा.३	18	25	20	24	31	31	24	17	18	13	21	14	18	24	16	15	17	18	19	28	21	21	27	12	15	31	30	24	25	20	28	19	28	18	23	20
पू.भा.१	14	21	16	19	26	26	25	18	19	18	26	18	16	22	14	16	18	19	12	21	14	21	27	11	15	31	30	29	30	25	17	07	16	28	33	30
उ.भा.	24	15	18	21	25	17	16	25	27	26	19	20	17	15	25	27	26	09	02	19	12	19	20	22	24	22	31	30	29	14	06	16	21	33	28	34
रेवती	25	24	11	14	17	26	25	24	25	24	27	13	12	22	23	25	26	20	13	11	05	12	27	22	26	30	21	20	22	22	14	16	18	29	34	28

मेलापक सारणी में उपलब्ध गुणसंख्या यदि १६ से कम है तो सम्बन्ध नहीं करना चाहिए। यदि षडाष्टक भकूट का परिहार न मिल रहा हो तब २० से कम गुण संख्या होने पर सम्बन्ध नहीं करना चाहिए। ध्यान रहे - यहां प्रत्येक स्थिति में नाडी दोष का परिहार मिलना नितान्त आवश्यक है। यदि नाडी दोष के उपरोक्त परिहारों में से कोई एक भी परिहार न मिल रहा हो तब तो २८ गुण मिलने पर भी सम्बन्ध करने की अनुमति शास्त्रकारों ने नहीं दी है। यदि अत्यावश्यक हो तो गाय, अन्न, वस्त्र, सुवर्ण का यथाशक्ति दान, तथा जप शान्ति करके सम्बन्ध किया जा सकता है ।

।। ग्रहों की विंशोंतरी दशामान एवं अन्तर्दशा चक्र ।।

सूर्य दशावर्ष ६ कृ.उ.फा.उ.षा. अन्तर्दशा				चन्द्र दशावर्ष १० रो.ह.श्रवण अन्तर्दशा				मंगल दशावर्ष ७ मृ.चि.धनिष्ठा अन्तर्दशा				राहु दशावर्ष १८ आ.स्वा.शत. अन्तर्दशा				गुरु दशावर्ष १६ पुन.वि.पू.भा. अन्तर्दशा				शनि दशावर्ष १९ पुष्य.अनु.उ.भा. अन्तर्दशा				बुध दशावर्ष १७ अश्ले.ज्ये.रेवती अन्तर्दशा				केतु दशावर्ष ७ मघा मूल.अश्वि. अन्तर्दशा				शुक्र दशावर्ष २० पू.फा.पू.षा.भ. अन्तर्दशा			
ग्र.	व.	मा.	दि.	ग्र.	व.	मा.	दि.	ग्र.	व.	मा.	दि.	ग्र.	व.	मा.	दि.	ग्र.	व.	मा.	दि.	ग्र.	व.	मा.	दि.	ग्र.	व.	मा.	दि.	ग्र.	व.	मा.	दि.	ग्र.	व.	मा.	दि.
सू.	००	०३	१८	च.	००	१०	००	म.	००	०४	२७	रा.	०२	०८	१२	गु.	०२	०१	१८	श.	०३	००	०३	बु.	०२	०४	२७	के.	००	०४	२७	शु.	०३	०४	००
च.	००	०६	००	म.	००	०७	००	रा.	०१	००	१८	गु.	०२	०४	२४	श.	०२	०६	१२	बु.	०२	०८	०९	के.	००	११	२७	शु.	०१	०२	००	सू.	०१	००	००
म.	००	०४	०६	रा.	०१	०६	००	गु.	००	११	०६	श.	०२	१०	०६	बु.	०२	०३	०६	के.	०१	०१	०९	शु.	०२	१०	००	सू.	००	०४	०६	च.	०१	०८	००
रा.	००	१०	२४	गु.	०१	०४	००	श.	०१	०१	०९	बु.	०२	०६	१८	के.	००	११	०६	शु.	०३	०२	००	सू.	००	१०	०६	च.	००	०७	००	म.	०१	०२	००
गु.	००	०९	१८	श.	०१	०७	००	बु.	००	११	२७	के.	०१	००	१८	शु.	०२	०८	००	सू.	००	११	१२	च.	०१	०५	००	म.	००	०४	२७	रा.	०३	००	००
श.	००	११	१२	बु.	०१	०५	००	के.	००	०४	२७	शु.	०३	००	००	सू.	००	०९	१८	च.	०१	०७	००	म.	००	११	२७	रा.	०१	००१	१८	गु.	०२	०८	००
बु.	००	१०	०६	के.	००	०७	००	शु.	०१	०२	००	सू.	००	१०	२४	चं.	०१	०४	००	म.	०१	०१	०९	रा.	०२	०६	१८	गु.	००१	११	०६	श.	०३	०२	००
के.	००	०४	०६	शु.	०१	०८	००	सू.	००	०४	०६	चं.	०१	०६	००	मं.	००	११	०६	रा.	०२	१०	०६	गु.	०२	०३	०६	श.	०१	०१	०९	बु.	०२	१०	००
शु.	०१	००	००	सू.	००	०६	००	चं.	००	०७	००	मं.	०१	००	१८	रा.	०२	०४	२४	गु.	०२	०६	१२	श.	०२	०८	०९	बु.	००	११	२७	के.	०१	०२	००

अन्तर्दशावर्षादि विंशोत्तरी का = $\frac{\text{ग्रहदशावर्ष} \times \text{इष्ट दशावर्ष}}{१२०}$ प्रत्यन्तर्दशा = $\frac{\text{अन्तर्दशा वर्ष} \times \text{ग्रह दशावर्ष}}{१२०}$

।। योगिनी दशा एवं अन्तर्दशा चक्र ।।

मंगला १ श्रवण आर्द्रा चित्रा			पिंगला २ धनिष्ठा.पुन. स्वाती			धान्या ३ शत.पुष्य विशाखा			भ्रामरी ४ अश्वि.अश्ले. अनु.पूर्वाभाद्र			भद्रिका ५ भरणी मघा ज्येष्ठा			उल्का ६ कृति.पू.फा.मूल रेवती			सिद्धा ७ रो.उ.फा. पू.षा.			संकटा ८ मृग. हस्त. उ.षा.		
द.	मा.	दि.	द.	मा.	दि.	द.	मा.	दि	द.	मा.	दि.	द.	मा.	दि	द.	मा.	दि.	द.	मा.	दि.	द.	मा.	दि.	द.	मा.	दि.
मं.	००	१०	पि.	०१	१०	धा.	०३	००	भ्रा.	०५	१०	भ.	०८	१०	उ.	१२	००	सि.	१६	१०	स.	२१	१०
पि.	००	२०	धा.	०२	००	भ्रा.	०४	००	भ.	०६	२०	उ.	१०	००	सि.	१४	००	स.	१८	२०	मं.	०२	२०
धा.	०१	००	भ्रा.	०२	२०	भ.	०५	००	उ.	०८	००	सि.	११	२०	स.	१६	००	मं.	०२	१०	पि.	०५	१०
भ्रा.	०१	१०	भ.	०३	१०	उ.	०६	००	सि.	०९	१०	स.	१३	१०	मं.	०२	००	पि.	०४	२०	धा.	०८	००
भ.	०१	२०	उ.	०४	००	सि.	०७	००	स.	१०	२०	मं.	०१	२०	पि.	०४	००	धा.	०७	००	भ्रा.	१०	२०
उ.	०२	००	सि.	०४	२०	स.	०८	००	मं.	०१	१०	पि.	०३	१०	धा.	०६	००	भ्रा.	०९	१०	भ.	१३	१०
सि.	०२	१०	स.	०५	१०	मं.	०१	००	पि.	०२	२०	धा.	०५	००	भ्रा.	०८	००	भ.	११	२०	उ.	१६	००
स.	०२	२०	मं.	००	२०	पि.	०२	००	धा.	०४	००	भ्रा	०६	२०	भ.	१०	००	उ.	१४	००	सि.	१८	२०

अन्तर्दशावर्षादि योगिनी = $\frac{\text{ग्रहदशावर्ष} \times \text{इष्ट दशावर्ष}}{३६}$ = वर्षादिफल

विंशोत्तरी दशासाधन

गतर्क्षनाडी खरसेषु शुद्धा सूर्योदयादिष्टघटीषु युक्ता ।
भयातसंज्ञा भवतीह तस्य निजर्क्षनाडी सहिता भभोग: ।। (ता.नी.श्लो १७)

इष्टकाल = (जन्मसमय - सूर्योदय) X 5/2(2.5)
भयात = (६० - गतनक्षत्रमान) + इष्टकाल
विशेष भयात = इष्टकाल - गतनक्षत्रमान
भभोग = (६० - गतनक्षत्रमान) + जन्मनक्षत्रमान

भयातगुणितं रवेटदशामानं भभोगहृत् ।
भुक्तवर्षादिकं तस्य भोग्यं मानं विशोधनात् ।। (बृ.पा.हो.४७/१४)

भुक्तदशावर्षादि = $\frac{\text{पलात्मकभयात} \times \text{दशावर्ष}}{\text{पलात्मकभभोग}}$

यहाँ लब्धि वर्ष होगा, जो शेष बचेगा उसको १२ से गुणा करके पलात्मक भभोग से भाग देने से लब्धि मास होगा और शेष को पुन: ३० से गुणा करके पलात्मक भभोग से भाग देने से लब्धि दिन होगा। उसी प्रकार ६० से गुणा करके भभोग से भाग देकर घटी एवं पल बना लेना चाहिए।
भोग्यदशावर्षादि = दशावर्ष - ग्रहभुक्तदशावर्ष

।। दिन का चौघड़िया ।।

वार	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
३।।।	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल
३।।।	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
३।।।	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
३।।।	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग
३।।।	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर
३।।।	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
३।।।	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत
३।।।	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल

।। छिक्का विचार ।।

पूर्वदिशा	आग्नेयदिशा	दक्षिणदिशा	नैऋत्यदिशा	पश्चिमदिशा	वायव्यदिशा	उत्तरदिशा	ईशानदिशा	बासर:
विघ्न	विलम्ब	उत्तम	मृति	शुभम्	आगमन	लाभ	विलम्ब	**रवि**
लाभ	विलम्ब	मृति	लाभ	शुभम्	उत्तम	अल्पलाभ	विलम्ब	**चन्द्र**
मित्रागमन	लाभ	विलम्ब	मृति	लाभ	विदेशयात्रा	सुख	लाभ	**भौम**
सिद्धि	देहकष्ट	अरिष्ट	विलम्ब	मृति	धननाश	चौरभय	देहकष्ट	**बुध**
चिन्ता	वार्ता	विलम्ब	उत्तम	चौरभय	मृति	कष्ट	वार्ता	**गुरु**
धनादि	कलह	मित्रागमन	अर्थलाभ	उत्तम	विलम्ब	मरणम्	कलह	**शुक्र**
अर्थनाश	कष्टनाश	वार्ता	मित्रागमन	उत्तम	शुभ	विलम्ब	कष्टनाश	**शनि**

।। रात का चौघड़िया ।।

वार	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
३।।।	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
३।।।	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग
३।।।	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
३।।।	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत
३।।।	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर
३।।।	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
३।।।	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल
३।।।	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ

।। पल्लीपतन के फल ।।

स्थानं	फलं	स्थानं	फलं	स्थानं	फलं	स्थानं	फलं	स्थानं	फलं
शिरसि	राज्यलाभ:	ललाटे	बंधुदर्शनम्	भ्रूमध्ये	राज्यसम्मानम्	उत्तरोष्ठे	धननाश:	अधरोष्ठे	धनैश्वर्यप्राप्ति
नासाग्रे	व्याधिपीड़नं	दक्षिणकर्णे	आयुवृद्धि	वामकर्णे	लाभ:	नेत्रयो:	धनप्राप्ति:	दक्षिणभुजे	नृपतुल्यं
वामभुजे	राजभीति:	कण्ठे	शत्रुनाश:	स्तनद्वये	दौर्भाग्यम्	उदरे	भूषणलाभ:	पृष्ठदेशे	बुद्धिनाश:
जानुद्वये	शुभगम:	जंघयो:	शुभावह:	हस्तद्वये	वस्त्रलाभ:	स्कन्धयो:	विजयीभवेत्	नाभौ	बहुधनं
कटिभागे	अश्वलाभ:	द.मणिबंधे	धनहानि:	वामणिवन्धे	अपकीर्ति:	हृदये	धनलाभ:	मुखे	मिष्ठान्नभोजनं
गुल्फयो:	बंधनभीति:	केशान्ते	मरणम्	दक्षिणपादे	गमनम्	वामपदे	बंधुविनाश:	पादमध्ये	स्त्रीनाश:

।। नष्टवस्तुज्ञान ।।

अंधलोक.	रोहिणी	पुष्य	उ.फा	विशा.	पू.षाढ़ा	धनिष्ठा	रेवती	पूर्व में शीघ्र
मंदलो.	मृगशिरा	अश्लेषा	हस्त	अनुराधा	उ.षाढ़ा	शतभिषा	अश्विनी	दक्षिण में ३ दिन
मध्यलो.	आर्द्रा	मघा	चित्रा	ज्येष्ठा	अभिजित	पू.भाद्र	भरणी	पश्चिम में ६४ दिन
सुलोचन	पुनर्वसु	पू.फा.	स्वाती	मूल	श्रवण	उ.भाद्र	कृतिका	उत्तरे नष्टं

।। दिशाशूल बोधक चक्र ।।

पूर्व	अग्नि	दक्षिण	नैऋत्य	पश्चिम	वायव्य	उत्तर	ईशान	दिशा
शनि	चन्द्र	गुरु	बुध	रवि	शुक्र	मंगल	बुध	दिनानि

।। अङ्गस्फुरण के फल ।।

मस्तक	पृथ्वीलाभ:	नाक	प्रीति:सुखम्	ग्रीवार्धस्फुरण	रिपु भयम्	
ललाट	स्थानलाभ:	हस्त	वांछितसिद्धि:	पृष्ठस्फुरण	युद्धपराजय:	
स्कन्ध	भोगसमृद्धि:	कटि	प्रभोदेबलञ्च	कपोलस्फुरण	वरांगना प्राप्ति	
भ्रूमध्य	सुखप्राप्ति:	कटिपार्श्व	प्रीतिरनुत्तमा	मुखस्फुरण	मित्रप्राप्ति:	
भ्रूयुग्म	महत्सौख्यम्	कुक्षिस्फुरण	स्त्रीप्राप्ति:	बाह्यस्फुरण	मधुरभोजनम्	
कपाल	शुभावाप्ति:	ओष्ठस्फुरण	प्रियवस्तुलाभ:	बाहुमध्ये	धनागम:	
नेत्र	धनप्राप्ति:	ह्नुदेशस्फुरण	भयं महत्	उरुस्फुरण	वस्त्रलाभ:	
नेत्रसमीप	प्रियसमागम	कण्ठस्फुरण	ऐश्वर्यलाभ:	जानुस्फुरण	शत्रुवृद्धि:	
				जंघस्फुरण	स्वामीप्रीति:	

।। नक्षत्र कष्टावली ।।

रोग नक्षत्र	रोगशान्त्यर्थ दान	नक्षत्रवशाद् रोगदिन संख्या 1	2	3	4	रोगशान्त्यर्थ जपनीय मन्त्र	रोगनिवृत्यबलि
अश्विनी	भोजनदान	09	11	10	20	मृत्युञ्जय मंत्रजप:	घोड़े के लिए धान्य बलि।
भरणी	गो-अन्नादिदान	00	80	40	11	यमायतवेति मन्त्रजप:	गज के लिए तिल बलि।
कृतिका	स्वर्णदान	09	11	16	28	अग्निमूर्धेतिमन्त्रजप:	कछुए के लिए घृतदान।
रोहिणी	घृतदान	07	09	18	30	ब्रह्मायज्ञेतिमन्त्रजप:	सर्प को दूध दान।
मृगशिरा	तिलदान	09	05	07	10	इमं देवेति मन्त्रजप:	खरगोश के लिए भोजन दान।
आर्द्रा	गोदान	00	18	00	00	नमस्ते रुद्र इति मन्त्र:	बकरे को भोजन करवाना।
पुनर्वसु	पीतलदान	07	15	02	21	अदितिर्द्यौरिति मन्त्र:	सूअर को धान्य खिलाए।
पुष्य	तैल एवं अन्नदान	07	07	10	21	बृहस्पतेति मन्त्र:	बकरे को दही खिलाए।
आश्लेषा	गो-अजादि दान	00	07	41	00	नमोस्तुसर्पेति मन्त्र:	बिलाब को दूध पिलाए।
मघा	वस्त्र एवं घृतदान	15	07	17	20	पितृभ्य: इति मन्त्र:	बन्दर को तिल उड़द खिलाए।
पू.फा.	भोजनदान	00	15	00	30	भगप्रणेति मन्त्रजप:	ऊंट को शहद खिलाऐं।
उ.फा.	अन्नदान	07	14	07	60	दध्यावद्धेति मन्त्रजप:	गाय को शाक खिलाए।
हस्त	तैलदान	15	17	15	00	उदत्यं जातवेदेति मन्त्र:	भैंसे को अन्न खिलाए।
चित्रा	दुग्धदान	11	09	09	16	त्वष्टा तुरगेति मन्त्र:	तगर-धतूरे के फूल वन में रखे।
स्वाती	गौघृतदान	60	17	30	00	वायोरग्नेति मन्त्र:	भैंसे को गुड़ चावल खिलाए।
विशाखा	गौ-स्वर्णदान	15	00	04	13	इन्द्राग्नी इति मन्त्र:	वन में गुड़ँ भात की बलि दें।
अनुराधा	गौघृतदान	60	12	36	30	नमो मित्रेति मन्त्र:	पशुओं को कुत्थी सहित भात गुड़ दें।
ज्येष्ठा	तिलदान	69	09	06	04	त्रातारमिन्द्रमिति मन्त्र:	बंदरों को गुड़ तिल डालें।
मूल	चांदी के पात्रदान	00	09	15	06	माता पुत्रेति मन्त्र:	बिलाब को दूध पिलाएं।
पू.षा.	गाय व मोतीदान	00	15	24	10	आपोधर्मेति मन्त्र:	कछुए के लिए अन्नकणदान करें
उ.षा.	भोजनदान	30	24	26	16	विश्वेदेवेति मन्त्र:	गौ को धान्य खिलाएं।
श्रवण	श्रीफलदान	60	24	06	09	विष्णोरराटेति मन्त्र:	भैंसे को मीठा खिलाए
धनिष्ठा	अश्वान्नदान	15	04	20	21	वसो- पवित्रेति मन्त्र:	मनुष्य को दही, अन्न खिलाए
शतभिषा	भोजन, अन्नदान	04	45	03	22	वरुणस्तम्भेति मन्त्र:	गौ को चावल खिलाए।
पू.भा.	भोजनदान	00	12	21	19	अहिर्बुध्न्येति मन्त्र:	कौए को फल खिलाएं।
उ.भा.	अन्नदान	10	03	09	15	अहिर्बुध्न्येति मन्त्र:	गाय को चावल खिलाएं।
रेवती	फलदान	18	10	09	20	पूषन्नयेति	हाथी को अनाज खिलाए

।। यात्रा में शुभाशुभ नक्षत्र ज्ञान ।।

अश्विनी	पुनर्वसु	अनुराधा	मृगशिरा	पुष्य	रेवती	हस्त	श्रवण	धनिष्ठा	शुभ
रोहिणी	उत्तरा ३		पूर्वा ३		मूल	शतभिषा		ज्येष्ठा	मध्य
भरणी	कृतिका	आर्द्रा	आश्लेषा	मघा	चित्रा	स्वाती		विशाखा	निन्द्य
श्रवण	हस्त	मृगशिरा	पुनर्वसु	पुष्य	अश्विनी	अनुराधा	एषु सर्वदा सर्वदिक्		रिक्तादिक
पू. ३	कृतिका	मघा	भरणी	स्वाती	ज्येष्ठा	विशाखा	श्लेषा	चित्रा	आवश्यक में
16	21	11	07	14	14	14	14	30	त्याज्य घटी

।नक्षत्रस्वामी संज्ञा-तारा-स्वरूपादि बोधक सारणी

संख्या	नाम	स्वामी	संज्ञा	ता.सं.	स्वरूप	जाति
01	अश्विनी	अश्विनीकु	क्षिप्र, लघु	03	अश्वमुख	वैश्य
02	भरणी	यम	उग्र, क्रूर	03	योनि	चांडाल
03	कृतिका	अग्नि	मिश्र, साधारण	06	क्षुर	ब्राह्मण
04	रोहिणी	ब्रह्मा	ध्रुव, स्थिर	05	शकट	शूद्र
05	मृगशिरा	चन्द्र	मृदु, मैत्र	03	मृगस्य	कृषक
06	आर्द्रा	रुद्र	तीक्ष्ण, दारुण	01	मणि	क्रूर
07	पुनर्वसु	अदिति	चर, चल	04	गृह	वैश्य
08	पुष्य	गुरु	क्षिप्र, लघु	03	शर	क्षत्रिय
09	आश्लेषा	सर्प	तीक्ष्ण, दारुण	05	चक्र	चांडाल
10	मघा	पितृ	उग्र, क्रूर	05	भवन	शूद्र
11	पू.फा.	भग	उग्र, क्रूर	02	मंच	ब्राह्मण
12	उ.फा.	अर्यमा	ध्रुव, स्थिर	02	शय्या	क्षत्रिय
13	हस्त	सूर्य	क्षिप्र, लघु	05	हाथ	वैश्य
14	चित्रा	त्वष्टा	मृदु, मैत्र	01	मुक्ता	कृषक
15	स्वाती	वायु	चर, चल	01	मूँगा	क्रूर
16	विशाखा	इन्द्राणी	मिश्र, साधारण	04	तोरण	चांडाल
17	अनुराधा	मित्र	मृदु, मैत्र	04	बलि	शूद्र
18	ज्येष्ठा	इन्द्र	तीक्ष्ण, दारुण	03	कुंडल	कृषक
19	मूल	निर्ऋति	तीक्ष्ण, दारुण	11	सिहंपु.	क्रूर
20	पू.षा.	जल	उग्र, क्रूर	02	गजदंत	ब्राह्मण
21	उ.षा.	विश्वे	ध्रुव, स्थिर	02	मंच	क्षत्रिय
22	अभि.	ब्रह्मा	क्षिप्र, लघु	--	--	--
23	श्रवण	विष्णु	चर, चल	03	वामन	चांडाल
24	धनिष्ठा	वसु	चर, चल	04	मृदंग	कृषक
25	शतभिषा	वरुण	चर, चल	100	वृत्त	क्रूर
26	पू.भा.	अजच.	उग्र, क्रूर	02	मंच	ब्राह्मण
27	उ.भा.	अहिर्बु	ध्रुव, स्थिर	02	यमल	क्षत्रिय
28	रेवती	पूषा	मृदु, मैत्र	32	मृदंग	शूद्र

।।स्वप्न विचार।।

स्वप्न	फल	स्वप्न	फल	स्वप्न	फल	स्वप्न	फल	स्वप्न	फल
अग्नि उठाना	कष्ट	गुरु दर्शन	कार्यसफलता	दुग्धस्नान	धनलाभ	बारात दर्शन	चिन्ता	लौह दर्शन	स्वास्थहानि
अग्नि दर्शन	शुभकार्य	गुलाब दर्शन	मनोकामनपूर्ण	दुर्घटना दर्शन	रोगसम्भावना	बिच्छुदंश	कष्टभय	वर्षा दर्शन	हानि,चिन्ता
आग लगी दर्शन	दु:ख की प्राप्ति	घर जलना	लाभ	देवदर्शन	धनलाभ	भगिनी दर्शन	सौभाग्यवृद्धि	वाटिका दर्शन	सुखप्राप्ति
अजा दर्शन	धनलाभ	गृहनिर्माण	प्रसिद्धिप्राप्ति	देवस्थल दर्शन	सुखमयजीवन	भाषण श्रवण	वादविवाद	विकृतशरीर दर्शन	दु:खप्राप्ति
अर्थी दर्शन	सफलता	गौ दुग्धपान	धनलाभ	जुआं खेलना	धनहानि	भूकम्प दर्शन	सन्तानकष्ट	विदेशगमन	कार्यविरुद्ध
आकाश से गिरना	चिन्ता,मानहानि	ग्रहण दर्शन	रोग,चिन्ता	द्विचक्रचालन दर्शन	कार्यसिद्धि	भोजन को पचाना	रोग	विधवा दर्शन	हानि
बाजार का दर्शन	धनलाभ	चन्द्र दर्शन	बन्धन	धर्मशास्त्र श्रवण	धनप्राप्ति	मदिरापान	मृत्यु	विमान दर्शन	सौभाग्यसूचक
आम खाना	लाभ	चिता दर्शन	सफलता	दौड़ना	समस्या	मधुमक्खी दर्शन	शुभफल	विवाह	मृत्यु
आशीर्वाद ग्रहण	धनलाभ	छिपकली दर्शन	दुर्भाग्यसंकेत	धूपदर्शन	शत्रुनाश	मन्दिर दर्शन	धनलाभ	विषभक्षण	परेशानी
उत्तरदिग्गमन	गृहत्याग	जलपान	भाग्योदय	ध्वजदर्शन	धनलाभ	मयूर दर्शन	शोक	वृद्धस्त्री दर्शन	दु:खप्राप्ति
जूता पहनना	सम्मानप्राप्ति	जल में गिरना	चिन्ता	मगरमच्छ दर्शन	शत्रुकष्ट	मल्लयुद्ध दर्शन	मुकदमा	बैल दर्शन	धर्मकार्य
ऊँट का दर्शन	भय	जादूगर दर्शन	अशुभलक्षण	नदीदर्शन	आकांक्षापूर्ति	महात्मा दर्शन	धनप्राप्ति	बैल द्वारा मारना	हानि
ऊँट से गिरना	अवनति	टिकट ग्रहण	पदत्याग	नागदर्शन	लज्जित	मीनदर्शन	मङ्गलकार्य	वेद्य दर्शन	रोग
गर्मजलपान	अशुभ	डोली दर्शन	समस्यायुक्त	नृत्यदर्शन	मृत्यु	मिष्ठान्नखाना	संकट	शवदर्शन	सफलता
औषधि ग्रहण	स्वस्थ	चावल खाना	शुभसमाचार	निराश	सफलता	मुद्राप्राप्ति	रोजगार	शस्त्रदर्शन	युद्ध
कच्चाफल दर्शन	अशुभ	तपस्वी दर्शन	आत्मोन्नति	पकाफलदर्शन	शुभ	मुण्डन	मृत्यु	शस्त्र गिरना	पराजय
कन्या का दर्शन	तीर्थयात्रा	पान खाना	मिलाप	पदच्युतदर्शन	मृत्यु	मूषक दर्शन	दुर्भाग्यसूचक	शस्त्र उठाना	विजय
कपिल वस्त्रधारण	ख्याति	ताम्र दर्शन	यात्रादुर्घटना	पर्वदर्शन	शुभ	यज्ञदर्शन	सौभाग्यसूचक	शुकदर्शन	धनलाभ
कबूतर दर्शन	शुभसंदेश	तिल खाना	ऋण	पश्चिमदिग्गमन	बाधायुक्त	यमुना दर्शन	रोगाप्ति	श्रृंगार करना	अपमान
कमल दर्शन	धनप्राप्ति	तीर्थ स्नान	त्याग	पहरेदार दर्शन	चोरी	युवती दर्शन	नगदलाभ	सफेद कुत्ते पर बैठना	सुखसमृद्धिप्राप्ति
करतल दर्शन	प्रसन्नताप्राप्ति	तैलपान	मृत्यु	प्रसन्नता दर्शन	विफलता	रक्त दर्शन	उन्नति	शौचगमन	व्यय
कौआ दर्शन	अशुभ	त्रिशूल दर्शन	सफलताप्राप्ति	प्रसाद प्राप्ति	धनलाभ	रजक दर्शन	सफलता	समुद्र दर्शन	धनलाभ
कारागारगमन	बन्धनग्रस्त	दक्षिणदिग्गमन	रोग	पत्थर दर्शन	विपत्ति	रजत दर्शन	विश्वासघात	समाचार पढ़ना	सफलता
कुत्ता पालना	संकट	दधि दर्शन	सफलता	पितृदर्शन	धनलाभ	रथदर्शन	यात्रा	सर्प का डसना	धनलाभ
कोलाहल दर्शन	राजभय	दर्पण दर्शन	विचलित	पुष्पप्राप्ति	धनलाभ	रसोइघर में प्रवेश	मृत्यु	स्वर्गदर्शन	आयुपूर्ण
खड्ग धारण	उच्चपदप्राप्ति	अनार खाना	रोग	पूर्वदिग्गमन	विजय	राक्षस दर्शन	कष्टनिवृत्ति	सर्प खाना	विफलता
खटिया पर सोना	सौभाग्यसूचक	दाहसंस्कार दर्शन	दीर्घायु	फकीर दर्शन	शुभफलदायक	रुद्राक्ष दर्शन	कल्याण	सर्प मारना	शत्रुदमन
गङ्गा स्नान	सन्यास	दुग्ध दोहन	भारोत्थापन	फलप्राप्ति दर्शन	धनलाभ	रोगी दर्शन	दु:खनिवृत्ति	सीताफलदर्शन	सौभाग्यसूचक
हाथी दर्शन	व्यवसायवृद्धि	दुग्धपान	प्रतिष्ठा	बालक का रोना श्रवण	रोग,निराशा	रोटी खाना	रोग	सुवर्ण दर्शन	रोग,धनहानि

।। पुरुष जन्मकुण्डली में द्वादशभावस्थ ग्रहों के फल ।।

ग्रह	तनु १	धन २	भ्राता ३	सुख ४	पुत्र ५	शत्रु ६	स्त्री ७	मृत्यु ८	धर्म ९	कर्म १०	लाभ ११	व्यय १२
सूर्य	अङ्गपीड़ा	धननाश	निरोगी	दु:खी	सुतहानि	शत्रुनाश	स्त्रीदुष्टा	अल्पायु	दुष्टमति	शूर	धनी	दुष्टस्वभाव
चन्द्र	कान्तिसुख	सम्पत्तिवान्	कीर्तिमान्	सुखभोगी	धनी,पुत्रवान्	अल्पायु	सुधार्यावान्	योगी	धर्मात्मा	तेजयुक्त	धनी	कामी
मंगल	रक्तकोप	ऋणी	विक्रमी	दु:खी	पुत्रहीन	शत्रुनाश	स्त्रीनाश	शरीरपीड़ा	पापरत	तेजस्वी	धनी	पतितदार
बुध	सुखी	धनी,गुणी	अरिमर्दन	सुखी	अल्पपुत्र	रोगी	धर्मज्ञ	गुणी	सुखी	कीर्तिमान	धनी	दरिद्र
गुरु	विद्वान्	धनागम	पापी	सुखी	प्रतापी	कामी	सुधार्या	नीचस्व	धार्मिक	सम्पत्तिवान्	सुलाभ	खल
शुक्र	सुखी	धनी	पापी	सुखी	बुद्धिमान्	रोगी	कामी	नीच	तपस्वी	सम्पत्ति	सुमति	रोगी
शनि	दु:खी	धनहानि	पराक्रमी	दु:खी	पुत्रहीन	शत्रुजित्	स्त्रीकुलटा	नेत्ररोगी	दुष्टबुद्धि	पराक्रमी	धनवान्	दु:खी
राहु	रोगी	निर्धन	विक्रमी	मातृहानि	कुमति	सबल	स्त्रीरोगी	रोगी	दैन्ययुक्त	मानी	सुख्यात	पतित
केतु	सकाम	खल	शूर	दु:खी	मूर्ख	सबल	स्त्रीहानि	क्लेशयुक्त	पापी	पितृहीन	धनी	दुर्जन

।। स्त्री जन्मकुण्डली में भावस्थ ग्रहों के फल ।।

ग्रह	तनु १	धन २	भ्राता ३	सुख ४	पुत्र ५	शत्रु ६	स्त्री ७	मृत्यु ८	धर्म ९	कर्म १०	लाभ ११	व्यय १२
सूर्य	क्रोधनी	दरिद्रा	सुसुता	सपीड़ा	विपुत्रा	सुखिनी	दु:खार्ता	विधवा	धर्मज्ञा	सुकर्मा	सुलाभा	सरोगा
चन्द्र	अल्पायुषी	बहुधना	सुखिनी	सुभगा	सुपुत्रा	सरोगा	पतिप्रिया	रोगिणी	सुखिनी	धर्मज्ञा	गुणज्ञा	हीनांगी
मंगल	विधवा	बन्ध्या	विसहजा	सु:खार्ता	विपुत्रा	अरोगा	विधवा	नेत्ररोगणी	दु:खिनी	कुपुत्रा	सुलाभा	खला
बुध	सौभाग्या	धनाढ्या	पुत्रवती	सुगृहा	धीकान्तियुक्ता	सकोपा	पतिव्रता	कृतघ्ना	सुभोगा	सत्कर्मा	पतिव्रता	कृशाङ्गी
गुरु	सती	धनाढ्या	सुसहजा	सुखिनी	सुगुणा	सापदा	कीर्तियुक्ता	सरोगा	पुत्राढ्या	साधवी	सुपुत्रा	सुव्यया
शुक्र	ससुखा	सुभगा	धनाढ्या	सुखिनी	पुत्रवती	दरिद्रा	पतिप्रिया	विसुखा	धर्मरता	सधना	सुपुत्रा	सुव्यया
शनि	बन्ध्या	दु:खिनी	सुदक्षा	ह्रद्रोगा	विपुत्रा	गुणज्ञा	विधवा	दु:खनी	बन्ध्या	पापिनी	सुलाभा	मूढ़ा
राहु	पुत्रहीना	दरिद्रा	सवित्ता	रोगार्त्ता	विपुत्रा	सधना	दु:खिता	विधवा	बन्ध्या	दुष्कर्मा	नीरोगा	दुष्टा
केतु	दु:खिनी	दु:खार्ता	रोगणी	मातृहानि	अपुत्रा	धनयुता	विधवा	दु:खिनी	शोकयुक्ता	पापिनी	सुभगा	रोगिणी

।। गोचर में ग्रहों का द्वादशभावस्थ फल ।।

ग्रह	प्रथम	द्वितीय	तृतीय	चतुर्थ	पञ्चम्	षष्ठ	सप्तम्	अष्टम्	नवम्	दशम्	एकादश	द्वादश
सूर्य	स्थाननाश	भय	श्रीप्राप्ति	मानभंग	दैन्य	विजय	यात्रा	पीड़ा	सुकृतिनाश	सिद्धि	धनलाभ	द्रव्यनाश
चन्द्र	अन्नलाभ	धननाश	सुख	रोग	कार्यनाश	धनलाभ	स्त्रीलाभ	रोग	धर्मलाभ	सुख	धनलाभ	धननाश
मंगल	शत्रुभीति	धननाश	धनलाभ	शत्रुभय	धननाश	धनलाभ	द्रव्यनाश	शत्रुभय	शत्रुभय	शोक	धनलाभ	धननाश
बुध	बन्धन	धनलाभ	शत्रुभय	पशुलाभ	सुख	स्थानलाभ	पीड़ा	धनलाभ	पीड़ा	सुख	धनलाभ	धननाश
गुरु	भय	धननाश	क्लेश	धननाश	सुख	शोक	राजमान	पीड़ा	सुख	दैन्य	धनलाभ	पीड़ा
शुक्र	शत्रुनाश	धनलाभ	सुख	धनलाभ	पुत्रलाभ	शत्रुभय	शोक	धनलाभ	वस्त्रलाभ	दु:ख	धनलाभ	धननाश
शनि	भय	धननाश	ऐश्वर्य	शत्रुभय	पुत्रनाश	धनलाभ	दोष	पीड़ा	धर्मनाश	दौर्मनस्य	धनलाभ	धननाश
राहु	हानि	धननाश	धनलाभ	वैर	शोक	श्रीप्राप्ति	कलह	मृत्यु	दु:ख	वैर	सुख	शोक
केतु	रोग	वैर	सुख	भय	सुख	धनलाभ	कलह	रोग	पाप	शोक	कीर्ति	शत्रुभय

।। वर्ष कुण्डली में द्वादशभावस्थ ग्रहों के फल ।।

ग्रह	प्रथम	द्वितीय	तृतीय	चतुर्थ	पञ्चम्	षष्ठ	सप्तम्	अष्टम्	नवम्	दशम्	एकादश	द्वादश
सूर्य	त्रिदोषपीड़ा	कुटुम्बविरोध	भातृपीड़ा	कृषि,पशुहानि	पित्तप्रकोप	शत्रुनाश	स्त्रीकष्ट	भ्रातृकष्ट	भ्रातृपीड़ा	धनमानलाभ	धनी,विलासी	उद्विग्नता
चन्द्र	कफरोगी	कुटुम्ब पर प्रभाव	भ्रातृसुख,धनी	व्यापारलाभ	प्रबुद्धमित्र	वाद-विवाद	खांसी,वातरोग	मूत्ररोग	भाग्योदय	वैरीनाश,धनी	व्यापारलाभ	नेत्ररोग
मंगल	नेत्ररोगी	धनहानि	वाहनसुख	अग्निकष्ट,व्रण	सन्तानकष्ट	शत्रुनाश	स्त्रीरोग	शत्रुकष्ट	भाग्ययशवृद्धि	धनवृद्धि	राज्यधनलाभ	व्यय,व्याधि
बुध	स्त्रीसुखवृद्धि	वाहनलाभ	धनयशपुत्रसुख	भूमिलाभ	धनपुत्रलाभ	स्त्रीकष्ट	विलासी	कफ,ज्वर	धनपुत्रलाभ	पुत्रधनवृद्धि	धनयशवृद्धि	वैरीविवाद
गुरु	यशस्वी	धनलाभ	कीर्तिलाभ	वाहनसुख	सन्ततिसुख	शत्रुकष्ट,स्त्रीकष्ट	दाम्पत्यसुख	ज्वरवृद्धि	धनलाभ	राज्यलाभ	विजयलाभ	रोगी,शत्रुवृद्धि
शुक्र	यशस्वी	धनमानलाभ	सहोदरसुख	कृषिवाहनसुख	सन्तानवृद्धि	उदरविकार	स्त्रीसुख	शरीरकष्ट	धर्मशील	व्यापारी,धनी	सन्तानवृद्धि	नेत्र,चर्मरोग
शनि	वातरोगी	भ्रातृनाश	पराक्रमी	अग्निपीडा	पुत्रहानि	कीर्तिवृद्धि	स्त्रीकष्ट	ज्वरपीडा	भाग्योदय	कृषिहानि	कीर्तिवृद्धि	विशेषव्यय
राहु	स्त्रीकष्ट	बन्धुविवाद	धन-यशवृद्धि	वाहनकष्ट	बुद्धिनाश	शत्रुनाश	गुप्तरोग	मृत्युतुल्यकष्ट	धर्मवृद्धि	यशवृद्धि	शत्रुनाश	स्थानभ्रंश
केतु	चिन्ता,व्रण	परिवारक्लेश	यशवृद्धि	वाहनपीड़ा	कुबुद्धि	रोगनाश	विवाद	अरिष्टप्राप्ति	भाग्यनाश	अर्थप्राप्ति	विविधलाभ	दुष्टसंगति

।। ग्रहों के दान पदार्थ ।।												जपसंख्या	जपनीय मन्त्र	दानसमय	हवनसमिधा
सुर्य	माणिक	सुवर्ण	ताम्र	गेंहू	गुड़	घी	रक्तवस्त्र	केसर	रक्तपुष्प	मूंग,रक्तगाय	रक्तचन्दन	७०००	ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं स: सूर्याय नम:	उदय	अर्क
चन्द्र	मोती	सुवर्ण	रजत	चावल	मिसरी	दही	श्वेतवस्त्र	शंख	श्वेतपुष्प	कर्पूर,श्वेतबैल	श्वेतचन्दन	११०००	ॐ श्रां श्रीं श्रौं स: चन्द्राय नम:	सन्ध्या	पलाश
मंगल	मूंगा	सुवर्ण	ताम्र	मसूर	गुड़	घी	रक्तवस्त्र	केसर	रक्तकनेर	कस्तूरी,रक्तबैल	रक्तचन्दन	१००००	ॐ क्रां क्रीं क्रौं स: भौमाय नम:	घटी २ शेषदिन	खदिर
बुध	पन्ना	सुवर्ण	कांसी	मूंग	खांड	घी	हरावस्त्र	हाथीदांत	सर्वपुष्प	कर्पूर,शस्त्र	फल	१९०००	ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं स: बुधाय नम:	घटी ५ शेषदिन	अपामार्ग
गुरु	पुखराज	सुवर्ण	कांसी	दालचने	खांड	घी	पीतवस्त्र	हल्दी	पीतपुष्प	पुस्तक,घोड़ा	पीतफल	१९०००	ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं स: गुरवे नम:	सन्ध्या	अश्वत्थ
शुक्र	हीरा	सुवर्ण	रजत	चावल	मिसरी	दूध	श्वेतवस्त्र	सुगंध	श्वेतपुष्प	दधि,श्वेतघोड़ा	श्वेतचन्दन	१६०००	ॐ द्रां द्रीं द्रौं स: शुक्राय नम:	सूर्योदय	उदुम्बर
शनि	नीलम	सुवर्ण	लोहा	उड़द	कुल्थी	तेल	कृष्णवस्त्र	कस्तूरी	कृष्णपुष्प	कृष्णांग भैस	उपानह	२३०००	ॐ प्रां प्रीं प्रौं स: शनये नम:	मध्याह्न	शमी
राहु	गोमेद	सुवर्ण	सीसा	तिल	सरसों	तिल	नीलवस्त्र	खड्ग	कृष्णपुष्प	कंबल,घोड़ा	शूर्प	१८०००	ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं स: राहवे नम:	रात्रि	दूर्वा
केतु	लहसुनिया	सुवर्ण	लोहा	तिल	सप्तधान्य	तेल	धूम्रवस्त्र	नारियल	धूम्रपुष्प	कंबल,बकरा	शस्त्र	१७०००	ॐ स्रां स्रीं स्रौं स: केतवे नम:	रात्रि	कुशा

ग्रहों के यजुर्वेदीय शान्ति मन्त्र-

सूर्य- ॐ आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यञ्च हिरण्ययेन सविता रथेनादेवो याति भुवनानि पश्यन्।। **चन्द्र -** ॐ इमं देवाऽअसपत्न ॅं सुवध्वं महते क्षत्राय महते ज्यैष्ठाय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय। इममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विशऽएष वोऽमी राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणाना ॅं राजा।। **मङ्गल -** ॐ अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम्। अपा ॅं रेता ॅं सि जिन्वति।। **बुधस्य-** ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि त्वमिष्टापूर्तेसिॅं सृजेथामयञ्च। अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत।। **गुरु -** ॐ बृहस्पते अतियदर्यो अर्हाद्द्युमद्विभाति क्रतमज्जनेषु। यद्दीदयच्छवसऽऋत प्रजात तदस्मासु द्रविणन्धेहि चित्रम्।। **शुक्र -** ॐ अन्नात्परिश्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिबत्क्षत्रं पयः सोमं प्रजापतिः। ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपान ॅं शुक्रमन्धस इन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोऽमृतं मधु।। **शनि-** ॐ शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शं योरभि स्रवन्तु नः।। **राहु-** ॐ कया नश्चित्र आ भुवदूती सदावृधः सखा। कया शचिष्ठया वृता।। केतु- ॐ केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशो मर्या अपेशसे। समुषद्भिरजायथा।।

ग्रहों के शान्त्यर्थ बीज मन्त्र-

सूर्य- ॐ घृणिः सूर्याय नमः। **चन्द्र-** ॐ सों सोमाय नमः। **मङ्गल-** ॐ अं अङ्गारकाय नमः। **बुध-** ॐ बुं बुधाय नमः। **गुरु-** ॐ बृं बृहस्पतये नमः। **शुक्र-** ॐ शुं शुक्राय नमः। **शनि-** ॐ शं शनैश्चराय नमः। **राहु-** ॐ रां राहवे नमः। **केतु-** ॐ कें केतवे नमः।

।। पुरुषसूक्तम् (विष्णुसूक्तम्) ।।

ॐसहस्रशीर्षापुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्। सभूमिॅंसर्वतस्पृत्त्वात्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम् ।।१।। पुरुषऽएवेदॅंसर्व्वं यद्भूतंय्यच्चभाव्यम्। उतामृतत्त्वस्ये शानो यदन्नेनातिरोहति।।२।। एतावानस्यमहिमातो ज्ज्यायाँश्च पूरुषः। पादोऽस्यविश्वाभूतानि त्रिपादस्यामृतन्दिवि।।३।। त्रिपादूर्ध्वऽउदैत्पुरुषः पादोस्येहाभवत्पुनः। ततोविष्वङ्व्यक्रामत्साशनानशनेऽअभि।।४।। ततोविराडजायत विराजोऽअधिपूरुषः। स जातोऽअत्यरिच्च्यतपश्चाद्भूमिमथोपुरः।।५।। तस्मा द्यज्ञात्सर्व्वहुतः सम्भृतम्पृषदाज्ज्यम्। पशूँस्ताँश्चक्रेव्वायव्व्यानारण्ण्या ग्ग्राम्म्यश्च ये।।६।। तस्माद्यज्ञात्सर्व्वहुतऽऋचः सामानिजज्ञिरे। छन्दाॅंसि जज्ञिरेतस्माद्यजुस्तस्मा-दजायत।।७।। तस्मादश्वाऽअजायन्त ये के चोभयादतः। गावोहजज्ञिरे-तस्मात्तस्माज्जाताऽअजावयः।।८।। तं यज्ञम्बर्हिषिप्प्रौक्षन्पुरुषञ्जातमग्ग्रतः। तेनदेवाऽअयजन्तसाद्ध्याऽऋषयश्चये।।९।। यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधाव्व्यकल्प्यन्। मुखङ्किमस्यासीत्किम्बाहूकिमूरूपादाऽउच्च्येते।।१०।। ब्राह्मणोस्य मुखमासीद्बाहूराजन्न्यः कृतः। ऊरूतदस्ययद्वैश्यःपद्भ्याॅंशूद्रोऽअजायत।।११।। चन्द्रमामनसो जातश्चक्षोः सूर्य्योऽअजायत।श्रोत्राद्वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत।।१२।। नाभ्याऽआसीदन्तरिक्षॅंशीर्ष्णोद्यौः समवर्त्तत। पद्भ्याम्भूमिर्द्दिशः श्रोत्रात्तथालोकाँ२ अकल्प्पयन्।।१३।। यत्पुरुषेणहविषादेवायज्ञमतन्न्वत। व्वसन्तोऽस्या सीदाज्ज्यङ्ग्रीष्म्मऽइध्मः शरद्धविः।।१४।। सप्तास्यासन्परिधयस्त्रिः सप्तसमिधः कृताः। देवा यद्यज्ञन्तन्वानाऽअबध्नन्पुरुषम्पशुम्।।१५।। यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानिधर्म्माणिप्प्रथमान्न्यासन्। तेह नाकम्महिमानः सचन्त यत्र पूर्व्वे साद्ध्याः सन्ति देवाः।।१६।।

।। रुद्रसूक्तम् ।।

ॐ नमस्तेरुद्रमन्न्यवऽउतो तऽइषवेनमः बाहुब्भ्यामुत ते नमः।।१।। या तेरुद्र शिवातनूरघोरापापकाशिनी। तयानस्तन्न्वा शन्तमयागिरिशन्ताभिचाकशीहि।।२।। यामिषुङ्गिरिशन्तहस्ते बिभर्ष्यस्तवे। शिवाङ्गिरित्रताङ्कुरु मा हिॅंसीः पुरुषञ्जगत्।।३।। शिवेन व्वचसा त्त्वा गिरिशाच्छाव्वदामसि। यथा नः सर्व्वमिज्जगदयक्ष्मॅंसुमनाऽअसत्।।४।। अद्ध्यवोचदधिवक्ता प्प्रथमोदैव्व्यो भिषक्। अहींश्चसर्व्वाञ्जम्भयन्त्सर्व्वाश्चयातुधान्यो धराचीः परासुव।।५।। असौयस्ताम्म्रोऽअरुणऽउतबब्भ्रुः सुमङ्गलः। ये चैनॅंरुद्राऽअभितोदिक्षुश्रिताः सहस्रशोवैषाॅंहेडईमहे।।६।। असौ योऽवसर्प्पतिनीलग्ग्रीवो व्विलोहितः। उतैनङ्गोपाऽअदृश्रन्नदृश्रन्नुदहार्य्यः सदृष्टोमृडयातिनः।।७।। नमोऽस्तु नीलग्ग्रीवायसहस्राक्षाय मीढुषे। अथोयेऽअस्यसत्त्वानोऽहन्तेब्भ्योऽकरन्नमः।।८।। प्प्रमुञ्चधन्न्वनस्त्वमुभयो रात्न्योज्ज्याम्। याश्चतेहस्तऽइषवः परा ताभगवोव्वप।।९।। विज्ज्यन्धनुः कपर्दिनो व्विशल्यो बाणवाँ२ऽउत। अनेशन्नस्ययाऽइषवऽआभुरस्यनिषङ्गधिः।।१०।। या तेहेतिर्म्मीढुष्टम हस्ते बभूव ते धनुः। तयास्म्मान्न्विश्वतस्त्वमयक्ष्म्मयापरिभुज।।११।। परि ते धन्न्वनो हेतिरस्म्मन्व्वृणक्तुविश्वतः। अथो यऽइषुधिस्तवारेऽअस्म्मन्निधेहितम्। अवतत्यधनुष्टवॅं सहस्त्राक्षशतेषुधे।। निशीर्य्यशल्ल्यानाम्मुखा शिवो नः सुमना भव ।।१३।। नमस्तऽआयुधायानातताय धृष्ण्णवे। उभाब्भ्यामुततेनमोबाहुब्भ्यान्तवधन्न्वने।।१४।। मानोमहान्तमुतमानोऽर्भ्भ कम्मानऽउक्षन्तमुत मा नऽउक्षितम्। मानोव्वधीः पितरम्मोतमातरम्मानः प्प्रियास्तन्न्वोरुद्ररीरिषः।१५।। मानस्तोकेतनये मा नऽआयुषि मा नो गोषु मा नोऽअश्वेषुरीरिषः। मानोव्वीरान्रुद्रभामिनोव्वधीर्ह विष्म्मन्तः सदमित्त्वा हवामहे।।१६।।

।। ब्रह्मसूक्तम् ।।

ॐ तेजोसि शुक्क्रममृतमायुष्म्मा ऽआयुमे पाहि। देवस्य त्वा सवितुःप्प्रसवेऽश्विनो व्वाहुब्भ्याम्पूष्णो हस्ताब्भ्यामाददे।।१।। इमामगृब्भ्णन्नशनामृतस्य पूर्व्वऽआयुषि व्विदथेषु कव्व्या। सा नो ऽअस्मिन्त्सुतऽ आ वभूव ऽऋतस्य सामन्त्सरमारपन्ती।।२।। अभिधा ऽअसि भुवनमसि यन्तासि धर्ता। स त्वमग्निं व्वैश्वानरॅं स प्प्रथसङ्गच्छ स्वाहा कृतः।।३।। स्वगात्वां देवब्भ्यः प्प्रजापतये ब्रह्मन्नश्वम्भन्त्स्यामि देवेब्भ्यः प्रजापतये तेन राद्ध्यासम्। तम्वधानदेवेब्भ्यः प्प्रजापतये तेन राध्नुहि।।४।। प्रजापतये त्वा जुष्टम्प्प्रोक्षामीन्द्राग्निब्भ्यान्त्वा जुष्टम्प्रोक्षामि व्वायवे त्वा जुष्टमप्रोक्षामि विश्वेब्भ्यस्त्वा देवेभ्यो जुष्टम्प्रोक्षामि सर्वेब्भ्यस्त्वा देवेब्भ्यो जुष्टाम्प्रोक्षामि। योऽअर्व्वन्तञ्जिघाॅंसति तमब्भ्यमीतिव्वरुणः। परो मर्त्तः परः श्वा।।५।। अग्नये स्वाहा सोमाय स्वाहा पाम्मोदाय स्वाहा सवित्रे स्वाहा व्वायवे स्वाहा व्विष्णवे स्वाहेन्द्राय स्वाहा बृहस्प्पतये स्वाहा मित्राय स्वाहा वरुणाय स्वाहा।।६।। ॐ हिंकाराय स्वाहा हिंकृताय स्वाहा क्रन्दते स्वाहा वक्क्रन्दाय स्वाहा प्प्रोथते स्वाहा प्प्रप्प्रोथाय स्वाहा गन्धाय स्वाहा ग्घ्राताय स्वाहा निविट्ष्ठाय स्वाहोपविष्ट्टाय स्वाहा सन्दिताय स्वाहा वल्गते स्वाहा सीनाय स्वाहा शयानाय स्वाहा स्वपते स्वाहा जाग्ग्रते स्वाहा कूजते स्वाहा प्प्रबुद्धाय स्वाहा व्विज्रम्भमाणाय स्वाहा विचृत्ताय स्वाहा सॅंहानाय स्वाहो पस्त्थिताय स्वाहायनाय स्वाहा प्प्रायणाय स्वाहा।।७।। ॐ यते स्वाहा धावते स्वाहोद्द्रावाय स्वाहोद्द्रुताय स्वाहा शूकाराय स्वाहा शूकृताय स्वाहा निषण्णाय स्वाहोत्थिताय स्वाहा

जवाय स्वाहा बलायविवर्तमानाय स्वाहा विवृत्ताय स्वाहा बिधून्नवानाय स्वाहा व्विधूताय स्वाहा शुश्श्रुषमाणाय स्वाहा शृण्वते स्वहेक्षमाणाय स्वाहेक्षिताय स्वाहा व्वीक्षिताय स्वाहा निमेषाय स्वाहा यदत्ति तस्म्मै स्वाहा यत्पिबति तस्म्मै स्वाहा यन्मूत्रङ्करोति तस्म्मै स्वाहा कुर्व्वते स्वाहा कृत्ताय स्वाहा।।८।। ॐ तत्सवितुर्व्वरेण्यम्भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्।।९।। ॐ हिरण्यपाणिमूतये सवितारमुपह्वये। सचेत्ता देवता पदम्।।१०।। ॐ देवस्य चेततो महीम्प्रसबितुर्हवामहे। सुमतिꣳ सत्यराधसम्।।११।। ॐ सुष्टुतिꣳ सुमती वृधोरातिꣳ सवितुरीमहे। प्रदेवाय मतीविदे।।१२।। ॐ रातिꣳ सत्पतिम्महे सवितारमुपह्वये। आसवन्देववीतये।।१३।। ॐ देवस्य सबितुर्म्मतिमासवं व्विश्श्वदेव्व्यम्। धिया भगम्मनामहे।।१४।। ॐ अग्निꣳ स्तोमेन बोधाय समिधानो ऽअमर्त्यम्। हव्व्या देवेषु नो दधत्।।१५।। ॐ सह व्यवाडमर्त्य ऽउशिगदूतश्च्च नो हितः। अग्निर्द्धिया समृण्वति।।१६।। ॐ अग्निन्दूतम्पुरोदधे हव्यवाहमुपब्ब्रुवे। देवाँ२। ऽआसादयादिह।।१७।। ॐ अजीजनो हि पवमानसूर्य्यं व्विधारेशक्क्मना पयः। गोजीरया रꣳहमाणः पुरन्ध्या।।१८।। ॐ व्विभूर्म्मात्रा प्प्रभूः पित्रा श्श्वोसि हयोस्यत्योसि मयोस्यर्व्वासि सप्तिरसि व्वाज्ज्यसि व्वृषासि नृमणा ऽअसि। यषुर्न्नामासि शिशुर्न्नामास्यादित्यानाम्पत्वान्निवहि देवा ऽआशापाला ऽएतन्देवेब्भ्योश्श्च म्मेधाय प्प्रोक्षितःꣳ रक्षते हरन्ति रिहरमता मिह धृतिरिह स्वधृतिः स्वाहा।।१९।। ॐ काय स्वाहा कस्म्मै स्वाहा कतमस्म्मै स्वाहा स्वाहा धिमाधीताय स्वाहा मनः प्प्रजापतये स्वाहा चित्तं व्विज्ञाता यादित्यै स्वाहादित्यै मह्यै स्वाहादित्यै समृडीकायै स्वाहा सरस्वत्यै स्वाहा सरस्वत्यै पावकायै स्वाहा सरस्वत्यै वृहत्यै स्वाहा पूष्णे स्वाहा पूष्णे प्प्रपथ्याय स्वाहा पूष्णे न रन्धिषाय स्वाहा त्वष्ट्टे स्वाहा त्वेष्ट्रे पुरुरूपाय स्वाहा विष्णवे स्वाहा व्विष्णवे निभूयपाय स्वाहा विष्णवे शिपिविष्टाय स्वाहा।।२०।। ॐ विश्श्वो देवस्य नेतुर्म्मर्तोव्वुरीत् सक्ख्यम्। व्विश्वो राय ऽइषुदद्ध्यति द्युम्नं व्वृणीत पुष्ष्यसे स्वाहा।।२१।।ॐ आब्रह्मन्ब्राह्मणो ब्रह्म वर्च्चसी जायतामा राष्ट्रे राजन्यः शूर ऽइषुव्व्योतिव्याधी महारथो जायतान्दोग्ग्ध्री धेनुर्व्वोढानड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्य्योषां जिष्ष्णू रथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य व्वीरो जायान्निकामे निकामे नः पर्ज्जन्न्यो व्वर्षतु फलवत्यो न ऽओषधयः पच्च्यन्तां य्योक्षेमो नः कल्प्पताम्।।२२।। प्राणाय स्वाहा पानाय स्वाहा व्यानाय स्वाहा चक्षुषे स्वाहा श्श्रोत्राय स्वाहा व्वाचे स्वाहा मनसे स्वाहा।।२३।। ॐ प्राच्यै दिशे स्वाहार्व्वाच्च्यै दिशे स्वाहा दक्षिणायै दिशे स्वाहार्व्वाच्च्यै दिशे स्वाहा प्प्रतीच्च्यै दिशे स्वाहार्व्वाच्च्यै दिशे स्वाहोदीच्चै दिशे स्वाहावाच्च्यै दिशे स्वाहा स्वाहोद्र्ध्वयै दिशे स्वाहार्व्वाच्च्यै दिशे स्वाहा वाच्च्यै दिशे स्वाहाव्वाच्च्यै दिशे स्वाहा।।२४।। ॐ अद्भ्यः स्वाहा व्वाब्भ्यः स्वाहोदकाय स्वाहा तिष्ठन्तीब्भ्यः स्वाहा स्रवन्तीब्भ्यः स्वाहा स्यन्दमानाब्भ्यः स्वाहा कूप्याब्भ्यः स्वाहा सूद्याब्भ्यः स्वाहा धार्य्याब्भ्यः स्वाहा र्ण्णवाय स्वाहा समुद्र्द्रा स्वाहा सरिराय स्वाहा।।२५।। व्वाताय स्वाहा धूमाय स्वाहाव्भ्राय स्वाहा मेघाय स्वाहा व्विद्योतमानाय स्वाहा स्तनयते स्वाहाबस्फूर्ज्जते स्वाहाव्वर्षते स्वाहा ववर्षते स्वाहोग्ग्रं व्वर्षते स्वाहा शीग्घ्रं व्वर्षते स्वाहोद्गृह्णते स्वाहोद्ग्रहीताय स्वाहा प्प्रष्णते स्वाहा शीकायते स्वाहा प्प्रुष्ष्वाब्भ्यः स्वाहा हादनीव्भ्यः स्वाहा नीहाराय स्वाहा।।२६।। ॐ अग्नये स्वाहा सोमाय स्वाहेन्द्राय स्वाहा पृथिव्व्यै स्वाहान्तरिक्षाय स्वाहा दिग्ग्व्भ्यः स्वाहाशाब्भ्यः स्वाहोर्व्व्यै दिशे स्वाहार्व्वाच्च्यैः दिशे स्वाहा।।२७।। ॐ नक्षत्रेब्भ्यः स्वाहा नक्षत्रियेव्भ्यः स्वाहाहोरात्त्रेव्भ्यः स्वाहार्द्धमासेव्भ्यः स्वाहा मासेव्भ्यः स्वाहा ऽऋतुव्भ्यः स्वाहार्तवेव्भ्यः स्वाहा संव्वत्सराय स्वाहा द्यावा पृथिवव्भ्याꣳ स्वाहा चन्द्राय स्वाहा सूर्य्याय स्वाहा रश्मिव्भ्य स्वाहा व्वसवव्भ्यः स्वाहा रुद्र्द्रेव्भ्यः स्वाहादित्येव्भ्यः स्वाहा मरुद्भ्यः स्वाहा व्विश्श्वेव्भ्यो देवेव्भ्यः स्वाहा मूलेव्भ्यः स्वाहा शाखाव्भ्यः स्वाहा व्वनस्प्पतिब्भ्यः स्वाहा पुष्पेव्भ्यः स्वाहा फलेब्भ्यः स्वाहौषधीव्भ्यः स्वाहा ।।२८।। ॐ पृथिव्व्यैः स्वाहान्तरिक्षाय स्वाहा दिवे स्वाहा सूर्य्याय स्वाहा चन्द्राय स्वाहा नक्षत्रेव्भ्यः स्वाहाद्भ्यः स्वाहाौषधीव्भ्यः स्वाहा व्वनस्पातिव्भ्यः स्वाहा परिप्लेव्भ्यः स्वाहाचराचरेव्भ्यः स्वाहा सरीसृपेव्भ्यः स्वाहा।।२९।।ॐ असवे स्वाहा व्वसवे स्वाहा व्विभुवे स्वाहा विवस्वते स्वाहा गणश्रिये स्वाहा गणपतये स्वाहाभिभुवे स्वाहाधिपतये स्वाहा शूषाय स्वाहा सः सर्प्पाय स्वाहा चन्द्राय स्वाहा ज्ज्योतिषे स्वाहा मलिम्म्लुचाय स्वाहा दिवापतय ते स्वाहा।।३०।। ॐ मधवे स्वाहा माधवाय स्वाहा शुक्राय स्वाहा शुचये स्वाहा नभसे स्वाहा नभस्याय स्वाहोषाय स्वाहोर्ज्जाय स्वाहा सहसे स्वाहा सहस्याय स्वाहा तपसे स्वाहा तपस्याय स्वाहाꣳहसस्पतय स्वाहा।।३१।। ॐ व्वाजाय स्वाहा प्प्रसवाय स्वाहा पिजाय स्वाहा क्रतवे स्वाहा स्वः स्वाहा मूर्ध्वो स्वाहा व्व्यश्नु विने स्वाहान्त्याय स्वाहान्त्याय भौवनाय स्वाहा भुवनस्य पतये स्वाहाधिपतये स्वाहा प्प्रजापतये स्वाहा।।३२।। आयुर्य्यज्ञेन कल्प्पताꣳ स्वाहा प्प्राणो यज्ञेन कल्प्पताꣳ स्वाहापानो यज्ञेन कल्प्पताꣳ स्वाहाव्व्यानो यज्ञेन कल्प्पताꣳ स्वाहोदाने यज्ञेन कल्प्पताꣳ। स्वाहा समानो यज्ञेन कल्प्पताꣳ स्वाहा चक्षुर्य्यज्ञेन कल्प्पताꣳ स्वाहा श्रोत्रं य्यज्ञेन कल्प्पताꣳ स्वाहा व्वाग्यज्ञेन कल्प्पताꣳ स्वाहा मनो यज्ञेन कल्प्पताꣳ स्वाहात्कमा यज्ञेन कल्प्पताꣳ स्वाहा ब्रह्मा यज्ञेन कल्प्पताꣳ स्वाहा ज्योतिर्य्यज्ञेन कल्प्पताꣳ स्वाहा स्वर्य्यज्ञेन कल्प्पताꣳ स्वाहा पृष्ठं य्यज्ञेन कल्प्पताꣳ स्वाहा यज्ञो यज्ञेन कल्प्पताꣳस्वाहा।।३३।। ॐ एक स्म्मै स्वाहा द्वाब्भ्याꣳ स्वाहा शताय स्वाहैकशताय स्वाहा व्व्युष्टयै स्वाहा स्वर्ग्गाय स्वाहा।।३४।।

।। श्रीसूक्तम् ।।

ॐहिरण्य वर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्रजाम्। चन्द्रां हिरण्यमयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आ वह।। तां म आ वह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्। यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम्।। अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनाद-प्रमोदिनीम्। श्रियं देवीमुपह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम्।। कां सोस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम्। पद्मेस्थितां पद्मवर्णां तामिहोपह्वये श्रियम्।। चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम्। तां पद्मिनेमीं शरणं प्रपद्ये अलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणे।। आदित्यवर्णे तपसोऽधिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः। तस्य फलानि तपसानुदन्तु या अन्तरायाश्च बाह्या अलक्ष्मीः।। उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह। प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे।। क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम्। अभूतिमसमृद्धिं च सर्वां निर्णुद मे गृहात्।। गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्। ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्।। मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि। पशूनां रुपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः।। कर्दमेन प्रजाभूता मयि सम्भव कर्दम। श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम्।। आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे। नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले।। आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिङ्गलां पद्ममालिनीम्।चन्द्रां हिरण्यमयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह।। आर्द्रां यः करणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम्। सूर्यां हिरण्यमयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आ वह।। तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्। यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावो दास्योऽश्वान् विन्देयं पुरुषानहम्।। यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम्। सूक्तं पञ्चदशर्चं च श्रीकामः सततं जपेत्।।

।। यमसूक्तम् ।।

ॐ तदेवाग्निस्तदादित्यस्तद्वायुस्तदु चन्द्रमाः। तदेव शुक्रन्तद्ब्रह्म ता ऽआपः स प्प्रजापतिः।।१।। ॐ सर्वे निमेषा जज्ञिरे व्विद्युतः पुरुषादधि। नैनमूर्द्धन्नतिर्य्यञ्चन्नमद्ध्ये परिजग्ग्रभत्।।२।। ॐ न तस्स्य प्प्रतिमा ऽअस्ति यस्य नाम महद्यशः। हिरण्यगर्ब्भ ऽइत्येष मा मा हिꣳसीदित्येषा यस्मान्न जात ऽइत्येषः।।३।। ॐ एषो ह देवः प्प्रदिशो नु सर्व्वाः पूर्वो ह जातः स ऽउ गर्ब्भेऽअन्तः। स ऽएव जातः स जनिष्यमाणः प्प्रत्यङ्जनास्तिष्ठति सर्व्वतो मुखः।।४।। यस्म्माज्जातन्न पुरा किञ्च नैव य ऽआबभूव भुवनानि व्विश्श्वा। प्रजापतिः प्प्रजया सꣳ रगणस्त्रीणि ज्ज्योतीꣳषि सचते सषोडशी।।५।। येन द्यौरुग्ग्रा पृथिवी च दृढा येन स्स्वस्तभितं य्येन नाकः। यो ऽअन्तरिक्षे रजसो व्विमानः कस्म्मै देवाय हविषा व्विधेम।।६।। यङ्क्रन्दसी ऽअवसा तस्तभाने ऽअव्भ्यैक्षेताम्मनसा रेजमाने। यत्राधिसूर ऽउदितो व्विभाति कस्मै देवाय हविषा व्विधेम। आपो ह यद्वृहतीर्य्याश्चिदापः।।७।। व्वेनस्तत्पश्यन्निहितङ्गुहा सद्यत्र व्विश्श्वम्भवत्येकनीडम्। तस्मिन्निदꣳ सञ्चव्विवैति सर्वꣳ स ऽओतः प्प्रोतश्च व्विभूः प्प्रजासु।।८।। प्रतद्वोचेदमृतन्नु व्विद्वान्नगन्धर्व्वो धाम व्विभृतङ्गुहा सत्। त्रीणि पदानि निहिता गुहास्स्य यस्तानि व्वेद स पितुः पिता सत् ।९।। स नो बन्धुज्जर्जनिता स विधाता धामानि वेद भुवनानि व्विश्वा।।यत्र देवा ऽअमृतमानशानास्तृतीये धामन्नद्ध्येरयन्त।।१०।। परित्य भूतानि परीत्य लोकान्नपरीत्य सर्वाः प्प्रदिशो दिशश्च। उपस्त्थाय प्प्रथमजामृतस्यात्क्मनात्क्मानमभि संव्विवेश।।११।। परिद्यावापृथिवी सद्य ऽइत्वा परि लोकान्परि दिशः परिस्स्वः। ऋतस्य तन्तुं व्वितत्तं व्विचृत्यतदपश्यत्तदमवत्तदासीत्।।१२।। सदसस्प्पतिमद्भुतम्प्रियमिन्द्रस्य काम्म्यम्। सनिम्मेधा मयासिषꣳ स्वाहा।।१३।। याम्मेधान्देवगणाः पितरश्चोपासते। तया मामद्य मेधयाग्ने मेधाविनङ्कुरः स्वाहा।।१४।। मेधाम्मे व्वरुणो ददातु मेधामग्निः प्प्रजापतिः। मेधामिन्द्रश्श्च व्वायुश्च मेधान्धाता ददातु मे स्स्वाहा।।१५।। इदम्मे ब्ब्रह्म च क्षत्रञ्चोभे श्श्रियमश्नुताम्। मयि देवा दधतु श्श्रियमुत्तमां त्तस्यै ते स्स्वाहा।।१६।।

।। प्रेतसूक्तम् ।।

ॐ अपेतो यन्तु पणयोसुम्म्ना देवपीयवः। अस्य लोक्कः सुतावतः द्युभिरहोभिरक्तुभि व्व्यक्तं य्यमो ददात्ववसानमस्म्यै।।१।। सविता ते शरीरेब्भ्यः पृथिव्व्या ल्लोकमिच्छतु। तस्म्मै युज्ज्यन्तामु स्त्रियाः।।२।। व्वायुः पुनातु सविता पुनात्वग्नेब्भ्राजसा सूर्य्यस्य व्वर्च्चसा। व्विमुच्च्यन्तामु स्त्रियाः।।३।। अश्श्वत्थेवो निषदनम्पर्ण्णेवो व्वसतिष्कृता। गोभाज ऽइत्किलासथ यत्सनवथ पूरुषम्।।४।। सविता ते शरीराणि मातुरुपस्त्थ ऽआवपतु। तस्म्मै पृथिवि शम्भव।।५।। प्रजापतौ त्वा देवतायामुपोदके लोके निदधाम्म्यसौ। अप नः शोशुचदघम्।।६।। परम्मृत्यो ऽअनुपरे हि पन्थाँ य्यस्ते ऽअन्न्य ऽइतरो देवयानात्। चक्षुष्म्मते श्शृण्वते ते ब्ब्रवीमि मा नः प्प्रजाꣳरीरिषो मोत व्वीरान्।।७।। शं व्वातः शꣳ हिते घृणिः शन्ते भवन्त्विष्टकाः। शन्ते भवन्त्वग्नयः पार्थिवासो मा त्वाभिशूशुचन्।।८।। कल्प्पन्तान्ते दिशस्तुब्भ्यमापः शिवतमास्तुब्भ्यम्भवन्तु सिन्धवः। अन्तरिक्षꣳ शिवन्तुब्भ्यङ्कल्प्पन्तान्ते दिशः सर्वाः।।९।। अश्म्मन्न्वतीरीयिते सꣳ रभद्ध्वमुत्तिष्ट्टतप्प्रतरता सखायः। अत्राजहीमोशिवाये असिञ्छवान्व्वयमुत्तरे माभिवाजान्।।१०।। अपाघमपकिल्व्विषमपकृत्यामपपोरपः। अपामार्गत्वमस्म्मदपदुः ष्वप्न्न्यꣳ सुव।।११।। सुमित्त्रिया न ऽआप ऽओषधयः सन्तु। दुर्म्मित्रियास्तम्मै सन्तु योस्म्मान्द्वेष्टि यञ्च व्वयन्द्विष्म्मः।।१२।। अनड्वाहमन्नवारभामहे सौरभेयꣳ स्वस्तये। स न ऽइन्द्र ऽइव

देवेभ्यो वह्निः सन्तारणो भव।।१३।। उद्वयन्तमसस्परि स्वः पश्यन्त ऽउत्तरम्। देवन्देवत्रा सूर्य्यमगन्म ज्योतिरुत्तमम्।।१४।। इमञ्जीवेभ्यः परिधिन्दधामि मैषान्नुगादपरो ऽअर्त्थमेतम्। शतञ्जीवन्तु शरदः पुरूचीरन्तर्म्मृत्युन्दधताम्पर्व्वतेन।।१५।। अग्न ऽआयूꣳषि पवस ऽआसुवोर्ज्जमिषञ्च नः। आरेबाधस्वदुच्छुनाम्।।१६।। आयुष्मानग्ने हविषा वृधानो घृतप्रतीको घृतम्प्रीतको घृतयोनिरेधि। घृतम्पीत्वा मधु चारुगव्यम्पितेव पुत्रमभि रक्षतादिमान्त्थ्यस्वाहा।।१७।। परीमे गामनेषत पर्य्यग्निमहृषत्। देवेष्क्कृतश्रवः क ऽइमाँ२। ऽआदधर्षति।।१८।। कव्यादमग्निम्प्रहिणोमि दूरं य्यमराज्यङ्गच्छतु रिप्रवाहः। इहैवायमितरो जातवेदा देवेभ्यो हव्यं व्वहतु प्रजानन्।।१९।। व्वहव्वपाञ्जातवेदः प्पितृभ्यो यत्रैनान्वेत्थ निहितान्पराके। मेदसः कुल्ल्या ऽउपतान्त्थ्स्रवन्तु सत्या ऽएषामाशिषः सन्नमन्ताꣳ स्वाहा।।२०।। स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरानिवेशनी। यच्छानः शर्म्म सप्रथाः। अप नः शोशुचदघम्।।२१।। अस्मात्वमधि जातोसि त्वदयञ्जायताम्पुनः। असौ स्वर्गाय लोकाय स्वाहा।।२२।।

।। पितृ-सूक्तम् ।।

उदीरताम् अवर उत्परास उन्मध्यमाः पितरः सोम्यासः। असुम् यऽ ईयुर-वृका ऋतज्ञास्ते नो ऽवन्तु पितरो हवेषु।। अंगिरसो नः पितरो नवग्वा अथर्वनो भृगवः सोम्यासः। तेषां वयम् सुमतो यज्ञियानम् अपि भद्रे सौमनसे स्याम्।। ये नः पूर्वे पितरः सोम्यासो ऽनूहिरे सोमपीथं वसिष्ठाः। तेभिर यमः सरराणो हवींष्य उशन्न उशद्भिः प्रतिकामम् अत्तु।। त्वं सोम प्र चिकितो मनीषा त्वं रजिष्ठम् अनु नेषि पंथाम्। तव प्रणीती पितरो न देवेषु रत्नम् अभजन्त धीराः।। त्वया हि नः पितरः सोम पूर्वे कर्माणि चक्रुः पवमान धीराः। वन्वन् अवातःपरिधींन् ऽरपोर्णु वीरेभिः अश्वैः मघवा भवा नः।। त्वं सोम पितृभिः संविदानो ऽनु द्यावा-पृथवीऽ आततन्थ। तस्मै तऽ इन्दो हविषा विधेम वयं स्याम पतयो रयीणाम्।। बर्हिषदः पितरः ऊत्य-वर्गिमा वो हव्या चकृमा जुषध्वम्। तऽ आगत अवसा शन्तमे नाथा नः शंयोर ऽरपो दधात।। आहं पितृन्त् सुविदत्रान् ऽअवित्सि नपातं च विक्रमणं च विष्णोः। बर्हिषदो ये स्वधया सुतस्य भजन्त पित्वः तऽ इहागमिष्ठाः।। उपहूताः पितरः सोम्यासो बर्हिष्येषु निधिषु प्रियेषु। तऽ आ गमन्तु तऽ इह श्रुवन्तु अधि ब्रुवन्तु ते ऽअवन्तु-अस्मन्।। अग्निष्वात्ताः पितरः एह गच्छत सदःसदः सदत सु-प्रणीतयः। अत्ता हवींषि प्रयतानि बर्हिष्य-था रयिम् सर्व-वीरं दधातन।। येऽ अग्निष्वात्ता येऽ अनग्निष्वात्ता मध्ये दिवः स्वधया मादयन्ते। तेभ्यः स्वराड-सुनीतिम् एताम् यथा-वशं तन्वं कल्पयाति।।अग्निष्वात्तान् ऋतुमतो हवामहे नाराशं-से सोमपीथं यऽ आशुः। ते नो विप्रासः सुहवा भवन्तु वयं स्यामः पतयो रयीणाम्।। आच्या जानु दक्षिणतो निषद्य इमम् यज्ञम् अभि गृहीत विश्वे। मा हिंसिष्ट पितरः केन चिन्नो यद्व आगः पुरुषता कराम।। आसीनासोऽ अरुणीनाम् उपस्थे रयिम् धत्त दाशुषे मर्त्याय। पुत्रेभ्यः पितरः तस्य वस्वः प्रयच्छत तऽ इह ऊर्जम् दधात।।

यज्ञोपवीत धारण विधि

यज्ञोपवीत में देवताओं के आवाहन की विधि-

यज्ञोपवीत को पलाश आदि के पत्ते पर रखकर जल से प्रक्षालित करे, फिर निम्नलिखित मन्त्रों को पढते हुए एक एक चावल अथवा एक एक फूल को यज्ञोपवीत पर छोड़ते जाए -

प्रथमतन्तौ ॐ ओंमकारमावाहयामि। द्वितीयतन्तौ ॐ अग्निमावाहयामि। तृतीयतन्तौ ॐ सर्पानावाहयामि। चतुर्थतन्तौ ॐ सोममावाहयामि। पञ्चमतन्तौ ॐ पितृनावाहयामि। षष्ठतन्तौ ॐप्रजापतिमावाहयामि। सप्तमतन्तौ ॐ अनिलमावाहयामि। ॐअष्टमतन्तौ ॐसूर्यमावाहयामि। नवमतन्तौ ॐ विश्वान् देवानावाहयामि। प्रथमग्रन्थौ ॐ ब्रह्मणे नमः, ब्रह्माणमावहयामि। द्वितीयग्रन्थौ ॐ विष्णवे नमः, विष्णुमावाहयामि। तृतीयग्रन्थौ ॐ रुद्राय नमः, रुद्रमावाहयामि। इसके बाद प्रणवाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः - इस मन्त्र से यथास्थानं न्यसामि कहकर उन-उन तन्तुओं में न्यास कर चन्दन आदि से पूजा करें। फिर जनेऊ को दस बार गायत्री मन्त्र से अभिमन्त्रित करे।

यज्ञोपवीत धारण विधि - इसके बाद नूतन यज्ञोपवीत धारण का संकल्प कर निम्नलिखित विनियोग पढकर जल गिराये। फिर मन्त्र पढकर एक जनेऊ पहने, इसके बाद आचमन करें। फिर दूसरा यज्ञोपवीत धारण करे। एक-एक कर यज्ञोपवीत पहनना चाहिए।

विनयोग - ॐ यज्ञोपवीतमिति मन्त्रस्य परमेष्ठी ऋषिः, लिङ्गोक्ताः देवताः, त्रिष्टुप् छन्दः, यज्ञोपवीतधारणे विनियोगः।

इस मन्त्र से जनेऊ पहने -

ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत् सहजं पुरस्तात्।
आयुष्यमग्रयं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः।।
ॐ यज्ञोपवीतमसि यज्ञस्य त्वा यज्ञोपवीतेनोपनह्यामि

जीर्ण यज्ञोपवीत का त्याग - इसेक बाद निम्नलिखित मन्त्र पढकर पुराने जनेऊ को कण्ठी जैसा बनाकर सिर पर से पीठ की ओर निकालकर उसे जल में प्रवाहित कर दे-

एतावद्दिनपर्यन्तं ब्रह्म त्वं धारितं मया।
जीर्णत्वात् त्वत्परित्यागो गच्छ सूत्र यथासुखम्।।

इसके बाद यथाशक्ति गायत्री मन्त्र का जप करे और आगे का वाक्य बोलकर भगवान् को अर्पित कर दे - ॐ तत्सत् श्रीब्रह्मार्पणमस्तु। फिर हाथ जोडकर भगवान का स्मरण करे।

।।षोडशोपचार-देवपूजनविधि।।

पूजन के दिन शान्तचित्त होकर शुद्ध आसन पर पूर्व की ओर अथवा उत्तर की ओर मुख करके प्राणायाम के अनन्तर अपने इष्टदेवता का स्मरण करके पूजन का प्रारम्भ करना चाहिए।

सर्वप्रथम निम्नमन्त्र से तीन बार आचमन करें- **ॐकेशवाय नमः, ॐमाधवाय नमः, ॐनारायणाय नमः।** तथा ऋषिकेशाय नमः कहकर हाथ धोवें।

निम्नमन्त्र से पवित्री धारण करें -

ॐ पवित्रेस्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः। तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम्।।

जल से शुद्धि हेतु हाथ में जल कुश लेकर निम्न मन्त्र को पढ़े- **ॐअपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थाङ्गतोऽपि वा। यःस्मरेत् पुण्डरीकाक्षं सबाह्याऽभ्यान्तरः शुचिः।।** इसके बाद पुण्डरीकाक्षः पुनातु का तीन बार उच्चारण करें। इसके बाद जल को पूजन सामग्री एवं अपने शरीर पर छिड़के। हाथ में जल लेकर गङ्गादि नदियों व प्रयागादि तीर्थों का स्मरण करते हुए निम्न मन्त्र से जल शुद्धि करें- **ॐ गङ्गे च यमने चैव गोदावरी सरस्वती। नर्मदे सिन्धुकावेरी जलेऽस्मिन् सन्निधि कुरु।।**

निम्न मन्त्र को पढ़कर आसन शुद्धि के लिए आसन पर जल छिड़के- **ॐ पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता। त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम्।। विनियोग- पृथ्वीतिमन्त्रस्य मेरुपृष्ठऋषिः सुतलंछन्दः, कूर्मोदेवता आसन शोधने विनियोगः।**

निम्नलिखित मन्त्र के द्वारा दिग् रक्षण हेतु पीली सरसों अथवा अक्षत दशों दिशाओं में छोड़े- **ॐ अपक्रामन्तु ते भूता ये भूता भूमि संस्थिता। ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया।।** तदन्तर हाथ में पुष्पाक्षत लेकर इष्टदेवता का ध्यान करते हुए स्वस्तिवाचन मन्त्रों का पाठ करें।

ॐ आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतोऽदब्धासो अपरीतास उद्भिदः। देवा नो यथा सद्मिद् वृधे असन्नप्रायुवो रक्षितारो दिवे दिवे।। देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयतां देवानांꣳ रातिरभि नो निवर्त्तताम्। देवानाꣳसख्यमुपसेदिमा वयं देवा न आयुः प्रतिरन्तु जीवसे। तान्पूर्वया निविदा हूमहे वयं भगं मित्रमदितिं दक्षमस्रिधम्। अर्यमणं वरुण ꣳ सोममश्विना सरस्वती नः सुभगा मयस्करत्।। तन्नो वातो मयोभु व्वातु भेषजं तन्माता पृथिवी तत्पिता द्यौः। तद् ग्रावाणः सोमसुतो मयोभुवस्तदश्विना श्रृणुतं धिष्णया युवम्।। तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियञ्जिन्वमवसे हूमहे वयम्। पूषा नो यथा वेदसामसद् वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये।। स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः। स्वस्ति नस्ताक्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु।। पृषदश्वा मरुतः पृश्निमातरः शुभं यावानो विदथेषु जग्मयः। अग्निर्जिह्वा मनवः सूरचक्षसो विश्वे नो देवा अवसागमन्निह।। भद्रं कर्णेभिः श्वणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः। स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवा ꣳ सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः।। शतमिन्नु शरदो अन्ति देवा यत्रा नश्चक्रा जरसन्तनूनाम्। पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मा नो मध्या रीरिषतायुर्गन्तोः।। अदितिर्द्यौरदितिरन्तरिक्षमदितिर्माता स पिता स पुत्रः। विश्वे देवा अदितिः पञ्च जना अदितिर्जातमदितिर्जनित्वम्।। द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ꣳ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्व ꣳ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि।। यतो यतः समीहसे ततो नो अभयं कुरु। शं नः कुरु प्रजाभ्योऽभयन्नः पशुभ्यः सुशान्तिर्भवतु।।

ॐ श्रीमन्महागणाधिपतये नमः। ॐ लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः। ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः। ॐ वाणीहिरण्यगर्भाभ्यां नमः। ॐ शचीपुरन्दराभ्यां नमः। ॐ मातृपितृगुरुचरणकमलेभ्यो नमः। ॐ इष्टदेवताभ्यो नमः। ॐ कुलदेवताभ्यो नमः। ॐ ग्रामदेवताभ्यो नमः। ॐ वास्तुदेवताभ्यो नमः। ॐ स्थानदेवताभ्यो नमः। ॐ सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः। ॐ सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः। ॐ सिद्धिबुद्धिसहिताय श्रीमन्महागणाधिपतये नमः।। ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः।।

सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः। लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः।।
धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः। द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि।।
विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा। सङ्ग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते।।
शुक्लाम्बरधरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम्। प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये।।
अभीप्सितार्थसिद्ध्यर्थं पूजितो यः सुरासुरैः। सर्वविघ्नहरस्तस्मै गणाधिपतये नमः।।
सर्वमङ्गलमाङ्गल्ये ! शिवे ! सर्वार्थसाधिके।। शरण्ये त्र्यम्बके ! नारायणि नमोऽस्तुते।।
सर्वदा सर्वकार्येषु नास्ति तेषाममङ्गलम्। येषां हृदिस्थो भगवान् मङ्गलायतनं हरिः।।
तदेव लग्नं सुदिनं तदेव ताराबलं चन्द्रबलं तदेव। विद्याबलं दैवबलं तदेव लक्ष्मीपते तेऽङ्घ्रियुगं स्मरामि।। लाभस्तेषां जयस्तेषां कुतस्तेषां पराजयः। येषामिन्दीवरश्यामो हृदयस्थो जनार्दनः।। यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः। तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम।। अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते। तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम्।। स्मृतेः सकलकल्याणं भाजनं यत्र जायते। पुरुषं तमजं नित्यं व्रजामि शरणं हरिम्।। सर्वेष्वारम्भकार्येषु त्रयस्त्रिभुवनेश्वराः। देवा दिशन्तु नः सिद्धिं ब्रह्मेशानर्दनाः।। विश्वेशं माधवं ढुण्ढिं दण्डपाणिं च भैरवम्। वन्दे काशीं गुहां गङ्गां भवानीं मणिकर्णिकाम्।। वक्रतुण्ड महाकाय कोटिसूर्यसमप्रभ। निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा।।

अथ सङ्कल्पः- ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य ब्रह्मणोऽह्नि द्वितीयपरार्द्धे श्री श्वतेवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे

कलिप्रथमचरणे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे आर्यावर्तैकदेशान्तरगते .....पुण्यप्रदेशे.....नगरे.....ग्रामे.....क्षेत्रे.....संवत्सरे.....अयने..... ऋतौ.....मासे.....पक्षे..... तिथौ.....वासरे.....गोत्रः शर्मा/वर्मा/गुप्त/दासोऽहं श्रुतिस्मृतिपुराणोक्त-फलप्राप्त्यर्थं मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुरारोग्यैश्वर्याभिवृद्ध्यर्थं दैहिक-दैविक-भौतिक-त्रिविध तापोपशमनार्थं धर्मार्थकाममोक्षप्राप्त्यर्थं सकलदुरितोपशमनार्थं, सर्वारिष्टनिवृत्तिपूर्वकदुःस्थानेस्थितग्रहदोषनिवारणार्थं तथा च नित्यकल्याणप्राप्त्यर्थं श्री परमेश्वरप्रीत्यर्थं.....देवस्य पूजनं च अहं करिष्ये।

आहवानम्- आगच्छन्तु सुरश्रेष्ठः! भवन्त्वत्र स्थिरा समे।
यावत्पूजां करिष्यामि तावत्तिष्ठन्तु सन्निधौ।।

वैदिकम्- ॐसहस्रशीर्षापुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्।
सभूमिꣳसर्वतस्पृत्त्वात्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम्।।
आवाहनार्थं पुष्पं समर्पयामि।

लौकिकम्- ॐ आगच्छागच्छ देवेश त्रेलोक्यतिमिरापह।
क्रियमाणां मया पूजां गृहाण सुरसत्तम।।

देव्याः- ॐ अम्बेऽम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्चन।
ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम्।।

लौकिकम्- ॐ नमो दैव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम्।।
आवाहनार्थं पुष्पाक्षतान् समर्पयामि।

आसनम्- वैदिकम्- ॐ पुरुषऽएवेदꣳसर्व्वं यद्भूतंयच्चभाव्यम्।
उतामृतत्त्वस्येशानोयदन्नेनातिरोहति।।

लौकिकम्- अनेकरत्नसंयुक्तं नानामणिगणान्वितम्।
इमं हेममयं दिव्यमासनं प्रतिगृह्यताम्।।
पुष्पासनं समर्पयामि।

प्रतिष्ठा- वैदिकम्- ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञꣳ समिमं दधातु। विश्वे देवास इह मादयन्तामोꣳ३म्प्रतिष्ठ।।

लौकिकम्- अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च।
अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन।।
देवाः सुप्रतिष्ठित वरदाभव प्राणप्रतिष्ठापूर्वकं नमस्करोमि।

पाद्यं वैदिकम्- ॐ एतावानस्यमहिमातो ज्यायाँश्चपूरुषः।
पादोऽस्यविश्वाभूतानि त्रिपादस्यामृतन्दिवि।।

लौकिकम्- ॐ गङ्गोदकं निर्मलञ्च सर्वसौगन्ध्यसंयुतम्।
पादप्रक्षालनार्थाय दत्तं ते प्रतिगृह्यताम्।।
पाद्यं समर्पयामि।

अर्घ्यं वैदिकम्- ॐ त्रिपादूर्ध्वऽउदैत्पुरुषः पादोस्येहाभवत्पुनः।
ततोविष्वङव्यक्रामत्साशनानशनेऽअभि।।

लौकिकम्- गन्धपुष्पाक्षतैर्युक्तं मध्ये सम्पादितं मया।।
गृहाण भगवन् देव !प्रसन्नो वरदो भव ।।
अर्घ्यम् समर्पयामि।

आचमन वैदिकम्- ॐततोविराडजायत विराजोऽअधिपूरुषः।
स जातोऽअत्यरिच्यतपश्चाद्भूमिमथोपुरः।।

लौकिकम्- कर्पूरेण सुगन्धेन वासितं स्वादु-शीतलम्।
तोयमाचमनीयार्थं गृहाण परमेश्वरः।।
आचमनीयं जलं समर्पयामि।

दुग्धस्नानं वैदिकम्- ॐ पयः पृथिव्यां पय ओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयो धाः।
पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम्।।

लौकिकम्- कामधेनुसमुद्भूतं सर्वेषां जीवनं परम्।
पावनं यज्ञहेतुञ्च पयः स्नानार्थमर्पितम्।।
पयः स्नानं समर्पयामि।

दधिस्नानं वैदिकम्- ॐ दधिक्राव्णो अकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः।
सुरभि नो मुखा करत्प्रण आयू ꣳषि तारिषत्।।

लौकिकम्- पयसस्तु समुद्भूतं मधुराम्लं शशिप्रभम्।
दध्यानीतं मया देव स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।
दधिस्नानं समर्पयामि।

घृतस्नानं वैदिकम्- ॐ घृतं मिमिक्षे घृतमस्य योनिर्घृते श्रितो घृतम्वस्य धाम।
अनुष्वधमा वह मादयस्व स्वाहाकृतं वृषभ वक्षि हव्यम्।।

लौकिकम्- नवनीतसमुत्पन्नं सर्वसंतोषकारकम्।
घृतं तुभ्यं प्रदास्यामि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।
घृतस्नानं समर्पयामि।

मधुस्नानं वैदिकम्- ॐ मधु वाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः।
माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः।।
मधु नक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिव ꣳ रजः।
मधु द्यौरस्तु नः पिता।।

लौकिकम्- पुष्परेणुसमुद्भूतं सुस्वादु मधुरं मधु।
तेजः पुष्टिकरं दिव्यं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।
मधुस्नानं समर्पयामि।

शर्करास्नानं वैदिकम्-ॐ अपा ꣳ रसमुद्वयस ꣳ सूर्ये सन्त ꣳ समाहितम्।
अपा ꣳ रसस्य यो रसस्तम वो
गृह्णाम्युत्तममुपयामगृहीतोऽसीन्द्राय त्वा जुष्टं
गृह्णाम्येष ते योनिरिन्द्राय त्वा जुष्टतमम्।।

लौकिकम्- इक्षुरससमुद्भूतां शर्करां पुष्टिदां शुभाम्।
मलापहारिकां दिव्यां स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।
शर्करास्नानं समर्पयामि।

पञ्चामृत स्नानं वैदिकम्-ॐ पञ्च नद्यः सरस्वतीमपि यन्ति ससोतसः।
सरस्वती तु पञ्चधा सो देशेऽभवत्सरित्।।

लौकिकम्- पञ्चामृतं मायनीतं पयो दधि घृतं मधु।
शर्करया समायुक्तं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।
पञ्चामृतस्नानं समर्पयामि।

गन्धोदकस्नानं वैदिकम्-ॐ अ ꣳ शुना ते अ ꣳ शुः पृच्यतां परुषा परुः।
गन्धस्ते सोममवतु मदाय रसो अच्युतः।।

लौकिकम्- मलयाचलसम्भूतचन्दनेन विनिःसृतम्।
इदं गन्धोदकस्नानं कुङ्कुमाक्तं च गृह्यताम्।।
गन्धोदकस्नानं समर्पयामि।

शुद्धोदकस्नानं वैदिकम्-ॐ शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो मणिवालस्त
आश्विनाः श्वेतः श्येताक्षोऽरुणस्ते
रुद्राय पशुपतये कर्णा यामा अवलिप्ता रौद्रा नभोरूपाः पार्जन्याः।।

लौकिकम्- गङ्गा च यमुना चैव गोदावरी सरस्वती ।
नर्मदा सिन्धुकावेरी स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।
शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

वस्त्रं वैदिकम्- ॐ युवा सुवासाः परिवीत आगात् स उ श्रेयान् भवति जायमानः।
तं धीरासः कवय उन्नयन्ति स्वाध्योꣳ३ मनसा देवयन्तः।।

लौकिकम्- शीतवातोष्णसंत्राणं लज्जाया रक्षणं परम्।
देहालङ्करणं वस्त्रमतः शान्तिं प्रयच्छ मे ।।
वस्त्रं समर्पयामि।

उपवस्त्रं वैदिकम्- ॐ सुजातो ज्योतिषा सह शर्म वरुथमाऽसदत्स्वः।
वासो अग्ने विश्वरूप ꣳ सं व्ययस्व विभावसो।।

लौकिकम्- यस्याभावेन शास्त्रोक्तं कर्म किञ्चिन् सिद्ध्यति।
उपवस्त्रं प्रयच्छामि सर्वकर्मोपकारकम्।।
उपवस्त्रं समर्पयामि।

यज्ञोपवीत वैदिकम्-ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात्।
आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः।।

लौकिकम्- नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम्।
उपवीतं मया दत्तं गृहाण परमेश्वर।।
यज्ञोपवीतं समर्पयामि।

चन्दनं वैदिकम्- ॐ त्वां गन्धर्वा अखनँस्त्वामिन्द्रस्त्वां बृहस्पतिः।
त्वामोषधे सोमो राजा विद्वान् यक्ष्मादमुच्यत।।

लौकिकम्- श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम्।
विलेपनं सुरश्रेष्ठ ! चन्दनं प्रतिगृह्यताम्।।
चन्दनं समर्पयामि।

अक्षतं वैदिकम्- ॐ अक्षन्नमीमदन्त ह्याव प्रिया अधूषत।
अस्तोषत स्वभानवो विप्रा नविष्टया मती योजान्विन्द्र ते हरि।।

लौकिकम्- अक्षताश्च सुरश्रेष्ठः कुङ्कुमाक्ताः सुशोभिताः।
मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर।।
अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्प वैदिकम्- ॐ ओषधीः प्रतिमोदध्वं पुष्पवतीः प्रसूवरीः।
अश्वा इव सजित्वरीर्वृधः पारयिष्णवः।।

लौकिकम्- माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो।
मयाहृतानि पुष्पाणि पूजार्थं प्रतिगृह्यताम्।।
पुष्पं समर्पयामि।

दूर्वा वैदिकम्- ॐ काण्डात्काण्डात्परोहन्ती परुषः परुषस्परि।
एवा नो दूर्वे प्र तनु सहस्रेण शतेन च ।।

लौकिकम्- दूर्वाङ्कुरान् सुहरितानमृतान् मङ्गलप्रदान्।
आनीतांस्तव पूजार्थं गृहाण गणनायक।।
दूर्वाङ्कुरान् समर्पयामि।

सिन्दूर वैदिकम्- ॐ सिन्धोरिव प्राध्वने शूघनासो वातप्रमियः पतयन्ति यह्वाः।
घृतस्य धारा अरुषो न वाजी काष्ठ भिन्दन्नूर्मिभिः पिन्वमानः।।

लौकिकम्- सिन्दूरं शोभनं रक्तं सौभाग्यं सुखवर्धनम्।
शुभदं कामदं चैव सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम्।।

सिन्दूरं समर्पयामि।

नानापरिमलद्रव्य वैदिकम्- ॐ अहिरिव भौगैः पर्येति बाहुं ज्याया हेतिं परिबाधमानः
हस्तघ्नो विश्वा वयुनानि विद्वान् पुमान् पुमा ँ सं परिपातु विश्वतः।।

लौकिकम्- अबीरं च गुलालं च हरिद्रादिसमन्वितम्।
नाना परिमलं द्रव्यं गृहाण परमेश्वर।।
नानापरिमल द्रव्याणि समर्पयामि।

सुगन्धितद्रव्यं वैदिकम्-ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।।

लौकिकम्- दिव्यगन्धसमायुक्तं महापरिमलाद्भुतम्।
गन्धद्रव्यमिदं भक्त्या दत्तं वै परिगृह्यताम्।।
सुगन्धितद्रव्यं समर्पयामि।

धूप वैदिकम्- ॐ धूरसि धूर्व धूर्वन्तं धूर्व तं योऽस्मान् धूर्वति तं धूर्व यं वयं धूर्वामः।
देवानामसि वह्नितम ँ सस्नितमं पप्रितमं जुष्टतमं देवहूतममम्।।

लौकिकम्- वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः।
आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्।।
धूपमाघ्रापयामि।

दीप वैदिकम्- ॐ अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा सूर्यो
ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा।अग्निर्वर्चो ज्योतिर्वर्चः
स्वाहा सूर्यो वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा।
ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा।।

लौकिकम्- साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं मया।
दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्यतिमिरापहम्।।
भक्त्या दीपं प्रयच्छामि देवाय परमात्मने।
त्राहि मां निरयाद् घोराद् दीपज्योतिर्नमोऽस्तु ते।।
दीपं दर्शयामि।

नैवेद्य वैदिकम्- ॐ नाभ्या आसीदन्तरिक्ष ँ शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत।
पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ२ अकल्पयन्।।

लौकिकम्- शर्कराखण्डखाद्यानि दधिक्षीरघृतानि च।
आहारं भक्ष्यभोज्यं च नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्।।
नैवेद्यं निवेदयामि।

ऋतुफलं वैदिकम्- ॐ याः फलिनीर्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः।
बृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुञ्चन्तु ँ हसः।।

लौकिकम्- इदं फलं मया देव स्थापितं पुरतस्तव।
तेन में सफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि।।
ऋतुफलं समर्पयामि।

ताम्बूल वैदिकम्- ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत।
वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः।।

लौकिकम्- पूगीफलं महाद्दिव्यं नागवल्लीदलैर्युतम्।
एलादिचूर्णसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्।।
पूगीफलसहितं ताम्बूलं समर्पयामि।

दक्षिणा वैदिकम्- ॐ हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।
स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम।।

लौकिकम्- हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः।
अनन्तपुण्यफलदमतः शान्तिं प्रयच्छ मे।।
दक्षिणाद्रव्यं समर्पयामि।

आरती वैदिकम्- ॐ इदं ँ हविः प्रजननं मे अस्तु दशवीर ँ सर्वगण ँ स्वस्तये।
आत्मसनि प्रजासनि पशुसनि लोकसन्यभयसनि।
अग्निः प्रजां बहुलां में करोत्वन्नं पयो रेतो अस्मासु धत्त।।
ॐ आ रात्रि पर्थिव ँ रजः पितुरप्रायि धामभिः।
दिवः सदा ँसि बृहती वि तिष्ठस आ त्वेषं वर्तते तमः।।

लौकिकम्- कदलीगर्भसम्भूतं कर्पूरं तु प्रदीपितम्।
आरार्तिकमहं कुर्वे पश्य मे वरदो भव।।
आरार्तिक्यं समर्पयामि।

मन्त्रपुष्पाञ्जलि- ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।
ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः।।
ॐ राजाधिराजाय प्रसह्य साहिने नमो वयं वैश्रवणाय कुर्महे।
स मे कामान् काम कामाय मह्यं कामेश्वरो वैश्रवणो ददातु।।
कुबेराय वैश्रवणाय महाराजाय नमः।।
ॐ स्वस्ति साम्राज्यं भौज्यं स्वाराज्यं वैराज्यं पारमेष्ठ्यं राज्यं महाराज्यमाधिपत्यमयं समन्तपर्यायी स्यात् सार्वभौमः सार्वायुषान्तादापरार्धात् पृथिव्यै समुद्रपर्यन्ताया एकराडिति तदप्येष श्लोकोऽभिगीतो मरुतः परिवेष्टारो मरुत्तस्यावसन् गृहे। आविक्षितस्य कामप्रेर्विश्वेदेवाःसभासद इति।।
ॐ विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतोमुखो विश्वतोबाहुरुत विस्वतस्पात्।
सं बाहुभ्यां धमति सं पतत्रैर्द्यावाभूमी जनयन् देव एकः।।

लौकिकम्- श्रद्धया सिक्तया भक्त्या हार्दप्रेम्णा समर्पितः।
मन्त्रपुष्पाञ्जलिश्चायं कृपया प्रतिगृह्यताम्।।
नाना सुगन्धिपुष्पाणि यथा कालोद्भवानि च।
पुष्पाञ्जलिर्मया दत्तो गृहाण परमेश्वर।।
पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

प्रदक्षिणा- ॐ ये तीर्थानि प्रचरन्ति सृकाहस्ता निषङ्गिणः।
तेषा ँ सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि।।

लौकिकम्- यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च।
तानि सर्वाणि नश्यन्तु प्रदक्षिणपदे पदे।। प्रदक्षिणां समर्पयामि।

प्रार्थना- विघ्नेश्वराय वरदाय सुरप्रियाय,लम्बोदराय सकलाय जगद्धिताय।
नागाननाय श्रुतियज्ञविभूषिताय।गौरीसुताय गणनाथ नमो नमस्ते।
त्वं वैष्णवी शक्तिरनन्तवीर्या,विश्वस्य वीजं परमासि माया।
सम्मोहितं देवि समस्तमेतत। त्वं वै प्रसन्ना भुवि मुक्तिहेतुः।।

।। तर्पण प्रयोग विधि ।।

गायत्री मन्त्र से शिखा बाँधकर तिलक लगाकर प्रथम दाहिनी अनामिका के मध्य पोर में दो कुशों और बायीं अनामिका में तीन कुशों की पवित्री धारण करें। फिर हाथ में त्रिकुश,यव, अक्षत और जल लेकर सङ्कल्प पढ़े-

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य ब्रह्मणोऽह्नि द्वितीयपरार्द्धे श्री श्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलि प्रथमचरणे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे आर्यावर्तैक देशान्तरगते .. ... पुण्यप्रदेशे..... नगरे.....ग्रामे.....क्षेत्रे..... संवत्सरे.....अयने..... ऋतौ..... मासे.....पक्षे..... तिथौ.....वासरे.....गोत्रः शर्मा/वर्मा/गुप्त/दासोऽहं अद्य श्रुतिस्मृतिपुराणोक्तफल प्राप्त्यर्थं देवर्षिमनुष्यपितृतर्पणं करिष्ये।

आवाहन मन्त्र- ब्रह्मादयः सुराः सर्वे ऋषयः सनकादयः।आगच्छन्तु महाभागा ब्रह्माण्डोदरवर्तिनः।।

देव तर्पण विधि- देव तथा ऋषि तर्पण में पूर्व दिशा की ओर मुख करें, जनेउ को सव्य रखे, दाहिना घुटना जमीन पर लगाकर बैठें। अर्घ्यपात्र में चावल छोड़े। तीनों कुशों को पूर्व की ओर अग्रभाग कर रखे। जल की अञ्जलि एक एक हो। देवतीर्थ से अर्थात् दायें हाथ की अँगुलियों के अग्रभाग से दे। जलाञ्जलि को सोना, चाँदी ,ताँबा अथवा काँसे के बर्तन में डाले। यदि नदी में तर्पण किया जाय तो दोनों हाथों को मिलाकर जल से भरकर गौ के सींग जितना ऊँचा उठाकर जल में ही अञ्जलि डालें।

निम्नलिखित प्रत्येक नाम मन्त्र के बाद तृप्यताम् कहकर एक-एक अञ्जलि जल देते जाय।

ॐ ब्रह्मा तृप्यताम्। ॐ विष्णुस्तृप्यताम्। ॐ रुद्रस्तृप्यताम्। ॐ प्रजापतिस्तृप्यताम्। ॐ देवास्तृप्यन्ताम्। ॐ छन्दांसि तृप्यन्ताम्। ॐ वेदास्तृप्यन्ताम्। ॐ ऋषयस्तृप्यन्ताम्। ॐ पुराणाचार्यास्तृप्यन्ताम्।ॐ गन्धर्वास्तृप्यन्ताम्। ॐ इतराचार्यास्तृप्यन्ताम्। ॐ संवत्सरः सावयवस्तृप्यताम्। ॐ देव्यस्तृप्यन्ताम्। ॐ अप्सरसस्तृप्यन्ताम्। ॐ देवानुगास्तृप्यन्ताम्। ॐ नागास्तृप्यन्ताम्। ॐ सागरास्तृप्यन्ताम्। ॐ पर्वतास्तृप्यन्ताम्। ॐ सरितस्तृप्यन्ताम्। ॐ मनुष्यास्तृप्यन्ताम्। ॐ यक्षास्तृप्यन्ताम्। ॐ रक्षांसि तृप्यन्ताम्। ॐ पिशाचास्तृप्यन्ताम्। ॐ सुपर्णास्तृप्यन्ताम्। ॐ भूतानि तृप्यन्ताम्। ॐ पशवस्तृप्यन्ताम्। ॐ वनस्पतयस्तृप्यन्ताम्। ॐ ओषधयस्तृप्यन्ताम्। ॐ भूतग्रामश्चतुर्विधस्तृप्यताम्।

ऋषि तर्पण विधि - इसी प्रकार निम्नलिखित मन्त्रवाक्यों से मरीचि आदि ऋषियों को भी एक-एक अञ्जलि दे- ॐ मरीचिस्तृप्यताम्। ॐ अत्रिस्तृप्यताम्। ॐ अङ्गिरास्तृप्यताम्। ॐ पुलस्त्यस्तृप्यताम्। ॐ पुलहस्तृप्यताम्। ॐ क्रतुस्तृप्यताम्। ॐ वशिष्ठस्तृप्यताम्। ॐ प्रचेतास्तृप्यताम्। ॐ भृगुस्तृप्यताम्। ॐ नारदस्तृप्यताम्।

दिव्य मनुष्य तर्पण - दिव्य मनुष्य तर्पण में उत्तर दिशा की ओर मुख करें, जनेऊ को कंठी की तरह कर ले, गमछे को भी कंठी की तरह कर लें, सीधा बैठें। कोई घुटना जमीन पर न लगाएं। अर्घ्यपात्र में जौ छोड़े। तीनों कुशों को उत्तराग्र रखे। प्राजापत्य (काय) तीर्थ से अर्थात् कुशों को दाहिने हाथ की कनिष्ठिका के मूल भाग में रखकर यहीं से जल दें। दों-दो-अञ्जलियाँ दें।

अञ्जलिदान के मन्त्र - ॐ सनकस्तृप्यताम्। ॐ सनन्दनस्तृप्यताम्। ॐ सनातनस्तृप्यताम्। ॐ कपिलस्तृप्यताम्। ॐ आसुरिस्तृप्यताम्। ॐ वोढुस्तृप्यताम्। ॐ पञ्चशिखस्तृप्यताम्।

दिव्यपितृतर्पण - पितृ तर्पण में दक्षिण दिशा की ओर मुख करें, अपसव्य हो जाएं अर्थात् जनेऊ को दाहिने कंधे पर रखकर बायें हाथ के नीचे ले जाएं, गमछे को भी दाहिने कंधे पर रखें। बायां घुटना जमीन पर लगाकर बैठे, अर्घ्य पात्र में कुष्ण तिल छोड़े, कुशा को बीच से मोड़कर उनकी जड़ और अग्रभाग को दाहिने हाथ में तर्जनी और अँगूठे के बीच में रखे, पितृ तीर्थ से अर्थात् अँगूठे और तर्जनी के मध्यभाग से अञ्जलि दें। तीन-तीन अञ्जलियाँ दे।

उपर्युक्त नियम से प्रत्येक मन्त्र से तीन-तीन अञ्जलियाँ देने के मन्त्र निम्लिखित है- ॐकव्यवाडनलस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं (गङ्गाजलं वा) तस्मै स्वधा नमः,तस्मै स्वधा नमः,तस्मै स्वधा नमः(३)।.ॐसोमस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं इदं सतिलं जलं (गङ्गाजलं वा) तस्मै स्वधा नमः(३)। ॐ यमस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं (गङ्गाजलं वा) तस्मै स्वधा नमः(३)। ॐ अर्यमा तृप्यताम् इदं सतिलं जलं (गङ्गाजलं वा) तस्मै स्वधा नमः(३)। ॐअग्निष्वात्ताःपितरस्तृप्यन्ताम् इदं सतिलं जलं (गङ्गाजलं वा) तेभ्यः स्वधा नमः, तेभ्यः स्वधा नमः, तेभ्यः स्वधा नमः। ॐ सोमपाः पितरस्तृप्यन्ताम् इदं सतिलं जलं (गङ्गाजलं वा) तेभ्यः स्वधा नमः(३)। ॐ बर्हिषदः पितरस्तृप्यान्ताम् इदं सतिलं जलं (गङ्गाजलं वा) तेभ्यः स्वधा नमः(३)।

यम तर्पण - इसी प्रकार निम्नलिखित प्रत्येक नाम से यमराज को पितृतीर्थ से ही दक्षिणाभिमुख हो तीन-तीन अञ्जलियाँ दे- ॐ यमाय नमः (३)। ॐ धर्मराजाय नमः(३)। ॐ मृत्यवे नमः(३)। ॐ अन्तकाय नमः(३) ॐ वैवस्वताय नमः(३)। ॐ कालाय नमः(३)। ॐ सर्वभूतक्षयाय नमः (३)। ॐ औदुम्बराय नमः(३)। ॐ दध्नाय नमः(३)। ॐ नीलाय नमः(३)। ॐ परमेष्ठिने नमः(३)। ॐ वृकोदराय नमः(३)। ॐ चित्राय नमः(३)। ॐ चित्रगुप्ताय नमः(३)।

मनुष्य पितृ तर्पण - पितरों का तर्पण करने के पूर्व निम्नाङ्कित मन्त्रों से हाथ जोड़कर प्रथम उनका आवाहन करे- ॐ उशन्तस्त्वा नि धीमह्युशन्तः समिधीमहि। उशन्नुशत आ वह पितॄन् हविषे अत्तवे।। आ यन्तु नः पितरः सोम्यासोऽग्निष्वात्ताः पथिभिर्देवयानैः। अस्मिन् यज्ञे स्वधया मन्दतोऽधि ब्रुवन्तु तेऽवन्त्वस्मान्।। **लौकिकम् -** ॐ आगच्छन्तु मे पितर इमं गृह्णन्तु जलाञ्जलिम्। इसी तरह नीचे लिखे मन्त्रों का उच्चारण कर तिल के साथ तीन-तीन अञ्जलियाँ दे-

अमुकगोत्रः अस्मत्पिता अमुकशर्मा वसुरूपस्तृप्यतामिदं तिलोदकं (गङ्गाजलं वा) तस्मै स्वधा नमः,तस्मै स्वधा नमः, तस्मै स्वधा नमः।(३) अमुकगोत्रः अस्मत्पितामहः अमुकशर्मा रुद्ररूपस्तृप्यतामिदं तिलोदकं (गङ्गाजलं वा) तस्मै स्वधा नमः।(३) अमुकगोत्रः अस्मत्प्रपितामहः अमुकशर्मा आदित्यरूपस्तृप्यतामिदं तिलोदकं (गङ्गाजलं वा) तस्मै स्वाधा नमः।(३) अमुकगोत्रा अस्मन्माता अमुकी देवी वसुरूपा तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्यै स्वधा नमः, तस्यै स्वधा नमः,तस्यै स्वधाः नमः।(३) अमुकगोत्रा अस्मत्पितामहीं अमुकी देवी रुद्ररूपा तृप्यतामिदं तिलोदकं (गङ्गाजलं वा) तस्यै स्वधा नमः।(३) अमुकगोत्रा अस्मत्प्रपितामहीं अमुकी देवी आदित्यरूपा तृप्यतामिदं तिलोदकं (गङ्गाजलं वा) तस्यै स्वधा नमः।(३)

यदि सौतेली माँ मर गयी हो तो उसको भी तीन बार जल दे - अमुकगोत्रा अस्मत्सापत्नमाता अमुकी देवी तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्यै स्वधा नमः (३)

इसके बाद निम्नाङ्कित नौ मन्त्रों को पढ़ते हुए पितृतीर्थ से जल गिराते रहे-

ॐ उदीरतामवर उत्परास उन्मध्यमाः पितरः सोम्यासः।
असुं य ईयुरवृका ऋतज्ञास्ते नोऽवन्तु पितरो हवेषु।।
अङ्गिरसो नः पितरो नवग्वा अथर्वाणो भृगवः सोम्यासः।
तेषां वयं ँ सुमतौ यज्ञियानामपि भद्रे सौमनसे स्याम।।
आ यन्तु नः पितरः सोम्यासोऽग्निष्वात्ताः पथिभिर्देवयानैः।
अस्मिन् यज्ञे स्वधया मन्दतोऽधि ब्रुवन्तु तेऽवन्त्वस्मान्।।
ऊर्जं वहन्तीरमृतं घृतं पयः कीलालं परिसुतम्।स्वधा स्थ तर्पयत मे पितॄन।।

पितृभ्यः स्वधायिभ्य स्वधा नमः। पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः। प्रपितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः। अक्षन्पितरोऽमीमदन्त पितरोऽतीतृपन्तः पितरः पितरः शुन्धध्वम्। ये चेह पितरो ये च नेह याँश्च विद्म याँ उ च न प्रविद्म। त्वं वेत्थ यति ते जातवेदः स्वाधाभिर्यज्ञ ँ सुकृतं जुषस्व।

मधु वाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः। माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः।
मधु नक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिव ँ रजः। मधु द्यौरस्तु नः पिता।।
मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमाँ अस्तु सूर्यः। माध्वीर्गावो भवन्तु नः।।
ॐ मधु। मधु। मधु। तृप्यध्वम्। तृप्यध्वम्। तृप्यध्वम्।

फिर नीचे लिखे मन्त्रों का पाठ करें-

ॐ नमो वः पितरो रसाय नमो वः पितरः शोषाय नमो वः पितरो जीवाय नमो वः पितरः स्वधायै नमो वः पितरो घोराय नमो वः पितरो मन्यवे नमो वः पितरः पितरो नमो वो गृहान्नः पितरो दत्त सतो वः पितरो देष्मैतद्वः पितरो वास आधत्त।

द्वितीय गोत्र तर्पण- इसके बाद द्वितीय गोत्रवाले (ननिहाल के) मातामह (नाना) आदि का तर्पण करें। यहाँ भी पहले की भांति निम्नलिखित वाक्यों को तीन-तीन बार पढ़कर तिल सहित जल की तीन-तीन अञ्जलियाँ पितृतीर्थ से दे - अमुकगोत्रः अस्मन्मातामहः (नाना) अमुकः वसुरूपस्तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्मै स्वधा नमः (३)। अमुकगोत्रः अस्मत्प्रमातामहः (परनाना) अमुक रुद्ररूपस्तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्मै स्वधा नमः (३)। अमुकगोत्रः अस्मद् वृद्धप्रमातामहः (वृद्ध परनाना) अमुकः आदित्यरूपस्तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्मै स्वधा नमः(३)। अमुकगोत्रा अस्मन्मातामहीं (नानी) अमुकी देवी दा वसुरूपा तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्यै स्वधा नमः(३)। अमुकगोत्रा अस्मत्प्रमातामहीं (परनानी) अमुकी देवी दा रुद्ररूपातृप्यतामिदं तिलोदकं तस्यै स्वधा नमः(३)। अमुकगोत्रा अस्मद् वृद्धप्रमातामहीं (वृद्ध परनानी) अमुकी देवी दा आदित्यरूपा तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्यै स्वधा नमः(३)।

पत्न्यादि तर्पण - इसके आगे पत्नी से लेकर आप्तपर्यन्त जो भी सम्बन्धी मृत हो गये हो, उनके गोत्र और नाम लेकर एक-एक अञ्जलि जल दें - अमुकगोत्रा अस्मत्पत्नीं (भार्या) अमुकी देवी दा वसुरूपा तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा नमः। अमुकगोत्रः अस्मत्सुतः (बेटाः) अमुकशर्मा वसुरूपस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा नमः। अमुकगोत्रा अस्मत्कन्या (बेटी) अमुकीदेवी दा वसुरूपा तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा नमः। अमुकगोत्रः अस्मत्पितृव्यः (पिता के भाई) अमुकशर्मा वसुरूपस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा नमः। अमुकगोत्रः अस्मन्मातुलः (मामा) अमुकशर्मा वसुरूपस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा नमः। अमुकगोत्रः अस्मत्भ्राता(अस्मत्सापत्नभ्राता) (सौतेला भाई) अमुकशर्मा वसुरूपस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा नमः। अमुकगोत्रा अस्मत्पितृभगिनीं (बूआ) अमुकी देवी दा वसुरूपा तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा नमः। अमुकगोत्रा अस्मन्मातृभगिनीं (मौसी) अमुकी देवी दा वसुरूपा तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा नमः। अमुकगोत्रा अस्मदात्मभगनीं (अपनी बहन) अमुकी देवी दा वसुरूपा तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा नमः। अमुकगोत्रा अस्मत्सापत्नभगिनीं (सौतेली बहन) अमुकी देवी दा वसुरूपा तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा नमः। अमुकगोत्रः अस्मच्छवशुरः(श्वसुर) अमुकशर्मा वसुरूपस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा नमः। अमुकगोत्रः अस्मद्गुरुः अमुकशर्मा वसुरूपस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा नमः। अमुकगोत्रा अस्मदाचार्य पत्नीं अमुकी देवी दा वसुरूपा तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा नमः। अमुकगोत्रः अस्मच्छिष्यः वसुरूपस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा नमः। अमुकगोत्रः अस्मत्सखा अमुकशर्मा वसुरूपस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा नमः। अमुकगोत्रः अस्मदाप्तपुरुषः अमुकशर्मा वसुरूपस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा नमः।

इसके बाद सव्य होकर पूर्वाभिमुख हो सीधे बैठ जाय। कुशों को सीधा कर उनके अग्रभाग को पूर्व की ओर कर ले। फिर नीचे लिखे श्लोकों को पढ़ते हुए देवतीर्थ से जल गिराये- देवासुरास्तथा यक्षा नागा गन्धर्वराक्षसाः।। पिशाचा गुह्यकाः सिद्धाः कूष्माण्डास्तरवः खगाः।। जलेचरा भूनिलया वाय्वाधाराश्च जन्तवः।तृप्तिमेते प्रयान्त्वाशु मद्दत्तेनाम्बुनाखिलाः।।

इसके बाद अपसव्य होकर जनेऊ और अंगोछे को भी दाहिने कंधे पर रखकर दक्षिणाभिमुख हो जाए। कुशों को बीच से मोड़कर इनकी जड़ और अग्रभाग को दक्षिण की ओर कर दे। फिर नीचे लिखे हुए श्लोकों को पढ़कर पितृतीर्थ से जल गिराये-

नरकेषु समस्तेषु यातनासु च ये स्थिताः।तेषामाप्यायनायैतद्दीयते सलिलं मया।। येऽबान्धवा बान्धवाश्च येऽन्यजन्मनि बान्धवाः। ते तृप्तिमखिला यान्तु यश्चास्मत्तोऽभिवाञ्छति।। ये मे कुले लुप्तपिण्डाः पुत्रदारविवर्जिताः। तेषां हि दत्तमक्षय्यमिदमस्तु तिलोदकम्।। आब्रह्मस्तम्बपर्यन्तं देवर्षिपितृमानवाः। तृप्यन्तु पितरः सर्वे मातृमातामहादयः। अतीतकुलकोटीनां सप्तद्वीपनिवासिनाम्। आब्रह्मभुवनाल्लोकादिदमस्तु तिलोदकम्।।

वस्त्र निष्पीडनं- इस प्रकार सब पितरों का तर्पण हो जाने के बाद अँगोछे की चार तह कर उसमें तिल तथा जल छोड़कर नीचे लिखे मन्त्र पढ़कर जल के बाहर बायीं ओर पृथ्वी पर निचोड़े - ये के चास्मत्कुले जाता अपुत्रा गोत्रिणो मृताः।

ते गृह्णन्तु मया दत्तं वस्त्रनिष्पीडनोदकम्।।

भीष्मतर्पण- इसके बाद भीष्मपितामह को पितृतीर्थ और कुशों से जल दें-

भीष्मः शान्तनवो वीरः सत्यवादी जितेन्द्रियः।
आभिरद्भिरवाप्नोतु पुत्रपौत्रोचितां क्रियाम्।।

सूर्य को अर्घ्यदान- इसके पश्चात् पात्र को जल तथा मिट्टी से स्वच्छ कर ले। उसके बाद पूर्वोक्त रीति से आचमन और प्राणायाम कर सव्य हो जाय अर्थात् जनेऊ को बायें कंधे पर कर ले। अर्घ्य में फूल चन्दन लेकर निम्लिखित मन्त्र से सूर्य को अर्घ्य दे -

नमो विवस्वते ब्रह्मन ! भास्वते विष्णुतेजसे। जगत्सवित्रे शुचये सवित्रे कर्मदायिने।।

सूर्यार्घ्य देकर प्रदक्षिणा करे । इसके बाद दिशाओं एवं उनके अधिष्ठातृ देवाताओं का वन्दन करें- १.ॐ प्राच्यै नमः, ॐ इन्द्राय नमः। २. ॐ आग्नेय्यै नमः, ॐ अग्नये नमः।३.ॐ दक्षिणाय नमः,ॐ यमाय नमः। ४.ॐ नैर्ऋत्यै नमः,ॐ निर्ऋतये नमः। ५.ॐ प्रतीच्यै नमः,ॐ वरुणाय नमः। ६.ॐ वायव्यै नमः, वायवे नमः। ७.ॐ उदीच्यै नमः,ॐ कुबेराय

नमः। ८.ॐ ऐशान्यै नमः,ॐ ईशानाय नमः। ९.ॐ ऊर्ध्वायै नमः,ॐ ब्रह्मणे नमः। १०.ॐ अधरायै नमः,ॐ अनन्ताय नमः।

इस प्रकार दिशाओं को देवताओं को नमस्कार कर आसन पर बैठकर के नीचे लिखे मन्त्र पढ़कर एक-एक जलाञ्जलि दे- ॐ ब्रह्मणे नमः। ॐ अग्नये नमः। ॐ पृथिव्यै नमः। ॐ ओषधिभ्यो नमः। ॐ वाचे नमः। ॐ वाचस्पतये नमः। ॐ महद्भ्यो नमः। ॐ विष्णवे नमः। ॐ अद्भ्यो नमः। ॐ अपाम्पतये नमः। ॐ वरुणाय नमः।

समर्पण -

निम्नाङ्कित वाक्य पढ़कर यह तर्पण कर्म भगवान् को समर्पित करें-

अनेन यथाशक्तिकृतेन देवर्षिमनुष्यपितृतर्पणाख्येन कर्मणा भगवान् पितृस्वरूपी जनार्दनवासुदेवः प्रीयतां न मम। ॐ तत्सद् ब्रह्मार्पणमस्तु।

तदन्तर हाथ जोड़कर भगवान् का स्मरण करते हुए पाठ करें-

प्रमादात् कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत्। स्मरणादेव तद्विष्णोः सम्पूर्णं स्यादिति श्रुतिः।। यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु। न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम्।। यत्पादपङ्कजस्मरणात् यस्य नामजपादपि।न्यूनं कर्म भवेत् पूर्णं तं वन्दे साम्बमीश्वरम्।।

ॐ विष्णवे नमः। ॐ विष्णवे नमः। ॐ विष्णवे नमः।

पञ्चबलि-विधि

१. गोबलि (सव्य होकर पत्ते पर)-

ॐ सौरभेय्यः सर्वहिताः पवित्राः पुण्यराशयः।

प्रतिगृह्णन्तु मे ग्रासं गावस्त्रैलोक्यमातरः।। इदं गोभ्यो न मम।

२. श्वानबलि (जनेऊ कण्ठी कर पत्ते पर)- ॐ द्वौ श्वानौ श्यामशबलौ वैवस्वतकुलोद्भवौ। ताभ्यामन्नं प्रयच्छामि स्यातामेतावहिंसकौ।। इदं श्वभ्यां न मम।

३. काकबलि (अपसव्य होकर भूमि पर) - ॐ ऐन्द्रवारुणवायव्या याम्या वै नैर्ऋतस्तथा।वायसाः प्रतिगृह्णन्तु भूमौ पिण्डं मयोज्झितम्।। इदमन्नं वायसेभ्यो न मम।

४. देवादिबलि (सव्य होकर पत्ते पर) - ॐ देवा मनुष्याः पशवो वयांसि, सिद्धाः सयक्षोरगदैत्यसङ्घाः। प्रेताः पिशाचास्तरवः समस्ता ये चान्नमिच्छन्ति मया प्रदत्तम्।। इदमन्नं देवादिभ्यो न मम।

५. पिपीलिकादिबलिः (पत्ते पर) - पिपीलिकाः कीटपतङ्गकाद्या, बुभुक्षिताः कर्मनिबन्धबद्धाः। तेषां हि तृप्त्यर्थमिदं मयान्नं, तेभ्यो विसृष्टं सुखिनो भवन्तु।। इदमन्नं पिपीलिकादिभ्यो न मम।

।। नवग्रहस्तोत्रम् ।।

जपाकुसुमसंकाशं काश्यपेयं महाद्युतिम् ।तमोऽरिं सर्वपापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम्।।

दधिशङ्खतुषाराभं क्षीरोदार्णवसम्भवम् ।नमामि शशिनं सोमं शम्भोर्मुकुटभूषणम्।।

धरणीगर्भसम्भूतं विद्युत्कान्तिसमप्रभम् ।कुमारं शक्तिहस्तं तं मङ्गलं प्रणमाम्यहम्।।

प्रियङ्गुकलिकाश्यामं रूपेणाप्रतिमं बुधम् ।सौम्यं सौम्यगुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम्।।

देवानां च ऋषीणां च गुरुं काञ्चनसंनिभम् ।बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तं नमामि बृहस्पतिम्।।

हिमकुन्दमृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम् ।सर्वशास्त्रप्रवक्तारं भार्गवं प्रणमाम्यहम्।।

नीलाञ्जनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम् ।छायामार्तण्डसम्भूतं तं नमामि शनैश्चरम्।।

अर्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्यविमर्दनम् ।सिंहिकागर्भसम्भूतं तं राहुं प्रणमाम्यहम्।।

पलाशपुष्पसङ्काशं तारकाग्रहमस्तकम् ।रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं तं केतुं प्रणमाम्यहम्।।

इति व्यासमुखोद्गीतं यः पठेत् सुसमाहितः ।दिवा वा यदि वा रात्रौ विघ्नशान्तिर्भविष्यति।।

नरनारीनृपाणाञ्च भवेद्दुःस्वप्ननाशनम् ।ऐश्वर्यमतुलं तेषामारोग्यं पुष्टिवर्धनम्।।

ग्रहनक्षत्रजाः पीडास्ताडकाग्निसमुद्भवाः ।ताः सर्वाः प्रशमं यान्ति व्यासो ब्रूते न संशयः।।

।। महर्षिव्यासविरचितं नवग्रहस्तोत्रम् सम्पूर्णम्।।

सूर्यः शौर्यमथेन्दुरुच्चपदवीं सन्मङ्गलं मङ्गलः

सद्बुद्धिं चबुधो गुरुश्च गुरुतां शुक्रः सुखं शं शनि।

राहुर्बाहुबलं करोतु सततं केतुः कुलस्योन्नतिं

नित्यं प्रीतिकरा भवन्तु मम ते सर्वेऽनुकूला ग्रहाः।।

।।श्रीकनकधारास्तोत्रम्।।

अङ्गं हरेः पुलकभूषणमाश्रयन्ती भृङ्गाङ्गनेव मुकुलाभरणं तमालम्।

अङ्गीकृताखिलविभूतिरपाङ्गलीला माङ्गल्यदाऽस्तु मम मङ्गलदेवतायाः।।

मुग्धा मुहुर्विदधती वदने मुरारेः प्रेमत्रपाप्रणिहितानि गतागतानि।

माला दृशोर्मधुकरीव महोत्पले या सा मे श्रियं दिशतु सागरसम्भवायाः।।

विश्वामरेन्द्रपदविभ्रमदानदक्षमानन्दहेतुरधिकं मुरविद्विषोऽपि।

ईषन्निषीदतु मयि क्षणमीक्षणार्धमिन्दीवरोदरसहोदरमिन्दिरायाः।।

आमीलिताक्षमधिगम्य मुदा मुकुन्दमानन्दकन्दमनिमेषमनङ्गतन्त्रम्।

आकेकरस्थितकनीनिकपक्ष्मनेत्रं भूत्यै भवेन्मम भुजङ्गशयाङ्गनायाः।।

बाह्वन्तरे मधुजितः श्रितकौस्तुभे या हारावलीव हरिनीलमयी विभाति।

कामप्रदा भगवतोऽपि कटाक्षमाला कल्याणमावहतु मे कमलालयायाः।।

कालाम्बुदालिललितोरसि कैटभारेर्धाराधरे स्फुरति या तडिदङ्गनेव।

मातुः समस्तजगतां महनीयमूर्तिर्भद्राणि मे दिशतु भार्गवनन्दनायाः।।

प्राप्तं पदं प्रथमतः किल यत्प्रभावान्माङ्गल्यभाजि मधुमाथिनि मन्मथेन।

मय्यापतेत्तदिह मन्थरमीक्षणार्धं मन्दालसं च मकरालयकन्यकायाः।।

दद्याद्दयानुपवनो द्रविणाम्बुधारामस्मिन्नकिञ्चनविहङ्गशिशौ विषण्णे।

दुष्कर्मघर्ममपनीय चिराय दूरं नारायणप्रणयिनीनयनाम्बुवाहः।।

इष्टा विशिष्टमतयोऽपि यया दयार्द्रदृष्ट्या त्रिविष्टपपदं सुलभं लभन्ते।

दृष्टिः प्रहृष्टकमलोदरदीप्तिरिष्टां पुष्टिं कृषीष्ट मम पुष्करविष्टरायाः।।

गीर्देवतेति गरुडध्वजसुन्दरीति शाकम्भरीति शशिशेखरवल्लभेति।

सृष्टिस्थितिप्रलयकेलिषु संस्थितायै तस्यै नमस्त्रिभुवनैकगुरोस्तरुण्यै।।

श्रुत्यै नमोऽस्तु शुभकर्मफलप्रसूत्यै रत्यै नमोऽस्तु रमणीयगुणार्णवायै।

शक्त्यै नमोऽस्तु शतपत्रनिकेतनायै पुष्ट्यै नमोऽस्तु पुरुषोत्तमवल्लभायै।।

नमोऽस्तु नालीकनिभाननायै नमोऽस्तु दुग्धोदधिजन्मभूत्यै।

नमोऽस्तु सोमामृतसोदरायै नमोऽस्तु नारायणवल्लभायै।।

सम्पत्कराणि सकलेन्द्रियनन्दनानि साम्राज्यदानविभवानि सरोरुहाक्षि।

त्वद्वन्दनानि दुरिताहरणोद्यतानि मामेव मातरनिशं कलयन्तु मान्ये।।

यत्कटाक्षसमुपासनाविधिः सेवकस्य सकलार्थसम्पदः।

संतनोति वचनाङ्गमानसैस्त्वां मुरारिहृदयेश्वरीं भजे।।

सरसिजनिलये सरोजहस्ते धवलतमांशुकगन्धमाल्यशोभे।

भगवति हरिवल्लभे मनोज्ञे त्रिभुवनभूतिकरि प्रसीद मह्यम्।।

दिग्घस्तिभिः कनककुम्भमुखावसृष्टस्वर्वाहिनीविमलचारुजलप्लुताङ्गीम्।

प्रातर्नमामि जगतां जननीमशेषलोकाधिनाथगृहिणीममृताब्धिपुत्रीम्।।

कमले कमलाक्षवल्लभे त्वं करुणापूरतरङ्गितैरपाङ्गैः।

अवलोकय मामकिञ्चनानां प्रथमं पात्रकृत्रिमं दयायाः।।

स्तुवन्ति ये स्तुतिभिरमूभिरन्वहं त्रयीमयीं त्रिभुवनमातरं रमाम्।

गुणाधिका गुरुतरभाग्यभागिनो भवन्ति ते भुवि बुधभाविताशयाः।।

।। श्रीभगवत्पादशङ्करविरचितं कनकधारास्तोत्रं सम्पूर्णम्।।

अरिष्टशान्तये महामृत्युञ्जयवैदिकमन्त्रजपविधिः

आचम्य प्राणायामं कृत्वा, शान्तिपाठः, सुमुखश्चेत्यादि गणेशस्मरणं च कृत्वा संकल्पः - अमुकमासीयामुकपक्षीय अमुकतिथौ अमुकवासरे स्वस्य (यजमानस्य वा) शरीरे उत्पन्नोत्पास्य अखिलारिष्टनिवृत्तये श्रीमत्युञ्जयप्रसादाद्दीर्घायुष्यसततारोग्यतावाप्तये श्रीमृत्युञ्जयमन्त्रजपमहं करिष्ये।

ऋष्यादिन्यासः - वामदेवकहोलवशिष्ठऋषयः मूर्ध्नि।। पंक्तिगायत्री अनुष्टुपछन्दांसि वक्त्रे।। सदाशिवमहामृत्युञ्जयरुद्रदेवतायै नमः हृदि।। ह्रीं शक्तये नमः लिङ्गे।श्रीं बीजाय नमः पादयोः।

मन्त्रः - ॐ हौं ॐ जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनम्। ऊर्वारुकमिवबन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतात् ॐ भूर्भुवः स्वरों जूं सः हौं ॐ।।

अस्य श्रीमहामृत्युञ्जयमन्त्रस्य वामदेवकहोलवसिष्ठऋषः पंक्तिर्गायत्र्युष्णिगनुष्टुप्छन्दांसि सदाशिवमहामृत्युञ्जयरुद्रो देवता ह्रीं शक्तिः, श्रीं बीजं महामृत्युञ्जयप्रीतये ममाभीष्टसंसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः। ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः त्र्यम्बकं ॐ नमो भगवते रुद्राय शूलपाणये स्वाहा हृदयाय नमः।। ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः यजामहे ॐ नमो भगवते रुद्राय अमृतमूर्तये मां जीवय शिरसि स्वाहा।। ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनं ॐ नमो भगवते रुद्राय चन्द्रशिरसि जटिने स्वाहा शिखायै वषट्।। ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः उर्वारुकमिव बन्धनात् ॐ नमो भगवते रुद्राय त्रिपुरान्तकाय हां हीं हौं कवचाय हुं।। ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः मृत्योर्मुक्षीय ॐ नमो भगवते रुद्राय त्रिलोचनाय ऋग्यजुःसाममन्त्राय नेत्रत्राय वौषट्।। ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः मामृतात् ॐ नमो भगवते रुद्राय अग्नित्रयाय उज्वलज्वाल मां रक्ष रक्ष अघोराय अस्त्राय फट्।। इति षडङ्गन्यासः।। त्र्यम्बकं शिरसि। यजामहे भ्रुवोः। सुगन्धिं नेत्रयोः। पुष्टिवर्द्धनं मुखे। उर्वारुकं गण्डयोः। इव हृदये।। बन्धनात् जठरे।। मृत्योः लिङ्गे।। मुक्षीय उर्वोः।। मां जान्वोः। अमृतात् पादयोः।। इति पदन्यासः।। मूलेनव्यापकं कृत्वा धयानं कुर्यात् **अथध्यानम्** - हस्ताम्भोजयुगस्थकुम्भयुगलादुद्धृत्य तोयं शिरः। सिञ्चन्तं करयोर्युगेन दधतं स्वाङ्के सकुम्भौ करौ।। अक्षस्रङ्मृगहस्तमम्बुजगतं मूर्द्धस्थचन्द्रस्रवत्पीयूषार्द्रतनुं भजे सगिरिजं मृत्युञ्जयं त्र्यम्बकम्।।१।। चन्द्रोद्भासितमूर्द्धजं सुरपतिं पीयूषपात्रं वहद्धस्ताब्जेनदधत्सुदिव्यममलहास्यास्यपङ्केरुहम्।। सूर्येन्द्वग्निविलोचनं करतलैः पाशाक्षसूत्रं कुशाम्भोजं बिभ्रतमक्षयं पशुपतिं मृत्युञ्जयं संस्मरेत्।। मानसोपचारैः संपूज्य, ॐ लं पृथिव्यात्मकं गन्धं समर्पयामि। ॐ हं आकाशात्मकं पुष्पं समर्पयामि। ॐ यं वय्वात्मकं धूपं समर्पयामि। ॐ रं तैजसात्मकं दीपं समर्पयामि। ॐ वं अमृतात्मकं नैवेद्यं समर्पयामि। ॐ सं सर्वात्मकं मन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि। मन्त्र जपेत्। मन्त्रः - ॐ हौं ॐ जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनम्। ऊर्वारुकमिवबन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतात् ॐ भूर्भुवः स्वरों जूं सः हौं ॐ।। ततपोजपान्तरं देवदक्षिणकरे जपं समर्पयेत्।। गुह्यातिगुह्यगोप्तात्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम्। सिद्धिर्भवतु मे देव त्वत्प्रसादान् महेश्वर।। मृत्युञ्जयमहारुद्र त्राहि मां शरणागतम्। जन्ममृत्युजरारोगैः पीडितं कर्मबन्धनैः।। अनेन महामृत्युञ्जयजपाख्येन कर्मणा श्रीमहामृत्युञ्जयः प्रीयतां न मम।।

स्थान नाम	अक्षांश	रेखांश
अकोला, महाराष्ट्र	20.42 उ.	77.02 पू.
अक्याब (सित्वे), बर्मा	20.09 उ.	92.57 पू.
अंकलेश्वर, गुजरात	21.38 उ.	73.02 पू.
अंकारा, तुर्की	39.57 उ.	32.54 पू.
अगरतला, त्रिपुरा	23.50 उ.	91.16 पू.
अजमेर, राजस्थान	26.27 उ.	74.42.पू.
अजंता, महाराष्ट्र	20.33 उ.	75.48.पू.
अदन, दक्षिण यमन	12.45 उ.	45.04.पू.
अनंतनाग, ज. और क.	33.43 उ.	75.17.पू.
अनुराधापुर, श्री लंका	8.22 उ.	80.23.पू.
अन्नपूर्णा शिखर, नेपाल	28.35 उ.	83.57 पू.
अबादान, ईरान	30.20 उ.	48.16 पू.
अबिदजान, आइवरी कोस्ट	5.19 उ.	04.02 पू.
अबोहर, पंजाब	30.08 उ.	74.12.पू.
अमरावती, महाराष्ट्र	20.56 उ.	77.48 पू.
अमृतसर, पंजाब	31.37 उ.	74.55 पू.
अम्बाला, हरियाणा	30.21 उ.	76.52 पू.
अम्मान, जार्डन	31.57 उ.	35.56.पू.
अराकान योमा, बर्मा	20.00 उ.	94.20.पू.
अरारात पर्वत, तुर्की	39.42 उ.	44.35 पू.
अरावली, प.मा., राजस्थान	25.00 उ.	73.10 पू.
अर्कनसास, यू.एस.ए.	38.20 उ.	100.00पू.
अलवए, केरल	10.07 उ.	76.24 प.
अलवर, राजस्थान	27.34 उ.	76.38 पू.
अलाबामा, यू.एस.ए	31.15 उ.	87.45 पू.
अलीबाग, महाराष्ट्र	18.39 उ.	72.55 प.
अलेघो, सीरिया	36.10 उ.	37.00 पू
अल्जियर्स, अल्जीरिया	36.50 उ.	03.00 पू.
अल्ताई प.मा.,एशिया	48.00 उ.	90.00 पू
अल्मा आटा, यू.एस.एस.आर.	43.12 उ.	76.45 पू.
अल्मोड़ा, उत्तर प्रदेश	29.37 उ.	79.40 पू
असाई, महाराष्ट्र	20.15 उ.	76.58 पू.
असेन्शन द्वीप, अंध महासागर	07.57 उ.	14.28 पू.
अस्त्रखान, यू.एस.एस.आर.	46.15 उ.	48.04 प.
अहमदाबाद, गुजरात	23.03 उ.	72.40 पू
अँदिस अबाबा, इथीयोपिया	09.02 उ.	38.44 पू.
अॅटलांटा, यू.एस.ए.	33.45 उ.	84.21 पू.
अॅपलेशियन प.मा., यू.एस.ए.	38.00 उ.	80.00 प.
अॅमस्टरडम,नेदरलैंड	52.23 उ.	04.53 प.
आईजोल, मिजोरम	23.36 उ.	93.00 पू.
आगरा, उत्तर प्रदेश	27.10 उ.	78.05 पू.
आदम शिखर, श्री लंका	06.49 उ.	80.30 पू.
आनंद, गुजराज	22.32 उ.	73.00 पू.
आबू, राजस्थान	24.40 उ.	72.45 पू.
आस्वान, मिश्र	24.53 उ.	32.57 पू.
आर्केंजल, यू.एस.एस.	64.33 उ.	40.33 पू.
आल्प्स प.मा., यूरोप	46.00 उ.	07.00 पू.
आसनसोल, प.बंगाल	23.42 उ.	87.01 पू.
ऑकलैंड, न्यूजीलैंड	36.52 उ.	174.42 पू.
ऑस्लो, नॉर्वे	59.54 उ.	10.45 पू.
इटारसी, मध्य प्रदेश	22.30 उ.	77.55 पू.
इन्दौर, मध्य प्रदेश	22.44 उ.	75.50 पू.
इर्कुतस्क, यू.एस.एस.आर.	52.36 उ.	104.10 पू.
इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश	25.28 उ.	81.54 पू.
इस्तंबुल, तुर्की	41.00 उ.	29.00 पू.
इस्फहान, ईरान	32.37 उ.	51.38 पू.
इस्लामाबादा, पाकिस्तान	33.44 उ.	73.10 पू.
इम्फाल, मणिपुर	24.44 उ.	93.58 पू.
ईरी झील, उत्तर अमेरिका	47.59 उ.	106.52 पू.
उज्जैन, मध्य प्रदेश	23.09 उ.	75.43 पू.
उटाकमंड, तमिलनाडु	11.24 उ.	76.44 पू.
उदयपुर, राजस्थान	27.43 उ.	75.33 पू.
उपसाला, स्वीडन	59.50 उ.	17.45 पू.
उरुम्ची, चीन	43.49 उ.	87.39 पू.
उस्मानाबाद,महाराष्ट्र	18.08 उ.	76.06 पू.
उलानबातोर, मंगोलिया	47.59 उ.	106.52 पू.
उल्हास नगर, महाराष्ट्र	19.13 उ.	73.07 पू.
उक्रेन, यू.एस.एस.आर.	49.00 उ.	33.00 पू.
उधमपुर, ज. और क.	32.55 उ.	75.07 पू.
एक्रा, घाना	05.31 उ.	0.15 पू.
एटलस प.मा., अफ्रीका	33.00 उ.	05.00 प.
एडिनबरा, यू.के.	55.56 उ.	03.12 प.
एडिलेड, द. ऑस्ट्रेलिया	35.57 द.	138.38 पू.
एंडीज प.मा., द. अमेरिका	20.00 द.	68.00 प.
एपेनाइन, इटली	43.00 उ.	13.00 पू.
एबरडीन, यू.के	57.09 उ.	02.05 पू.
एबटाबाद, पाकिस्तान	34.09 उ.	73.15 पू.
एर्नाकुलम, केरल	10.00 उ.	76.15 पू.
एलब्रुज प., यू.एस.एस.आर.	43.23 उ.	42.27 पू.
एलरु, आन्ध्र प्रदेश	16.43 उ.	81.09 पू.
एलोरा, महाराष्ट्र	20.02 उ.	75.13 पू.
एवरेस्ट शिखर, नेपाल	28.05 उ.	86.58 पू.
ऐर्जेरूम, तुर्की	39.55 उ.	41.10 पू.
ओक्लाहोमा सिटी, यू.एस.ए.	35.29 उ.	97.31 पू.
ओटावा, कैनेडा	45.27 उ.	75.42 प.
ओडेसा, यू.एस.एस.आर.	46.27 उ.	30.48 प.
ओटेरियो झी, उत्तर अमेरिका	43.40 उ.	78.00 पू.
ओमान, अरब	23.30 उ.	57.00 प.
ओम्स्क, यू.एस.एस.आर.	55.00 उ.	73.38 पू.
ओसाका, जापान	34.40 उ.	135.27पू.
ओहियो, यू.एस. ए.	40.20 उ.	82.00 पू.
ओरनबर्ग, यू.एस.एस.आर.	54.46 उ.	55.07 प.
ओरलीन्स, फ्रांस	47.54 उ.	10.45 प.
औरंगाबाद, महाराष्ट्र	19.53 उ.	75.23 पू.
कड़प्पा, आंध्र प्रदेश	14.28 उ.	78.52 पू.
कण्णूर, केरल	11.52 उ.	75.25 पू.
कंधार, अफगानिस्तान	31.37 उ.	65.30 पू.
कपूरथला, पंजाब	31.23 उ.	75.25 पू.
कम्पाला, उगंडा	00.19 उ.	32.25 पू.
करनाल, हरियाणा	29.42 उ.	77.02 पू.
करमान, ईरान	30.17 उ.	57.05 पू.
कराकोरम प.मा., एशिया	36.10 उ.	75.00 पू.
कराची, पाकिस्तान	24.51 उ.	67.04 पू.
करीमनगर, आंध्र प्रदेश	18.28 उ.	79.06 पू.
कर्णफूली कुंड, बांग्लादेश	22.55 उ.	91.50 पू.
कलकत्ता, पं.बंगाल	22.34 उ.	88.24 पू.
कलात, पाकिस्तान	25.02 उ.	64.03 पू.
कलाहंडी, उड़ीसा	19.40 उ.	83.00 पू.
कलिनिग्राड, यू.एस.एस.आर.	54.43 उ.	20.30 पू.
काकीनाडा, आंध्र प्रदेश	16.57 उ.	82.15 पू.
काठमांडू, नेपाल	27.42 उ.	85.12 पू.
काबुल, अफगानिस्तान	34.30 उ.	69.18 पू.
कानपुर, उत्तर प्रदेश	26.28 उ.	80.24 पू.
कांचीपुरम्, तमिलनाडु	12.00 उ.	79.45 पू.
कामेट शिखर, उत्तर प्रदेश	30.56 उ.	79.36 पू.
कारिकल, तमिलनाडु	10.55 उ.	79.52 पू.
कार्पेथियन प.मा., यूरोप	49.00 उ.	22.30 पू.
काशगर, चीन	39.20 उ.	74.04 पू.
काहिरा, मिश्र	30.03 उ.	31.15 पू.
काँकेशस प.मा., प. एशिया	43.00 उ.	44.00 पू.
किजिलकुम मरुभूमि, यू.एस.एस.आर.	42.00 उ.	64.44 पू.
कंचनजंगा शिखर, नेपाल	27.53 उ.	88.11 पू.
कशिासा, जेयर	04.18 उ.	15.18 पू.
किसनगनी, जेयर	00.30 उ.	25.10 पू.
कीव, यू.एस.एस.आर.	50.28 उ.	30.11 पू.
कुआलालमपुर, मलेशिया	33.11 उ.	01.40 पू.
कुइबिशेव, यू.एस.एस.आर.	53.10 उ.	50.10 पू.
कुंमिंग, चीन	25.02 उ.	102.42पू.
कुंभकोनम, तमिलनाडु	10.59 उ.	79.24 पू.
कुमारी अंतरीप, भारत	08.04 उ.	77.36 पू.
कुमिल्ला, बांग्लादेश	23.25 उ.	91.13 पू.
कुष्टिया, बांग्लादेश	23.25 उ.	89.10 पू.
कुवैत, प. एशिया	28.59 उ.	47.52 पू.
कूचबिहार, प. बंगाल	26.20 उ.	89.29 पू.
कृष्णनगर, प. बंगाल	23.25 उ.	89.30 पू.
केगल्ला, श्री लंका	07.15 उ.	80.20 पू.
केडिज, स्पेन	36.32 उ.	06.17 पू.
के2 शिखर, भारत	35.30 उ.	76.32 पू.
केपटाउन, द. अफ्रीका	33.56 उ.	18.25 पू.
कैम्बलपुर, पाकिस्तान	33.47 उ.	72.23 पू.
कैनबरा, ऑस्ट्रेलिया	35.17 उ.	149.18पू.
कैंडी, श्री लंका	07.18 उ.	80.40 पू.
कांसास सिटी, यू. एस. ए.	39.05 उ.	94.35 पू.
कैलाश शिखर. भारत	28.33 उ.	77.16 प.
कोचीन, केरल	09.58 उ.	76.17 पू.
कोटा, राजस्थान	25.10 उ.	75.52 पू.
कोट्टयम्, केरल	09.36 उ.	76.34 पू.
कोणार्क,ओडिशा	19.53 उ.	86.08 पू.
कोपनहेगन, डेनमार्क	55.40 उ.	12.30 पू.
कोबे, जापान	34.41 उ.	135.12पू.
कोयमुतुर, तमिलनाडु	11.00 उ.	77.00 पू.
कोरपुट ओडिशा	18.48 उ.	82.41 पू.
कोलंबो, श्री लंका	06.56 उ.	79.56 पू.
कोलार स्वर्ण खदान, कर्नाटक	12.55 उ.	78.17 पू.
कोल्लम, केरल	08.54 उ.	76.38 पू.
कोल्हापुर, महाराष्ट्र	16.42 उ.	74.16 पू.
कोहाट, पाकिस्तान	33.35 उ.	71.29 पू.
कोहिमा, नागालैंड	25.40 उ.	94.08 पू.
कांगडा, हिमाचल प्रदेश	32.05 उ.	76.18 पू.
क्वांगचाउ (कैण्टंन), चीन	23.11 उ.	113.14पू.
क्विटो, इक्वेडोर	00.10 द.	78.35 पू.
क्वेटा, पाकिस्तान	30.12 उ.	67.00 प.
क्यूबा,कैरिबियन सागर	22.00 उ.	80.00 पू.
क्यूबेक, कैनेडा	46.83 उ.	71.15 प.
क्यूशू द्वीप, जापान	32.30 उ.	131.00 प.
क्योटो, जापान	35.01 उ.	135.45 पू.
क्राइस्टचर्च, न्यूजीलैंड	43.30 द.	172.40 पू.
क्रीमिया, यू.एस.एस.आर.	45.30 उ.	35.00 पू.
क्रीट द्विप, भूमध्य सागर	35.10 उ.	25.00 पू.
क्रेकऊ, पोलेंड	50.50 उ.	19.50 पू.
क्लीवलैंड ओहियो, यू एस ए	41.28 उ.	81.40 पू.
क्लोन, एफ आर जी	50.56 उ.	06.57 प.
खड्गपुर, प. बंगाल	22.30 उ.	87.20 पू.
खन्ना, पंजाब	30.42 उ.	76.14 पू.
खेमेर प्रजातंत्र, द. एशिया	12.00 उ.	105.00 पू.
खारकोव, यू.एस.एस.आर.	49.53 उ.	36.11 पू.
खारगोन, मध्य प्रदेश	21.50 उ.	75.37 पू.
खार्तुम, सूडान	15.35 उ.	32.35 पू.
खुलना, बांग्लादेश	22.48 उ.	89.37 पू.
खोतान, चीन	37.04 उ.	80.02 पू.
खैरपुर, पाकिस्तान	27.30 उ.	68.60 पू.
गजनी , अफगानिस्तान	33.43 उ.	68.17 पू.
गंगटोक, सिक्किम	27.20 उ.	88.40 पू.
गंगानगर , राजस्थान	29.49 उ.	73.50 पू.
गंगापुर , राजस्थान	26.29 उ.	76.46 पू.
गजंम ,ओडिसा	19.22 उ.	85.06 पू.
गया , बिहार	24.49 उ.	85.01 पू.
गाजा , मिश्र	31.30 उ.	34.27 पू.
गांधीधाम , गुजरात	23.07 उ.	70.10 पू.
गांधीनगर , गुजरात	23.15 उ.	72.45 पू.
गांधी सागर बांध ,मध्य प्रदेश	24.39 उ.	75.41 पू.
गॉले, श्री लंका	06.02 उ.	80.13 पू.
गुजरात, पाकिस्तान	32.26 उ.	74.05 पू.
गुजरांवाला, पाकिस्तान	32.10 उ.	74.14 पू.
घुड़गांव, हरियाणा	28.37 उ.	77.04 पू.
घुंदूर, आन्ध्र प्रदेश	16.18 उ.	80.29 पू.
गुंतकल आंध्र प्रेदश	15.11 उ.	77.25 पू.
गुरदासपुर, पंजाब	32.03 उ.	75.27 पू.
घुलबर्गा, कर्नाटक	17.19 उ.	79.54 पू.
गोधरा, गुजरात	22.45 उ.	73.40 पू.
गोरखपुर, उत्तर प्रदेश	26.45 उ.	83.24 पू.
गोंडल, गुजरात	21.55 उ.	70.52 पू.
घौहाटी, असम	26.11 उ.	91.47 पू.
ग्रनाडा, स्पेन	37.12 उ.	03.37 पू.
ग्रान चाको , द. अमेरिका	23.30 द.	60.00 पू.
ग्रेट बेयर झील, कैनेडा	66.00 उ.	120.00पू.
ग्रेट साल्ट झील, यू एस ए	41.10 उ.	112.30पू.
घ्लोसगो, यू के	55.52 उ.	04.15 पू.
ग्वाटेमाला, मध्य अमेरिका	14.38 उ.	90.22 पू.
ग्वादर पाकिस्तान	25.07 उ.	62.30 पू.
ग्वालियर, मध्य प्रदेश	26.14 उ.	78.10 पू.
चंडीगढ़, संघीय क्षेत्र भारत	30.43 उ.	76.54 पू.
चंद्रपुर, (चांदा), महाराष्ट्र	19.57 उ.	79.21 पू.
चंबा, हिमाचल प्रदेश	32.29 उ.	76.10 पू.
चाइबासा, बिहार	22.33 उ.	85.51 पू.
चालिसगांव, महाराष्ट्र	20.33 उ.	75.10 पू.
चांगशुन, चीन	43.54 उ.	125.20पू.
चांग्शा, चीन	28.09 उ.	112.45पू.
चार्लस्टन, यू एस ए	32.50 उ.	79.58 पू.
चिकबल्लापुर, कर्नाटक	13.26 उ.	77.46 पू.
चित्तरंजन, प. बंगाल	23.50 उ.	87.00 पू.
चित्तूर, आंध्र प्रदेश	13.13 उ.	79.08 पू.
चित्तौरगढ, राजस्थान	24.54 उ.	74.42 पू.
चित्रदुर्ग, कर्नाटक	14.14 उ.	76.26 पू.
चित्राल, पाकिस्तान	35.48 उ.	71.52 पू.
चिटगाँव, बांग्लादेश	22.21 उ.	91.53 पू.
चिंदविन, बर्मा	22.30 उ.	95.00 पू.
चिद्रांबरम्, तमिलनाडु	11.24 उ.	79.44 पू.
चियांग मेई, थाईलैंड	18.50 उ.	98.53 पू.
चिल्का झील, ओडिसा	19.50 उ.	85.30 पू.
चीता, यू.एस.एस.आर.	53.10 उ.	113.40पू.
चुंकिंग, चीन	29.30 उ.	106.50पू.
चुरू, राजस्थान	28.18 उ.	74.01 पू.
चेदुबा, बर्मा	18.40 उ.	93.30 पू.
चेरापुंजी, मेघालय	25.17 उ.	91.47 पू.
चैनेल द्वीप, यू के	49.30 उ.	02.30 पू.
छतरपुर, मध्य प्रदेश	24.54 उ.	79.38 पू.
छपरा, बिहार	25.47 उ.	84.47 पू.
छिंदवाड़ा, मध्य प्रदेश	22.03 उ.	78.59 पू.
जकार्ता (इन्डोनेशिया)	06.12 उ.	106.50पू.
जबलपुर मध्यप्रदेश	23.10 उ.	79.59 पू.
जंजीबार अफ्रिका	05.00 उ.	38.30 पू.
जमखंडी कर्नाटक	60.30 उ.	75.20 पू.
जमशेदपुर बिहार	22.50 उ.	86.10 पू.
जमालपुर बिहार	25.19 उ.	86.32 पू.
जमैका बेस्ट इण्डीज	18.00 उ.	77.00 पू.
जेनेवा स्विटजरलैंड	46.13 उ.	06.07 प.
जयपुर राज.	26.55 उ.	75.52 पू.
जरुसलम पश्चिम एशिया	31.40 उ.	33.14 पू.
जलपाईगुड़ी पश्चिम बंगाल	26.32 उ.	88.46 पू.
जाग्रेव युगोस्लाविया	45.50 उ.	16.00 पू.
जाफना श्रीलंका	09.17 उ.	79.57 पू.
जामनगर गुजरात	22.27 उ.	70.07 पू.
जालंधर पंजाब	31.19 उ.	75.18 पू.
जार्जटाऊन गुयाना	06.50 उ.	58.12 पू.
जाहिदान ईरान	29.34 उ.	60.58 प.
जिबूटी अफ्रिका	11.34 उ.	43.09 पू.
जिब्राल्टर ब्रि.स्पेन	36.08 उ.	05.19 पू.
जींद हरियाणा	29.19 उ.	76.23 प.
जूनागढ गुजरात	21.31 उ.	70.36 पू.
जेकबाबाद पाकिस्तान	28.17 उ.	68.29 पू.
जेनोआ इटली	44.25 उ.	08.57 पू.
जैसलमेर राज.	26.55 उ.	70.57 पू.
जैसोर बांग्लादेश	23.10 उ.	89.10 पू.
जोधपुर राज.	26.18 उ.	73.04 पू.
जोरहाट असम	26.46 उ.	94.16 पू.
जोहान्सवर्ग द.अफ्रिका	26.13 द.	28.56 पू.
ज्यूरिख स्विटजरलैड	47.26 उ.	08.22 पू.
झरिया बिहार	23.50 उ.	86.33 पू.
झाबुआ मध्यप्रदेश	22.45 उ.	74.38 पू.
झालावाड.	24.37 उ.	76.12 पू.
झांसी उत्तरप्रदेश	25.27 उ.	78.37 पू.
झुंझुनु राज.	28.06 उ.	75.25 पू.
टिबकटू माली	16.45 उ.	02.55 पू.
टिराना अल्बानिया	41.20 उ.	19.50 पू.
टीकमगढ़ मध्यप्रदेश	24.45 उ.	78.53 पू.
टुलाँ फ्रांस	43.08 उ.	05.56 पू.
टूर फ्रांस	47.24 उ.	00.42 पू.
टेब्रिज ईरान	38.02 उ.	46.20 पू.
टैंजियर मोराक्को	35.49 उ.	05.52 पू.
टोकियो जापान	35.40 उ.	138.45पू.
टेबेगो वेस्ट इंडीज	11.15 उ.	60.40 प.
टोम्स्क यू एस एस आर	56.30 उ.	85.12 पू.
टोरांटो कैनेडा	43.39 उ.	79.20 पू.
टोंक राजस्थान	26.11 उ.	75.50 पू.
ट्यूनिस ट्यूनिसिया	36.49 उ.	10.10 पू.

ट्रिएस्ट इटली	45.35	उ.	13.45	पू.	त्रिशूर केरल	10.30	उ.	76.15	पू.	निकोबार द्वी.हिंदमहासागर	08.00	उ.	94.00	पू.	पर्नाम्बुको ब्राजील	09.09	उ.	34.47	प.	फगवाड़ा पंजाब	31.13	उ.	75.47	पू.	बसीन बर्मा	16.54	उ.	94.50	पू.	बेलगांव कर्नाटक	15.52	उ.	74.34	पू.
ट्राहीम नार्वे	63.26	उ.	10.24	पू.	थिम्पू भूटान	27.32	उ.	89.53	पू.	निकोशिया साइप्रेस	35.10	उ.	33.23	पू.	पलिताना गुजरात	21.31	उ.	71.53	पू.	फरीदकोट पंजाब	30.40	उ.	74.57	पू.	बस्तर मध्यप्रदेश	19.10	उ.	81.30	पू.	बेलग्राड यूगोस्लाविया	44.50	उ.	20.30	पू.
ट्रिनिडैड बेस्ट इंडीज	10.30	उ.	16.00	पू.	दमन गो.द.दी.	20.25	उ.	72.53	पू.	नीलगिरी तमिलनाडु	11.24	उ.	76.47	पू.	प्लेमबंग सुमात्रा	03.00	उ.	104.39	पू.	फरुखाबाद उत्तरप्रदेश	27.24	उ.	79.37	पू.	बस्ती उत्तरप्रदेश	26.48	उ.	82.46	पू.	बेलिलुंगदीप इंडोनेशिया	02.30	द.	108.00	पू.
ट्रेपोली लिबिया	32.45	उ.	13.15	पू.	दमश्क सीरिया	33.30	उ.	36.14	पू.	नूबियन मरुभूमि अफ्रिका	21.00	उ.	34.00	पू.	पाकले लाओस	18.10	उ.	101.24	प.	फाजिल्का पंजाब	30.25	उ.	74.04	पू.	बहावलपुर पाक.	28.24	उ.	71.47	पू.	बेसीन महाराष्ट्र	19.22	उ.	77.12	पू.
डगलस यू.के.	54.12	उ.	04.25	प.	दर-ए-सलाम तंजानिया	06.50	उ.	39.17	पू.	नूरेनबर्ग एक आर जी	49.27	उ.	11.05	पू.	पाँक स्ट्रेट भारत श्रीलंका	10.00	उ.	80.00	पू.	फाजिल्का पंजाब	30.25	उ.	74.04	पू.	बहामा द्वी.सं. वेस्ट इंडीज	23.00	उ.	74.00	प.	बैंकाक थाईलैंड	13.43	उ.	100.31	पू.
डंडी यू.के	56.29	उ.	03.00	पू.	दादरा और नगर हवेली भारत	20.10	उ.	73.00	पू.	नेगेंबो श्रीलंका	07.12	उ.	79.50	पू.	पाटन गुजरात	23.52	उ.	72.10	पू.	फाँकलैंड अमेरिका	51.45	उ.	59.00	प.	बहारेन प. एशिया	26.00	उ.	50.30	पू.	बैट्रुमबंग खमेर प्रजातंत्र	13.06	उ.	103.13	पू.
डब्लिन आयरिश प्रजातंत्र	53.20	उ.	06.15	पू.	दार्जिलिंग प.बंगाल	27.03	उ.	88.18	प.	नेटाल द.अफ्रिका	29.00	उ.	30.30	पू.	पानीपत हरियाणा	29.23	उ.	77.01	पू.	फिजी द्वीप प्रशांत महासागर	16.00	द.	180.00	पू.	बाकू यूएस ए आर	40.22	उ.	49.51	पू.	बैरनद्वीप अलास्का	58.45	उ.	152.00	प.
डरबन द.अफ्रिका	29.52	द.	31.01	पू.	दिल्ली भारत	28.37	उ.	77.10	पू.	नेत्रकोना बांग्लादेश	24.53	उ.	90.47	पू.	पाँडिचेरी पा.	11.56	उ.	79.53	पू.	फिरोजपुर पंजाब	30.55	उ.	74.70	पू.	बांकुड़ा पं.बंगाल	23.14	उ.	87.67	पू.	बोगरा बांग्लादेश	24.51	उ.	89.26	पू.
डाकार सैनगल	14.40	उ.	17.26	पू.	दीव गो.द.दी.	20.42	उ.	71.01	पू.	नेपल्स इटली	40.51	उ.	14.26	पू.	पांडु असम	26.10	उ.	91.42	पू.	फिलडिलफिया यू.एस.ए	39.57	उ.	75.10	प.	बागलकोट कर्नाटक	16.12	उ.	75.45	पू.	बोरसद गुजरात	22.25	उ.	72.54	पू.
डार्विन आस्ट्रेलिया	12.30	उ.	31.00	पू.	देहरादून उत्तरप्रदेश	30.19	उ.	78.04	प.	नेफूद मरुभूमि साउदी	28.30	उ.	41.00	पू.	पाबना बांग्लादेश	24.01	उ	89.18	पू.	फुचाउ चीन	26.26	उ.	119.19	पू.	बाडन एफ आर जी	48.45	उ.	08.15	पू.	बोस्टन यूएस ए	42.21	उ.	71.04	प.
डिबूगढ असम	27.29	उ.	94.58	पू.	द्वारका गुजरात	22.14	उ.	69.01	पू.	नेब्रास्का राज्य यूएसए	41.30	उ.	100.00	प.	पार्श्वनाथ बिहार	24.00	उ.	86.11	पू.	फ्रेंच मोराक्को	34.08	उ.	05.06	पू.	बाथर्स्ट गंबिया	13.28	उ.	16.40	पू.	बोर्डो फ्रांस	44.50	उ.	00.34	प.
डीजाँ फ्रांस	47.20	उ.	05.03	पू.	दरभंगा बिहार	26.10	उ.	58.14	पू.	नेल्लूर आन्ध्र प्रदेश	14.27	उ.	80.02	पू.	पालघाट केरल	10.46	उ.	76.42	पू.	फेयरबैक्स अलास्का	64.59	उ.	148.10	प.	बांडुगु इंडोनेशिया	06.54	उ.	107.36	प.	बोलंगीर उड़ीसा	20.40	उ.	83.30	पू.
डुआला कैमरुन	04.05	उ.	09.40	पू.	धनबाद बिहार	23.47	उ.	86.30	पू.	नेवादा राज्य यूएसए	40.00	उ.	120.00	प.	पालनपुर गुजरात	24.12	उ.	72.28	प.	फैजाबाद उत्तरप्रदेश	26.47	उ.	82.12	पू.	बांदा उत्तरप्रदेश	25.20	उ.	80.22	पू.	बोलान दर्रा पाक.	29.40	उ.	67.36	पू.
डेनवेर यू.एस.ए.	39.45	उ.	105.00	पू.	धनुषकोडि तमिलनाडु	09.10	उ.	79.28	प.	नैनकिंग चीन	32.07	उ.	118.47	पू.	पालामउ बिहार	23.52	उ.	84.17	पू.	फैरोज द्वी. अंधमहासागर	62.00	उ.	07.00	प.	बारामूला ज.और क.	34.10	उ.	74.30	पू.	बाँन एफ आर जी	50.44	उ.	07.04	पू.
डेट्रायट यू.एस.ए.	42.21	उ.	83.03	पू.	धारवाड़ कर्नाटक	15.27	उ.	75.05	पू.	नैनीताल उत्तरप्रदेश	29.23	उ.	79.30	पू.	पाली राज.	25.46	उ.	73.25	पू.	फोरालवर्ग आस्ट्रेलिया	47.13	उ.	10.00	पू.	बालाघाट मध्यप्रदेश	21.48	उ.	80.15	पू.	ब्रसेल्ज	50.52	उ.	04.22	पू.
डेल्प द्वी. श्रीलंका	09.30	उ.	79.40	पू.	ध्रागध्रा गुजरात	22.59	उ.	71.31	पू.	नैट्ज फ्रांस	47.13	उ.	01.32	प.	प्लाईमथ यूके.	50.22	उ.	04.07	पू.	फ्रीमेंटल आस्ट्रेलिया	32.05	उ.	114.40	पू.	बाली द्वी. इंडोनेशिया	08.20	उ.	115.00	पू.	ब्राइटन यू.के.	50.50	उ.	00.10	प.
डेराइस्माईल खाँ पाक.	31.51	उ.	70.56	पू.	धौलपुर राज.	26.42	उ.	77.53	पू.	नैरोबी कीनिया	01.18	द.	36.52	पू.	पिट्सबर्ग यूएसए	40.26	उ.	79.57	पू.	फ्रैंकफर्ट एफ.आर.जी	50.06	उ.	08.40	पू.	बाली पं.बंगाल	22.39	उ.	88.21	पू.	ब्राह्मणबेरिया बांग्लादेश	23.59	उ.	91.07	पू.
डेरागांजी खाँ पाक.	30.04	उ.	70.49	पू.	धौलागिरि नेपाल	28.42	उ.	83.31	पू.	नोवगोरोढ़ यूएसएसआर	58.33	उ.	31.20	प.	पिट्रोवपलोस्क यूएसएसआर	53.16	उ.	159.00	पू.	फ्रुंज यू.एस.एस.आर	42.54	उ.	74.36	पू.	बालेश्वर उड़ीसा	21.30	उ.	86.54	पू.	बैजबिल जेयर	04.15	द.	15.20	पू.
डैनसिंग पोलैंड	54.20	उ.	18.45	पू.	धुले महाराष्ट्र	20.58	उ.	74.47	पू.	नोवाअ जिमलिया यूएसए	73.00	उ.	55.00	पू.	पीकिंग चीन	39.55	उ.	116.24	पू.	फ्लोरिडा यू.एस.ए	27.00	उ.	82.00	पू.	बाल्टीमोर ए एस ए	39.18	उ.	76.37	प.	ब्रिडीजी इटली	40.38	उ.	18.00	पू.
डोवर यू.के.	51.08	उ.	01.15	पू.	नखोदका यूएसएस आर	43.10	उ.	132.45	पू.	नोशाटेल स्विट्जरलैंड	46.59	उ.	06.56	पू.	पीडमांट इटली	45.00	उ.	08.00	पू.	फ्यूजीसान शिखर जापान	35.21	उ.	138.43	पू.	बांसवाड़ा राज.	23.30	उ.	74.24	पू.	ब्रिस्वेन आस्ट्रेलिया	27.30	द.	153.00	पू.
ढाका बांग्लोदेश	23.42	उ.	90.26	पू.	नगोया जापान	35.10	उ.	136.55	पू.	नाटिघम यू.के.	49.40	उ.	01.08	पू.	पुदुकोट्टाई तमिलनाडु	10.23	उ.	78.52	पू.	बगदाद ईराक	33.20	उ.	44.27	पू.	वाडमेर राज.	25.45	उ.	71.23	पू.	ब्रिस्टल यू.के.	51.27	उ.	02.35	पू.
ढेकनाल उड़ीसा	20.40	उ.	85.38	प.	नडियाद गुजरात	22.41	उ.	72.55	पू.	नार्थम्पटन यू.के.	52.14	उ.	00.55	पू.	पुत्तलम श्रीलंका	08.02	उ.	79.50	प.	बटाला पंजाब	31.49	उ.	75.14	पू.	बिलासपुर मध्यप्रदेश	22.05	उ.	82.13	पू.	ब्रुनेई बोर्नियो	04.55	उ.	114.57	पू.
तानानारीव मैलागेसी	18.58	द.	47.30	पू.	नलगोंडा आध्र प्रदेश	17.03	उ.	79.02	पू	नंगल पंजाब	31.23	उ.	76.23	पू.	पुनाखा भूटान	27.32	उ.	89.53	पू.	बटान द्वी.प्रशांत महासागर	20.25	उ.	121.59	पू.	बिलासपुर हिमाचलप्रदेश	31.19	उ.	76.50	पू.	भटिंडा पंजाब	30.11	उ.	75.00	पू.
तनासरिम बर्मा	12.06	उ.	99.03	पू.	नवद्वीप पं.बंगाल	23.24	उ.	88.23	पू.	नंगा पर्वत पाक.	35.20	उ.	74.40	पू.	पुंछ ज.और क.	33.51	उ.	74.08	पू.	बड़ोकलोआ श्री लंका	07.43	उ.	81.44	पू.	बिल्बाओ स्पेन	43.16	उ.	02.56	प.	भंडारा महाराष्ट्र	21.09	उ.	79.42	पू.
तंजाउर तमिलनाडु	10.47	उ.	79.10	पू.	नवलगढ़ राज.	27.51	उ.	75.18	पू.	नंदा देवी भारत	30.23	उ.	80.01	पू.	पुरी उड़ीसा	19.48	उ.	85.52	पू.	बड़ोदरा गुजरात	22.00	उ.	73.16	पू.	बीकानेर राज.	28.01	उ.	73.22	पू.	भद्रावती कर्नाटक	13.52	उ.	75.40	पू.
तन्नुओला यु.एस.एस.आर.	51.00	उ.	91.00	पू.	नवसारी गुजरात	21.07	उ.	73.40	पू.	न्यू ओरलींज यूएसए	30.00	उ.	90.01	पू.	पुरुलिया प.बंगाल	23.20	उ.	86.25	पू.	बादामी कर्नाटक	15.55	उ.	75.45	पू.	बीजापुर कर्नाटक	16.50	उ.	75.47	पू.	भरतपुर राज.	27.15	उ.	77.30	पू.
तलाई मन्नार श्रीलंका	09.10	उ.	79.40	पू.	नसीराबाद राज.	26.18	उ.	74.46	पू.	न्यू कासल आस्ट्रेलिया	33.00	उ.	151.40	प.	पुणे महाराष्ट्र	18.31	उ.	73.55	पू.	बदुल्ला श्रीलंका	06.59	उ.	81.05	पू.	बीदर कर्नाटक	17.57	उ.	77.39	पू.	भड़ोच गुजरात	21.41	उ.	73.01	पू.
तवांग अरुणाचलप्रेदश	27.33	उ.	91.48	पू.	नाइस फ्रांस	43.41	उ.	07.18	पू.	न्यूरेलिया श्रीलंका	06.59	उ.	80.47	पू.	पूर्णिया बिहार	25.49	उ.	87.31	पू.	बन्नू पाक.	32.00	उ.	70.39	पू.	बीड़ महाराष्ट्र	19.00	उ.	75.50	पू.	भागलपुर बिहार	25.15	उ.	87.02	पू.
तक्षशिला पाक.	33.40	उ.	72.50	पू.	नागदा मध्यप्रदेश	23.30	उ.	75.29	पू.	न्यूयॉर्क यूएसए	40.43	उ.	74.01	पू.	पूसान द.कोरिया	35.07	उ.	129.02	पू.	बंगलौर कर्नाटक	12.58	उ.	77.38	पू.	बुखारा यूएस एसआर	39.52	उ.	64.30	पू.	भाटापारा पं.बंगाल	22.54	उ.	88.25	पू.
ताइपे ताईवान	25.02	उ.	121.30	पू.	नागपतनम् तमिलनाडु	10.46	उ.	79.53	पू.	न्यू हेवन यूएसए	41.20	उ.	72.54	प.	पगू बर्मा	17.20	उ.	96.25	पू.	बूंबई महाराष्ट्र	18.55	उ.	72.54	पू.	बुखारेस्ट रुमानिया	44.25	उ.	26.07	पू.	भामो बर्मा	24.16	उ.	97.17	पू.
ताशकंद यु.एस.एस.आर.	41.30	उ.	69.20	प.	नागपुर महाराष्ट्र	21.09	उ.	79.09	पू.	पओशान चीन	25.13	उ.	99.17	पू.	पेपुआ की खांडी पेपुआ	07.00	द.	146.00	पू.	बरनाला पंजाब	30.26	उ.	75.33	पू.	बुडापेस्ट हंगरी	47.29	उ.	19.03	पू.	भावनगर गुजरात	21.46	उ.	72.11	पू.
तिरुचिरापल्ली तमिलनाडु	10.50	उ.	78.46	पू.	नागरकोउल तमिलनाडु	08.11	उ.	77.29	पू	पंचमढ़ी	22.30	उ.	78.22	पू.	पेनांग मलाया	05.25	उ.	100.14	पू.	बरमिंघम यू.के.	52.30	उ.	01.50	प.	बुरहानपुर मध्यप्रदेश	21.17	उ.	76.16	पू.	भिंड मध्यप्रदेश	26.35	उ.	78.46	पू.
तिरुपति आन्ध्रप्रदेश	13.40	उ.	79.20	पू.	नागासाकी जापान	32.47	उ.	129.52	पू.	पटकई प.मा. असम	27.00	उ.	95.30	पू.	पेरिस फ्रांस	48.50	उ.	02.20	पू.	बरमूडा द्वी. अंधमहासागर	32.19	उ.	64.45	प.	बुरुंडी अफ्रिका	03.05	द	30.00	पू.	भिलवाड़ा राज.	25.21	उ.	74.40	पू.
तिरुनेलवेली तमिलनाडु	08.44	उ.	77.44	प.	नाभा पंजाब	30.25	उ.	76.09	पू.	पटना बिहार	25.37	उ.	85.13	पू.	पोखरा नेपाल	28.17	उ.	83.58	पू.	बरहमपुर उड़ीसा	19.18	उ.	84.51	पू.	बुलंदशहर उत्तरप्रदेश	28.24	उ.	77.54	पू.	भिवानी हरियाणा	28.46	उ.	76.18	पू.
तूतिकोरन तमिलनाडु	08.48	उ.	78.11	पू.	नांदेड़ महाराष्ट्र	19.09	उ.	77.27	पू.	पटियाला पंजाब	30.20	उ.	76.25	पू.	पोट्सडम जी.डी.आर.	52.24	उ.	13.45	पू.	बरहमपुर पं.बंगाल	24.06	उ.	88.19	पू.	बूदी राज.	25.27	उ.	75.41	पू.	भुज गुजरात	23.15	उ.	69.49	पू.
तेजपुर असम	26.37	उ.	92.50	पू.	नामचा बरबा प. चीन	29.38	उ.	94.04	पू.	पटुआखाली बांग्लादेश	22.20	उ.	90.22	प.	पोरबंदर गुजरात	21.37	उ.	69.49	पू.	बरेली उत्तरप्रदेश	28.22	उ.	79.27	पू.	बेकाल झील यूएसएसआर	54.00	उ.	108.00	पू.	भुसावल महाराष्ट्र	21.02	उ.	75.47	पू.
तेहरान ईरान	35.41	उ.	51.25	पू.	नामपेन कंबोडिया	11.35	उ.	104.57	पू.	पणजी गो.द.दी	15.03	उ.	73.55	पू.	पोर्ट सईद मिश्र	31.16	उ.	32.18	पू.	बर्धमान पं.बंगाल	23.16	उ.	87.54	पू.	बेतिया बिहार	26.48	उ.	84.33	पू.	भुवनेश्वर उड़ीसा	20.15	उ.	85.52	पू.
तैल अवीव इस्राइल	32.04	उ.	34.46	पू.	नारायणगंज बाग्लादेश	23.37	उ.	90.32	पू.	पठानकोट पंजाब	32.17	उ.	75.42	पू.	पोटस्मथ यू.के.	50.47	उ.	01.05	प.	बर्न स्विटजरलैंड	46.55	उ.	07.30	पू.	बेतूल मध्यप्रदेश	21.51	उ.	77.58	पू.	भैरव बाजार बांग्लादेश	24.02	उ.	90.59	पू.
त्रिकोमाली श्रीलंका	08.34	उ.	81.14	प.	नासिक महाराष्ट्र	20.02	उ.	73.50	पू.	पन्ना मध्यप्रदेश	24.44	उ.	80.14	पू.	पोट्रोरीको बेस्ट इंडीज	18.55	उ.	66.20	प.	बर्लिन जीडीआर	52.32	उ.	13.25	पू.	बेन नेबिस यू.के.	56.48	उ.	05.00	प.	भोपाल मध्यप्रदेश	23.16	उ.	77.36	पू.
त्रिपुरा त्रिपुरा	23.45	उ.	91.30	पू.	नाहन हिमाचल प्रदेश	30.33	उ.	77.21	पू.	पंढरपुर महाराष्ट्र	17.41	उ.	75.23	पू.	प्राग चोकोस्लोवेकिया	50.05	उ.	14.25	प.	बल्लारी कर्नाटक	15.09	उ.	76.55	पू.	बेगांजी लीबिया	32.10	उ.	20.10	पू.	मकास्सर सेलीबीज	05.05	द.	119.30	पू.
त्रिवेन्द्रम् केरल	08.29	उ.	76.59	पू.	निकारागुआ मध्य अमेरिका	12.00	उ.	86.00	पू.	पर्थ आस्ट्रेलिया	32.00	उ.	115.50	पू.	प्रिटोरिया द.अफ्रीका	25.45	उ.	28.14	पू.	बसरा ईराक	30.28	उ.	47.51	पू.	बेरुत लैबनान	33.50	उ.	35.25	पू.	मक्का साउदी अरब	21.25	उ.	39.54	पू.

मजार-ए-शरीफ अफगा.	36.41 उ.	67.00 पू.	मिदनापुर पं. बंगाल	22.25 उ.	87.21 पू.	मोरवी गुजरात	22.49 उ.	70.54 पू.	रुआ फ्रांस	49.30 उ.	01.00 पू.	लोयांग चीन	34.40 उ.	112.28 पू.	शान राज्य बर्मा	22.30 उ.	98.00 पू.	सिसिनेटी यूएसए	39.06 उ.	84.31 प.
मडकेरी कर्नाटक	12.26 उ.	75.47 पू.	मिनिकाय द्वी. भारत	08.10 उ.	73.00 पू.	मोमलीन बर्मा	16.30 उ.	97.38 पू.	रुबे फ्रांस	50.42 उ.	03.11 पू.	लुहासा चीन तिब्बत	29.40 उ.	91.05 पू.	शांटुंग चीन	36.00 उ.	118.00 पू.	सिरोही राजस्थान	24.53 उ.	72.54 पू.
मतारा श्रीलंका	05.57 उ.	80.33 पू.	मिंडोरी द्वी.फिलिपाइन्स	13.00 उ.	121.00 पू.	मोसल ईराक	36.50 उ.	43.05 पू.	रेसिफे ब्राजील	08.03 द.	34.54 प.	बेगुसराय बिहार	25.25 उ.	86.08 पू.	शिकागो यूएसए	42.00 उ.	87.40 प.	सिलगढ़ी नेपाल	29.12 उ.	81.06 पू.
माताले श्रीलंका	07.28 उ.	80.37 पू.	मिस्क यूएसएस आर	53.55 उ.	27.35 पू.	म्यूनिख एफआर जी	48.08 उ.	11.35 पू.	रोडस द्वी.एजियन सागर	36.30 उ.	28.20 पू.	वर्धा महाराष्ट्र	20.04 उ.	78.39 पू.	शिकोकू द्वी. जापान	33.45 उ.	133.30 पू.	सिलहट बाग्लादेश	24.53 उ.	91.55 पू.
मथुरा उत्तरप्रदेश	27.28 उ.	77.41 पू.	मिबू बर्मा	20.12 उ.	94.59 पू.	यनाम आध्रप्रदेश	16.44 उ.	82.16 पू.	रोम इटली	41.53 उ.	12.28 पू.	वमटि यूएसए	43.40 उ.	72.50 पू.	शिमला हिमाचलप्रदेश	31.06 उ.	77.13 पू.	सिवनी मध्यप्रदेश	22.06 उ.	79.35 प.
मदीना साउदी अरब	24.33 उ.	39.53 पू.	मिर्जापुर उत्तरप्रदेश	25.10 उ.	82.37 पू.	यमन एशिया	16.00 उ.	44.00 पू.	रोपड़ पंजाब	41.55 उ.	76.32 पू.	वल्साड गुजरात	20.36 उ.	72.59 पू.	शिमोगा कर्नाटक	13.56 उ.	75.38 पू.	सिवान बिहार	26.12 उ.	84.13 पू.
मदुरै तमिलनाडु	09.58 उ.	78.10 पू.	मिलवाकी यूएस ए	43.09 उ.	87.55 पू.	यलोनाइफ	62.30 उ.	114.29 पू.	रोहतक हरियाणा	28.94 उ.	76.38 पू.	वार्सा पौलैंड	52.12 द.	21.00 पू.	शियान चीन	34.12 उ.	108.54 पू.	सिसली इटली	37.35 उ.	14.10 पू.
मद्रास तमिलनाडु	13.04 उ.	80.17 पू.	मिलान इटली	45.27 उ.	09.10 पू.	यवतमाल महाराष्ट्र	20.23 उ.	78.11 पू.	रोहरी पाक.	27.41 उ.	68.57 पू.	वर्साई फ्रांस	48.50 उ.	02.10 पू.	शिराज ईरान	29.38 उ.	52.32 पू.	सिहोर मध्यप्रदेश	23.12 उ.	77.00 पू.
मधुबनी बिहार	26.20 उ.	86.08 पू.	मिशिगन झी यूएसए	44.00 उ.	87.00 प.	याकुटस्क यू.एस,आर	62.05 उ.	129.40 पू.	लक्समबर्ग यूरोप	49.38 उ.	06.10 पू.	वानकनेर गुजरात	22.33 उ.	71.00 पू.	शिलांग मेघालय	25.34 उ.	91.56 पू.	सीकर राज.	27.36 उ.	75.15 पू.
मनमाड महाराष्ट्र	20.15 उ.	74.20 पू.	मुकडेन/शेनयंग मंचूरिया	41.51 उ.	123.25 पू.	यारकंद चीन	38.24 उ.	77.15 पू.	लखनऊ उत्तरप्रदेश	26.55 उ.	80.59 पू.	वारंगल आ.प्रदेश	17.58 उ.	79.40 पू.	शिवालिक प.मा.उ.प्र.	30.00 उ.	78.00 पू.	सीतापुर मध्यप्रदेश	27.32 उ.	80.43 प.
मन्नार की खाड़ी श्रीलंका	08.59 उ.	79.55 पू.	मुजफ्फरपुर बिहार	26.07 उ.	85.27 पू.	यार्क यू.के.	53.57 उ.	01.05 पू.	लंदन यू.के.	51.30 उ.	00.05 प.	वाराणसी उत्तरप्रदेश	25.20 उ.	83.00 पू.	शेफील्ड यू.के.	53.22 उ.	01.30 प.	सुरिनाम् द.अमेरिका	05.00 उ.	55.00 प.
मन्नारगुड़ी तमिलनाडु	10.40 उ.	79.29 पू.	मुजफ्फर नगर उत्तरप्रदेश	29.28 उ.	77.44 पू.	यूकोन अलास्का	63.00 उ.	135.00 प.	लड़नडेरी यू.के.	55.00 उ.	07.20 प.	वालपेरजो चिली	33.02 उ.	71.40 पू.	शेटलैंड द्वी.यू.के.	60.30 उ.	01.00 प.	सुरेन्द्रनगर गुजरात	22.43 उ.	71.43 पू.
मर्गुई द्वी.सं. बर्मा	12.32 उ.	98.07 पू.	मुजफ्फराबाद ज.और क.	34.24 उ.	73.22 पू.	योकोहामा जापान	35.25 उ.	139.36 पू.	लार्पाज बोलिविया	16.31 द.	67.58 प.	वाल्पाडोलिढ स्पेन	41.39 उ.	04.44 पू.	शेरबूर फ्रांस	49.40 उ.	01.40 पू.	सुंदरगढ उडीसा	22.06 उ.	84.00 पू.
मर्त्तबान की खाडी बर्मा	16.30 उ.	97.40 पू.	मुरैना मध्यप्रदेश	26.30 उ.	78.09 पू.	रकयविक आइसलैंड	64.00 उ.	21.30 प.	लक्षद्वीप हिन्दमहासागर	10.00 उ.	73.00 पू.	वाशिंगटन यूएसए	38.55 उ.	77.04 पू.	शोलापुर महाराष्ट्र	17.40 द.	75.56 पू.	सूरत गुजरात	21.12 उ.	72.52 पू.
मंगलाबांध पाक.	33.09 उ.	73.44 पू.	मुर्शिदाबाद पं.बंगाल	24.11 उ.	88.19 पू.	रंगून वर्मा	16.45 उ.	96.13 पू.	लाओसा एशिया	19.00 उ.	104.00 पू.	ब्लाडीवास्टक यूएसएसआर	43.10 उ.	131.05 पू.	श्रीकाकुलम् आंध्रप्रदेश	18.17 उ.	83.57 पू.	सेतुबंध श्रीलंका	09.05 उ.	79.35 पू.
मंगलौर कर्नाटक	12.52 उ.	74.53 पू.	मुलैतिबु श्रीलंका	09.16 उ.	80.48 पू.	रतलाम मध्यप्रदेश	23.31 उ.	75.07 पू.	लामडिंग असम	25.46 उ.	93.10 पू.	वाल्वोग्राड यूएसएसआर	48.47 उ.	44.25 पू.	श्रीनगर ज.और क.	34.06 उ.	74.51 पू.	से लुई यूएसआर	38.39 उ.	90.13 पू.
मंडी हिमाचलप्रदेश	31.43 उ.	76.58 पू.	मुलतान पाक.	30.12 उ.	71.31 पू.	रत्नगिरि महाराष्ट्र	17.08 उ.	73.19 पू.	लायलपुर पाक.	31.44 उ.	73.05 पू.	विएनटिएन लाओस	17.59 उ.	102.38 पू.	श्रीरंगपट्टम् कर्नाटक	12.26 उ.	76.43 पू.	सेलम तमिलनाडु	11.39 उ.	78.12 प.
मंदसौर मध्य प्रदेश	24.03 उ.	75.08 पू.	मेकाओ चीन	22.13 उ.	113.33 पू.	रत्नपुरम् श्रीलंका	06.42 उ.	80.24 पू.	लाहौर पाक.	31.37 उ.	74.26 पू.	विक्टोरिया द्वी.कैनेडा	71.00 उ.	112.00 पू.	सकालिन यू.एसएसआर	50.00 उ.	143.00 पू.	सेल्वाडोर ब्राजील	12.59 उ.	38.31 प.
मनीला फिलिपाइन्स	14.30 उ.	121.30 पू.	मैड्रिड स्पेन	40.24 उ.	03.42 पू.	राउरकेला उड़ीसा	22.25 उ.	85.00 पू.	लास एंजलिस यूएसए	34.03 उ.	118.17 प.	विजयनगरम् आंध्रप्रदेश	18.07 उ.	83.27 पू.	सतारा महाराष्ट्र	17.42 उ.	74.02 पू.	सेवर्न न. यू.के.	51.40 उ.	02.40 पू.
मलक्का द्वी.इंडोनेशिया	02.00 द.	128.00 पू.	मेदक आध्रप्रदेश	18.03 उ.	78.18 पू.	रांची बिहार	23.23 उ.	85.23 पू.	लिचटेनस्टीन मध्ययूरोप	47.10 उ.	09.50 पू.	विजयवाड़ा आंध्रपदेश	16.31 उ.	80.39 पू.	सदिया असम	27.50 उ.	95.42 पू.	सेवाय फ्रांस	45.40 उ.	06.10 पू.
मलेरकोटला पंजाब	30.31 उ.	75.59 पू.	मेदान इंडोनेशिया	03.35 उ.	98.40 पू.	राजकोट गुजरात	22.18 उ.	70.56 पू.	लिब्रेविल गैबान	00.26 उ.	09.25 पू.	विदिशा मध्यप्रदेश	23.32 उ.	77.51 पू.	समरकंद यूएसएसआर	19.40 उ.	67.05 पू.	सेगौन द.वियतनाम	10.49 उ.	106.41 प.
मशद इरान	36.16 उ.	59.36 पू.	मनहाईम एफ आर जी	49.29 उ.	08.28 पू.	राजपुरा पंजाब	30.29 उ.	76.35 पू.	लिस्बन पुर्तगाल	38.44 उ.	09.09 पू.	विनिपेग कैनेड़ा	52.00 उ.	97.00 प.	समस्तीपुर बिहार	25.55 उ.	85.50 पू.	सेन्टियागो चिली	33.27 द.	70.40 पू.
मसूरी उत्तरप्रदेश	30.27 उ.	78.06 पू.	मेरठ उत्तर प्रदेश	29.01 उ.	77.45 पू.	राजमुन्द्री आ.प्र.	17.00 उ.	81.48 पू.	लिवरफूल यू.के.	53.24 उ.	02.58 प.	वियान आस्ट्रिया	48.12 द.	16.22 पू.	संबलपुर उड़ीसा	21.28 उ.	84.01 पू.	सोफिया बलगेरिया	42.40 उ.	23.20 पू.
मसूलीपटनम् आन्ध्रप्रदेश	16.09 उ.	81.12 पू.	मेलबोर्न आस्ट्रेलिया	37.50 द.	144.59 पू.	राजशाही बांग्लादेश	24.22 उ.	88.39 पू.	लीड्स यू.के.	53.48 उ.	01.30 प.	विरमगांव गुजरात	23.08 उ.	72.07 पू.	सवाई माधोपुर राज.	25.58 उ.	76.30 पू.	सोमनाथ गुजरात	21.04 उ.	70.26 पू.
मस्कत ओमान	23.37 उ.	58.36 पू.	मेहसाना गुजरात	23.42 उ.	72.37 पू.	रानीखेत उत्तरप्रदेश	29.40 उ.	79.33 पू.	लीपजिंग	51.20 उ.	12.23 पू.	विशाखापटनम् आं.प्र.	17.42 उ.	83.20 पू.	सहरसा बिहार	25.55 उ.	86.35 पू.	सोनीपत हरियाणा	28.59 उ.	77.02 पू.
मस्सावा इथोपिया	15.36 उ.	39.28 पू.	मैगडीबर्ग जी डी आर	52.08 उ.	11.38 पू.	रामनाथ पुरम् तमिलनाडु	09.22 उ.	78.52 पू.	लीमा पीरु	12.02 उ.	77.02 प.	वीरावल गुजरात	20.53 उ.	70.26 पू.	सहारनपुर उत्तर प्रदेश	29.58 उ.	77.23 पू.	सोलोमनद्वी.प्रशांत महासागर	08.00 उ.	158.00 पू.
महबूब नगर आ.प्र.	16.43 उ.	77.58 पू.	मैगनिटोगर्स्क यूएसएसआर	53.30 उ.	59.00 पू.	रामेश्वरम् तमिलनाडु	09.17 उ.	79.22 पू.	लुआंग प्रबंग लाओसा	19.55 उ.	102.05 पू.	वीसवाडन एफआर जी	50.00 उ.	08.14 पू.	साउथैम्पटन यू.के.	50.54 उ.	01.24 प.	स्ट्रासबर्ग फ्रांस	48.35 उ.	07.50 पू.
महाबलेश्वर महाराष्ट्र	17.58 उ.	73.43 पू.	मैमनलिंब बांग्लादेश	24.46 उ.	90.27 पू.	रायपुर छत्तीसगढ	21.15 उ.	81.41 पू.	लुआड्रा अंगोला	08.50 द.	13.14 पू.	वुचाउ चीन	23.30 उ.	111.05 पू.	साओपौलो ब्राजील	23.38 उ.	46.37 प.	स्टाँकहोम स्वीडेन	59.20 उ.	18.00 पू.
महुआ गुजरात	21.10 उ.	71.45 पू.	मैन द्वी. यू.के.	54.15 उ.	04.30 पू.	रायबरेली उत्तर प्रदेश	26.14 उ.	81.16 पू.	लुजान फिलिपाइन्स	16.00 उ.	121.00 पू.	वूहान चीन	30.36 उ.	114.17 पू.	सागर मध्यप्रदेश	23.50 उ.	78.50 पू.	स्विट्जबर्जन आर्कटिक महासागर	78.45 उ.	15.00 प.
महू मध्यप्रदेश	22.34 उ.	75.47 पू.	मैनचेस्टर यू.के.	53.28 उ.	02.12 पू.	रायसेन मध्यप्रदेश	23.15 उ.	77.50 पू.	लुधियाना पंजाब	30.55 उ.	75.54 पू.	वेक्सफोर्ड आयरिश प्रजा.	52.20 उ.	06.28 प.	सान फ्रांसिस्को यूएसए	37.48 उ.	122.25 प.	स्नोडन शिखर बेल्ज	53.04 उ.	04.10 पू.
माइजदी बांग्लोदेश	22.48 उ.	91.09 पू.	मैनिटोबा झी. कैनैडा	52.00 उ.	97.00 पू.	रावलपिंडी पाक	33.37 उ.	73.06 पू.	लुशुन चीन	38.40 उ.	121.15 पू.	वेटिकन सिटी यूरोप	41.54 उ.	12.27 पू.	सांगली महाराष्ट्र	16.52 उ.	74.36 पू.	स्यालकोट पाक.	32.31 उ.	76.36 पू.
मांडला मध्यप्रदेश	22.43 उ.	80.35 पू.	मैसूर कर्नाटक	12.18 उ.	80.50 पू.	रॉस्तोव यूएसएसआर	47.14 उ.	39.15 पू.	लुसाका जैबिया	15.25 द.	28.21 पू.	वेनिस इटली	45.26 उ.	12.20 पू.	सारावाक मलेशिया	02.35 उ.	113.30 पू.	स्वात पाक	35.00 उ.	72.35 प.
मांडवी गुजरात	22.51 उ.	69.32 पू.	मांटबिडियो उरुग्वाय	34.55 द.	56.11 प.	राटरडेम नेदरलैंड	51.56 उ.	04.30 पू.	लुब्लिन पोलैंड	51.15 उ.	22.34 पू.	वेंचाउ चीन	28.00 उ.	120.38 पू.	सार्डीनिया इटली	40.00 उ.	09.00 पू.	स्वाज्सी बेल्ज	51.38 उ.	03.55 पू.
मारवाड़ राज.	25.43 उ.	73.45 पू.	मांट्रिआल कैनेडा	45.31 उ.	73.34 प.	रियाद साउदी अरब	24.38 उ.	46.43 पू.	लेगॉस नाइजीरिया	06.25 उ.	03.27 पू.	वेराक्रूज मैक्सिको	19.10 उ.	96.10 प.	माल्जबरी रोडेशिया	17.54 द.	31.30 पू.	स्वेज मिश्र	29.58 उ.	32.33 पू.
मार्सेल्ज फ्रांस	43.20 उ.	03.30 पू.	मांपेलीये फ्रांस	43.36 उ.	03.53 पू.	रियुक्यु द्वी.स.जापान	26.00 उ.	128.00 पू.	लैग्यू डाँक फ्रांस	44.00 उ.	04.00 पू.	वेलिग्टन न्यूजीलैंड	41.16 द.	174.47 पू.	सिअटल यूएसए	47.36 उ.	122.20 प.	हजारीबाग बिहार	24.00 उ.	85.23 पू.
मालदीव हिंदमहासागर	03.15 उ.	73.00 पू.	मोकाबा बिहार	25.24 उ.	85.55 पू.	रियो डी जनेरो ब्राजील	22.54 द.	43.12 प.	लेनिनग्राड यूएसएसआर	59.57 उ.	30.20 पू.	वेलोर तमिलनाडु	12.55 उ.	79.11 पू.	सिउदाद बॉलिवर बेनेजुएला	08.08 उ.	63.57 प.	हनुमानगढ़ राज.	29.35 उ.	74.21 पू.
माल्टा यूरोप	36.00 उ.	14.30 पू.	मोगा पंजाब	30.48 उ.	75.10 पू.	रिवाड़ी हरियाणा	28.12 उ.	76.40 पू.	लेशियो बर्मा	22.58 उ.	98.51 पू.	वैंकूवर कैनेडा	49.17 उ.	123.05 प.	सिओल द.कोरिया	37.31 उ.	127.06 पू.	हनोई उ.वियतनाम	21.02 उ.	105.21 पू.
माही केरल	11.42 उ.	75.34 पू.	मोगाढिशु सोमालिया	02.05 उ.	45.25 पू.	रीगा यूएसएसआर	56.57 उ.	24.09 पू.	लेह जं. और क.	34.10 उ.	77.40 पू.	व्हाइट हार्स यूकोन	60.42 उ.	134.55 प.	सिकंदरिया मिश्र	31.12 उ.	29.54 पू.	हमीरपुर उत्तरप्रदेश	25.58 उ.	80.12 पू.
माँरीशस हिंदमहासागर	20.00 द.	57.00 पू.	मोतीहारी बिहार	26.40 उ.	85.57 पू.	रीम्स फ्रांस	49.15 उ.	04.02 पू.	लैंचाउ चीन	36.02 उ.	103.50 पू.	शंवाई चीन	31.14 द.	121.28 पू.	सिडनी आस्ट्रेलिया	33.52 द.	151.12 पू.	हंबंतोता श्रीलंका	06.07 उ.	81.07 पू.
माँस्को यूएस एस आर	55.45 उ.	37.37 पू.	मोनाको यूरोप	43.45 उ.	07.25 पू.	रीवा मध्यप्रदेश	24.31 उ.	81.19 पू.	लोनावला महाराष्ट्र	18.44 उ.	73.28 पू.	शहडोल मध्यप्रदेश	23.00 उ.	81.30 पू.	सिकियांग चीन	30.15 उ.	113.55 पू.	हरिद्वार उत्तरप्रदेश	29.58 उ.	78.13 पू.
मितकीना बर्मा	25.24 उ.	97.26 पू.	मोम्बासा कीनिया	04.00 उ.	39.40 पू.	रुड़की उत्तरप्रदेश	29.52 उ.	77.53 पू.	लोरिएंट फ्रांस	47.45 उ.	03.21 पू.	शाजापुर मध्यप्रदेश	23.26 उ.	76.18 पू.	सिंगापुर द.एशिया	01.17 उ.	103.51 पू.	हरिहर कर्नाटक	14.31 उ.	75.52 पू.

हवाई द्वी.सं.प्रशांत महा.	20.90	उ.	155.00 पू.
हड़प्पा पाक.	30.35	उ.	72.58 पू.
हार्बिन मंचूरिया	45.46	उ.	126.55 पू.
हाबडा पं. बंगाल	22.35	उ.	88.23 पू.
हावर फ्रांस	49.30	उ.	00.07 पू.
हासन कर्नाटक	13.00	उ.	76.10 पू.
हांगकांग चीन	22.12	उ.	114.12 पू.
हिसार हरियाणा	29.10	उ.	75.46 पू.
हीराकुडकुंड उडीसा	21.30	उ.	84.00 पू.
हुगली पं.बंगाल	22.55	उ.	88.26 पू.
हेरात अफगानिस्तान	34.20	उ.	62.07 पू.
हेलसिंकी फिनलैंड	60.09	उ.	24.57 पू.
हैंकाऊ चीन	30.35	उ.	114.20 पू.
हैग्चाउ चीन	30.16	उ.	120.08 पू.
हैफा इस्राइल	32.49	उ.	36.00 पू.
हैटी बेस्टइंजीज	19.00	उ.	72.00 पू.
हैदराबाद आंध्रप्रदेश	17.20	उ.	78.30 पू.
हैदराबाद पाक.	25.25	उ.	68.38 पू.
हैम्बर्ग एफ आर जी	53.35	उ.	10.00 पू.
होकैडो जापान	43.00	उ.	140.00 पू.
होशंगाबाद मध्यप्रदेश	22.46	उ.	77.45 पू.
होशियारपुर पंजाब	31.32	उ.	75.57 प.
ह्यूस्टन यूएसए	29.49	उ.	95.20 प.

शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने के लिए व मुकद्दमा एवं राजकीय कार्यों में फतह हेतु अद्‌भुत - श्री बगलामुखीमन्त्र प्रयोग

सिद्धेश्वर तन्त्र के अनुसार सर्पप्रथम माता बगुलामुखी का निम्नांकित रुप से ध्यान करें -

सौवर्णासनसंस्थितां त्रिनयनां पीतांशुकोल्लासिनीम्,
हेमाभाङ्गरुचिं शशांकमुकुटां सत्रक्चम्पकस्रक्युताम्।
हस्तैर्मुद्‌गरपाशबद्धरसनां सम्बिभ्रतीं भूषणै:
व्याप्तां बगलामुखीं त्रिजगतां संस्तम्भिनीं चिन्तये।।

इस प्रकार बगलामुखी माता का ध्यान करके निम्नांकित मन्त्र का जाप विनियोग एवं अङ्गन्यासपूर्वक करें।

विनियोगार्थ मन्त्र (दायें हाथ में जल लेकर) - **ह्रीं ॐ अस्य श्री बगलामुखिमन्त्रस्य नारदऋषि:, बृहती छन्द: बगलामुखी देवता, अभीष्टसिद्धयर्थं जपे विनियोग:।**

बगलामुखी मन्त्रजाप से पूर्व अङ्गन्यास इसप्रकार करें - ॐ ह्रीं हृदयाय नम:। ॐ बगलामुखी शिरसे स्वाहा। ॐ सर्वदुष्टानां शिखायै वषट्। ॐ वाचं मुखं स्तम्भय कवचाय हुम्। ॐ जिह्वां कीलय नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ बुद्धिं विनाशय ह्रीं ॐ स्वाहा अस्त्राय फट्।।

मन्त्र: - **ॐ ह्रीं बगलामुखी सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय, जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय ह्रीं ॐ स्वाहा।** इस मन्त्र को गुरुमुख से प्राप्त करें और किसी सिद्धस्थल पर गुरु की सन्निधि में इस का पुरुश्चरण करें।

विधि - पीले वस्त्र धारण करके हल्दी की गोटियों की माला बनाकर मन्त्रजाप शुभ मुहूर्त्त में प्रारम्भ करें। पूरी तरह जती-सती रहकर माता बगलामुखी की पूर्व की और मुंह करके प्रियंगु-रेंदा, पीले कनेर आदि (पीतवर्ण) पुष्पों से विधिवत् पूजा करें एवं मन्त्रजाप के बाद हवन की सामग्री में भी पीले पुष्पों का प्रयोग करें - प्रियङ्गुकुसुमेनापि पीतपुष्पैश्च होमयेत्। मन्त्रजाप से पहले आसनशुद्धि, भूशुद्धि एवं अङ्गन्यास आदि करने चाहिए। इस प्रकार पूर्ण विधि सम्पन्न करके मन्त्रजाप करने से सद्य: प्रत्यक्ष फलप्रद देखा गया है। इस अनुष्ठान के करने पर विरोधीपक्ष हतप्रभ हो जाता है।

स्वप्न में अभीष्ट प्रश्न के सही उत्तर जानने के लिए रुद्रमन्त्रप्रयोग

मन्त्र - ॐ नमो भगवते रुद्राय मम कर्णरन्ध्रे प्रविश्य अतीतानागतवर्तमानं सत्यं ब्रूहि सत्यं ब्रूहि स्वाहा।

विधि - इस उल्लिखित मन्त्र का दस दिनों में दस दस हजार जाप करें। अनुष्ठान पूर्ण होने पर दशांश आहुतियां देकर रुद्रदेव को प्रसन्न करें। फिर रात्रि में पवित्रावस्था में कुशासन पर बैठें एवं बायीं तरफ नीचे शयन करें। देवता आपके अभीष्ट प्रश्न का उत्तर स्वप्न में अवश्य देंगे।

स्वप्नेश्वर मन्त्रप्रयोग - ॐ नमो सकललोकाय विष्णवे प्रभविष्णवे विश्वाय विश्वरूपाय स्वप्नाधिपतये नम:।

संस्कृत एवं भारतीय संस्कृति के संरक्षण में सदैव तत्पर
राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान भोपाल परिसर

परिचय - राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान भोपाल परिसर की स्थापना वर्ष २००२ में मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल में हुई थी। मध्यप्रदेश के तत्कालीन महामहिम राज्यपाल भाईमहावीर जी ने १६ सितम्बर २००२ ई. को इसका औपचारिक शुभारम्भ किया था। इस परिसर के विकास हेतु मध्यप्रदेश शासन ने बाग सेवनिया में १० एकड़ भूमि नि:शुल्क प्रदान की, जिस पर शैक्षणिक, प्रशासनिक, पुस्तकालय एवं प्रेक्षागार निर्माण हेतु तत्कालीन मानव संसाधन विकास मंत्री माननीय अर्जुन सिंह जी ने १९ सितम्बर २००५ ई. को शिलान्यास किया था। अब वह भवन निर्मित हो चुका है और संस्थापक प्राचार्य प्रो. आजाद मिश्र के मार्गदर्शन में परिसर की सभी शैक्षणिक गतिविधियाँ मई २०१० ई. से इस नव-निर्मित भवन में प्रारम्भ हो गई। इस परिसर में कविभास्कर छात्रावास, दाक्षी छात्रावास, अतिथिगृह एवं कर्मचारी आवास सुव्यवस्थित है। छात्रावास में संस्था एवं छात्रों के सहयोग से नियमित जलपान एवं भोजन की व्यवस्था अव्यवहित रूप से चल रही है।

पाठ्यक्रम - राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान के भोपाल परिसर में विभिन्न पाठ्यक्रमों के अन्तर्गत शिक्षण, प्रशिक्षण एवं शोध विभाग संचालित हैं। शिक्षण विभाग में प्राक् शास्त्री, शास्त्री एवं आचार्य की कक्षाओं का अध्यापन होता है, जिनमें ज्योतिषशास्त्र, साहित्यशास्त्र, व्याकरणशास्त्र, जैनशास्त्र, पुराणेतिहास के साथ-साथ हिन्दी, अंग्रेजी, कम्प्यूटरविज्ञान एवं पर्यावरण की शिक्षा भी दी जाती है। प्रशिक्षण विभाग में शिक्षा आचार्य (एम.एड.) शिक्षाशास्त्री (बी.एड.) का पाठ्यक्रम राष्ट्रिय अध्यापक शिक्षा परिषद (NCTE) के मानकों के अनुरूप संचालित किया जाता है। शोध विभाग में ज्योतिषशास्त्र, साहित्यशास्त्र, व्याकरणशास्त्र, शिक्षाशास्त्र एवं संस्कृत विद्या की अन्य धाराओं में विद्यावारिधि (पी.एच.डी.) उपाधि हेतु शोधछात्र अनुसंधान करते हैं। परिसर छात्रों के सर्वाङ्गीण विकास हेतु यहाँ वाग्वर्धिनी सभा, शास्त्रार्थ प्रशिक्षण, शलाका एवं कण्ठपाठ, विस्तार व्याख्यानमाला, अधिराज्यीय वाक्स्पर्धा, अखिलभारतीय वाक्स्पर्धा, क्रीड़ा एवं योगासन, अखिल भारतीय युव महोत्सव, नाट्याभिनय एवं कलाएँ जैसे आयोजन होते रहते हैं। इसके अतिरिक्त परिसर में अन्य शैक्षिक गतिविधियाँ भी प्रचलित है, जैसे विभिन्न महाविद्यालयों, विश्वविद्यालयों एवं मध्यप्रदेश तथा छत्तीसगढ़ से सम्बद्ध छात्रों की प्रतिस्पर्धाएँ समय-समय पर आयोजित होती रहती है, जो छात्रों के साथ-साथ समाज के सभी वर्गों के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण एवं उपयोगी सिद्ध होती है। परिसर की कुछ मुख्य शैक्षणिक गतिविधियाँ निम्नलिखित हैं-

१. भारतीय ज्योतिष परिचयपाठ्यक्रम एवं भारतीयवास्तुशास्त्रपरिचयपाठ्यक्रम -

भारतीय फलित ज्योतिष में रुचि रखने वाले साधारण शिक्षितों के लिए भारतीय ज्योतिष परिचय पाठ्यक्रम एवं भारतीय वास्तुशास्त्र परिचय पाठ्यक्रम परिसर के द्वारा संचालित हैं, जिसकी अवधि ३ महीने की होती है। इस पाठ्यक्रम में अध्ययन करके किसी भी उम्र का वयस्क व्यक्ति फलित ज्योतिष व वास्तुशास्त्र के सामान्य सिद्धान्तों का परिचय प्राप्त कर सकता है। इसकी कक्षाएँ सायंकालीन होती है, जिसमें १००० रु.(एक हजार मात्र) प्रति पाठ्यक्रम पंजीकरण शुल्क देय है। समाचार पत्रों के माध्यम से इस पाठ्यक्रम में प्रवेश की सूचना प्रसारित की जाती है।

२. दूरस्थ शिक्षा - राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान के मुख्यालय में मुक्तस्वाध्यायपीठम् स्थापित है, जिसके अन्तर्गत परिसर में दूरस्थ शिक्षण केन्द्र संचालित है। यह केन्द्र पंजीकृत स्वाध्यायी अध्येताओं को पाठ्यसामग्री भेजता है और आवश्यकतानुसार अवकाश के दिनों में स्वाध्यायी छात्रों के लिए कक्षाओं का आयोजन भी करता है। इस प्रकार परिसर के दूर अपने गृह नगर में रहने वाले पंजीकृत स्वाध्यायी छात्र भी इस केन्द्र के माध्यम से अध्ययन करके प्राक्शास्त्री-शास्त्री-आचार्य के पाठ्यक्रमों की परीक्षा दे सकते हैं तथा उत्तीर्ण होने पर पाठ्यक्रमों का प्रमाण पत्र, उपाधि प्राप्त कर सकते हैं।

३. अनौपचारिक संस्कृत शिक्षण - संस्कृत भाषा, संस्कृत के काव्य एवं संस्कृत शास्त्रों को शिक्षक के बिना स्वयं पढ़ने की क्षमता विकसित करने के उद्देश्य से संस्थान ने संस्कृत स्वाध्याय पाठ्यक्रम का विकास किया है। इनमें पाँच सत्र दीक्षाएँ हैं। प्रत्येक सत्र दीक्षा में छ: छ: माह अध्ययन करना होता है। इसकी पाठ्यपुस्तकें संस्थान परिसर से निर्धारित मूल्य में उपलब्ध हैं। स्वाध्यायी अभ्यर्थियों की आवश्यकतानुसार दीक्षा में २ बार नि:शुल्क कक्षा आयोजित की जाती है। इसकी सूचना समय-समय पर समाचार पत्रों के माध्यम से दी जाती है।

४ संस्कृत अन्तर्जाल परियोजना- परिसर में संस्कृत के प्राचीन शास्त्रों को अन्तर्जाल में संस्थापित करने हेतु संस्कृत अन्तर्जाल परियोजना प्रचलित है। इस परियोजना के अन्तर्गत परिसर के द्वारा साहित्य दर्पण ग्रन्थ का अन्तर्जाल में स्थापना हो चुकी है। पुस्तकालय की पुस्तकों को अन्तर्जाल में स्थापित किया जा रहा है। इसी प्रकार संस्कृत विद्वत्परिचायिका नाम से संस्कृत विद्वानों की पंजिका का प्रकाशन हो चुका है। जिसे अन्तर्जाल में स्थापित करने की प्रक्रिया चल रही है। संस्कृत के साथ बुन्देली और मालवी उपबोलियों के शब्दकोष प्रकाशित हो चुके है।

५. संङ्गोष्ठी एवं कार्यशाला- परिसर में विभिन्न शास्त्रों पर राष्ट्रिय, क्षेत्रीय शोध संङ्गोष्ठी एवं कार्य शालाओं का आयोजन होता है। शास्त्रीय ज्ञान का आदान-प्रदान शोध तथा वैदुष्य का विकास करना संङ्गोष्ठी एवं कार्यशालाओं का मुख्य उद्देश्य होता है।

६. प्रशिक्षण- अनौपचारिक संस्कृत भाषा शिक्षण के शिक्षकों को उनके कौशल तथा पाण्डित्य में विकास हेतु प्रशिक्षण कार्यक्रम का भी आयोजन होता है। संस्कृत भाषा एवं शास्त्रों के प्रति रुचि उत्पन्न कराना तथा उस दिशा में प्रावीण्य प्राप्त करवाना प्रशिक्षण का मुख्य उद्देश्य होता है।

७. वास्तुशास्त्र डिप्लोमा (एक वर्षीय) पाठ्यक्रम - इस परिसर में उपर्युक्त पाठ्यक्रम का अध्यापन भी प्रारम्भ हो गया है। इस पाठ्यक्रम में भी समाज के विभिन्न वर्गों के लोग अध्ययनरत हैं। इससे समाज में वास्तुविषयक ज्ञान का लाभ स्वभाविक है।

भवन निर्माण में सरल वास्तु के अनमोल स्वर्णिम सूत्र

डॉ. रविन्द्र प्रसाद उनियाल
(ज्योतिष विभाग) रा.सं.सं भोपाल परिसर भोपाल,

इस संसार में प्रत्येक मनुष्य चाहता है कि वह संसाार के समस्त सुखों का उपभोग कर सके और मोक्ष मार्ग पर भी अग्रसर हो, परन्तु मोक्ष मार्ग के लिये सांसारिक भोगों व इन्द्रिय सुखों को वेद-शास्त्र बाधक मानते हैं। वास्तुशास्त्र एक मात्र शास्त्र है जिसका प्रयोजन जीवन के समस्त सुखों और वस्तुओं का उपभोग कर अन्त में परमपुरुषार्थ (मोक्ष) प्राप्त कराना है।[१] वास्तुशास्त्र के अनुसार यह सब तभी सम्भव है जब व्यक्ति अपने भवन को वास्तुशास्त्रीय सिद्धान्तों, प्राकृतिक शक्तियों व पञ्च महाभूतों का जीवन में **"यत् पिण्डे तत् ब्रम्हाण्डे** के सिद्धान्त को ध्यान में रख कर उचित सन्तुलन बिठाया जाय। आइये जानते हैं कैसे इन सिद्धान्तों का उपियोग कर अपने जीवन को सुखी खुशहालमय बनाया जाय। यहां ऐसे ही कुछ वास्तुशास्त्रीय सिद्धान्तो पर आधारित सरलतम और जीवनोपयोगि स्वर्णिम सूत्र प्रस्तुत हैं। वास्तुशास्त्र के इन सरलतम सूत्रों को हृदयङ्गम कर लेने से जनसामान्य भी इस शास्त्र का भवन में उपियोग कर पूरा लाभ उठा सकता है। ये सूत्र आम जनता के लिये ही नही सिविल इंजीनियर, आर्किटेक्ट, ठेकेदार, मिस्त्री, और भवन निर्माण से जुडी कम्पनियों के अधिकारियों के लिये अत्यन्त उपयोगी है।

स्वर्णिम सूत्र-

१. जिस भूमि का घनत्व ठोस न हो य जो दलदली हो- उस पर मकान नही बनाना चाहिये। ऐसी जमीन जिस जमीन में दरारें हो, रेतीली हो, दीमक हों, पोली हो[२] य जिसमें शल्य हो उस पर भवन नही बनाना चाहिये।[३]

२. जिस जमीन में जाकर अन्तर्मन को प्रसन्नता अनुभव हो और जिसका भूपरिदृश्य सुन्दर हो, और अन्र्तमन को आनन्द और सुकून का अनुभव कराये।[४]

३. भूखण्ड का आकार- वर्गाकार, आयताकार, भद्रासन एवं वृत्ताकार भूखण्ड में सभी प्रकार के भवनों का निर्माण किया जा सकता है।[५]

४. गौमुखी भूखण्ड पर आवासीय और सिंह मुखी भवन पर व्यवसायिक भवन बनाना शुभ होता है।

५. भूखण्ड की मिट्टी पोली हो या शल्य दोष हो, तो उसकी मिट्टी खुदवा कर-निकाल लें और नये पत्थर और मिट्टी भरवा कर ही भवन बनायें।

६. भवनारम्भ में राहु का मुख-पुच्छ विचार कर खात खोदने[६] के पश्चात् अग्नि कोण में शिलान्यास करना चाहिये।[७]

७. भूखण्ड का ढलान पूर्व उत्तर ईशान में होना शुभ है। तथा ऊँचाई दक्षिण पश्चिम नैऋत्य में होना शुभ है[८]

८. भूखण्ड के बीच में पश्चिम में, नैऋत्य में, आग्नेय में, वायव्य में, एवं दक्षिण में कुंआ बोरिंग भूमिगत टैंक सैप्टिक टैंक य किसी प्रकार का गड्ढा शुभ नही होता।

९. अपना भूखण्ड आस-पास की जमीन से नीचा होना, अथवा समीपस्थ भूखण्ड का पानी बहकर आना अशुभ होता है। अपना भूखण्ड आस-पास के भूखण्ड से ऊंचा होन शुभ है।

१०. भूखण्ड के पश्चिम दक्षिण में ऊँचे पेड, पहाडी, चट्टान, टीला, एवं ऊँचे मकान होना शुभ है परन्तु पूर्व उत्तर में होना अशुभ है। आवासीय भूखण्ड के अत्यधिक समीप में मन्दिर, सिनेमा, सार्वजनिक स्थल, होना अच्छा नही है।

११. निर्माण कार्य अग्निकोण से सर्वप्रथम प्रारम्भ कर फिर दक्षिण से पश्चिम, पश्चिम से उत्तर, उत्तर से पूर्व दिशाओं की और बढाना चाहिये।[९]

१२. पूर्व-उत्तर-ईशान की अपेक्षा दक्षिण पश्चिम नैऋत्य में निर्माण कार्य अधिक करना चाहिये।

१३. निर्माण कार्य दक्षिणावृत्त (घडी की सुई की दिशा में) करते हुये आगे बढाना चाहिये।[१०]

१४. भवन-निर्माण में यदि सम्भव हो तो दस प्रतिशत भूमि चारों दिशाओं में खाली छोडकर मध्य के शेष भाग पर निर्माण करना चाहिये। अथवा भूखण्ड के दक्षिण पश्चिम में कम तथा उत्तर-पूर्व में अधिक खुली जगह छोडनी चाहिये।

१५. पुराने मकान की खिडकी, दरवाजा, लकडी अथवा किसी प्रकार की एक भवन की पुरानी निर्माण सामग्री का नवीन भवन में प्रयोग नही करना चाहिये। भवन में तीन से अधिक प्रकार की लकडियों का प्रयोग नही करना चाहिये।

१६. खुली छत के लिये भवन में उत्तरपूर्व दिशा अनुकूल होती है।

१७. पश्चिम और दक्षिण में दुछत्ती, नौकरों का कमरा तथा पानीटंकी रखने के लिये उपयोगी होती है ।

१८. उत्तर और पूर्व दिशा में खिडकियां और दरवाजे दक्षिण पश्चिम की अपेक्षा अधिक रखना चाहिए।

१९. दक्षिण एवं पश्चिम की दीवारें सदैव मोटी रखनी चाहिये।[११]

२०. भूखण्ड का प्रवेश द्वार उसी दिशा में बनाना चाहिये, जहां भवन का मुख्यद्वार निर्मित किया गया हो।

२१. भवन में द्वार पूर्व य उत्तर में रखना श्रेष्ठ, पश्चिम में मध्यम, दक्षिण में अशुभ है, द्वार के ऊपर द्वार रखना अशुभ है। परन्तु तीन मंजिल से अधिक ऊंचे भवन में यह नियम लागू नही होता।

२२. भवन के द्वार पर यदि कलश, लता, पत्र, सिंह, स्वस्तिक ,ओम्, गणेश, शंकर, तथा दुर्गा जी का कोई भी एक चित्र लगाया जाय तो शुभ परिणाम मिलेंगे।[१२]

२३. शयनकक्ष नैऋत्य कोण(दक्षिण-पश्चिम) में बनाना उत्तम रहता है। शयनकक्ष में मन्दिर कदापि नही बनाना चाहिये। दक्षिण की और पैर उत्तर की ओर शिर कर के सोना ठीक नही है।[१३]

२४. घर के दरवाजे एक सीध में दो से अधिक नही बनाना चाहिये।[१४]

२५. पूजाकक्ष ईशान में, रसोईकक्ष आग्नेय में, भोजनकक्ष पश्चिम में, कोषकक्ष उत्तर में, अध्ययन कक्ष वायव्य, उत्तर, पूर्व पश्चिम में, शयनकक्ष दक्षिण, पश्चिम, उत्तर, पूर्व में, स्नानागार पूर्व में बनाया जाना शुभ है।[१५]

२६. बेसमेन्ट(तलघर) आधे से कम भाग पर उत्तरी पूर्वी भाग में बनाना उत्तम है।[१६]

२७. भवन से जल एवं मल की निकासी वायव्य उत्तर पूर्व दिशा में होनी चाहिये।

२८. जिन लडकियों की शादी में विलम्ब हो रहा है उन्हे अपने शयन कक्ष की वयवस्था वायव्य कोण(उत्तर-पश्चिम) में करनी चाहिये।[१७]

२९. शौचालय(टायलेट) का निर्माण दक्षिण-पश्चिम(नैऋत्य कोण) में बनाना ठीक है।[१८] शौचालय का दरवाजा पूर्व या दक्षिण में रखना चाहिये।

३०. ड्राइंग रुम या लिविंग रुम आग्नेय-दक्षिण के बीच, दक्षिण-पश्चिम, वायव्य-पश्चिम, उत्तर-वायव्य के बीच में बनाया जा सकता है।

३१. पोर्टिको ईशान, पूर्व, उत्तर एवं पश्चिम में बनाना उपियुक्त है।[१९]

३२. घोबरगैस प्लान्ट ईशान,पूर्व, आग्नेय,या उत्तर में बनाना श्रेष्ठ है।[२०]

३३. शौचालय में शौच करते समय मुख उत्तर या दक्षिण की ओर होना चाहिये।

३४. छत के ऊपर पानी की टंकियां दक्षिण एवं पश्चिम में रखनी चाहिये। उत्तर-पूर्व–ईशान में कदापि नही रखनी चाहिये।[२१]

३५. सभी द्वार एवं खिडकियों की ऊंचाई समान सूत्र में रखनी चाहिये।

३६. कमरों में आलमारी, शोफा, प्लंग, या स्थायी रुप से रखने वाला भारी सामान दक्षिण नैऋत्य, या पश्चिम नैऋत्य में रखना चाहिये।[२२]

३७. व्यायवसायिक भवन के लिये समीप मन्दिर धर्मस्थल, सिनेमा, चौराह, एवं सार्वाजनिक स्थान होना अच्छा है।

३८. मन्दिर वास्तु में गर्भगृह, प्रांगण, द्वार, एवं शिखर का निर्माण वास्तु के अनुसार करना चाहिये।

३९. घर के उत्तरी कमरे दक्षिण में निर्मित कमरों से बडे रखने चाहिय, परन्तु उनकी ऊंचाई दक्षिण में निर्मित कमरों से १ से ३ इंच तक कम रखाना शुभ है।

४०. सीढियां दक्षिणावृत्त होनी चाहिये।[२३] सीढियों के नीचे के स्थान पर अनुपयोगी सामान रखने के लिये कोठरी बनाई जा सकती है। पर मन्दिर अथवा सोने के लिये इसका उपियोग नही करना चाहिये।

४१. घर के मध्य में जहां ८१पदवास्तुमण्डल में ब्रम्हा के नव पद हों पडें वहां आंगन या खुला स्थान रखना चाहिये। इसका ढाल उत्तर-पूर्व में होना चाहिये। परन्तु घर के आंगन में सीढियां नही बनानी चाहिये।

४२. पूर्व दिशा में स्नान घर बनाना शुभ है[२४] परन्तु सम्मिलित शौच एवं स्नानघर बनाना ठीक नही है।

४३. मकान के मुख्य प्रवेशद्वार के सामने रसोईघर का द्वार नही बनाना चाहिये। [२५]

४४. ड्राइंग रुम की दीवारों पर लाल अथवा काला रंग नही करना चाहिये। सफेद, पीला, नीला, हरा, गुलाबी रंग प्रयोग कर सकते है।[२६] उसका द्वार उत्तर अथवा पूर्व में बनाना चाहिये।

४५. रसोई अथवा पूजा कक्ष से लगा हुआ अथवा द्वार के सामने या ऊपर शौचालय नही बनाना चाहिये।[२७]

४६. यदि बने बनाये भवन का विस्तार करना हो तो उत्तर-पूर्व में अथवा चारों दिशाओं में करें, केवल दक्षिण-पश्चिम में विस्तार करना ठीक नही है।[२८]

४७. वास्तुशास्त्र एवं ज्योतिष शास्त्र में अंग एवं अंगी भाव सम्बन्ध है। अत: वास्तुशास्त्र के साथ-साथ ज्योतिष शास्त्र के माध्यम से विचार करने पर जीवन की समस्या एवं संकटों के समाधान में सीलता रहती है।[२९]

४८. घर का वास्तुदोष सुधारने के बाद, गृहवर्धन के बाद, मरम्मत के बाद, सपूर्व-अपूर्व- द्वन्द(जीर्णोद्वार) गृह प्रवेश में वास्तुशान्ति करना आवश्यक है।[३०]

सन्दर्भसूची

१. श्रीमद्भगवद्गीता-३/१४
२.बृहद्वास्तुमाला - पृ. 2
३. स्त्रीपुत्रादिक भोगसौख्य जननं धर्मार्थ कामप्रदम्। जन्तूनामयनं सुखास्पदमिदं शीताम्बुधर्मापहम्।।
वापीदेवगृहादिपुण्यमखिलं गेहं समुत्पद्यते। गेहं पूर्वमुशान्ति तेन विबुधा श्री विश्वकर्मादया।।
–वहीं पृ.सं.२ श्लो.४
४. बृहद्वास्तुमाला पृ.१६ श्लो.७९
५. संग्रहशिरोमणि २०/४३-४६
६. मनस: चक्षुषोर्यत्र सन्तोषो जायते भुवि। तस्य कार्यं गृहं सर्वैरिति गर्गादिसम्मितम्।
-बृहद्वास्तुमाला श्लो.९३,पृ.१८
७. वास्तुरत्नावली भूपरिग्रहाध्याय: पृ.सं.२०
८. बृहद्वास्तुमाला पृ.सं.२०
९. प्रासादेषु च हर्म्येषु गृहष्वन्येषु सर्वदा। आग्नेय्यां प्रथमं स्तम्भं स्थापयेत्तविधानत:।
-बृहद्वास्तुमाला पृ.सं.२४
१०. बृहद्वास्तुमाला पृ.९ श्लो.३९
११. दक्षिणे पूर्वे कोणे कृत्वा पूजां शिलान्यसेत् प्रथमम्। शेषा: प्रदक्षिणेन स्तंम्भाश्चैव प्रतिस्थाप्या:
- बृहद्वास्तुमाला पृ.सं.२५, श्लो. १२५,
१२. वहीं।
१३. भारतीय वास्तुशास्त्र-१७२
१४. मूलद्वारं नान्यैर्द्वारैरभिसन्दधीत रुपर्द्धया, घटफलपत्रप्रमथादिभिश्च तन्मङ्गलैश्चिनुयात्।
-बृहद्वास्तुमाला श्लो.१५९, पृ.सं.९४
१५. भारतीय वास्तुशास्त्र पृ.सं-१७३
१६. द्वारस्योपरियद्द्वारं द्वारस्सम्मुखम्। न कार्यं व्ययदं यच्च संकटं तद्दरिद्रकृत्।
-बृहद्वास्तुमाला श्लो.१५९, पृ.सं.९३
१७. मुहूर्तचिन्तामणि १२/२०
१८. भारतीय वास्तुशास्त्र पृ.सं-१७०
१९. भारतीय वास्तुशास्त्र पृ.सं-१७३
२०. मुहूर्तचिन्तामणि १२/२१
२१. भारतीय वास्तुशास्त्र पृ.सं-१७१
२२. भारतीय वास्तुशास्त्र पृ.सं-१७१
२३. भारतीय वास्तुशास्त्र पृ.सं-१७१
२४. भारतीय वास्तुशास्त्र पृ.सं-१७१
२५. भूम्यारोहणमूर्ध्वतस्तदुपरि प्राग्दक्षिणं शस्यते। वास्तुराजबल्लभ ५/३६
२६. स्नानागारं दिशं प्राच्यां आग्नेयं पचनालयम्। सन. वास्तुशास्त्र, पृ.सं-६१
२७. वास्तुसौख्यम् ९/३७३
२८. वास्तु एवं काय वास्तु, षष्टम खण्ड, पृ.सं-१८४
२९. भारतीय वास्तुशास्त्र, पृ.सं-१७३
३०. भारतीय वास्तुशास्त्र, पृ.सं-१७३
३१. भारतीय वास्तुशास्त्र, पृ.सं-१७३
३२. बृहद्वास्तुमाला श्लो.१, पृ.सं.१०३